अंक -
बुन्देली
दरसन
2016
नगर पालिका परिषद, हटा, जिला-दमोह

संपादकीय....

'बुन्देली दरसन' का यह नवम पुष्प, आपकें हाथों में सौंपते हुए, हर्ष का अनुभव हो रहा हैं। आपने इसे सराहा - इसे अपना प्यार-दुलार दिया', यह हमारे लिए प्रसन्नतावर्धक इस रुप में है कि बुन्देली की बनक और कहन का संसार बढ़ा है, 'उसके गौरव में अभिवृद्धि हो रही है- बोलने-लिखने-पढ़ने वाले बुन्देली जनों की संख्या बढ़ रही है- 'बुन्देली दरसन' एक माहौल बना रही है- अपनी बोली की अस्मिता की गरिमा को पहचानने का? इसे निर्मित करने में हमारी भूमिका यद्यपि नगण्य ही है- आप सबकी भूमिका, जो इसके निमित्त, रचनायें लिख रहे हैं- जो इन रचनाओं को पढ़ रहे है- इन्हें किसी भी माध्यम से प्रसारित कर रहे हैं- उनकी भूमिका ही महत्वपूर्ण है।

बुन्देलखण्ड के सभी साहित्यकारों से, मेरा निवेदन हैं कि वे भले ही हिन्दी भाषा के शीर्ष श्रेष्ट रचनाकार हैं किंतु उन्हें बुन्देली में भी लिखना चाहिए। यदि ऐसा संभव हो सका तो बुन्देली की रचनात्मकता का वैभव समृद्ध होगा और वह गतानुगतिकता की प्रवृत्ति से मुक्त हो सकेगी। बुन्देली में गद्य लेखन की बारीकी प्रकट हो सकेगी और विषय वस्तु में भी इजाफा हो सकेगा।

नये रचनाकार परिगणना प्रणाली से बचकर चलें और विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का आश्रय लें तो बुन्देली की रचनात्मक शक्तियों का विकास होगा। इस हेतु चतुर्दिक अध्ययन की जरुरत पड़ेगी। बुन्देली में परिगणनामूलक सामग्री का अभाव नहीं हैं। हमारे पूर्वजों ने इस दिशा में खूब काम किया है। इस सामग्री का उपयोग हम नये प्रकाश में करें तो बुन्देली की सामर्थ्य का सही आकलन हो पायेगा।

'बुन्देली दरसन' के प्रकाशन में साहित्य मनीषी डॉ. श्यामसुन्दर दुबे के अनुपम परामर्श ने पत्रिका में चार चाँद लगा दिये है। कु. पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी 'बुन्देली मेला' की ध्वजा विगत एक दशक से सम्हाले हुए हैं उनके भागीरथी प्रयास से ही इस पत्रिका का प्रकाशन संभव होता हैं, अतः उन्हें में साधुवाद देना चाहता हूँ।

नगरपालिका परिषद् हटा की अध्यक्ष श्रीमति अरुणा तंतुवाय एवं समस्त पार्षदगण एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री रामलाल द्विवेदी जी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके सहयोग से पत्रिका यह रुप ले सकी है। पत्रिका मुद्रण में श्री रूपकिशोर राय (बल्लू), श्री रण प्रताप सिंह (रानू), कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री धर्मेन्द्र साहू एवं श्री राजकुमार असाटी, नगर पालिका हटा के सहयोग के लिये धन्यवाद।

डॉ. मनमोहन पाण्डे
चण्जी जी वार्ड हटा जिला दमोह
मो. 98939769336
फोन - 07604-262611
E-mail : cmohatta@gmail.com
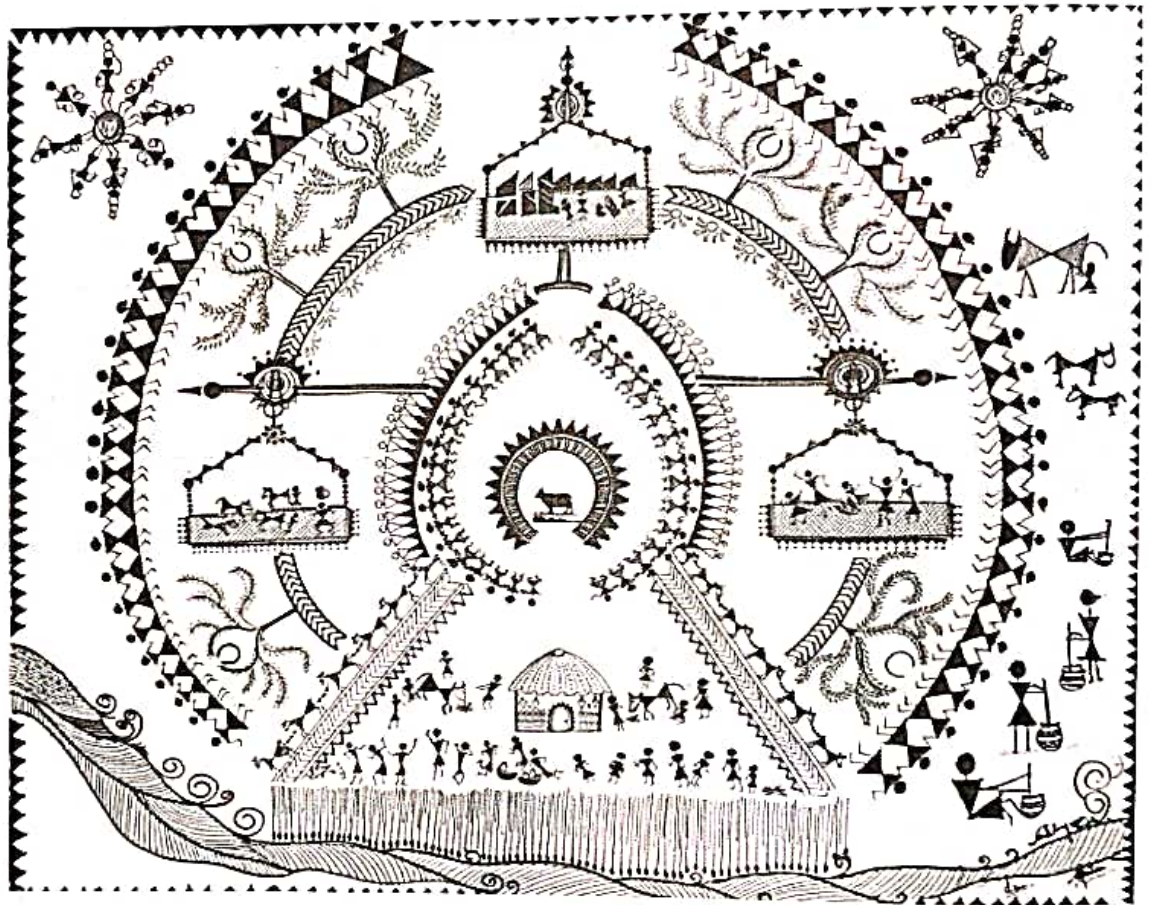
मदुलिया

मदुलिया, है तो छोटा पात्र लेकिन- इसमें दैनिक उपयोग का अनाज सुरक्षित रखा जाता है- मदुलिया से आप पत्र निकालें इन्हें फटकें-पछारें- इनके आशय और इनके मंतव्यों पर पुनर्विचार करें, जे आपसें जादाँ संपादक को सचेत करते हैं।

मदुलिया

1. दीनदयाल तिवारी
2. गंगाप्रसाद बरसैया
3. डी. आर. वर्मा 'बेचैन'
4. प्रियम रिछारिया
5. सरोजा शिल्पी
6. सुश्री सुधा रावत 'क्षमा'
7. डॉ. रमेश चंद्र खरे
8. ओ.पी.रिछारिया
9. विजय लक्ष्मी विभा
10. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
11. पंडित रामकुमार तिवारी

परम आदरणीय पाण्डे जी

सादर नमन

मोय आपके सतत् प्रयास कौ फल बुन्देली दरसन कौ आठमों अंक मिलो। देखतनइ भौत प्रसन्नता भइ। फिर भीतर खोल कें देखी तौ मैं ई कौ वरनन करइ नइ सकत कें केंसौ लगो। कायें कै मोरे लिंगा शब्दई नई मिले अपन नें चौतरा मचेरी, गादी चौतरिया अथाइ और खटिया इन खंडन में लेखन सामग्री बॉट कें भौतइ नौनौं काम करों काय से कें इन बुन्देली शब्दन कौ लोप होंत जा रऔ। सो अपन ने इन शब्दन खौं जिंदा करकें आज की पीड़ी खौं सोचबे पै मजबूर कर दओ।

ई स्मारिका में चित्र रोचक कहानी कहावतें लेख और रचनायें सबइ कछू अच्छे लगे। अपन नें सम्पादकीय में बुन्देली भाषा कें इस्तैमाल पै तौ जोर दउअइ है संगै हिन्दी भाषा पै सोउ अपने विचार रखें कें दौउ भाषायें एक संगै चलें। सो जा बात ठीक है। आज के समय में बुन्देली के कैउ एसे शब्द है जो लुप्त हो गए और होत जा रए सो मोरौ कैबौ है केवल इतनी है के ई बुन्देली भाषा कौ उत्थान और विकास कौ जो प्रयास अपन नें करौ है सो ऊ के लाने भौत-भौंत बधाई। पै दूसरे लेखक और बुन्देली पै ध्यान दैवे तो अच्छी बात बन जैय। जों तक लेख और कहानी तथा रचनायें बुन्देली में आबै तौ सोंसउ ई भाषा कौ उत्थान हुइयै और लुप्त होत जा रइ शब्दावली सोउ उजागर हुइयै।

अंत में आपखों और आपके सबरे संगी -साथियन खौं बुन्देली भाषा के उत्थान और विकास के प्रयास के लाने लाख लाख बधाई। और जा आशा है कै आपके प्रयास सें हम जैसन खौं नई दशा व दिशा मिलै औंर आगें-आबे बारी-पीड़ी खौं सोउ सोसबे खौं मजबूर हौनें परै।

धन्यवाद

दीनदयाल तिवारी
'बेताल' श्री सिद्ध बाबा कालोनी
टीकमगढ़ म.प्र.
मो. नं. 9893153534

बंधुवर श्री पाण्डेय जी,

नमस्कार।

आज बुन्देली दरसन 2015 के दर्शन। बड़ी सुन्दर, सचित्र पत्रिका बन पड़ी है। आप जो अलग अलग खण्डों का नामकरण करते हैं, और उनके साथ टिप्पणी देते हैं, वह आपकी मौलिक सूक्ष्मता होती है। पत्रिका का सम्पादित स्वरुप देखकर आपके सम्पादन कला और बुन्देली - ज्ञान तथा उसके प्रति समर्पण की पूरी झलक मिलती है, इस बार बुन्देली में अपेक्षाकृत पर्याप्त सामग्री है। और रचनाओं का चयन भी अच्छा है चित्रों को देखकर कोई भी आयोजन की विशालता विविधता का अनुमान लगा सकता है। इस बार दो चित्र विशेष है आपका भोपाल में सम्मान राज्यपाल द्वारा और श्री श्यामसुन्दर दुबे के सम्मान दिल्ली में राष्ट्रपति जी द्वारा गौरव की बात है।

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैया
एफ - 7 फारचून पार्क,
जी - 3 गुलमोहर, भोपाल (म.प्र.)
पिन 462039 मो. 9425376413

असलियत

'बुन्देली दरसन' पत्रिका वास्तव में बुंदेली साहित्य उर संस्कृति के लानें संजीवनी कौ काम कर रई। ई की जितेक बड़ाई करी जाय, कम है। ई के सम्पादक पांडेय जी उर बुन्देली मेला हटा के शिल्पी कुंवर श्री पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी व ई के सबई सहयोगी महान भाव भौत भौत बधाई दैवे जोग है। नष्ठ होत जा रई बुन्देली सभ्यता उर संस्कृति के बड़ावे रखावे में लगे अपुन सब जनन खां अनंत धन्यवाद।

अपुनौई

डी. आर. वर्मा 'बेचैन'
पी.एच.डी. पूर्व प्राचार्य, खंडानंद जनता ई.का.गरौठा
निवास- ग्राम व पो. स्यावरी, वाया मऊरानीपुर (झाँसी) उ.प्र.
मो.9794419115

हमारे अच्छे दादाजी,

सादर प्रणाम!

मैं सर्व प्रथम आपको- ''बुन्देली दरसन'' अंक'' - 8 की प्रस्तुति के लिए - शुभकामनाऐं देती हूँ। धन्यवाद और बधाई देती है। मुझे यह अंक बड़ा ही सुन्दर, सरस और सुरुचिपूर्ण लगा।

इस अंक में - ''मैं हूँ अपनी घसान'' बुन्देली रतनबजरिया हटा अच्छे लगे।

कहानी संग्रह में - ''नकल को फल'' ''पॉच बरा'' ''स्वायी जू'' - ''पड़ा और हड़ा'' - मनोरंजक लगें

-ज्ञानवार्ता खण्ड में - ''बुन्देली विवाह गीतों का लालित्य'', - ''नायकों के नायक वीर आल्हा 2 भाव प्रधान रचनायें है ।

काव्य संग्रह के- ''बुन्देली गीत'' ''फागें'' ''जौ नीको बुन्देलखण्ड'', ''बुन्देली-व्यंजन'', ''समधिन का निवेदन'' और ''मोंड़ा-मोड़ी सुनो बरोबर'' जैसी रचनाऐं भा गई।

पत्रिका में-सुन्दर चित्रों का समायोजन होने से - कानो- ''बुन्देली दरसन'' का श्रृंगार हो गया है। - एक सुझाव है, - यदि सभी बुन्देली प्रेमी मिलकर प्रयास करें- तो-हमारी बुन्देली बोली में-''फीचर फील्मों-'' के निर्माण का कार्य भी प्रारंभ - हो सकता है। परिणाम स्वरुप - भोजपुरी, ब्रजभाषा, अवधि की तरह बुन्देली बोली- की पहचान- देश के - प्रत्येक कोने तक जा सकेगी।

भवदीय

प्रियम रिछारिया

रिछाईया घाट - परकोटा सागर

आदरणीय

पाण्डे भाई साहब,

नमस्कार।

बुन्देली दरसन एक बहुत ही अच्छी पत्रिका है। इसमें निबंध, कहानी, नाटक, इतिहास, लोक संस्कृति, बुन्देली विलुप्त होते शब्द, बुन्देली अहाने कहाने, खेल लोकगीत, बुन्देल खण्ड के मंदिर आदि के बारे में बहुत ही अच्छी जानकारी पढ़ने को मिली। साथ ही मुझे बुन्देली दरसन पत्रिका की एक बात बहुत अच्छी लगती है, वो ये कि आप अपनी पत्रिका में हर बार अपनें स्तंभों को नया नाम देते हैं जैसे- चौंतरा, मचेरी, गादी, चौंतरिया अथाई, खटिया आदि जो कि पुस्तक को और भी आकर्षक बना देते हैं।

संक्षेप समीक्षा -

चौंतरा - बैठ चैतरा ज्ञान बटोरौ।
बस साहित्य सैं नातौं जोरौ।।

मचेरी - किसा कहानी नाटक नौरा।
देखत-सुनत बिछा पिछौरा।

गादी - गादी बैठ सबई बतिया वैं।
भाषा संस्कृति के गुन गावैं।।

चौंतरिया - लिपि-पुती नौनी चौंतरिया।
कवितायें जादू की पुरिया।।

अथाई - करत समीक्षा बैठ अथाई।
पाती नौनी बॉच सुनाई।।

खटिया - खटिया पै आराम सैं बैठो।
यादन खौं फोटू में समेटौ।।

इतने अच्छे प्रकाशन के लिए आप की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई। बुंदेली दरसन भविष्य में और भी ऊंचाइयों को छुये, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।

सरोजा शिल्पी

एफ/7, गीत बंगले, फेस 2
दुर्गेश विहार, जे.के. रोड,
भोपाल (म.प्र.) पिन कोड 462041
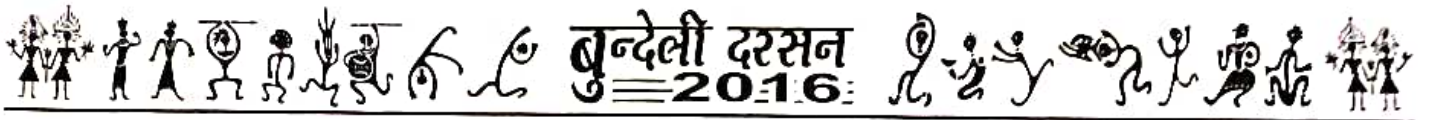
सुश्री सुधा रावत 'क्षमा'
एफ- 7 गीत बंगलो फेस -II
दुर्गेश बिहार जे.के.रोड
भोपाल-462041 म.प्र.

प्रतिष्ठा में,

परमादरणीय,

पाण्डे जी सादर नमन,

बुन्देली दरसन कौ अंक 8/ 2015 प्राप्त भओ। छैऊ स्तम्भ बुन्देली संस्कृति से ओतप्रोत है। खास कें बुन्देली रतन बजरिया- हटा" ललित निबंध हिय खों छू गऔ। आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जू की लेखनी खों हजार बेर नमन करो जाये तऊ थोरो है। प्रहसन "सूपाडंक" भी भौतई नौनों लगो डॉ. श्यामसुन्दर दुबे जू नें मुहावरे, कहावतों को सुन्दर और सटीक प्रयोग करत भयें, व्यंग- हास्य से ओत प्रोत अपनी शैली में अपनी बात रक्खी। उने ढेरों बधाई! ई के अलावा- मुनमुन की चुलिया। नाट्य साहित्य और बुन्देलखण्ड। बुझउअल फागों में फड़वाणी निबंध- लड़ैया" समेट सबई लेख- आलेख कहानी- कवित्त नौनें और सलोने है। समझ कई आ रओं कीखों छोड़े कीखौ उल्लेख करें। वेहरहाल सबखों बधाई।।

आगे बस इतनंइं कै है-

गीत निवंध, कहानी कविता।
लोककथा, नाटक व प्रहसन।।
एक से वढ़ के एक अनोखें
संस्कार, इतिहास, धरोहर।
कला और सहित्य कौ सागर।
संस्कृति कौ उजलौ दरपन
लै आई "बुन्देली दरसन"।।
बुन्देली बोली कौ ज्ञान।
संग बुन्देलखण्ड कौ मान।।
मामुलिया सी सजधज बनठन,
लैं आई "बुन्देली दरसन"।।
आमुख में आकर्षण भारी
आखर- आखर ज्ञान की क्यारी।।
संपादकीय में गहरो चिन्तन,
लै आई "बुन्देली दरसन"।।

संपादकीय में आपनें हमाये मन की बात कै दई कै हिन्दी और बुन्देली संगै- संगै चल के अपनों रस्ता है, करें तो हिन्दी और बुन्देली दोईयन कौ भलौ हुइये। "सोला आने साँची बात है, जा खास, बात। आलेखो में अगर अपन बुन्देली संस्कृति संस्कारन खों हिन्दी में विस्तार सें समझाउत हैं, तौ विश्व के कोने- कोने में हम अपनी बात पौंचा सकत है। और ई सें एक फायदा जौं भी हुइयें कै बुन्देली समझवें वारे कौ हिन्दी ज्ञान बढ़ है और हिन्दी वारे खों बुन्देली शब्द सम्पदा के ज्ञान - वृद्धि हुइयें । आप अपने प्रयासन में पूरी तरा से सफल होय! जेई शुभकामना है।

भवदीय
सुश्री सुधा रावत 'क्षमा'
मो. नं. 8891114193

आत्मीय बंधुवर मनमोहन भाई,
सं. बुन्देली दरसन हटा (दमोह)

नव वर्ष की शुभ कामना सहित 'बुन्देल श्री' को अशेष बधाइयां जो बुन्देली दरसन' की विगत आठ वर्षों की निरंतर सार्थक संपादकीय साधना का सुफल है, जिसने सभी बुन्देलखंडियों का मन मोहक प्रस्तुतियों के लिये हार्दिक अपनत्व पाया। साहित्यिक पत्रकारिता आज भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जो अपनी संपूर्णता के लिये वर्ष भर का समय और श्रम मांगता है। इस अंचल में बसारी के 'बुन्देली बसंत' के बाद 'यही' बुंदेली जागरण के अलख को जगाए है। साहित्यिक गुटबाजी के इस युग में यह निरपेक्ष साधना स्वागतेय है।

गत अंक-2015 में आपने जिन आंतरिक विपुल कथ्य-कक्षों को छह आंचलिक खम्बों (स्तंभों) पर साधा है, वह अभिनंदनीय है। वर्ष भर उनका अनुशीलन किया। 'चौतरा, मचेरी, गादी, चौतरिया, अस्थाई और खटिया' जैसे ग्राम्य शब्दपीठों की पठौनी रास आई। यथा-

चौतरा- गांव -मुहल्ला के नीम तरे चबूतरा पै गप्प सड़ाकौ की निरर्थक हँसी ठिठोलीमय बतकाव संग बीच बीच में कछू काम धाम की भी सार्थक बातें- धंसान और सुनार (नदियों), लड़ैया पशु, हटा की रतन बजरिया और कच्ची ईट बाबुल देरी न धरियो के बाल विवाह निषेध जैसे करुणाद्र ललित निबंध सुंदरतम!

मचेरी गांवन में संझा- ब्यारी के बाद फुरसत में 'वड़े दा' की छोटी खटुंलया- आसंदी के सामने 15 रोचक नाटक, कहानी की कहन, 'हूंका दै दै पढ़वे सुनवे वारन की जिज्ञासा जगाए रए.... कि आगे का ?

गादी- (गद्दी) सामृं ज्ञान चर्चा में 14 विद्वान लेखकों के इतिहास, संस्कृति, बोली भाषा पे विचार मंथन के आलेख, बुन्देली की बुलंदी को बखान करत रए।

चौतरिया- गांव के धरों के आजू बाजू सकरी बैठक, सरस संग-साथ की होत है। ऊ पे 24 कविया गीतकारों के अंतर्मन की गूंज, बुन्देली और खड़ी बोली हिंदी में गूंजत रई।

अथाई - तो वड़े दरवज्जे के सामने की बैठक में आत्मीय पाठकों की भेजी चिट्ठी पातियां बांची, जो आज के मोबाईल के युग में कगज कलम बिसार, दुर्लभ हैं।

खटिया- अंत में थक हार कै आराम करबे को पड़ी है (खड़ी नई) ऊ पै पिछले साल 2014 की स्मृतियों की झांकियों के सुंदरर छाया चित्र पलटकर बुंदेली मेला की भूली बिसरी यादे ताजा करी।

कुल मिलकार ये नया स्तंभ- विभाजन, स्मारिका को 'अविस्मारिका' बनाने में सफल रहा, जिस साहित्यिक शिल्प के निर्वाह के लिए पुनः बधाई। सुंदर संतरंगी आवरण के अंतरंगी द्विपक्ष में लंबे विगत सत्संग की यादें ताजा करते 'बुन्देल श्री' संपादकजी और अ.भा. सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार' से समादृत साहित्य संत डॉ. श्याम सुंदर दुबे का छवि अंकन लघुकाशी हटा की गौरवान्विति की पुष्टि हेतु मणि कांचन संयोग रहा। सृजन पक्ष के साथ यदि गत बुन्देली मेले एवं अन्य वार्षिक साहित्यिक क्रिया पक्ष का भी संक्षिप्त उल्लेख्य विवरण हो, तो श्रेयस्कर होगा। धन्यवाद।

- डॉ. रमेश चंद्र खरे
एम.आई.जी.बी.73 विवेकानंद नगर
दमोह मों. 9893340604

परम आदणीय पाण्डेय जी।

''बुन्देली दरसन'' - 2015, अंक-8 को पाकर मन प्रसन्न हो गया। - यह अंक मन-मोहक ज्ञानवर्धक और मन-रंजन करने वाला- बुन्देली वेद की तरह है।

इस अंक में- उल्लेखित- अनुभाग- चौंतरा, मचेरी, गादी, चौंतरिया, अथाई एवं खटिया का विभाजन अपने आपमें गुदगुदाने वाले खण्ड हैं।

इसके अंतर्गत - श्री जगदीश किंजल्क जी का निबंध- 'बुन्देली लोक साहित्य में लड़ैया'' और श्री कैलाश मड़बैया जी का निबंध- ''कच्ची ईंट बाबुल देरी न धरियो'' - ने मन मोह लिया। कहानी खण्ड में - ''सूपाडंक'' ''रानीगंज बारी बऊ'' ''चिंता न्यारी-न्यारी- ''स्वामी जू''- नारी कौ साहस-जैसी कहानियाँ प्रेरणादायी और शिक्षाप्रद संग्रह है।

गादी के अंतर्गत - डॉ. रमेशचंद खरे का लेख- ''नाटक साहित्य - और बुन्देलखण्ड, श्री अजीत श्रीवास्तव के - ''बुन्देली अहाने'' - डॉ. बहादुर सिंह परमार का - विचारोत्तेजक लेख '' बुन्देलखंड में विकास पर्यावरण और पलायन'' हमें सोचने और कुछ करने की प्रेरणा देता है। श्रीमति प्रीति दुबे की - ''मुनमुन की चुलिया'' - श्रेष्ठ बन पड़ी है।

चौंतरिया के अंतर्गत- श्री एन.डी.सोनी ''विवेक'' की ''बुन्देली चौकड़िया - डॉ एम.एल.प्रभाकर की - '' खारी- खीर'' - डॉ. वर्षासिंह की- ''कुमुदनी - फूली वेला ताल '' - और डॉ. मनमोहन पाण्डेय जी का संकलन ''नख-शिख - वर्णन'' - के कवित्त और सवैया ने - साहित्य भूषण पं. श्री धनश्याम दास पाण्डेय ''दुज'' से आंतरिक परिचय करा दिया है।

''अथाई'' - कालम देकर - लोगों की प्रतिक्रियाऐं, पत्रों से उनके विचार जानने का समझने का - द्वार खोल दिया है।

''खटिया'' - स्तंभ में सुन्दर सजीले एवं सजीव चित्र देकर मानों कार्यक्रम में अनुपस्थित प्रत्येक व्यक्ति की - उपस्थिति ही दर्ज करा दी है। सचमुख यह पत्रिका ''बुन्देली -दरसन''- दीर्घकाल तक अपनी सफलता के झण्डे गाड़ देगी।

समस्त बुन्देली प्रेमियों से एक अनुरोध जरुर करना चाहूँगा- वो ये कि - आज के दौर में - विभिन्न बोली और भाषाओ ने - उन्नति कर ली है। यहाँ तक फिल्म निर्माण में बाजी मार जी है।

ऐसी स्थिति में - बुन्देली- बोली - क्यों पीछे रहे। - अपनी संस्कृति, अपनी परम्परा, रीति-रिवाज - पर - ''फिल्म'' निर्माण भी अवश्य होना चाहियें।

ओ.पी.रिछारिया
परकोटा, सागर
मो.नं. 9755811972

आदरणीय पाण्डे जी,

बुन्देली दरसन अंक 8 पढ़ने के बाद मेरा मन पुन : मुझे बुन्देलखण्ड की भूमि पर लौटने को विवश कर रहा है। पूरे बुन्देलखण्ड की संस्कृति, परम्पराएँ, तीज त्यौहार एवं प्राकृतिक स्थलों पर संग्रहीत साहित्यिक सामग्री और वहाँ के मधुरतम गीत एक ही पत्रिका में देख कर अभिभूत हो गई हूँ। ऐसा लगा जैसे वर्षों बाद फिर बुन्देलखण्ड के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया है ।

निश्चय ही आपका स्तुत्य प्रयास प्रशासनिक दृष्टि से उपेक्षित परन्तु प्राकृतिक सम्पदा और लोक संस्कृति की प्रचुरता से समृद्ध बुन्देलखण्ड की प्रतिष्ठा को स्थापित करने और उसे न्याय दिलाने में अग्रणी होगा ।

नव वर्ष की शुभ कामनाओं के साथ .

विजय लक्ष्मी विभा
साहित्य सदन
149/जी/2/चकिया
इलाहाबाद

सम्मान्य डॉ. एम.एम.पांडे जी,

सादर नमन्।

'बुन्देली दरसन' 2015 का अंक प्राप्त हुआ। चौतरा, मचेरी, गादी, चौतरिया और अथाई के अलग- अलग संदर्भों से जुड़ी बुंदेली आलेखों और रचनाओं की यह समिधा अपनी पावन सुगंध से आप्यायित कर गई, एक गौरव का अहसास जगा गई। आपके इस स्तुत्य प्रयास को प्रणाम तथा इस सारस्वत कार्य में जुटे सभी साथियों को बधाई।

पत्रिका के सभी निबंध अच्छे लगे। श्री कैलाश मड़वैया जी का भावना प्रधान आलेख ''कच्ची ईंट बाबुल देरी न धरियो'' तथा आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी का हटा पर लेख अपनी प्रभाविता छोड़ गए। लोक नाट्य प्रहसन और कहानियों की मचेरी में बुन्देली की कहन को बनाए रखने की एक सुन्दर पहल है। डॉ. श्यामसुन्दर दुबे जी ने तो 'सूपाडंक' जैसे शब्द की व्युत्पत्ति प्रहसन के माध्यम से जन जन तक सहज बना दी है। इतिहास संस्कृति और बोली-भाषा खण्ड में संकलित आलेख जहाँ लोक परम्पराओं, समाज और संस्कारों की गूढ़ता को सुलझानें में तल्लीन हैं, वही जीवन के सरोकारों को उद्घाटित करतीं लोकमन की भावनाएँ गीतों में अपने पंख पसारती उद्दीयमान हैं।

बुन्देली भाषा के विकास और उन्नयन के प्रति लेखकों की अभिरूचि स्पृहणीय है, किन्तु उसके उच्चारण और लेखन के बीच अभी बहुत कुछ सुधार की आवश्यकता है, जिसे आपको सम्हालना होगा।

कुल मिलाकर 'बुन्देली दरसन' वह दर्पण है, जो हमें हमारे अस्तित्व का बोध कराता है, और एक ऊर्जा प्रस्तवित करता है।

पुनः शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

डॉ. वीरेन्द्र 'निर्झर'
एमबी/ 120, न्यू इंदिरा गाँधी कॉलोनी, पार्ट-बी
बुराहनपुर 450331 म.प्र.

बुंदेली दरसन मेला

– पंडित रामकुमार तिवारी

बुंदेली दरसन खौं पढ़ कें, मन में भओ अनंद।
शब्दों में हम कें नहीं पा रहे, के कितनी आई पसंद।
मनमोहन पांडे भैया है, बुन्देली के बड़े ग्यानी।
संपादन कर कें उनने दरसा दओ, नैया कौनऊँ सानी।
बुंदेली कविता और कथा कहानी, सब इमें मिल जात।
जब-जब इखों पढ़वे खो बैठत नई छूटत है हाथ।
पुष्पेन्द्र सिंह भैया मेला भरवा कें, लूट रए खूबऊँ पुन्य।
हटा को बुन्देली मेंला जो देखत, होत बड़ो है धन्य।
श्यामसुंदर दुबे जी है, हटा नगर के गौरव।
साहित्य जगत में अपनी प्रतिभा को, भर दओं उनने सौरभ।
हम सब भैया बहनों खौं मिलकें, बुन्देलखंड को मान बढ़ावे।
बुंदेली भाषा खौं खूबई, सबको पढ़ने और पढ़ाने।
रामकुमार सबई जनों से जा केरए, जरुर मेला में अइयों।
और बड़े भाग्य से मिलत जो अवसर, इखों चूक ने जइयों।

(नरसिंह मंदिर के पास, दमोह)

कुठिया

बड़ी कला-कारीगरी से बनाई गई जा कुठिया, अपने भीतर भांत-भांत की कविताओं गीतों, गजलों की कई जिन्सें भरे हुए है। आप कुठिया का औंगा भर खोलें - काव्य के आंनद का निर्झर फूट पड़ेगा। बुन्देली और खड़ी बोली की कवितायें ई कुठिया में भरी हुई हैं। जब आप फुरसत में हो तब इनका आंनद जरुर लें।

कुठिया

खान-पान बुन्देली बारौ

– गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

मोटौ खवौ और पिहिरबौ, सबकौ जानों मानों
खान-पान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों
खाजे सुरमी और ठडूला, भरी कसारन गुजियाँ
बुंदी पपरियां खीर, इंदरसें, लडुआ खुरमा बतियाँ
भरी कठारीं पकवानन से, डार कें गड़ियाघुल्ला।
खाकें पेड़ा बालूसाही, कलाकंद रसगुल्ला
तितपावन पै रौनक बरसै, मनुआँ देख अघानों
खानपान बुन्देलखंड मौ, सुनियों तना पुरानों।
लापसी चीला चैंसेला उर, फरा गुलगुला खा लो
गतरी लुचई सुहारी खिचरी, खाकें जिउ जुड़ा लो
पुआ खीचला हलुआ माड़े और चूरमा तेली
मीड़ा खीच, बफौरा आँसे, गुड़ला बने बुँदेली
मगज मलीदा बिरचादी उर, तसमई खाय फलानों
खान पान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों।

मका जुनई बिर्रा की रोटी, हंतपउ उर लुचयाऊँ,
फुलका कैले बारे उम्दा, सुन लो और बताऊँ,
बरा मगौरा कढ़ी भात संग, चना दार बनवहयौ
घी, शक्कर पापर संग सानों फिन कालौनी खइयौ
बिसर न पाड़ौ, गुन बारी है, स्वाद लेव पैचानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों।
बरी बिजौरा और कचरियाँ, रूच रूच खइयौ भैया
बगरो मठा रायतौ पाचक, रित में खांये खबैया
भूँजा थुली महेरी लपटा, कुदई मठा संग डारी
उरगठियन कौ बनें, ओरिया, डुबरी मउअन बारी
बुन्देली कौ जनजन खावै, खावैं इयैं गुड़ानों
खानपान बुन्देलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

कनकौआ विसुआ औ चैरइ, मभुआ की जा भाजी
मैंथी पालक चेंच नोंरपा, सरसों जोई ताजी
चनन की भाजी खोंट बनावें, सूकौ कबउं भुरारा
कै दरभजिया खात निभौना, बदलै मन की धारा
खटुआ के पत्तन की चटनी, चीखौं तना अथानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों।

पैलो झला असाड़ी गिरतई, खोंट चकोंडा लावें
'बात' नसाउत है, जा भाजी ईखों बना कें खावें
पथरचटा पथरी खों काटै, लगै मकोय सलौनी
कड़मारौ जब बनें नौनियाँ, भूख बढावै नोंनी
सुरका ऊमर और गिजावर - खातइ जी लुभयानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों।

तुरई पड़ोरा मैनर भेड़ा, सेम करेला घुइयाँ
फतकुलिया मुँनगा की कौसें, दार में डारें गुइयाँ
चावल उर कचनार ककोड़ा, कटहल और मुरारे
खुटला और अंगीठा सूख दिखनई रऔं भिड़ारें
कुरकी कांकुन समा बाजरा, हिलबिलान भओं जानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों

लहसुन प्याज टमाटर गोभी, आलू कुमड़ा भूरा
फली ग्वार जनजतिया सलजम, गाजर कुंदरू भूरा
खाव गड़ैलू और कसेरू तूमा जामुन काली
तागत खौं तुम खाव बिसोड़ा और नैनुआँ खाली
ऐंसौ नोनों लगै जायकौ गुन-सोउत बर्रानों
खान पान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तक पुरानों

पनों आम कौ उर में सांहें, चोखौ भरी दुफीयाँ
भरवा कें भरता संगै खइयौ, कंडा सिकी गकरियाँ
धनियाँ मिरची नोंन में पीसौ संग पौदीना डारौ
मेंड पै होरा बालें भूँजौ, खाकें बाखत गुजारौ
बना बाँह कौ करौ मुड़ीसौ, सोव पिछौरा तानों
खानपान बुन्देलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों।

उसा कें कोंरी और मसूसा, भुन्टा गदा झंगोरौ
उसे बेर बिरचुन खटमिट्सौ, गुर में सतुआ घोरो
जो ससुआ कउं मित कौ खौहो, तौ ऊ तन भिद खैहे।
उर जौ जादां खैहौ तौ फिन, लोटा सुइ पकौहै
सोच समज कें ईसें चलियौं फिन ना दियौ उरानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, मुनियों तना पुरानों।

उसा के सकला उर महावरी, खाव सिंगारे रित में
धाम से आकें सुसता लइयौ, बातें धरियौ चित में
विलम जाय जव तना पसीना, हुइयै नें हैरानी
....
कैंत ऐंर सें गांठ बांदियाँ, जैसों सुनों व खानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियौ तना पुरानों।

चिरपोंटा उर खान चीमरी डँगरा सेन कचरियाँ
ककरी केरा लिही कलीदों, कमलगटा की छतियाँ
तेंदू चखा बेल करोंदा, छीताफल उर पोंड़ा
खिन्नी इमली बेल करोंदा, खावें मोंड़ी मोंडा
रित की रित में जो फल होंवें, ओई लगै सुजानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों

बिड़ई पंजीरी अंगरभुसा उर, गुड़धारी अमघोरा
खड़ई टका परसा उर दरिया, लचका कौ लमडोए
कबऊं बनें बिसवार के लडुआ और हरीरा बांकौ
व्याव में देत हते मिरच्वानी दिखै ना इत उत झांकौ
अब स्वादी खड़बरा दिखत ना, ऐंसौ आओं जमानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों।

भुरका लटा सिमैयां भंगरी, मालपुआ है मैंगो
निब्बू औंरा कैंथ पपीता, स्वाद सें खैयौ घैंगौ
बसंत बखत पै फरती जिन्सें होतइ भौतई नौनी।
खातन असर दिखाती अपनों सुदरें सूरत खौनी
पश्चिम बारी बैहर लगतई जौ मौसम कुमलानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों

स्यानन के अनुभव की सांसऊं, कोउ ने कदर ने जानी
खाबो पीबौ आंग लगत्तो, का कइये हम सानी
बदली हवा के रंग ढंग बदले, कीसों दइयें खोरी
परम्परा सब टूटत जा रइ, हो रइ सीना जोरी
ढला चला सब बदलत जा रऔ, गेरऊं हमने छानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों

गुप्तेश्वर कयें पीजा बरगर, नूडल तजौ बिरानों
चायनीज फुड हॉट डॉग खों, जन मानुस भैरानों
युवा आज बगयानों फिर रओ, सहख में बैहानों
गडुआ ग्वाँच लगत नैया जू, साँचै कहो अहानों
सोंदी माटी में रत नैयां, जाने क्यांये बिलानों
खानपान बुन्देलखंड कौ, सुनियों तना पुरानों।

769, गली नं. 17 जे.डी.ए. मार्केट
के पीछे, शांतिनगर दमोह नाका
जबलपुर मो. नं. 8225036728
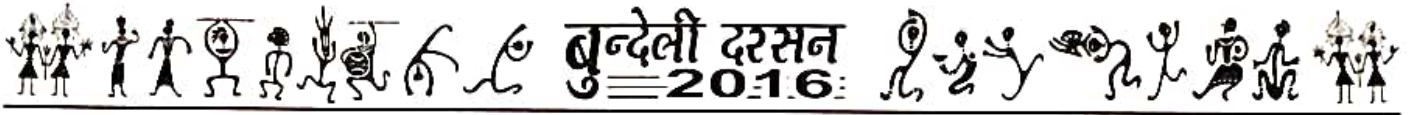
दुखिया बेटी

– डॉ. एम. एम. प्रभाकर

मै तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।
जनम सैं लें अब लौ दुख भोगे, कौन जनम के पाप।।

बालापन सैं पढ़बै जाबे, मन मोरो ललचावै।
ओरी ने तौ हाँ – हाँ कइती, दद्दा सुन इतरावै।।

कय पर घर कौ ईदन है, बिटिया चकिया चूलौ नाप।
मै तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

पाँच बैंन में भौत लाड़लौ, हतौ एक ठउ भइया।
होतन सैं बीमारी ऐसी, डूबी सबकी नइया।।

रो-रो कैं मर गई मताई पागल हो गयो बाप।
मैं तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

अक्की बक्की फिरी भौत दिन रिस्तेदारन द्वारें।
काऊ नैं ना दऔ सहारौ, उल्टे ताने मारें।।

अरी कुलच्छन भिखमंगू जा, सुन चढ़ आई ताप।
मै तो रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

हार मान कैं रोई अकेली, नई कोउ धीर धरइया।
चारउ बैंने घेर कैं बैठी, पूँछें काँ गव भइया।।

ओरी अब लौ काय न आई जिज्जी देव जुआप।
मैं तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।

सोच समज दिड़तियाई बाँद कैं, बैंनन खौं पुचकारौ
ओरी भइया हिरा गये हैं ढूढ़ै बाप विचारौ।।

हम संगै है रोव न बैंना, आएं कछू दिन बाप।
मैं तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

भौत दिनन में बाप आव सो, लै ओरी सौतेली।
ऊ कीं बातें कात बनत ना, जो कछू पीरा झेली।।

घरै आय सौतेली ओरी, फुसकी करिया साँप।
मैं तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

फुवा फुवा सीं हल्की बैंनें हिलक-हिलक कैं रोवैं।
बाप बदल गव ओरी के संग, बैने भूँकी सौवें।

झाड़ू पौंछा जूठे बरतन करे और के साप।
मैं तै रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

माई बाप कौ फर्ज निभाकैं, बैनन पालौ पोसौ।
पढ़ा लिखा उन खौं दै सुवदा, नई काऊ खौं कोसौं।।

पीरे हाँत करे बैनन के, दुख की माला जाप।
मैं तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

बियाव की मोरी उमर निकर गई, आव बुढ़ापौं लागै।
काऊ सैं जे बातें करवौं सुनैं दूर सैं भागैं।

प्रभाकर परमेसुर जानैं, दइ कौनउ ने सराप।
मैं तौ रई अंगूठा छाप, बैरी भये मताई बाप।।

प्राचार्य
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दतिया म.प्र. मो. नं. 9981943813

गॉवन को विगर गयो सरुप

– सुरेन्द्र श्रीवास्तव 'सुमन'

गॉव हते परवार से,
सुख-दुख में सब एक।
हवा पछैंया चल रई,
पढ़ लिख गओ विवेक।।
खो रए गॉव रुप को अपनों।
पनघट कुओं भये सब सपनों।।
कच्चे घर खपरैल मड़ैयां।
पक्के भए सब ताल तलैयॉ।।
चौंतरियन पे लैट्रिन बन गॅई।
चूल्हो चकिया सबई मिट गॅई
अगयाने अब लगें कितउं ना
चौपालिन पे दिखे कोउ ना।।
न पंचों की मानत कोउ नॅइयॉ।
जानत सबइ अपॅय को गुॅनियॉ।।
बैलन के जंगन की खॅन खॅन।
पॉसें पिटें न होवे ठन ठन।।
बैलगाड़ीं भईं पुरानीं।
टेक्टर सें सब होय किसानीं।।
गोबर कहॉ लिपे ऑगन में।
धुव रए फर्श रोज घर-घर में।।
टटियन के दिन लदगये,
धरें न अब खरयान।
हारवेस्टर काट रए,
उन्नत भओ किसान।।

दूध पियत ते भर-भर बेला।
देत हते सौ सौ डढ़पेला।।
पट्ठा सबइ लंगोटा भूले।
पतरी कमर लचक रए कूल्हे।।
सतुआ, लडुआ, पुआ, मलीदा।
बनें कहॉ चीला उर मीड़ा।।
मठा महेरी कढ़ी गकरियॉ।
कहॉ कलेऊ में दुदवरियां।।
दूध दही अब कहॉ खब रए।
स्याने मिल सब मठा बेंच रए।।
होरी राखी ईद दिवारी।
ईर्षा एहम ने सबइ बिगारी।।
साउन में ना झुला मेला
मादों में न खवै मसेला।
स्वारथ में माहोल बिगर रओ।
गांवन को रस प्रेम जर रयो।
फागें अचरीं भुजरियॉ,
सुमन गये सब भूल।
टी.वी.उर मोबाईल में,
फिर रए हॉसे फूल।।

ग्राम -कुसमरा,
पोस्ट- नावली, जिला -जालौन (उ.प्र.)
पिन 285121, मों.- 9415924778

'भोर भई'

– डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय

उठौकंत फूट उठीं,
सूरज किरनियाँ।
मुरगऊ दै बॉग उठौ,
डूब गई तरइँया।।
चीं चीं चैं चैं करयें,
चिखा चिरइयॉ।
पंख पसार उड़ चले
चरेऊ चुनइयॉ।।
सूरज की सुनहरी,
जो तों विखर गई।
अंध कौ भऔअंत,
उजरई पसर गई।।
सास बहू गोसली सें
निपट गई बउआ।
गोबर की धालें उठा,
लै गई मुनइया।
कर कलेऊ बखर लै,
खेत गये ककइया।।
बैलन की डोर पकर,
पैर लेओ पनइया।।
रोटी पानूं भर दुफर
ल्यायं भइं सइँयॉ।
प्यार सें खुवाएँ बैठ,
छेवले की छइयॉ।
सुस्ता कें कछू नेंक ,
तुस्तईं बखर नइयों।
ढील बखर, सॉझ भयं पै,
घरैं लौट कर अइयों।।

सरल साहित्य संगम
झाँसी
मो. 9452921298

बुन्देली चौकड़ियाँ

– रमेश प्रसाद तिवारी

ऑसी बब्बा की दातारी, पॉव कुलरिया मारी,
डग डग बांटी पूरी बाखर, सामल राखी मिंयारी।
भइया ने मांडारे भइया, किलपत फिरै मतारी,
ऊमर फोर नें पखा उड़ाऔ, बिदी गरैं। लाचारी।

लै रये बदले से चुन चुनकें, हम जाने गुन गुनकें,
फार पिछौरा हारे नैं तुम, सूत नें जानों बुनकें।
तन खों तार तार कर डारों, मन पाला सौ धुनकें,
'रमेश' बारे से भये सियाने, सुनी सुनाई सुनकें।

– सिविल वार्ड नं. 5 दमोह
मो. 9893094714

बुन्देली गीत

– मणि 'मुकुल'

तुम तो गुईया लाज के मारे, घर से निकरत नैइया,
जई तो एक उमर है ससरी, तनकउ मानत नैइया।
पनघट देखे, बगिया देखीं, देखीं ताल तलइयां,
देवन देखीं, बिरछा देंखें, काकी लेऊं बलइया।
जब लौ मिले हते ने तोलऊं, दो से एक भले थे,
होरी, सावन और दिवारी, घर-घर हिले -मिले थे।
जो कैसों है रोग प्रेम को, कैसी रीत जगत की,
बिना मोल मोती जब मिल रयै, फूटी रेख करम की।
चढ़ी उमरिया चढ़त की बेला, चढ़तई से गदरानें,
भरी गगरिया धी की जैसे, फूटी आंख न मानें।
लोग कहत है जात देख लई, पकरत उंगरी बहियां,
मोरो दोस तनक नइं सांचऊं, जानत राम गुसाइयां।

जी, -68, कृषि नगर कॉलोनी
आधारताल, जबलपुर - 482004
मो. 9893760200

मनुआँ

– डॉ. प्रेमलता नीलम

दिन पहार सों कढ़ गओ।
सूरज पसचम में ढ़ल गओ।।
गॉव के देवन मंदर में,
पुजारी पूजा कर रओ।
बखरी की दुलैया ने,
तुलसा ने दिलया धर दओ।
चैपालों में बैठक हो रई ढोलक,
ढोलक, मंजीरा बज रओ।
जुदंइया रातें मन तरफावें
सुअना पिजंरा सें के रओ।
ऊ खालें प्रान बसत हैं,
इतै देहिरा रे रओ।
नीलम नैन तकत इकटक
जग सुख निदिया सो रओ।

काव्यकुंज
बी 29 एलोरा कालोनी दमोह
मों. 9425406017

बुन्देली गीत

– विनोद मिश्र "सुरमणि"

गांवन से रीत रये कुआ
डारन से देख रये सुआ।।
पनहारिन पनघट पे अब नइ दिखात
नौंक झौंक सखियन की अ बनइ सुनात
सास बहू ना दिखे फुआ।।
बरा बरी गूंजन खौं कोऊ नइ खात
चुलिया टिपारन सें सबइ जी चुरात
आरन में सूख रये पुआ।।
टेसू की टेर मिटी, सुअटा की भोर
ममुलिया टूटी संग, झूला की डोर
खेल बचे ताष औ जुआ।।
बिना खिली कलियन खौं रौंध रौंध देत
रीत के रखइया खौं आन नइ देत
कैंसे तब पुजेंगे कुआँ।।

– संगीत गुरुकुल
मधुकर मार्ग, पकौरिया महादेव,
दतिया (म.प्र.)

" बिटियन कों कमजोर न मानो "

– श्री श्याम बहादुर श्रीवास्तव

एक

बिटियन कों कमजोर न मानों, उनें तनक पैंचानो।।
कौन बात सें हेटीं के रए, पैलाँ खुद कों जानो।।
उनकी सहनशक्ति-छमता सें सुख को भरत खजानो।।
लछमी रुप, उनें खुस राखौ, बिटियाँ धन न बिरानो।।

दो

बिटियन पै हर दोस न. डारौ, अपनो टेंट निहारौ।।
देत दहेज, लेत हौ तुमई, उनमें कछु न बिगारौ।।
अपने पाँवन उनें चलन दो, हुऐ कुल उँजयारौ।।
अपनी कमीं न थोपी उनपै, नोंनों 'श्याम' बिचारौ।।

तीन

सबई दोस बिटियन नै दें रए, लरकन कों सै दै रए।।
लरका चढ़ मंगरे सें मूतै, उनसें कछू न कै रए।।
धन-दौलत-घर लरकन काजें उनें छुअन नँइं दै रए।।
'श्याम' अपँए सुख के द्वारे सब, बंद करें खुद लै रए।।

चार

दत्ती मौंसौ जिन बिटियन पै, इतराओं जिन धन पै।।
बुरौ-भागलौ उनकें लानें, नोंनों सब लरकन पै।।
कर-फर कें दुभाँत मर जैहो, धर जै हौ कण्डन पै।।
सोच- समज पग धरौ 'श्याम' जू! लत्तउ जात न तन पै।।

ग्राम व पोस्ट - बिनौरा वैद्य
तहसील-कालयी
जिला- जालौन (उ.प्र.)
मो. 07408439308

होरी के दोहे

– डॉ. लखन लाल पाल

सरसों पीरी हो गई, विटप पात बेरंग।
मदन भूप के संग में, कोयल कौ हुड़दंग।। 1 ।।
हुरयारे अब न बचे, फागुन कौ संगीत।
अब तो चुप्पा रहत है, सुन-सुन फिल्मी गीत।। 2 ।।
पिचकारी में खुस हते, करत हते हुड़दंग।
अब तो पउवा के बिना, फीकौ है सब रंग ।। 3 ।।
बखरी खप्पर फोर खें, भान भगो सरपट्ट।
सियालाल की बाई तो, लेंय फिरत ती लट्ठ।। 4 ।।

मेघों का आतंक

पकी फसल है खेत की , ज्यों गददर सी देह।
बलात्कार की हौंस में, है फगनंउआ मेघ।। 1 ।।
लाज सुता की बचें की नहियां अब उम्मीद।
सरग धरें है रात- दिन, बदरा गुंडा ढीट।। 2 ।।
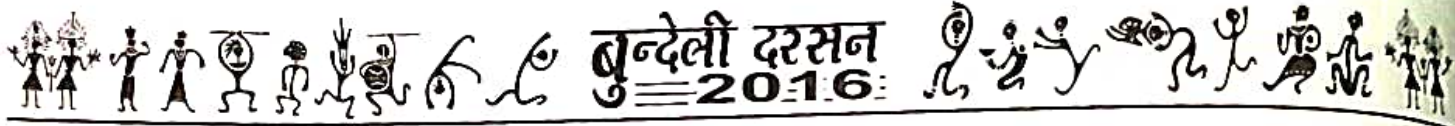
बुन्देलखंड

– विजयलक्ष्मी विभा

विजयलक्ष्मी विभा
जौ बुन्देलखंड है प्यारौ,
सब देसन सें न्यारौ,
तन मन ई पै करत निछावर,
जो निकरत गैलारौ ।
. बिन्ध्याचल की ई में घाटीं,
. हैं बिधना नैं ऐसीं पाटीं,
. कहूँ खड़ीं वे ऊँची पूरीं,
. भई कहूँ पै बौनी नाटीं,
इनपै खड़े रहत हैं तरुवर,
भरो रहत है चारौ।
. ई में नदियाँ छैल छबीलीं,
. पहरें साड़ी ही सी नीलीं,
. चलतीं सदा चाल में अपनी,
. समतल कहूँ ए कहूँ पथरीलीं,
चलतीं कहूँ घाल कें घूँघट,
कहूँ सरीर उघारौ ।
. चूँ चूँ करतीं कहूँ चिरैंयाँ,
. नीली पीली लाल मुनैंयाँ,
. सुअटा मोर पपीहा बोलें,
. कूक कोयलें लैंय बलैंया,
वन की सोभा बनत न वरनत,
कहै कौन बेचारौ ।
. कहूँ मौज सें विचरें नाहर,
. तिंदुआ, चीते, भालू, सामर,
. फिरें ससक मृग बारासिंघा,
. निकरत मिलें गाँव सें बाहर,
बोली बोलें मिल कें ऐसी,
एक लगावें नारौ ।

. खडे कहूँ पै दुर्ग पुराने,
. जिनने देखे उनने जाने,
. कितने वे इतिहास छिपायें,
. हरबोले कछु जिन्हें बखाने,
हजत रहो जो ढोल, परो हो,
जैसें ऊकौ घारौ ।
. इतै भये कवि तरह. तरह के,
. ऊँची नीची गहरी तह के,
. केसव, तुलसी, ईसुर जैसे,
. जिनके गीत गगन में चहके,
अबहुँ न जानै कितने कविवर,
तौलौ करकें धारौ।
. खजुराहो के मंदिर न्यारे,
. देख. देख सब दर्सक हारे,
. सिल्प कला है कैसी उनकी,
. कैसे उनमें रूप उभारे,
मूर्ति कला की कला अनौखी,
उनकौं देख विचारौ।
. दुर्ग अजयगढ़ कौ जौ देखौ,
. और लगाऔ मन में लेखौ,
. अन्तरूपपुर है प्रकृति नदी कौ,
. ई की सोभा देख सरेखौ,
कालींजर है ऐसइ नौनौं,
छवि कौ उड़त फुहारौ।
. छत्रसाल से वीर बुन्देला,
. उनकी कौन करै अवहेला,
. वीर भूमि है वीर प्रसवनी,
. लगो इतै वीरन कौ मेला,
आला ऊदल वीर इतइं के,

जिनकौ चलत दुधारौ।
. पन्ना कौ है नाम उजागर,
. जौ अनूप हीरन कौ आगर,
. जहाँ कहूँ खोदौ ए है निकरत,
. हीरन भरी इतै पै गागर,
भरी न जानें कितनी धातें
देखौ माटी टारौ।
. भये इतै पै चतुर चितेरे,
. गायक गुणी और बहुतेरे,
. सुनौ कुदउ की इतै पखावज,
. ग्रामवासियन के रमटेरे,
कौने.कौने में है गूंजत,
उनकौ सुर अनियारौ।
. जीनें जन्म इतै पै पायो,
. ऊनै अपनौ भाग्य मनायो,
. इतै न आंधी पानी कौ डर,
. कहूँ न धरती नै मुख बायो,
उज्ज्वल चमकत है नभ ऊपर,
खुलो रहत है द्वारौ।
. समय-समय पै ऋतुयें आतीं,
. धूप छांह जो अपनौ लातीं,
. करती हैं सम्पन्न धरा कों,
. अपनी-अपनी छटा दिखातीं,
सूरज चमकत चंदा चमकत,
चमकत तारौ तारौ।
. उठती हैं जब मेघ घटाएँ,
. इतै बरसतीं तब कविताएँ,
. लिखत चमक कें उन्हें बिजुरिया,
. गातीं उनकों मूक दिसाएँ,
होत इतै वो सब सुख दायक,
अँधियारौ उजियारौ।
. खेत और खितहर सब नौने,
. नहीं एक हू औने पौने,
. सोने सौ है उगलत धरती,
. खेती होवै कौने-कौने,
उपजत गेहूँ, चना, बाजरा,
चाँवर, जुनइ, जबारौ।
. उपजैं भाजी, भटा, तुरैंया,
. जंगल के फल बेर मकुइयाँ,
. बागन के फल कौन गिनावै,
. कहौ कौन सौ जो है नैयाँ,
महुआ, तेंदू, धवा, सगौना,
कटहल आम भिडारौ।
. लोग इतै के आल्हा गावें,
. रामायण कों पढ़ें पढ़ावें,
. चर्चा दिव्य इतै पै होवै,
. दिव्य ज्योति कों सदा जगावें,
खेलें-कूदें नाचें-गावें,
सब जन महिना बारौ ।
. जा धरती है धाय हमारी,
. माता जैसी हमकों प्यारी,
. दूध दही की कमी न ईमें,
. गैंयाँ भैंसें घर-घर सारीं,
देखौ आकें ई की सुसमा,
आऔ पथिक पधारौ ।
. जा धरती है केन्द्र धरा की,
. दर्सनीय है ईकी झाँकी,
. नभ हू करत आरती ईकी,
. जैसें हो अपनी प्रतिमा की,
हरी-हरी सब तरह भरी सी,
आकें सबइ निहारौ।

संपर्क - साहित्य सदन,
149-जी/2, चकिया,
इलाहाबाद - 211016
मोबा. 9451181423

बुंदेली गीत -

का कोऊ से कइए....

- डॉ. वर्षा सिंह

गैल कोन अब जइए
का कोऊ से कइए....

ऊंग न पाए बीज फसल के
भूम बिना जल तरसी
सूखे की जा मार परी है
बूंद ने एकऊ बरसी

पीर कहां लों सइए
का कोऊ से कइए....

दद्दा, बऊ, भइया, भौजी खों
सोस परो है भारी
बिन्ना को है ब्याओ अंगारे
नइया कछू तयारी

का दइए, का खइए
का कोऊ से कइए....

जोन-जोन से लई उधारी
दया ने करबे वारे
ठेन करत हैं 'कबे चुकैहो?'
संझा और सकारे

कैसे 'लोन' चुकइए
का कोऊ से कइए....

सांची कहत सबई हैं भइया
'तुमे अबे है जीने'
हिम्मत के सुई-डोरा ले के
अपनो फटो है सीने

अंसुआ बहो ने चइए
का कोऊ से कइए....

एम- 111, शांति विहार, रजाखेड़ी,
सागर (मध्यप्रदेश) -470004
मोबाईल - 9926641706

"चौकड़िया"

– कल्याण दास साहू 'पोषक'

भइया! प्रेम बड़ौ है जग में, बसा लेव रग-रग में।
सबसे प्रेम करौ सुचि -मन सें, लगै न काँटौ पग में।।
जितनी सक्ती होत प्रेम में, उतनी कितै खड़्ग में ?
"पोषक" अनुपम छटा प्रेम की, बिखरा दो डग-डग में।।
भइया! पियौ प्रेम रस पानी, मीठी बोलों बानी।
एकइ संगै रओ हिल-मिल कें, करौ न आनाकानी।।
बिना नाथ के बनों न बैला, हो जै भौतइ हानी।
"पोषक" सुख-आनन्द नसा जै, करियौ ना मनमानी।।

सबइ जनें हिल-मिल कें राव
रोटी-दार प्रेम सें खाव।
सबइ जनें हिल-मिल कें राव।।

आपस में हम कर रय दंद।
मजा लूट रय मूसरचन्द।।
चोंटिया लो न बकटौ भराव।
सबइ जनें हिल-मिल कें राव।।

1

निंगियो फूक कें अच्छी गैल।
धोइओं अपने मन कौ मैल।।
अंहकार खों मन सें भगाव।
सबइ जनें हिल-मिल कें राव।।

2

करिया करौ दुस्टन कौ मुख।
होंने जबइं हम सबखों सुख।।
भृष्टाचार सें करौ कनाव।
सबइ जनें हिल-मिल कें राव।।

अब नइं करियौ कभऊँ लराइ।
मोरी सब-भइअँन सें थराइ।।
बैर-भाव नदियँन में सिराव।।
बइ जनें हिल-मिल कें राव।।

4

जर सें करौ घृणा कौ नास।
हुइयै देस कौ तबइं विकास।।
धरम-करम निष्ठा सें निभाव।
सबइ जनें हिल-मिल कें राव।।

5

चार दिनों की जा जिन्दगानी।
मत करियो भइया मनमानी।।
"पोषक" जीवन उत्तम बनाव।
सबइ जनें हिल-मिल कं राव।।

- किले के पास, पृथ्वीपुर
जिला-टीकमगढ़ म.प्र.

ओड़े चटक चुनरिया

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव पीयूष

अंग अंग अल्हड़पन भरकें, भरकें नेह नजरिया
चलत चपल चंचल पनिहारिन ओड़े चटक चुरनिया
समर समर धरती पग धरती रै रै आगें बड़ रइँ
उनके अधरन की डारी सें, मृदु मुस्कान झड़ रई।
रुप रंग दमकत है ऐसें, जैसे चड़ी दुपरिया,
चलत चपल चंचल परिहारिन ओड़े चटक चुनरिया।
घैला पकरें खूबइ कसकें, उमरा देती नैचें
डोरी झटकत कम्मर मटकत, जब घट ऊपर खैंचें
धनियाँ की करधनियाँ
झूलत, लफ लफ जात कमरिया,
चलत चपल चंचल परिहारिन ओड़े चटक चुनरिया।
भार तनक गगरी घैला कौ रुप रास है भारी
कैसें कें चल पारइँ हुइयें, चलत फिरत फुलवारी
कोंमल कदम सुकोंमल तरवा, ककरन भरी डगरिया,
चलत चपल चंचल परिहारिन ओड़े चटक चुनरिया।
खेप धरें गगरी घैला की एक हॉत लयँ डोरी,
एक हॉत कें घूंघट खोलें, गोरी भौतइ भोरी
गागर छलकतन भींजत है तन निगतन खात लहरिया,
चलत चपल चंचल परिहारिन ओड़े चटक चुनरिया।
पग पायल छमकत है छम छम, रुन झुन रोंना बजरए,
काम समर कौ न्यौतौ दै रए, रनभेरी से गजरए
देखौ तौ चमकत आरइ है, बदरा बिना बिजुरिया
चलत चपल चंचल परिहारिन ओड़े चटक चुनरिया।

प्रभुदयाल श्रीवास्तव पीयूष
चित्रांश कालोनी वर्मा,
शैल पैट्रोल पंप के पास, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मों.9179982221

"हो जे है अनहोनी"

– रामानंद पाठक

ओजू काय करत मन मानी, होरई जीवन हानी।
हरें-भरें बिरआ काटें, बगिया कितै, हिरानी।।
पार-टौरिया सबई मिटादई, कैसी मती बौरानी।
अपने पॉव कुलइया मारत, नन्द न बरसे पानी।।
ओ जू सूखे ताल तलैयां, सुनो परोसन गुईयॉ।
नदियां नारे सबइ सूख गय, कुआ, बावरी कुइयाँ।।
ढ़ोर- बछेऊ प्यासन मर रय, प्यासी मरें चिरइयॉ।
'नंन्द' कहें पानी बिन तड़पै, रुठो काय गुसइयां।।
चिमनीं धुआं उगल रई कारो, छारव है अंदयारो।
कंक्रीट कौ ठाड़ौ करदव, तुमने जंगल न्यारो।।
नदियॉ –नारे गंदे करदय, पानी होगव खारो।
वातावरन प्रदूषित हो रव, नन्द कहे अब सारो।।
आई रितु बसंत की पावन, सबखों सुखद सुहावन।
झूम रहीं खेतन में बालें, टेसू फूले कानन।।
कुहकन लगी कोयलिया कारी, प्यारी डारन-डारन।
मांव उठे है आम मौंर सें, नन्द कहें मन भावन।।
उनसें कते न रांटा पौंनी, देखत में बऊ नौनी।
घूंघट ओट मचल 'रव चंदा, सूरत लगे सलौनी।।
धूम-घुमारो लांगा पैरें, करया में करदौनी।
'नंद' कहे न इनसे उरजो, हो जे है अनहौनी।।

की खॉं रस चाखन की चाह?

– पं. श्याम सुंदर शुक्ला

की खां रस चाखन की चाह?
कहॉ नंद नंदन रासबिहारी
ए! पॉड़े जू की खॉ लिखबैं
छंद कवित्त कहानी
नक्षा की नदियों सा जीवन
जिनमें नैहां पानी
हिरा गए सरवर पानीदार
बिना पानी सूकी फूलवारी
बिना छंद की कविता हो रई
बिन पिंगल के दोहा
चलो ऑन लाइन सब कर लो
बिना-भाव की सौदा
की खॉ कजरी आज सुहाबै
की खॉ नाच सुहाय दिवारी
गड्ड मृदंग की थाप थमीं सब
टिमकी ओर नगडियॉ
अब सब लाज सरम सड़को पे
खुली डरीं है किवड़ियाँ
मगन भए सूपनखा के संग
कहॉ अब रस बरसाने वारी
राशन के अनाज के लाने
छोड़े सबरे काम
मन में रावन खाँ बैठारें
चले औरछा धाम
धरम ईमान बजार बिकानें
कलयुग नें सब की मतमारी
कहॉ नंद नंदन रासबिहारी

शुक्ल सदन-गार्ड लाईन
दमोह म.प्र.
फोन नं. 07812-227652
मों.9826522901

पूरो अवा सेबरो कढ़ गओ

– रामस्वरूप स्वर्णकार पंकज

पूरो अबा सेबरो कढ़ गओ गुम्मा साजो नईयाँ।
नीं धर दई कच्ची माटी पे जो घर धरो गिरईयाँ।।

कोरी गई दिवारी होरी साऊँन मनावे कैसे।
कैसे बिटिया को बुलवा वे टका गाँठ में नईयाँ।।

जितने आये सनके रयेते सबकों सुखी बना दें।
राजताज सब बाँधे बैठे कोऊ सुनऊवा नईयाँ।।

मंहगाई बादर नो पोहची पेट पालवे कैसे।
भूके तो भूकैई बैठे घर में दानें नईयाँ।।

कभऊ न सुख सपने में देखो पूरी उमर बितादई।
कभऊ न उन्ना साजे पैरे पायन फटी पनईयाँ।।

कछू कछू लोगन ने पंकज घर पोलो कर डारो।
कैसे को जी या रओ ताकी नेंकऊ चिन्ता नईयाँ।।

हम तो करम ठोक के रे गये
हम तो करम ठोक के रे गये अपनीं बात संमारो

केऊँ जगाँ जा नये चलन ने घर को मांठ बिगारो
मैंने धुतिया धरी लयान के सोऊने ठुढ़या दई

नई नई साड़ी लेके आ गई आंग दिखा रओ सारो

साया आगर न पैरें होती सबई कछू दिख जातो
पट्टी भर को जो बिलाउज और बाकी आंग उधारो

छोटे बड़े सबई से बोले हंस हंस के बटकारो
दद्दा बाई ने समझाओ बोली कर दो न्यारो

घर को काम काज को करतई भरे डुकरिया पानी
डुकरा बोलो करम फूट गये कैसे होये गुजारो

भाँत भाँत के सामानन को जे बाजार से ल्या रई
ईनें आकें खोज मेंट दओ घर घूरो कर डारो

नेंक डाँट दओ तेल डार लओ जे छर छंद दिखा रई
अँगन बीच पसर गई आके रो रो के डिढ़कारो

गाँव गली के लोगन ने कई पंकज जाय सुदारो
केऊ जगाँ जा नये चलन ने मो. करवादओ कारो

भगत सिह नगर कौंच
ज्नपद जालौन (उ.प्र)
पिन 285205
मो.नं. 09936505493
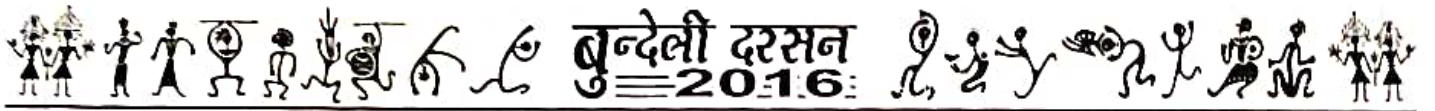
अपनौ नौंनौ गॉव

–पं. रामगोपाल प्रजापति 'अनजान'

जनम-भूम बुन्देली धरती ई कौ सबरे नॉव है।
बड़े- बड़े सहरन, कस्बन सें, अपनौ नौनौं गॉव है।।
रोज भुंसारे बॉग लगाकें, मुरगा हमें जगा देबै,
चलतइ ठण्डी हवा हमाओ, सबरौ आलस हर लैबै,
कडुआ तेल बदन में रगड़े, बैठक डण्ड लगावें हम
दूद, दही घी मनमानौ खा, काम करे नइँ लेबें दम,
हरी घास पै दौड़ लगाबे, हो कैं नंगे पॉव है।
बड़े-बड़े सूहरन, कस्बन सें अपनौ नौनौ गॉव है।।
बखरीं, दुआरे झांर पौंछ के कूरा घूरे पै डारें,
गोबर गिरै पथन बारे में, करें ऊजरी सब सारें,
पथनारी पाथै कण्डन कौ, लगीं कतारें मन मोहें,
अपने-अपने बिठा लगावें, थोप देत साजे सोहे,
फिरें गिल्हरियॉ औ पड़कुलियॉ, कौआ बोलत कॉव है।
वड़े-बड़े सहरन, कस्बन से, अपनौ नौंनौ, गॉव है।।
दुआरिन- दुआरिन, नीम पाखरे, पीपर, सीसम सरसावें,
बनीं लिडौरीं गइयॉ, भैंसे, बँदीं-बँदी सानी खावें,
तखत बमूरा कौ छपरा के नैचें बब्बा रयँ डारें,
गली पुरा के सबरे डुकरां, हुक्का की गुड़-गुड़पारे,
देख अजानै कुत्ता भूकै, करत बिलइया म्यॉव है।
बड़े बड़े सहरन कस्बन सें, अपनौ नौंनौ गॉव है।।
बाग-बगीचा हरें -भरें, फूल जामुन, बिहीं, अनार फरें,
तला भरे सब ढोर सबई के, पानी पियें हिलोर करें
गॉव बायरे कुआ ठसक सें पनयारीं पानी भरतीं,
एक बगल कूले के ऊपर, दो गागर सिर पै धरतीं,
सपरा खोरी करें घाट पै बरगढ़िया की छॉव है।
बड़े-बड़े, सहरने, कस्बन सें, अपनी नौनौ गॉव है।।
होरा, बाल, झुरियों भूजें बूँट चुनत मेंडन बैठे,
मठा, महेरी-चटनी खाकें, जुआँन चलें ऐंठे-ऐठे,
आम पपीता, गुर की भेली गन्ना कौ रस मन भाबै,
काड़र चैच, चनन की भाजी, डुबरी खात मजा आबै,
साम -सबेरें खेलें कूदें, करतई, चॉव-मॉव है।
बड़े-बड़े सहरन, कस्बन सें अपनौ नौंनौ गॉव है।।
चैमासें खरयान, गेंवड़ेंहरयारी सबरें छाबै,
ठाकुर बाबा , हीरामन कौ, पूजन भण्डारौ भांबै,
जाड़े में तापें कौड़े पै, किसा कहनियाँ कहें सुनें,
गरमी के दिन आबें मिलकें, गिल्ली-डण्डा गेंद धुने,
नौ- दुरगा 'अनजान' धरम कौ परब मनै सबरॉव है।
बड़े-बड़े सहरन, कस्बन सें, अपनौ नौंनौ गॉव है।।

अनजान साहित्य सदन
1172, राजेंन्द्र नगर,
उरई (जालौन) (उ.प्र.)
पिन- 285001
मो. 94507208750
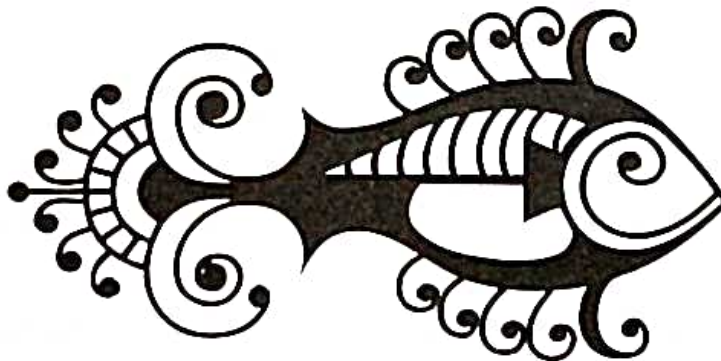
का हो राम करैंया

— मोहन शशि

ए कलजुग में जीबो दूभर, दिन में दिखत तरैंयां।
जानें का - का देखबे, का हो राम करैंयों।
चोखी बेहर लो को टोटो, सड़कन उड़ रई धूरा,
जित देखो उत कूरा- कचरा, गंधा रए हें घूरा।
पी-पी, पों-पों धू- धड़ाम, चोतरफी हल्ला- गुल्ला,
बेजई कान फोड़ रए भोंपू, मटकल छल्ली- छल्ला
अपनई पांव कुल्हाड़ी पटकें, फिकर काऊ खों नईयां।
जाने का- का बादो देखबे, का हो राम करैंयां।
तेल, चलों हे गैल अतर की, नोंन हो रहो मिसरी,
दूध, मलाई, मक्खन, घी नें, आंख खोल लई तिसरी।
जब देखो तब प्याज रूबावे, तन-मन-धन बारत हें,
साग तरफ नें देखों लल्लू, छुअत डंक मारत हें।
कमलगाटन को नांव ने लइओ, आंख तरेरत घुंइया।
जानें का - का बदो देखबें, का हो राम करैंयां।
अन्न, किरानों, कपड़ा लत्ता सब में लग गई आगी
ऊधो- माधो बमक रहें हें, तें दागी तें दागी।
चंदी, अब चन्दा में हेरो, सुन्नो सपनन देखों,
हीरा- पन्ना तारन गिनलो, जितने चाहो लेखों।
मौत ने आवे महंगाई खों, झुमटत बनी ततैयां।
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयों
हरी रही रावन नें सीता, बचो ने पानी देखा,
इतै रोज मोड़ी उठ रई हें, कोई खबर ने लेबा।
दुस्कर्मन के बाद जराबें, मारें झाड़न टांगें,
जगो भीम इन दुस्सासन की, अब तो चीरो जाघें।
भरे चोक में इनें बाँध दो, बरसन देव पनइंयां
जनें का- का बदो देखबे, का हो राम करैंया।
कितनऊं पेटन मारी जा रई, कितनऊ भूखी प्यासी,
कितनऊं खो दहेज खा रओं है, कितनऊ खों बदमासी
जब लो दब हो, तब लो बहना, सुनो दवाई जाहों
अरे! दुर्गावती कभे अपनी में झांसी बारी लाहो।
बाजों पे भारी पड़ जाओं, होकें एक चिरैयां
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।।
डाकघर, बैद, हकीम, कहें का, भारी गदर मची हैं।
झोला छापन ने तो लीला, साचऊं गजब रची हैं
गट्ठन जांचे, करबा ठग रए, मरज समझ नें पावें,
जब लो धन, तब लो मरीज हे, फिर मरघटा दिखावें।
जे मौतों के सौदागर हें, इनें ने बक्सों भैया।
जानें का - का बदो देखबें, का हो राम करैयां।
सेठन खों जगबाबें, चोरन से चोरी करबाबें,
दोनऊं हांतन लड़ुआ लोके, भोंरन से भन्नाबें।
काऊ के नें दोस्त, दुस्मानी भूल नें इनसे लइओं,
भले सिपाही होंए, पें इनखों साहब- साहब कइओं।
इनसें बचकें रहों, बिना समझे जे लटठा घुमइया।
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।।
भक्कम तनखा, नोकर- चाकर, मुफ्तई बंगला, कार,
फिरक पाप को घड़ा भरत हैं, जीवन खों धिक्कार।
जो जनता के लानें, केंसो हे जनता को राज,
जनता के नोकर, जनता खों साहब हें महरजा।
अपनाधी, अफसर, नेतन की तिकड़ी गजब गौसैयां।
जानें का-का बदे देखबें, का हो राम करैयां।।
किते गए जप तप व्रत, किते हिराने रे बरदान
केसें गुरू महान, चढ़ो जिनकी छाती सैतान।
करम फूट गए, पड़ा बया गई- भैंस भरोसे बारी,
जो जैकार लगा रहो तो, बों मोंह बक रओ गारी।
अजबई स्वांग रचैया, धोखा खा गए रें परखैया।
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।

दुस्मन चारऊ ओर देस के, रह-रह घात लगाबें,
हम अनेक पे एक, चना तो लोहे के चबवाबें।
अरे! भलाई जो चाहे, ने सोए सेर जगइओं,
और मौत गंधानी हो, तो आखें हमें दिखइओं।
बचन ने देहे दूर-दूर लो, पानी तुम्हें दिबइआ।
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।।
कगजन पे खुदबा रए बे तो, कुआं, बावली, तलबा,
कमऊं इते तो कमऊ उते, पानी खों हो रओ बलबा।
धन्न, पंच परमेसर प्यारे, खा रए बिना डकारें,
हमनें बोटे दई, तुम जीते, पे हम तो फिर हारे।
जे धरती के बोझ, रामधई! सगे कोई के नइंया।
जानें का '- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।।
रोजगार की गेरंटी! जे मिले छठे छैमासें,
पेट खाएं, अल्सेट, तबा लो कई दिन रहें उपासें।
घर भर के कर रहें मजूरी, तऊ नई होय गुजारा,
दिन ने चैन, रात नई निंदिया, हो रए सूख छुहारा।
बादर फटे धरे बादन के, बे खा रए कुलटइंआं,
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।
गाहक कमऊं, देवता रओ, अब फांसी मछरिया जाल,
आज फंसो फिर फसों, ने फंसो जमकें करत हलाल।
वाप भलो ने भैया जिनखों, सबसे बड़ो रूपैयां,
साड़े साती नई तो उनखों, शानि लग जाएँ अढ़ैया।
भारी करत मिलाबटखोर, पसरी डार डरैयां,
जनें का- का बदो देखबें, का हो राम करैयां।।
जो कलजुग हे कलजुग, कोई के फटे आंग ने डारो,
ओके गटा ने हेरें लाला, अपनी फुली निहारो।
देख पड़ोसी सुखी, दुखी अपने मन नें कर लइयों,
मंतक-मंक गुन- अवगुन, के फेरा पता लगाइओं।
जो सुख हो कारी कमाई को, नकल नें करिओं भैया,
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां ।।
बाप राज में गर्रा रए हो, आप राज जब आए,
जो लच्छन नें सुदरे तो, मोंह माखी लात लगाहें।
तुम का करहो परहित, अपने हित की जरा विचारो,
सीना तान अगर जीनें हो, तो ए तन खों गारो।
बखत कीमती गओ हांत से, बापस आनें नइयां,
जानें का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।।
ठानो, अब नें तनक नसेहें, अब लो बहुत नसानी,
ज ज्वानी, बा ज्वानी, लात मारदें निकरे पानी।
ठन कंधन पे भार देस को, सुनलो परम सुजान,
महावीर हो तुमई, तुमई हो कलजुग के हनुमान।
सबकों लेके साथ, देस की पार लगओं नैया,
जानें का- का बदों देखबे, का हो राम करैयां।।
अपने अपने हिस्सा हो, सबखों करने है काम,
बनें देस को भेस , के जब कर दो आराम हराम।
देस बनानें, देस सजानें, मिल- जुज रक्षा करनें,
एकें खातर जीनें सबरों , एके खातर मरनें
एहे बनोनं हे हम सबखों, फिर सोने की चिरैया,
जानें का का- का बदो देखबे, का हो राम करैयां।

गली नं. 2 शांति नगर, जबलपुर
मोबाइल नं. 94246-58919

बुन्देली चौकड़िया

– दयाराम

बंदना

भैया ज्ञान गठरिया दै दै, दै दई कै दै कै दै
चरनन डरो उठों न जौ लौ, ज्ञान घुटी न पिवै दै।।
मन मरूख ईखा दै चनकत चरनन सोउ लगै दै।
कर दै कृपा शीश कर घर कें, जग में नाव करै दै।
ज्ञान-किरन एकई उदै हिरदै, सब अंदयाब मिटै दै।
चरनन डरो शीश पै मोरे चरन घूर विखरै दै।।
मन जौ तोय रहै दिन रातन, ऐसी गैल धरै दै।
'दयाराम' भारी मूरख है, सुर दैया सिखलै दै।।

गारी

गारी विष कौ रोज विचारी, देय कभऊँ ना गारो।
गारी देय बात बड़ जावे, गोली चलै अगारी।।
गारी सें भारत हो जावै, सिजवा देतई गारी।
'दयाराम' जिभ्या सै कबइ, नही निकारो गारी।।
नारी कभऊँ लगत है प्यारी, सुनतन हों खुश भारी।
हो ज्योनार, बरतिया सबरे, सुनवें का का गारी।।
हंस पुसकात खाय रये नुकती, जीसें मीठी गारी।
उतैभईना रार प्रेम भओ, सुनत आई संसारी।।
'दयाराम' ससरार बसौ तौ, सुनने रोजई गारी।।

बोली

चाय कोउ बच जावै गोली सें, बचै नहीं बोली सें।
बोली सें भारत भओं सोचे, बन गये हरी बोली सें।।
बोली की मैमा सब जानें, काड़ौ मुख-झोली से।
दयाराम सुंअँना बस होतई, जेई मीठी बोली सें।।

परिवार

जादा जॉ संतान दिखानें, वेई दुखी जमानें।
किल मची रात रातन भर, रोजई होत घिंगावे।।
लाख तरइयां टिमटिम करवै, डूवा चंदा चमकायें।
'दयाराम' इक शेर बवर हो, सौस्यार का चाने।।

राष्ट्रीय

नाहम डरें कोउ के डर सें, कर लें जग जवर सें।
जो कोउ ऑख उठाय हिंद पै, खोज मिटा दे जर सें।।
भारत ज्वान जगत में जाहर, दुश्मन दलें हुनर सें।
'दयाराम' भारत के बालक, ना डरवें नाहर सें।।

अध्यक्ष
राष्ट्रीय बुन्देली विकास परिषद
स्यावदी, जिला झांसी (उ.प्र.)
मो. 05179261697

बंडा

बंडा में टटिया होत हैं। चौकोर और गोलाई वाले बंडा बनाये जाते है। अनाज की जिन्सें इनमें कछू दिनन खों रखी जाती हैं। ईमें आप नाटकों के रंगमच खों देखें-परखें। नाटक के अभिनय का रसास्वदन करें। नाटक के प्रसाधनों की सुगंध लें। ईमें नीम और भूसा सब मिल जैहे। इने पढ़कें अपनो और अपने समाज को स्वास्थ्य बनायें 'मुस्कुराये' बंडा आपकी सौन्दर्य चेतना खो घुन और मूष से बचायेगा, हमारा दावा है।

बंडा

क्र.	लेखक		शीर्षक
1.	डॉ. श्याम सुन्दर दुबे	–	एक चिरैया उड़ी अग्गास
2.	भास्कर सिंह मणिक	–	मधुकर शाही तिलक

(प्रस्तुत एकांकी बुन्देली बोली और बुन्देली परिवेश पर आधारित है। बुन्देलखण्ड की नारी जीवन की बदलती मानसिकता को यह एकांकी अपनी विषय वस्तु के माध्यम से व्यक्त करता है। प्रसाद जी ने लिखा था -

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पदतल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में ।

यह एकांकी जीनन के सुंदर समतल को व्यक्त करता हुआ - नारी के उत्कर्ष को प्रकट करता है। इसमें दादी- बहू और बेटी ये तीन नारी पात्र हैं - दादी की दृष्टि परंपरा से प्रेरित है - बहू वर्तमान की स्वीकृति है, और बेटी वह मशाल है जो बुंदेलखण्ड की बेटिओं को राह दिखाती है। अपनी जिद और लगन से एक पिछड़े गाँव की गरीब बेटी कैसे डॉक्टर बनती है- आप इस एकांकी के माध्यम से देखें)

एक चिरैया उड़ी अग्गास

– डॉ. श्याम सुन्दर दुबे

गॉव का दृश्य

(घर में चारपाई पर एक बूढ़ी महिला बैठी है। एक अधेड़ महिला झाड़ू लगा रही है)

(दोनों में संवाद चलता है)

सास-भौत दिनों से सोच रई ती के नौनी तो सें कछू वात करें।

नौनी- (झाड़ू एक तरफ रखती है सास के नजदीक पहुँच जाती है)

का वात या कानें - तुमाई कबउँ बातें नई बड़ातीं, ने काम ने धाम-बस वातें करवा लो, बताओ का बात है। तुमाई सुन ले फिर तो हमें काम करनई है। बताओ जल्दी

सास (बड़ी बऊ) - अग्गास पत्तार ने बर्राओ बहू तुमाए हितई की वात या कै रई हों!

नौनी :- (हथेली ठोड़ी से लगाकर)- तुम हितई की बात तो करती ई-ऊ बारौ हमें खरीदने हतो पे तुमने कई के हमाओ कछू काम को नईया- तो हम मान गये। अब बंद हो नई रस्ता कड़बे गेल नई बची। जीने खरीदी है कैरओ है इते सें रस्ता बंद अब बताओ तुमने कित्ती अच्छी कई ती।

सास (बड़ी बऊ) - हाथ ने मुठी फरफरा उठी। पईसा धेला हो तो तबई नें खरीदती।

नौनी :- सब हो जातो पे तुमाये मारें कछू पार परे काय कै रई ती। बताओ तो

सास- (बड़ी बऊ) देख अपनी गौरा पंद्रा की हो गई एई अघन में पन्द्रह पूरे हो जेहें पे तुमें ऊके विआव की बिल्कुलई फिकर नईआ। देख नौनी, स्यानी बिटिया घर में नई समात। आसों परसुआ से कह दे कि अच्छो सो घर बर खोजे और चैयॉ-मैयॉ पार दे।

नौनी- चैयॉ-मैयॉ पार दे- घर में चार चना नईयॉ और इने परी है बिटिया के व्याव की।

सास (बड़ी बऊ) - कन्या कारज को मन बना लो

फिर तो रुपैया बरसत है बड़ी बहू ऊपर सें। हमने देखो चार ब्याव निपटाए और इत्ते आलीसान के कोऊ के देवे, गाँव बारो के-करे कोउ ने ऐसे ब्याव-और हमाये पास भुंजी भांग ने हती पे सब होत गयो।

नौनी :- तुमाये जमाने की भली चलाई अब तो लाखन लागत है- लाखन रुपैया!

सास (बड़ी बऊ) - लगन दे, तें जो सब मोरे ऊपर छोड़ दे - मै करहों बड़ी बहू इंतजाम- नौनी मैं तो ईसे कात हो के मोरे कछू भरोसें नईयाँ के कबै उठ जाऊँ ई पिरथवी पे सें।

कबे ऊपर सें बुलौआ आ जावे।

रई बात पैसा कि सो मरो हाथी लाखन को होत है और हम ऑय मरे हाथी, हम गानों गुष्टो बेच दे हैं और गौरा को ब्याव करके मर हैं।

नौनी :- बड़ी धन्ना सेठ बनी है। कबउ भओ के बहू खों बाजार से लाकें समोसा खिला दे।

सास : (बड़ी बऊ)- जादा आला ने बाचों जोन हमने कई सो बताव बड़ी बहू-का कै रई हो'

नौनी :- हम का जाने अपने लरका से कहो, बेई जाने- बेई बतै है!

दृश्य

(घर का दरवाजा चबूतरे पर परसुआ ढेरा कात रहा है- बड़ी बऊ पहुचती है।)

सास (बड़ी बऊ)- अरे परसुआ ढेरा कातत बाल सफेद कर लये पे तोये अक्कल ने आई।

परसुआ :- बऊ कैसी बाते कर रई! खेती किसानी में तो निपुर गई जिंदगी! में ने कितनों काम नोई करो बऊ बड़े-बड़े पहाड़ तो ठेले और तुम के रई के अकल ने आई।

अच्छा बताओ कैसी अकल नईं आई ?

सास : (बड़ी बऊ) - कबऊँ गौरा कोदाई देखो!

परसुआ :- रोजई देखत हों ?

सास (बड़ी बऊ) - का देखत कछू दिखात है- तोरी तो भीतर तक की फूट गई हैं!

परसुआ :- का हो गओ, कछु बताव तो, ऐसे काय बोल रई!

सास (बड़ी बऊ) - का भओ, ब्याव करने है, गौरा को और जल्दी देनी, लड़का खोजो। ऐई बैसाख में भाँवरें पारने हैं। बेटा जियत जागत जो साको और देख लेंवें। हमारो कछू भरोसो नईयां, कबे आखें मुँद जाये।

परसुआ :-बऊ कै तो तुम ठीकई रई। अबै अपनी गौरा पन्द्रा की नई भई। दसवीं की परीच्छा ऊखो देनेंई है। पढ़बे में अच्छी है सो ऊखों पढ़न दो।

सास (बड़ी बऊ) - बड़ी परने वारी लड़किया पैदा करी है! कितऊ पढ़ लो, पे चूल्हे में मुँह तो देनई पड़ है।

(नौनी बीच में आ जाती है। स्कूल की ड्रेस में है। अपना किताबों का बेग रखती है। घड़े से पानी निकालकर हाथ साफ करती है)

गौरा :- लरका -बऊ को का गुनतारो चल रओ। हमें तो सोई सुनाओ कछू।

परसुआ :- जाओ तुम ई में नें परो। अपने काम को देखो, स्कूल में कछू काम मिलो होय करो।

गौरा :- अबई पढ़के आये और फिर पढ़ने बैठ जावें जो का भओ।

सास (बड़ी बऊ) - गौरा जा कछु खा पी ले, फिर पढ़बै बैठिये। हम तो अपनी चिन्ताएँ बता रये ते तुमाय बारे खों।

गौरा : - तुमाई का चिन्ता है, हमई तो सोई सुनें कछु'।

सास (बड़ी बऊ) - तुमई री चिन्ता है- बिटिया।

गौरा :- हमाई कायकी चिन्ता ऐसी .... अच्छी तो पढ़ रई हों, खेलकूद रई हों। (दादी से जाती है)

सास (बड़ी बऊ) - तुम खेलकूद रई, पढ़ लिख रई' सो अच्छो है, पे तुम अब लड़की जनी नई रे गई। बिटि

तुम बड़ी हो गई हो।

गौरा :- काय नई रे गई लड़की जनी............का लड़काजन हो गई हों।

सास (बड़ी बऊ) - नई री। ते गलत समझ रई - अब तुमाई जा ऊमर खेल-कूदने की नईं रई। ब्याव सादी की हो गई है..................तुमाव पढ़बो-लिखबो, कूदबो बंद। भॉवरे पारबे की चिन्ता है।

गौरा :- तुम सोई बऊ का ले बैठीं। अरे! तुमाय जमाने में होतती व्याव् शादियॉ जल्दी! अब नईं होती। अब तो पढ़ाई -लिखाई पूरी करबे के बादई होती है।

परसुआ :- गौरा जा अंदर जा काय खों बऊ की बातन में पर गई। बऊ तो बर्राती राती हैं।

दृश्य

(गौरा का रिजल्ट आ गया है, वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है)

परसुआ :- देख अम्मा अपनी गौरा फस्ट किलास में पास भई है- हमें तो उखों डागदर बनाउने है।

नौनी :- डागदर बनाबौ हॅसी खेल समझ लओ का.........ठाड़े मोल बिक जेहो।

परसुआ :- नौनी तेने का नौनी कई" अब में बिकई के दिखैहो........पे लड़कियाँ खों डागदर सो बनाउने है)

(बैंक के मैंनेजर एकाएक बीच में आ जाते हैं)

मैंनेजर - काय हो रओ है परसू आज तो सबई जने खड़े हैं।

परसुआ :-जय राम जी की साब! आप तो ऐसे आ गये के का कात है जिमि करुना मॅह वीर रस! अब देखो न हमाई बिटिया ने फस्ट किलास में पास करी है परीच्छा और कै रई है हमें डागदर बनने।

बैंक मैंनेजर :- अच्छी वात है..जरुर डॉक्टर बनेगी तुम्हारी बेटी।

सास (बड़ी बहू) - हमें नई बनाने डागदर-फागदर, हमें तो अपनी गौरा को ब्याव रचाउने है।

गौरा :- पगली दादी! पैले साहब की बातें तो सुन ले।

नौनी :- साब बताओ कैसे बन जैहे डागदर!

बैंक मैंनेजर :- इसे बैंक से पढ़ाई के लिए कर्ज मिलेगा। कोई ब्याज नहीं, कोई गांरटी नहीं।

परसुआ - तो बताओ का करने आ है ई के लाने!

बैंक मैंनेजर :- कछू नई, तुम तो बैंक में आ जाओ हम सब समझा देहें और कर देहें।

नौनी :- चलो साब चाय तो पी लो।

बैंक मैंनेजर :- नहीं मुझे देरी हो रही है। पर गौरा को डाक्टर बनाना है- जा बात पक्की रई।

दृश्य

(कोचिंग संस्थान के एक कमरे में दो सहेलियाँ रह रही हैं गौरा और शिवानी दोनों गाँव से है। परदेश में एडजस्ट करना सीख रही हैं। सुबह का वक्त है। गौरा के हाथ में मोबाइल है, वह माँ से बात कर रही है)

गौरा :- हलो : माँ सब ठीक है। पे मन नईं लग रहो है। एकदम सब नओ नओ है। तुमाई, बऊ की और पापा की खूब याद सता रई है।

तुमाए लडुआ और खुरमा तो अबे तक चल रहे हैं। उनई को नाश्ता करत हैं। हमारे साथबाली लड़कियाँ भी घर से पकवान लाईती, मिलजुल के खा रई हैं। पें माँ सब बदलो बदलो है। डर भी लगत है और जो सोई लगत के हमने कौनऊ कान्वेन्ट स्कूल में काय ने पढ़ाई करी। इते तो मारे अंग्रेजी के कछू हैई नईयॉ । हम तो देहाती .....हो गय। अच्छा माँ फोन रखती हूँ।

शिवानी :- किसका था?

गौरा :- माँ से बात कर रई ती।

शिवानी :- पगली ये सब बताने की क्या जरुरत कि अच्छा नहीं लग रहा - देहाती बनकर रह गये आखिर अपने

परिवार वालों को क्यों दुखी कर रही हो।

गौरा :- हाँ ये बात तो है, चलो अब नई बतायेगें कछु। अब इस रन में हमीं जूझेंगे! जरुर जूझेंगे!

शिवानी :- ये हुई ना बात, आओ साथ-साथ गायें-

गीत

हम जूझेंगे जीवन रन में!
जूझेंगे हम जीवन रन में!
कितनी ही आपदायें आयें
कितनी ही आधियाँ सतायें!
नहीं डिगेंगे अपने प्रण में!
हम जूझेंगे जीवन रन में!

गौरा :- गाती रहेगी क्या- कोचिंग का समय हो गओ है। जल्दी जल्दी तैयार हो जाओ। समय से ना पहुँचे तो पीछे बैठना पड़ेगा।

शिवानी :- हम जूझेंगे जीवन रन में!

गौरा :- बाद में जूझ लेना अभी क्लास अटेण्ड करना है!

दृश्य

(गौरा बेग लादे कोचिंग को जा रही है। दो लड़के एक जगह खड़े घूर रहे हैं)

एक लड़का :- देख ये लड़की देहात की चिड़िया है, क्या उड़ रही है? इसे जाल में फँसा ले।

दूसरा लड़का :- हाँ यार ये देहाती चिड़िया जल्दी जाल में फस जाती हैं। इन्हें शहर के सपने दिखाव और फिर चाहे जैसा नचाव।

एक लड़का :- तो चल नचाते हैं।

(एक लड़का गौरा के पीछे कुछ फासले से चलता है। दूसरा लड़का एक जगह खड़ा-खड़ा मोबाईल से चित्र लेता है। लड़का सीटी बजाता है गाना गाता है।)

(ये जानें जिगर ....कहा चली).............।

एक लड़का :- रुको-रुको में तुम्हारे लिए अपना दिल लाया हूँ ....ये रुको ....इसे तो लेती जाओ जानेमन।

(गौरा भयभीत सी जल्दी आगे आगे दौड़ती सी है, वह हॉफ रही है, लड़का उसके करीब पहुँच जाता है।)

एक लड़का :- क्यों डर रही हो! मैं तुम्हारा दिलदार हूँ। चलो तुम्हें जहाँ कहोगी घुमाँउगा फिल्म दिखाउँगा होटल में ऐश कराऊँगा।

(लड़की सहम जाती है। इधर उधर देखकर कहीं छिप जाने की चेष्टा करती है, तभी पीछे-पीछे साईकिल पर शिवानी वहाँ पहुँच जाती है- साइकिल रोककर खड़ी हो जाती है)

शिवानी :- अरे! गौरा अभी तुम यहीं हो।

दूसरा लड़का :-लो एक और आ गई। चलो ठीक है- एक तुम्हारी, एक हमारी।

(शिवानी साईकिल छोड़कर चप्पल उतारती है और लड़के के सिर पर मारती है। लड़का भागता है। गौरा में भी साहस की तरंग सी उठती है। वह भी एक लड़के को एक चाटा जड़ देती है। दोनों लड़के भाग जाते है।)

हम जूझेंगे जीवन रन में।
जूझेंगे हम जीवन रन में
कितना भी हो दुर्व्यहार,
दुष्टदलन को हम तैयार!
साहस भरना है मन में!
हम जूझेंगे जीवन रन में
जूझेंगे जीवन रन में
जूझेंगे हम जीवन रन में!

दृश्य

(गौरा का पी.एम.टी. में चयन हो जाता है रिजल्ट की खबर उसे गाँव में ही लगती है)

गौरा :- पिताजी हमाओ चयन हो गओ- मोबाईल पे खबर आई है।

परसुआ :- मोरी बिटिआ डागदर बन गईं- (वह नाचने लगता है, बड़ी बऊ और नौनी बऊ निकलती है।)

गौरा :- (बड़ी बऊ से लिपट जाती है।)

दादी हम डागदर बन गये। जै देखो! हमारो नाम आ गओ है!

बड़ी बऊ :-बा तो ठीक है तुम डागदर बनो चाये जो बनो। पे हमें तो तुमओ व्याव करने है। हमाओ कछु भरोसे नईया कबै चले जै हैं- बस व्याव की लालसा है सो अगले वैसाख में करने है।

गौरा : 'नई बऊ अब हमें ब्याव अबै नई करनें। काय सें के हम डागदरी पढ़ रये है। सबसे पहले तुमई रो इलाज करने की ठानी है- और सच्ची मानो बऊ तुमें सौ साल जिआ के छोड़ है।

नौनी :- गौरा तुमने हमें तार दओ! कुल कुटुम्ब खों तार दओ। असफर में नाम हो गओ तुमाओ। अब हमाई खुशी को और छोर नईया

परसुआ : 'तो बटवा दे बतेशा और हो जान दे कथा- जा ऊपर बारे की किरपा सोईआ!

गौरा :- ऊपर बारे खौं आप जानौ, जा तौ हमाये गरीब माँ बाप की किरपा है। हमाये ऊपर ....

सब मिलकर गीत गाते है।

हम जूझेंगे जीवन रन में
जूझेंगे हम जीवन रन में
जीत का झंडा लहरायेगें
गीत विजय के गायेंगे।
कभी न हारेगें हम रन में!

- चण्डी जी वार्ड
हटा जिला दमोह

एकांकी -

मधुकर शाही तिलक

– भास्कर सिंह माणिक

(कोरस गीत)

राखी लाज सदा वीरननें, बुन्देल खण्ड के पानी की
आओ तुम्हें सुनाये कहानी, मधुकर तिलक निशानी की
हुँमायूँ बाबर सूरी भये, पराजित ई धरती पें आकें
झाड़ पहाड़ पथरीलें पथ इतिहास बता रये गा के
चन्देल बघेल ई माटी की गाते है, गौरव गाथा
आओं तुम्हें सुनायें कहानी धीर वीर बलिदानों की
राखी ....
तप कर्म भूमि बुन्देलों की बुन्देलखण्ड ही रही सदा
आन वान रखने के लानें तलवारें चमकत रही सदा
जान भले ही जाये लेकिन शान न मिटने पायें कभी
आओं तुम्हें सुनाये कहानी सारन्धा हाड़ा रानी की
राखी ....
त्याग शौर्य की लिखी कहानी झलकारी झाँसी रानी नें
ई धरती को पानी राखो हरदौल लला सैनानी नें
सद्‌भाव पूर्ण वीरत्व भरो बुन्देलखण्ड के कण कण में
आओं तुम्हें सुनायें कहानी केशव तुलसी ज्ञानी की
राखी ....

पात्र परिचय

1. राजा मधुकर शाह जूं - (ओरछा नरेश)
2. केशव जी- (राजकवि एवं ओरछा नरेश के सलाहकार)
3. मंत्री- (ओरछा नरेश का)
4. राय प्रवीन- (ओरछा नरेश की राजनर्तकी)
5. अकबर- (दिल्ली का शासक)
6. वीरबल- (अकबर का मंत्री और सलाहकार)
7. सेनापति- (अकबर का विश्वासपात्र अंगरक्षक)
8. दरबारी- (दो)
9. सन्देशवाहक- (अकबर का दूत)
10. कब्बाल-

प्रथम दृश्य

(अकबर का दरबार लगा है, वीरबल और दरबारी बैठे हैं)

अकबर- मंत्रीवर कब्बाल पेश किए जावें

(कब्बालों का पेश होना कब्बाली पेश करना)

कब्बाल- हुजूर की खिदमत में हमाओं सलाम कुबूल होवें

कब्बाली- दरबार में बैठें सरकार हमायें
सरताज हमायें सरकार हमायें

शेर (1)- खोला मूं जिसनें सरकार के खिलाफ
मिटा देते है, उसे सरकार हमायें
दरबार ....

(2) जो राज न मानेंगे तामीर हमारी
वे राज मिटायेंगे सरकार हमायें
दरबार ....

(3) जिसें भी चाहा उसें अपना बना लिया
रखते ख्याल सबका सरकार हमायें
दरबार ....

अकबर- मंत्रीवर कब्बालों को सौ- सौ मोहरें इनाम में

दी जायें

(सलामी देकर कव्वालों का जाना)

अकबर- वीरबल आज की कार्यवाही की जावें

वीरबल- शहंशाहों के शहंशाह हिन्दुस्तान के बादशाह आपके हुकुम को ठुकरावें की हिम्मत की में हैं और को की जुर्रत सरकार के सामनूं मूड़ी उठावें की।

शेर- जो आ के सरकार से टकरायेगा
वो निश्चय ही खाक में मिल जायेंगा।

सेनापति- हुजूर गुस्ताखी माफ होवें। हुजूर पूरे हिन्दुस्तांन ने आप के हुकुम की तामीर की लेकिन!

अकबर- लेकिन! क्या? पहेलियाँ क्यों बुझा रहें हो साफ साफ कहों।

सेनापति- हमने अपनें कानन से सुनी मधुकर शाह जूँ कै रयैते हमायें राज पें काऊ की हुकूमत नई चलत एक नई कई अकबर आ जावें। हम मधुकर शाह है, मधुकर शाह।

अकबर- (गुस्से में) क्या कहाँ वा की जा मजाल

सेनापति- हाँ सरकार

अकबर- अगर वह दरबार में नहीं आयेगा, तो अकबर उसके राज को मिटायेगा।

शेर(1)- थर थर काँपता जहाँन मेरे नाम से
कौन ऐसा जो न डरता मेरे नाम से

(2)- जो मेरे हुकूम को न तामीर करेगा
वे दुनियाँ में राजा न अमीर रहेगा।
जाओं मेरा पैगाम मधुकर शाह तक पहुँचाओं।

दरबारी- जी हुजूर।

(अकबर पाती देता है, और दरबारी पाती लेकर सलामी देता है)

(शेर) जो सरकार की न बात मानेगा।
वे निश्चय ही मृत्यु दण्ड पावेगा।

अकबर- शाबाश शाबाश मुझे यही उम्मीद थी, जाओं जल्दी जाओ।

दरबारी- जी हुजूर। (दरबारी का जाना)

(द्वितीय दृश्य)

(राज दरबार लगा हुआ है, गले में तुलसी की माला एवं मोतियों की माला पहने हुए है, माथे पर रामानन्दी तिलक लगा है, हाथ में, तलवार लिए प्रसन्न मुद्रा में सिहांसन पर मधुकर शाह जी बैठें है)

मधुकर शाह- मंत्रीवर दरबार में राजनर्तकी को बुलाया जायें।

मंत्री - जी महराज (तेज आवाज में) बुन्देलखण्ड के कीर्तिललाम श्री मधुकर शाह जूं महाराज के आदेशानुसार राजनर्तकी को दरबार में उपस्थित किया जावें।

(राजनर्तकी राय प्रवीन का आना ओर नमन कर के लोकगीत के साथ लोकनृत्य प्रारंभ करना)

लोकगीत

राजा जू न नैना मारो,
मोय नजरिया लग जै है
न नैना मारो राजा जूं,
मोय नजरिया लग जै है।
नई टिक पाओ, नई टिक पाओ,
नई टिक पाओ, रन में कोऊ
तुमाई नजर से दुश्मन हारों,
राजा जू न नैना मारो मोय नजरिया लग जै है।
बड़ो कटीलों, बड़ो कटीलो,
बड़ो कटीलो तोरो निशानों
जा पे साधो, तई को मारो,
राजा जूं न नैना मारो मोय नजरिया लग जै है।

चारऊ दिश में, चारऊ दिश में,
चारऊ दिश में करों उजारो
हमाओं राजा, सब को प्यारो,
राजा जूं न नैना मारो।

मधुकर शाह– (गले से मोतियों का हार उतार कर देते हुए) जो लें ओ आज हमाओं मन खूब खुश हो गओं ।

सन्देशवाहक– (प्रवेश करते हुए) महाराज जूं की जय होय।

मधुकर शाह– क्या समाचार है?

संदेशवाहक– महाराज जूं अकबर के दरबार से पाती आई (पाती दिखाते हुए)

मधुकर शाह– पाती दरबार में पढ़ कर सुनाई जावें

सन्देशवाहक– (पाती खोलकर पढ़ता है)

श्री मधुकर शाह जूं को अकबर को सलाम पहुँचे। देश के सब राजन को दिल्ली दरबार में अपनी अपनी राजपोषाक में बिना तिलक लगायें खाली हाथ आना है, और जो हमारे हुकुम को नहीं मानेगा उस राजा का सर शरीर से अलग कर दिया जायेगा। शाहनशाहों के शहनशााह है सम्राट अकबर ।

मधुकरशाह– (गुस्से में) ओ अकबर तू नई जानत मधुकर शाह को (बुन्देलखण्ड को पानी कमऊँ काऊ के आगे नई झुको ।

शेर– की की भुजन में बल इतनों, जो झुकायें ध्वज हमाओं
जी ने उठाई आँखध्वज पे हमायें ऊ को धरा से हमनें उठाओं

केशव : महाराज जूं टेम विचार करवें की जरूरत है, गुस्सा करवे की नई, हम जानत है, आपनें जाने कित्तन को धरती में मिला दओं लेकिन अवकर के ऐंगर मुल्लकी सेना है, ई से अपुन को बुद्धि और विवेक स काम लेने आय।

मधुकर शाह – का गीदड़ की भपकी से शेर डरत है का

केशव– नई महाराज जूं हमाओं कैवे को जा मतलव न हतो।

शेर– नोंन तुमाओं खाओ पिओ बेत्रवती को पानी
चूम दुधारी केशव चल है, बन तोरो सैनानी।

मधुकर शाह– केशव मोय जित्तो भरोसो तुमहिं कविता पे है उत्तोई तुमाई भुजन पें, लेकिन

केशव : लेकिन का महाराज जूं

मधुकर शाह– हम अकेले जावो चाउत नाहार बीहड़ में अकेलों रत काउ से नई डरत

शेर– पानी ऊ को पूरो मर जे, चमक देख तलवारन की
अकबर डारों पाँव के नेचे, भीख माँग है, प्रानन की

रायप्रवीन– महाराज जूं आपकी आज्ञा होय तो हमऊ तुमाये संगे चलवों चात।

मधुकर शाह– तुमाओं काम दरबार में मनोरंजन करवे को है, सो करत रओ। उते जा के का कर हो तीर तलवारन में।
तुमाई देख रेख करवें को काम हमाओं है सो हम करे हैं।

रायप्रवीन– महाराज जूं मोय क्षमा करें, (गुस्से से) अबे आपने रायप्रवीन को नचवों गावो देखो तलवारन को बार का देखो।

शेर– तुमने देखा प्यार अभी अंगार कहाँ देखे
नैनों को देखे बार अभी दुधार कहाँ देखे।

मधुकर शाह– लगता है, कि तुमने हमाई बात को अर्थ नई समझ पाओ

रायप्रवीन– महाराज जूं मैं तो बस इतना जानती हूँ

शेर– थल अम्बर थर्राता जब नारी गर्जन करती
हा हा कार तभी मचता है जब नारी खप्पर

भरती

शेर - सौभाग्य हमारा होगा राजा, जो रन में मिट जाऊँ
सौगन्ध हमें बुन्देल वंश की, जो पांछे हट जाऊँ

महाराज जूं- हम वचन देत है, बुन्देल खण्ड की शान रखवे के लाने हम अपने प्रान निछावर कर दे है, पाँछे नई हट

केशव- महाराज जूँ आप जानत है, कि वीरन के संगे संगे वीरांगनाओ ने भी अपनी माटी की रक्षा के लानें अपने प्रानन की कभऊँ परवाय नई करी। पद्मा दुर्गा, सारन्धा और सीता सवित्री, अनुसुईयां, एवं द्रोपती आदि नारियन ने संकट के समय पे अपये अपने कर्तव्य दिखायें। रायप्रवीन नोंकी कै रई महराज जूं फिर आपको निरनय मुड़ी ऊपर।

मधुकर शाह- केशव तुमने नौनी सलाय दई

शेर- ले चलो हमऊँ देखे अकबर की सेनसाई को
हम ऊको उतई जबाब दे है पाई पाई को।

(दरबार में जय जयकार होने लगती है, श्री मधुकर शाह की जय हो, बुन्देलखण्ड की जय, वीरो मे वीर मधुकर शाह की जय हो)

(तृतीय दृश्य)

(अकबर का दरबार लगा है, वीरबल सेनापति बैठे है, दरबारी खड़े हुए है, उसी समय मधुकर शाह जूं केशव, रायप्रवीन का प्रवेश)

अकबर- (सिंहासन से ही बैठे बैठे) आओ आओ हम बुन्देलखण्ड के राजा का इस्तकबाल करते हैं। वीरबल मधुकर शाह जूं को उचित जगह पे बैठाया जावें। (वीरबल अकबर के समीप वाले सिंहासन पर बैठ देता है, और केशव तथा रायप्रवीन को वीरबल स्वयं के समीप बैठा लेता है।

अकबर- बहुत अच्छा लगा आप आयें।

मधुकर शाह- हमऊ कों, आप से मिल के नोंनो लगो ।

अकबर- आपने हमाए पैगाम को मान रखो और आप अपनी राजनर्तकी के साथ आये आपने बहुत अच्छा किया। आज दिल्ली दरबार में रायप्रवीन का नृत्य देखा जायें। बहुत नाम सुना है।

केशव- (खड़े होकर) शहंषाह, रायप्रवीन केवल ओरछा नरेश जू के सामने नाचती है, और काऊ के नई।

शेर- जिसको अबला समझकर तुम नचाना चाहते हो।
दो सलामी तुम इसे यदि जां बचाना चाहते हो।

अकबर- केशव तुम अपनी हद पार कर रहे हो। जानते नहीं मैं अकबर हूँ, अकबर हिन्दुस्ताँ का बादशाह।

रायप्रवीन- हाँ तो क्या हुआ। केशव जी ने सही कहा मैं केवल ओरछा नरेश जूं की सेविका हूँ, और काऊ की नही। भारती नारी मिट तो सकती है, झुक नहीं सकती। और सुनो-
विनती रायप्रवीन की सुन लो चतुर सुजान
जूठी पातर भरवत है वापस वारी स्वानं

अकबर - (गुस्से से) बहुत हो गया। ओरछा नरेश ने शायद मेरा पैगाम पूरा नही पढ़ा था। पैगाम में लिखा था तिलक लगाकर दरबार में आना मना था। (आदेश देते हुए) सेनापति।

सेनापति- जी हुजूर।

अकबर- जाओ कुत्तों को लेकर आओं और मधुकर

शाह का तिलक चटवां दो।

मधुकर शाह - (क्रोध में खड़े होकर अकबर के ऊपर तलवार रखकर) ओ मक्कार न तू रहेगा न रहेगी तेरी शहनशाही।

शेर- कौन है जहाँन में जो तेरी जाँ बचायेगा।
वो मक्कार मेरी शमषीर से न तू बच पायेगा।

वीरबल- महाराज जूं हमाये शहंशाह ने आप से बराबरी के नाते मजाक करो और आप बुरो मान गये। और महाराज

शेर- की में इतनी मजाल जो आप से टकराये
जान बूझ के अपई मौत अपय घर में बुलायें।

मधुकर शाह- वीरबल बहुत समझदार हो लेकिन याद रहें।

शेर- जब तक धरा गगन और गंगा यमुना में पानी
नहीं झुका है, नहीं झुकेगा, बुन्देलखण्ड सैनानी।

वीरबल- शहंशाह से आरजू है, बुन्देलखण्ड की श[illegible] ओरछा नरेश श्री मधुकर शाह जूं को सम्[illegible] करवे के लानें आपने बुलाओ सो बुन्देलख[illegible] केशरी को सम्मान करो जावे और ऊँचे ओह[illegible] से नवाजो जावे।

अकबर- हाँ वीरबल तुम ठीक कह रहे हो। हमने जै[illegible] सुना था वैसा ही पाया। श्री मधुकर शाह [illegible] की वीरता और शौर्य की कहानी आने व[illegible] समय में सम्मान के साथ सुनाई जायेगी।

(नाटक के सभी पात्र एक साथ बोलते है, श्री मधुक[illegible] शाह जूं की जय, सम्राट अकबर की जय)

मालवीय नगर (बजरि[illegible]
जनपद- जालौन उ[illegible]
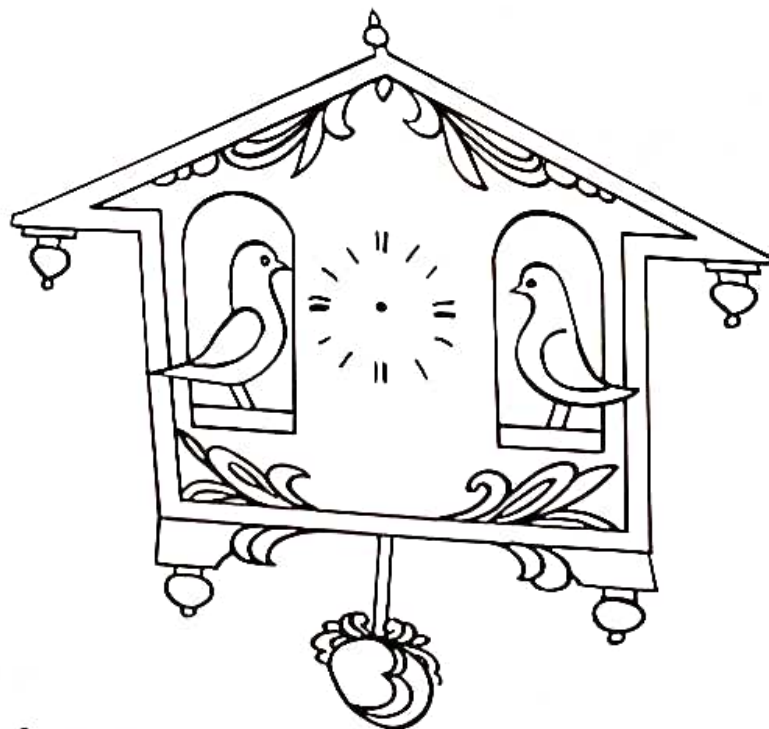
डहरिया

किसा - कहानी की रोजई जरुरत पड़त है। दादी- नानी, नाती नातिनों खों सुनाऊती हैं। किसा कैबे बारो रात खों कौड़े के पास बैठकर अभिनय के साथ किसा सुनाता है। किसा कबऊँ खतम नईं होत है। ई डहरिया में मनोरंजक, शिक्षापरक और गप्प गोष्ठियों की नजाकत सें भरी कथा-वार्तायें रखी हैं। आप डहरिया पे से पारो हटायें- एक से एक बढ़ कर किसा आप के पास हाजिर हो जायेंगे।

डहरिया

सौंज की मौंज

– पं. दीनदयाल तिवारी

एक गाँव में एक मुखिया हते, उनकौ नाव हतो रतनसींग। रतनसीग सांसउ के रतन तौलत के हते। रतन तौलत के ऐसे हते कै उनके इतै कम से कम ढाई- तीन सौ बीगा तौ जमीन हती और गइयां, भैंसन की तौ कोनउ गिनती नई हती। कर्ता कामदार काम पै लगे रत ते। इतनौ धन पइसा होबे के बाद बे सुभाव के भौतइं अच्छे हते। जो कोउ उनके दौरें मांगबे पाँच गव ऊ खौं बे कछू न कछू दैकें जान देत ते। ऐसे भले आदमी, खौ गांव के सबइ जनें चाहत ते चाय बे कोनउ जात- बिरादरी के होबें, सबई जनें मानत ते। बे गोरे नारे ऊंचे पूरे हते। जी समय बे परदनी- अलग पैर कें और सुआपा बांद के अपनी घोड़ी पै बैठ कें निकरत तें, तौ ऐसें लगत ते कै कोनउ जागीरदार आ रऔ होबै। उनकी घरबारी मिथला सोउ भली आदमन हती बा धार्मिक स्वभाव की भौतइं दयाबान जनी मान्स हती। सो पुरा मुहल्ला की सबइ जनीमार ऊ सें जिया कततीं। और उनके लिगां तौ दो- चार जनीं बैठियइं रततीं।

गाँव में कोनउ हाकम अफसर आ गऔ तौ पैल रतनसींग के घरै जात तौ, बाद में मुखिया के इतै पोंचत तौ। रतनसींग के छै लरका और दो बिटियां हतीं। लरकन के नाव देशराज, सूके, परमू, दलू, भानू और हरी हते और बिटियन के नाव मीरा और कमला धरें ते। दोउ बिटियन के बियाव हो गए ते। गांव में स्कूल नई हतो सो देशराज खौं तौ रतनसींग ने चिट्ठी बांचबे लाख और हिसाब- किताब करबे लाख पड़ा दऔ। और सबरे पांचइ लरकन खौं पड़ाबे की खूबई कोशिश करी पै वे एकउ नइं पड़ पाए। बे सब घर कौ कारोबार देखन लगे। कछू दिनन बाद उन लरकन के बियाव हो गए, उनकी बड़ी बउ किशोरी सोउ तनक- मनक पड़ी ती। और मजली बउ जनका पांचइ दर्जा तक पड़ी ती। चार बउयें भुन्ना, कौंसा, सलोनी और सुकना जे बिलकुल नई पड़ी तीं। सबरी छैइ बउयें रूप रंग की अच्छी और देखबें में एनई नौनी लगत तीं। सबरे लरकन ने घर कौ काम समार लव और सबरी बउअन ने भीतर कौ काम अच्छे से अपनें हांत में लै लव। अब रतनसींग और उनकी घरबारी दोउ जनें घरबार से पूरी तरा सें संतुष्ट हो गए। अब बे भजन- पूजन और कथा वार्ता में मन लगाउन लगें। काम अच्छौ चलन लगों, सबरी बउयें किशोरी के इशारे पै काम करन लगी। पुरा मुहल्ला के लोग और लुगाईं ऊ घर की भौतइं बड़बाइ करन लगे। अब घर में चैन की वंशी बजन लगी।

कछू दिन बाद रतनसींग बीमार भए सो गांव के बैद ने खूबइं इलाज करो पै रतनससींग खौं कोनउ दबाइ नई लगी और बे गुजर गए। गांव बारन खौ और आस परोस के आदमियन खौं भौतइं बुरऔं लगो। उन के लरकन ने उनकी अच्छी क्रिया करी और अच्छी तेरइं करी। एकइ साल बाद उनकी घरैनी चल बसी। अब घर कौ भार बड़े भइया देशराज पै आ गव और किशोरी घर की मालकन कहाउन लगीं। अब छैइ भइयन कें एक- एक, दों- दो मौड़ी मौड़ा हो गए। ऐसइ- ऐसें भौत बड़ौ परबार बन गव। दो बउयें अपने आप घर के बायरे कौ काम करन लगत तीं और दो बउयें खुदइं भोजन पानी में लग जात तीं। और पांचइ भइया हर हांकन लगे और देशराज सब काम की मिलाजुरी करन लगे। खर्चा पानी, हिसाब- किताब, लेन- देन हाकम- हकीम और

सिरकारू काम देशराज देखन लगे।

देशराज सोउ रतनसींग की घाइं अच्छे सुभाव के हते। वे सबइ मौड़ी- मोड़न खौं उन्ना- लत्ता, पड़ाबे- लिखाबे कौ काम एक सौ करत तें। उनमें कौनउ केसंगै कौनउ भेदभाव नइं हतो।

ए .... पुरा मुहल्ला के कछू जनन खौं ऊ घर की बड़वाइ और कामकाज खौं देख कें फोरा से परन लगें। स्यानन नें कइ कै-

ऊँच निवास, नीच करतूती।

देख न सकहिं, पराइ विभूती। (राम चरित मानस)

गांव में जरूआ- बरूआ तौ हौतइ हैं, बे ई फिराक में फिरन लगे कै ई घर में कबै लराइ होन लगबें और हमसब जनें तमासौं देखन लगबें। सो दो -तीन जनन नें उन भइयन के कान भरे कै देशराज मालक बनो और बौ कछू नई करत, तुम सबरे हौ हर हांकत- हांकत मरे जात। मांय कछू पुरा मुहल्ला की लुगाइं सोउ बउअन सें कहा सुनी करबे की जुगत भिड़ाउन लगीं। पै कोउअन की कौनउ बात कामें नइं आइ। अबै तक तौ सब ठीक ठाक चलत रऔ, कछू दिनन बाद मजली बउ जनका खौं लगो कै- हमाइ जिठानी कछू नइं करत और घर की मालकन बनीं है, हम सबेरे हो काम करत- करत मरे जात। किशोरी हमाइ जो जिठानी है, बा सबरौ हांत बना रह, हमाय लिगां कछू नइयां। जा बात जनका नें अपने घरबारे सूके सें कइ कैं हम और तुम सब चैबीसउ घंटा काम में लगे रत, ई के बाद भी हमाय हांत में कछूअइ नइयां। बड़े दाउ सबरे पइसन कौ हिसाब- किताब करकें अपनौ हांत बना रए। काल के दिना जब सबरे हो अलग- अलग हुइयें तौ बड़ी जिजी नौ खूबइं पइसा- टका हुइये और अपने लिगां कछूअइ नइं रैय। सो फिर अपन का करें, अपने मौड़ी मौड़ा कैसें पड़ाय, उन्ना- लत्ता और दबा- दारू कौ खर्च कितै से लिआंय। ई से हमाइ बात मानौ और अबइ चेत जाव और नियारे हो जाव। जो कछू नफा- नुकसान हुइये बौ हमाइअइ लिगां तौ रैय।

अबै घर में सब जनें सोपत सें रत ते। अब ओइ घर में किड़ी- कौं कौं होन लगी। देशराज नें अब समज लइ कैं जा नियाव अब नइं समर सकत सो ऊनें बड़े स्यान सें काम लव और बसरें भइअन खौं, सबरी बउअन खौं बैठार कें कइ कै- ''कांसे कौ सबाद कांसे में रन दो'' ऊमर फोर फखा उड़ाय'' से कछू नइं होने। सबखौं पतौ है कै अपने घर में कितनौ नगदी, कितनौं सोनौ चांदी है, सो देशराज ने छैउ हींसा बराबर -बराबर करकें सब खौं बांट दव और जौन जौन खेत जी खौं अच्छे लगें सो लै लो।

जो हींसा बचै बौ हमें दै दो। ऐसइ घर कौ हींसा बांट करकें करम गड़ा डार के सबखौं अपनो- अपनौं हींसा दै दव। पुरा मुहल्ला बारन खौं ई बात कौ कानौ- कान पतौ तक नइं लगो। सबरे भइअन ने अपनौ- अपनौ घर, अपनी- अपनी जमीन और अपनी अपनी अपनी बैल- गइयां और भैंसें समारी और अपनौ काम देखन लगे। जब गांव बारन खौं पतौ गलो कै इन छैइ भइअन में हींसा बांट हो गव और कोउए कानौ- कान खबर नइं लगी और इन सब में कौनउ बतकारौं तक नइं भव। गाँव बारन ने कइ कै देशराज बड़ौ चतुर है, ऊने कौनउ भइउन के संगै कौनउ भेदभाव नइं करौ सो काय खौं कोउए ऐतराज होवे और काय खौं गांव बारन खौं पतौ परे। पुरा मुहल्ला के जालमसींग ने अपने परौसी धरमसींग से कइ कै काय भइया देशराज के घर में इतनौ बड़ौ हींसा बांट हो गव उन सब नें कुठिअइ में होकें गुर फोर लव, और कौनउ पंचन तक खौं नइं बुलाव। सो धरमसींग ने कइ कै- सबरे भइअन में सुमत है सो भौत अच्छी बात है, ई में बुराइ की का बात है।

देशराज नें केवल मिलाजुरी करी कभउं हर नइं हौकों और कभउं गोसली नइं करी और न बैल- गइयां चराए सो देशराज ने अपने इतै एक हरवारौ लगा लव और बचो काम बे खुदइं देखने लगे। सो उने सोंजयाइ कौ कौनउ फरक नइं परो। अकेलें बड़ी जिजी किशोरी खौं जरूर काम मूड़ पै आन बीदौ सो देशराज ने दै लै कें भीतर कौ काम करवाबौ शूरू कर दव। अब पांचइ भइअन खौं जरूर नियारौ होबौ आंस गव और बे सोसन लगे कै हमनें ''खुदइं अपने पांव पै कुलइया पटक लइ।'' सोंजयाइ में कैसौ नौनौ काम चलत तौ हमन खौं कौनउ काम की फिकर नइं रत ती, बड़े भइया सब काम समारें रत तें। अब हम सबखौं अलग- अलग अपनौ काम देखने पर रऔ और नौन- तेल की फिकर करने पर रइ। सौंज में जो मौंज हती बा अब नियारें में नइयां सब अलग- अलग हैरान होन लगें।

एक दिना मजले भइया सूके ने हैरानी भोगी सो उए भारी गुस्सा आव और बौं अपनी घरैनी सें बौलों के- राण तैनें आ नियारें- नियारें की रट लगा कें सब खौं हैरान कर दऔं। सोंजयाइ में जौ नइं जानौं गव कै जें सबरी बरसें कैसे कड़ गइं। सबरन की पूरती बड़े दाउ करत ते सो कछू नइं जानो गव। अब अपनौ- अपनौ काम करवे में कितनी हैरानी हो रइ, अब ''चूले की खाउं मजौटे हो कड़ रइ''। ऐसइ - ऐसें सबरे भइया हैरान होन लगे और कन लगे कै सोंजयाइ में जो मौज हती बा अब नइयां। सबरे हो अपनौ- अपनौ काम करत तें और दार- रोटी खात ते और भगवान के गुन गाउत ते। अब नियारें भय सें ''आटे-दार कौ पतौ पर रऔ।''

भइया हौ ऐइयें आ कत - सौंज की मौंज, भइया हौ कोनउ के कए में लग के अपनौं काम नइं बिगारिऔं। हर काम सोस बिचार कें अपनी बुद्धि सें करियौ। सोंजयाइ में जो मजा है, बौ नियारें में नइयां। फूटन भौत बुरइ होत, ई सें सबरौं घर नशा जात। सो हमाइ कइ मानकें सबरें हो सोपत सें रहौ और मजा करिऔ।

6/275, श्री सिद्धबाबा कालोनी
टीकमगढ़ म.प्र.
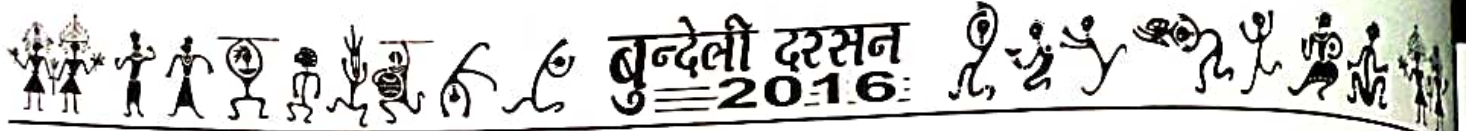
पांच बुन्देली लघुकथाएँ

– डॉ. शरद सिंह

1 - टेम नइयां...

"भैया, तनक मदद करियो...मोरे मोड़ा खों इक गाड़ीवारो टक्कर मार के भाग गओ...मोड़ा खों अस्पताले पहुंचाबे में मदद तो कर देओ.....नाय तो मोड़ा मर जेहे.....।" मैली-कुचैली धुतिया पहने बा लुगाई रोत भई घायल रामबाबू के आगे आ ठाड़ी भई। ऊको मोड़ा लहूलुहान पड़ो हतो।

"अरे-अरे, चल हट ! मोए टेम नइयां जे सब के लाने।" रामबाबू बा लुगाई खों परे धकियात भए बोले।

"भगवान तुमाओ भलो करहे, भैया!" लुगाई ने फेर गुहार लगाई।

"अरी बाई! समझ में नई आत, कही न के टेम नइयां.....तुमे अपने मोड़ा की परी है औ, अबई हमें बड़े साब की घड़ी ठीक करा के पहुंचाने है.....जो देर हुइए तो बे गुस्सा करहें।" रामबाबू झुंझलात भए बोले औ बा लुगाई रामबाबू को हेरत रै गई।

----

2 - सासू मां

उन्ने अपने फेसबुक पे पोस्ट डारी के" ठंड में सास-ससुर को खयाल कैसे रखो जाए।"

बे जे देख के फूली ने समाई के उनकी पोस्ट पे हजारों "लाईक" आ गए। अबई बे अपनी पोस्ट पे "लाईक" देखई रई हतीं के उनकी बुड्ढी सासू ने उनसे एक कप चाय मंगा लई। बे झल्लात भई बड़बड़ान लगीं, "काय, चुप नई बैठो रओ जात आए, इनखों तो दिन्न भर चाय की पड़ी रैत है......मनो सास ने भईं, मुसीबत हो गई।"

उनकी लताड़ सुन के सासू मां सिटपिटा गईं।

----

3 - बापू

"जे इनको और कोनऊ काम नईयां, जब देखों आ धमकत हैं...मनो इते पइसन को पेड़ लगो है?" बहू गांव से आए अपने ससुर को कोसत भई बोली, "तुमई ने बुलाओ हुइये।"

"हम काए बुलाहें, इते तो तुमाई चलत है, हमाई को पूछत है, हमने तो बापू से कही रई के हमाए इते उंसई तंगी रैत है, इते ने आए करो। हम तुमाई दवा-दारू ने करा पैहें।"--- चिचियात भए बेटा ने कही।

जे सब सुन के बापू से ने रही गई, बे बोल पड़े- "बेटा, हम तुमाए इते दवा-दारू के लाने नई आए। हमने तो बस जे सोची के तुमें कछु पइसन की जरूरत हुइए, सो हम तो तुमाई मां की पायलें बेंच के कछु पइसा लाए हैं तुम ओरन के लाने।"

बेटा-बहू ने सुनी, दोई के दोई मों नीचे कर के रै गए।

----

4 - मोए तो मोड़ी चाइए

"बेटा ! ... बहू खों समझा दइयो के ई बेरा मोड़ी जनी तो ठीक ने हुईये .....मोए तो मोड़ा चाइए, मोड़ा!" बऊ बेटा खों धमकात भई बोलीं।

"हौ बऊ! फिकर ने करो, ई बारे मोड़ा हुईये। हमने ऊको समझा दओ है के मोड़ी से बंस नई चलत है, सो मोड़ा न भओ तो बऊ तुमें घर से निकार देहें।" बेटा सोई बोलो।

"साजी कही!" बेटा की बात सुन के बऊ के कलेजा में ठंडक पोंची। फेर उने सुरत आई, "काए बेटा, छोटे के लाने कछु सोची के नई, आजकल मोड़ी तो मिलतई नइयां।
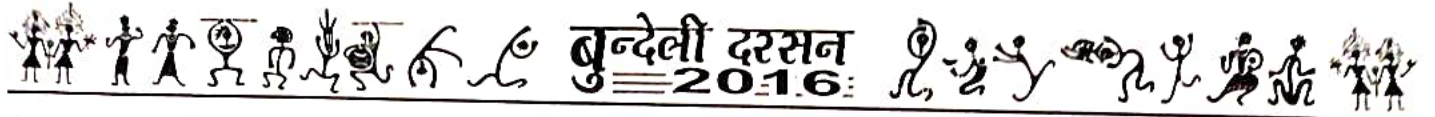
मोड़ियन को मनो अकाल पड़ गओ है। तुमाए कक्का कहूं देखन गए हते, सो, उन्ने कछु बताओ के नईं?''

''कक्का जी का बताहें बऊ.. तुमई ओरें मोड़ियां पैदा नई होन देत हो, फेर ब्याओ के लाने कहां से मिलहें मोड़ी।'' अबकी बेरा बहू बोल परी। जे सुन के बऊ सकपका गई।

''जेई लाने मोए तो मोड़ी चाइए, मोड़ी! हमने तो देवी मैया से जेई मांगी है, के मोए मोड़ी दइयो, सिरफ मोड़ी।'' बहू ने आगे कही।

बहू की बात सुन के बऊ सोचन लगी, बहू कहत तो सांची आए।

---

5 - अच्छो है, बेटा....!

''पापा, हमने कित्तो बड़ो मकान बनवाओ है।'' बेटा अपने बाप को अपनो नओ मकान दिखात भओ बोलो, ''जे हमओ बेडरूम..... जे मोड़ी को कमरा......जे मोड़ा को कमरा, जे स्टोररूम......किचन......जे मेहमान के लाने कमरा...औ जे भगवान जी के लाने पूजाघर।''

''और?''

''और का? .... बाकी गाड़ी रखवे के लाने पोर्च बनवा दओ है...औ हां, तुमाई बहू को कुत्ता पालवे खों शौक चढ़ो है जे लाने एक छोटो सो कमरा कुत्ता के लाने सोई बनवा दओ है...ऊ बगले, उते पोर्च से लगो भओ....बाकी कुत्ता रैहे तो चौकादारी करहे। ठीक करो न, काय अच्छो है न मकान ?''

''बाकी हमाए लाने कमरा....'' बाप पूछत-पूछत चुप हो गओ। बस, इत्तई बोल के रै गओ के ''अच्छो है, बेटा....! बड़ो अच्छो है!''

एम-एक सौ ग्यारह, शांति विहार, रजाखेड़ी,
मकरोनिया, सागर (मध्यप्रदेश)-470004
मोबाईल- 09425192542

गाँव की माटी

– श्री सुरेन्द्र नाथ

चीं चीं। पुलिस जीप अचानक तेजी से ब्रेक लगने से चिचियाई। तिवारी जी को ध्यान टूटो। ठंड को महीना हतो। तिवारी जी अपनें चबूतरा पे बैठ के ठंड की कुनकुनी धूप को मजा ले रयेते। तिवारी जी के माथे पे बल परो। पुलिस! उनके द्वारे। जरुर हरिया ने ऊ के खिलाफ थाने में कोनऊ फर्जी रिपोर्ट लिखवाई हुये। 'हरिया पंडित जी को घर कौन सो है ड्राईवर ने जीप की खिड़की से अपनी मूड़ी द्वारे निकारी तिवारी जी से प्रश्न करो। तिवारी जी को डर कछू कम भओ। तो पुलिस हरिया के लानें आई है वो सामने की लाईन में, तीसरो घर, कत्थई किवार वाले।' हूँ। ' जीप ड्राईवर ने हुंकार भरी।

'लेकिन बात का है, हवलदार साब ? तिवारी जी नें डरत भये जाननें की इच्छा सें दबी जुबान से प्रश्न करो।

'हरिया पंडित जी का ट्रक से एक्सीडेंट हो गओ है, थानें पोंच के लाश की पहचान करनें है। ड्राईविंग सीट के बगल में बैठे सब इन्सपेक्टर नें ठंडी आवाज में उत्तर दओ।

तिवारी के भीतर को आदमी जगो इन्स्पेकटर साब, हरिया के घर में केवल ऊकी लुगाई और ऊके तीन साल को लरका है। उनें संभालवे वालो कोऊ नईया। उनें आप केवल अस्पताल चलने के लानें कईयों। तब तक मैं पुरा के तीन चार लोगन को बुला के आउत हम लोग आपके संगे चलवी।'

'ठीक है।' सब इन्स्पेक्टर ने अपनो स्वीकृति दे दई।

जा दुखी समाचार से तिवारी जी को दिमाग सुन्न पर गओ तो। वे भूल गये ते कि हरिया के परिवार से उनकी खानदानी दुश्मनी है और उनको हरिया से जमीन -जायदाद को मुकदमा भी चल रओ है, पुलिस जीप स्टार्ट होतई तिवारी जी अपने घर के अंदर की ओर लपके। जई बीच उनकी लुगाई भी दरवाजे के पास आ गई हती।' पुलि[illegible] जीप काये आइती?' तिवारी जी की लुगाई घबराई [illegible] रईती। 'हरिया की ट्रक दुर्घटना में मौत हो गई है। घर में [illegible] पईसा डरे होय, उठा लियाओ और जल्दी चप्पलें पैन[illegible] द्वारे आ जाओ।

हरिया की लुगाई को संभालवें के लानें कोनऊ[illegible] कोनऊ लुगाई तो संगे चईये।

जई बीच में पुरा के आठ-दस लोग अपनें घर[illegible] निकरके तिवारी के द्वारे पे आ चुकेते। तिवारी जी के [illegible] जल्दी से हरिया के घर की तरफ बढ़ चले। अन्य लो[illegible] तिवारी जी के पांछे पांछे दौर परे।

'का हो गओ कक्का? एक लरका ने तिवारी जी[illegible] बगल में पोंच के प्रश्न करो।

ट्रक दुर्घटना में हरिया की मौत हो गई है। तुम [illegible] चार लरका जल्द कपड़ा पैर के आ जाओ। थानें में ल[illegible] की पहचान करके पोस्टमार्टम करानें पर। और हाँ घर[illegible] कछू पईसा डरे होय तो संगे ले आईओ। तिवारी जी[illegible] तनक शब्दन में घटना और ऊ पे अपनी प्रतिक्रिया [illegible] दई।

'खट-खट खट' एक सिपाई के हरिया पंडित जी[illegible] द्वारे जोर से खटखटाओ '' को है?'' खपरैल वाले घर[illegible] एक क्षीण नारी स्वर उभरो।

'पुलिस'

हरिया की लुगाई को सांप सूंघ गओ। ऊने घबरा[illegible] भड़ाक से द्वारो खोलो

'का बात है' हरिया की लुगाई ने अपने मुंह को [illegible] से घूंघट कों डारत भय पूछी।

हरिया पंडित जी को एकसीडेंट हो गओ है। [illegible]

हमाये संगे जल्दी अस्पताल चलनें है।

'अकेले? मोय?' हरिया की लुगाई कोई अनहोनी के भय से

कांप गई। 'घबराओ नई। सामने से जो बुजुर्ग चले आ रये, वे अपने संगे चलवी है, सिपाई ने तिवारी जी की ओर उंगली से इषारों करत भय हरिया की लुगाई को तसल्ली दई।

हरिया की लुगाई को अब न तो चप्पलें पैरवे की सुध हती और व घर को तारो लगावें की। वो बिना आगे-पीछे सोचे अपने तीन साल के लरका को ले के जीप के पीछे की सीट पें बैठ गई।

हरिया की लुगाई के जीप में सवार होतेई तिवारी जी, उनकी लुगाई तथा पुरा के जवान लरका भी बिजली की फुर्ती से पुलिस जीप में पीछे सवार हो गये। तिवारी की लुगाई ठीक हरिया की लुगाई के ऐंगर बैठी।

जीप अपनी रास्ता पे लौट परी। जीप के भीतर पूरी तरासें खामोशी छाई हती। ऐसे में कोऊ बोले भी तो का? हरिया की लुगाई अनहोनी की चिंता में हती। पतो नई उनें कितनी चोट आई हुये? कितनें दिन इलाज चलेगो? इलाज को पईसा कॉ से आये है? कही कछू। न ऐसो नई हो सकत। वो भीतर सें घबरा रईती। जीप के भीतर बैठे लोगन की चुप्पी ऊकी चिन्ता गैरी हो जा रईती। जीप की घटत बढ़त गूं गूं की आवाज जारी हती। मगर वो आवाज तिवारी जी के मन में कौंधत संन्नाटे को चीर पावे में असफल हती।

जीप को थानें के भीतर मुड़त देखके हरिया की लुगाई चौंकी। ऊ से तो अस्पताल चलवे के लानें कई गईती। तो का....? जीप के रुकतई सबई जनें फुर्ती से जीप से नीचे उतरे। तिवारी जी की लुगाई ने हरिया लुगाई को जीप से नीचे उतरवे के लानें सहारो दओ। उनसे वा ट्रेक्टर की ट्राली के पांछे चलो सबई जनें जीप से नेंचे उतरे ई हते कि एक सिपाई ने पास में खड़ी टेक्टर की ट्राली की ओर उंगली से इशारो करो।

ट्रेक्टर ट्राली में हरिया की क्षत-विक्षत लाश पड़ी हती आज सबेरे ही तो हरिया जो नीली धारी वाली कमीज पहन के घर से निकरों हतो। लाश को पहचानतई हरिया की लुगाई गशत खा के गिर परी, जई के संग आये लोगन की धैर्य और साहस की परीक्षा शुरु हो गई। सबई स्तब्ध हते। लाश की पहचान हो तई ही सबहै तराकी कल्पनाओं एवं संभावनाओ पे अपने आप पूर्ण विराम लग गओ।

तुम लोग बहू को संभालो। तब तक मैं दरोगा जी से जल्दी से जल्दी पोस्टमार्टम करावें की बात करत हैं। तिवारी जी का स्वर स्थिर हतो।

तिवारी जी समय को गंभीरता और भविष्य के संकेत अच्छी तरा सें समझ रयेते। वो अपने मन मस्तिष्क को जितनों ज्यादा संभालवे को प्रयास कर रयेते वे ऊसे ज्यादा अनियंत्रित हो रयेते। उनकी कोशिश हतीकि जा मौका पे वे सब के सामनूंकम से कम बाह्यता तो स्थिर चित प्रदर्शन करई सकत अगर ले खुदई घबरान लग तो फिर संगे आये लोगन को को समार? तिवारी जी को ष्शरीर दिमाग को संग नई दे रओतो। उनें लग रओ तो कि उनके पांव पचास-पचास किलो के हो गये होय। अपनें बूढ़े शिथिल शरीर को घसीटत भय पे बे जैसे तैसे थानाध्यक्ष तक पहुंचे। 'दरोगा जी, नमस्ते,' जी कहते हुए तिवारी जी थानाध्यक्ष के सामनूं वाली कुर्सी पै बैठ गये। थानाध्यक्ष फिर सें मुड़ी झुका के अपने सामनूं डरी फायलन में खो गये। दरोगा जी, अब हमें का करने है कछू देर इंतजार करवे के बाद तिवारी जी ने थानाध्यक्ष को ध्यान अपनी समस्या की ओर बॉटवे की कोशिश करी। 'बाबा, मुंशी जी रिपोर्ट लिख रये हैं। उनें रिपोर्ट लिखाई के दों सौ रुपईया दे दैने। तुमे कल रिपोर्ट की कांपी मिल जावो।

ओर दरोगा जी पोस्ट मार्टम?

'वो तो कलई हो पे।'

'दरोगा अगर आजई हो जातो तो तुमई बड़ी कृपा होती।

'देखो बाबा' जो हमाओ काम नईया, डॉक्टर को काम है। हम लोग एक दूसरे के काम में दखल नई करत। एक बात और है बाबा, मोय तुमाये पूरे गॉव की पूरी रिपोर्ट मिल गई है। हरिया के घर में कोनऊ जिम्मेदारआदमी है नईया 'तुम लोगन की भी आर्थिक स्थिति नौंनी नईया। ऐसो काम करो जी में तुम लोगन को भी पईसा कम से कम खरच होवे। अब संजा तो होई रई अगर तुम लोग आजई चीट-फाड़ करवाओ तो डॉक्टर तुमसे कम से कम पांच हजार रुपईया मॉगवी। जोई काम सबेरे एक हजार रुपईया में जो जावी, बैसे भी लकड़िया कालई के दिना दे पेओ हो। अपनें इते रात को तो अंतिम संस्कार नई करो जात।'

'ठीक है, दरोगा जी। '

बाचचीत के बंद होवे के बाद थानाध्यक्ष फिरसे फायलें पलटन लगे। तिवारी जी अबे तक उतई बैठे ते। पंद्रा-बीस मिनट बाद थानाध्यक्ष को ध्यान हटो, 'बाबा, कछू और पूछ्वे है का?,

'नई दरोग जी'

'ठीक है, वावा, अब तुम एक काम करो। तुम अपने संगे सिर्फ एक आदमी को पोस्टमार्टम तक के लानें रोक लो और सब लोगन को गॉव वापिस भेज दो। होश आतई मृतक की लुगाई रो-रो के आसमान अपनी मुड़ी पे उठा ले। थानें में जो सब नई चल सकत।

' जी, दरोगा जी लेकिन....।

'लेकिन का ?

'आखिरी बस को तो टेम निकर गओ।

बाबा, तुम एक काम करो। तुम जीप में पांच पाव डीजल डरवादो । हम सब को जीप से गॉव भिजवा देवी।'

'हओ, दरोगा जी। '

तिवारी जी कमरा से द्वारें निकरबे के लाने उठके ठाड़े, भये, तबई थानाध्यक्ष ने तिवारी जी को टोको।

'बाबा', तुमें एक बात और बताऊने।

'बो का ?

'ट्रैक्टर वाले थानें तक लाश लियावे के पांच सौ रुपईया तुमे देने ही हैं।

मैं ट्रेक्टर बाले से कह दूंगा वो कल चीट-फाड़ के बाद लाश तुमायें गॉव तक पोंचा दें। तुम वाय सब मिलाके एक हजार रुपईया दे दईयो। टेक्टर वाले को छोड़ के तुमें अवे तीन-चार हजार रुपईया खरच करने पर है। 'ठीक है दरोगा जी' तिवारी जी के थानाध्यक्ष की हर सलाये को स्वीकर कर लओ।

तिवारी जी अचम्बें में हते कि भारतीय पुलिस में ऐसों भलों थानाध्यक्ष भी है। जो थानाध्यक्ष ने उनसे पुलिसिया भाषा में कोनऊ बात नई करी। लेकिन ऊ के सामनूं में खोले ठाड़ी हर समस्या को सरल रस्ता सुझो दओ। हो सकत है कि थानाध्यक्ष के खुद के जीवन से कोनऊ दुर्घटना जुरी होने, जी से ऊ की मनोस्थिति को झकझोर दओ होवे। नई तो पुलिस विभाग को मानवीय संवेदना से दूर-दूर तक कोनऊ रिश्तों नई होत। पुलिस विभाग में मानवता को खोजवो कछू-कछू बैसोई होत है जैसे चील के घोंसला में मांस को खोजवो।

तिवारी जी की के विचारन को फिर एक झटका लगो, अबे लेवेदेवे की स्थिति तो लगभग समझ में आ गई अब उनें अपनी लुगाई और संगे आये लरकन सैं जानें है कि को अपनें संगे कितनें पईसा अपने संगेले के आये हैं। सरकारी परम्परा के छोटे-बड़े तय करे रुपईया तो देने ही है, थानाध्यक्ष द्वारा अपनो हिस्सा में तो टांग नई घुसेड़ सकत। वो टांग घुसेरे भी तो कैसे? सरकारी मशीनन की गिरारियॉ आपस में एक दूसरे में फंसी रती है। हर गिरारी को चिकनई तो चईये। आम आदमी कोनऊ गिरारी में फंसे वाय तो पिसनई है।।

वो दुकानदार का जो रेत से तेल न निकार पायें और सरकारी मशीने ही का जो लाश से पईसा न ऐंठ सकें।

टेम तो निकरता ही है। अच्छो या बुरो। तिवारी जी एवं परोसियन के सहयोग से चीर-फाड़, अंत्येष्टि, भूतकर्म

एवं तेरई अपने ठीक समय से निपट गई। तेरई के दूसरे दिना हरिया के सबई नातेदार भी वापिस लोट गये।

अब हरिया की लुगाई के आंगू हतो-तीन साल को लरका, दुख भरो जीवन जीवनयापन करवे को प्रश्न और भांय-भांय सन्नाटा। तेरादिना तक चलनें वालो दुख को नाटक खतम होते ही वो कई अनसुल के प्रश्न को छोड़ गओ। वो जब कछू सोचवे की कोशिश करत, तबई ऊके दिमाग पे एक बड़ो शून्य पसर जात। अकेली, गरीब, जबान विधवा लुगाई ऐसे में करे भी तो का करे?

हरिया की लुगाई अपने आदमी के वेसमय भौत से लेकर अब तक के फांसले में बेर-बेर नजरे डारत है। कीने का कई! कीने का प्रतिक्रिया करी

को चुप रओ? अब हरे-हरे ऊको सब कछू याद आन लगों हतो। ऊके कोनऊ भी नातेदार और इते तक कि ऊके बाप एवं भैया ने भी भूल के या दिखावे में भी काऊ तरा सें सहायता करने को भरोसो नई करो। दुर्घटना से कर के अबे तक कोनऊ सहयोग मिलो तो वो भी पुरा-गॉव के लोगन से मिलो है। वो अच्छी तरा से समझगईती कि दुख के टेम में ऊकौ सबसे ज्यादा सहयोग मिलो तो वो भी खानदानी दुश्मन तिवारी जी से मिलो, कऊ उनकी ऑखें ऊकी विवादित जमीं पे तो नईया? कऊ खरचा के बदले में वे ऊ पे मुकदमा में समझौता करने को दबाव न बनान लगें? अपने दुश्मन पे कोई ऐसे है तो पईसा लुटाने से रओ।

हरिया की लुगाई चिंतित अवश्य हती फिरऊ ऊको काऊ से कोनऊ शिकायत न हती। गरीब के नातेदार, दोस्त एवं मिलवें वाले भी तो गरीब ई हुयये। जब खुदई को पेट भूखो हुये तो कोऊ दूसरे की परेपानी के बारे में सोचे भी तो कैसे?

तिवारी जी को मन कैऊ दिना से बहुत अशान्त हता। ऊ की लुगाई ने ऊ से कैऊ बार ऊकी बेचैनी की कारन पूछो मगर वे हर बार टाल गए। ऊकी बैचेनी दिनन-दिनन बढतई जा रईती। अब विवादित जमीन के मुकदमा की आगे की तारीख तीन-चार दिनई- की रै गई ती। जी दिना हरिया को एक्सींडेंट भओ तो वो ऊ दिना मुकदमा की पैरवी के लानें अपने बकील के ऐगर गओ तो। अब ऊ की तरफ से पैरवी कैसे हुये ? बेचारी को पायद आगे पेशी को भी पतो नई हुए।

तिवारी जी लुगाई भी मनई -मन बैचेन हती। वो हरिया की लुगाई की परेशानी को अधिक गहराई से महसूस कर रईती। आखिर लुगाई हती न। एक दिना हिम्मत जुटा के ऊने सूनो पातई तिवारी जी के सामनू बात दो टूक शब्दन में रख दई।

'देखो, हरिया तो अब है नईया। अब मुकदमा की से लड़ हो, हरिया की लुगाई से कै ऊकै लरका सें? अब तो ऊ बेचारे के घर में कोऊ मुकदमा की पैरवी वालो भी नई है। हरिया के परिवार के ऐगर कुल कोई पांच बीघा जमीन है। का तुमने कभऊ सोची है अगर वा जमीन भी हम लोग मुकदमा में जीत लेगे तो वे मताई-बेटा का खें हैं?

का ऐसी स्थिति में मताई बेटा के सामनूं आत्म हत्या के अलावा भी कोनऊ रस्ता रै जै।

तुम कै तो ठीक रई हो लेकिन का अपनो लरका जान बात के जानें राजी हो जे? अगॅर तुम तैयार हो तो हम लरका को भी मना ले है वे हमायें लरका है राक्षस नईयॉ।

तिवारी जी को चेहरा सहसा फूल जैसो खिल गओ। तो इतनी दयावान है हमाई लुगाई को हृदय? उसनें तो तिवारी जी के मन की गुत्थी पल भर में सुलझा दई।

देखतई देखत मुकदमा की पैरवी को भी दिन आ गओ। शाम ढ़लत ढ़लत जो चर्चा पूरे गॉव में आग तरा फैल गई कि तिवारी जी ने हरिया के परिवार के खिलाफ चल रओ जमीन को मुकदमा वापस ले लओ है। पूरो गॉव भौचक्का हतो कि खानदानी बुराई के बाबजूद तिवारी जी ने अचानक जो का करो। हरिया के परिवार की जमीन हड़पवे के लानें उनके ऐंगर तो नींको मौका हतो।

उड़त-उड़त जो चर्चा देर रात हरिया की लुगाई तक

भी पोंच गई। ऊकी ऑखन में अब नींद कॉ? यह कैसी अफवाह? तिवारी परिवार ऐसो काये कर रये ?

दूसरे दिना सबेरे भुन्सारे ही हरिया की लुगाई तिवारी जी के घर पहुंच गई रोज के कामन से निपटके तिवारी जी अपने घर के बाहर अपने चबूतरा पे चटाई बिछाए बैठे हते और चाय आवे की प्रतीक्षा कर रये हते। हरिया की लुगाई एक बार धीरे से कुंडी खटखटाके घर के भीतर तेजी से घुस गई। कुंडी की आवाज सुनके तिवारी जी की लुगाई बाहर वाली दालान में निकर आई। तिवारी जी की लुगाई ने सामनूं बड़ी सफेद धोती मे लिपटी लुगाई को अन्दाजन पहचान लओ।

'बहू, तुम?

'हॉ, काकी' हरिया की लुगाई ने अपनी मुड़ी को घूंघट खोलो और तिवारी जी की लुगाई के पॉव छूबे के के लानें झुकी।

तिवारिन काकी ने हरिया की लुगाई को पॉव तक झुकवे से पहले ही अपनी बांहायन में चपेट लओ और गले लगा लओ। काकी की हिचकियॉ बंध गई। हरिया की लुगाई की भी हिचकियॉ बंध गई। अब कौ-कौन को चुप करावे? कछू देर के बाद रोवों कम भओ और दोऊ लुगाई अलग-अलग भइ इस बाद भी दोउ जनन की सुबकियॉ अभऊ चल रई ती एक लुगाई को दर्द दूसरी लुगाई बिना बतायें समझ रईती।

'बहू, ब्याओ के बाद पहली बार घर आई होय, वो भी जा लिबास में, काकी का अस्पष्ट स्फुट स्वर निकरो।

'काकी, जो सब भाग्य हो खेल है।

'बहू, अब हम तुमे का आशीर्वाद दें? भाग्य ने तो हम से सबई कछू छीन लओ। अपनी बात पूरी करत करत काकी हिचकियां भर के रोन लगी। 'धीरज रखो, काकी हरिया की लुगाई ने अपने आप को संभालो और काकी के दोऊ हथेलियन को अपनी हथेलियन मे ले लई।

कुछ देर बाद काकी कछू अपने आप में लोटीं। अब दोऊ तरफ से चुप्पी हती। ऐसे में एक लुगाई दूसरी लुगाई से कये भी तो का कये?

कछू देर बाद हरिया की लुगाई ने झिझकत भय चुप्पी तोड़ी। "काकी एक बात पूछने" ती "पूछो।"

'काकी, काल से गॉव में जो हवा उड़ रई है। का वो सई है।

'कैसी हवा? काकी सब कछू समझत भई अनजान बन रई।

'जो कि काका ने जमीनन को मुकदमा वापिस ले लओ है।

'हॉ बहू, यह बात तो सई है। '

'लेकिन काय? मोय इतने बड़े अहसान के तले दब के उनें का मिलो? हरिया की लुगाई फिर से रोआंसी होन लगी।

तिवारी जी किवाड़ की आड़ से दोउअन की बातें सुन रयेते। उननें किवाड़ खड़खड़ा के अपनी उपस्थिति को सकेत दओ। दोऊ लुगाईयन को ध्यान द्वारे पे भई आहट की ओर गओ। तिवारी जी की बीच-बीच में विराम लेत भई आवाज निकर परी।

'मैं और का करतो, बहू? हरिया तो मोय बीच मंझधार में छोड़ के चलो गओ, अब की से बुराई? की से विवाद? वैसेऊ जो गॉव की मट्टी हती, गॉव की बहू को सौंप दई।

ई में हमाओ का अहसान?

प्रताप नगर कोंच
जनपद- जालौन (उप्र.)
पिन- 285205
मोबाईल 0941516999
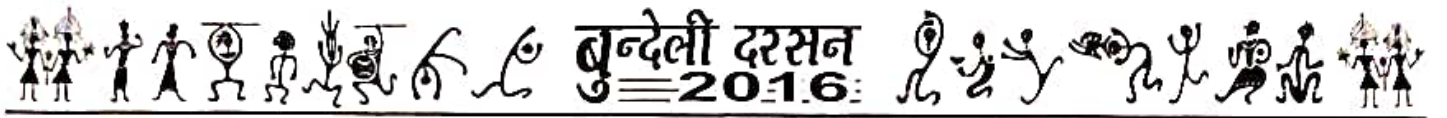
सोना बिटिया

– डॉ. मनमोहन पांडे

एक हते राजा। उनकी रानी भौतऊ नोनी हती, पर उनके बाल बच्चा कछू नई हतें, ईसें वे राजा रानी दुखी रात तें। राजा अपनों समय राज- काज देखबें में लगा देत तें। रानी अकेली बैठी- बैठी अँसुआ बहात रेत ती सो एक दिना रानी ने राजा से कई, के राजा तुम तो शिकार खेल के अपनो दुख दूर क लेत हो, मै का करों। राजा कछू नई बोले और शिकार खों निकल गए।

जंगल में उने एक भौतउ नोनी देखत में एक चिरईया मुनइया मिली तो उनने बा पकर लई और लाकें रानी से बोले के रानी जा चिरईया मुनाईया भौतउ देखत में नोनी है, ईसे अपनो मन बहला लयें करें। रानी चिरईया खों देख के भौतउ खुश भई। और उकी परवरिस करन लगी। जैसे कोउ अपनी औलाद की परवरिस करत हैं। बैसई रानी वा चिरईया की देख- रेख करन लगी। रानी ने वाको नाम सोना बिटिया रख लओ और अपनी बिटिया समान उकी सेवा करन लगी, सोने के पिंजरा में रेशमी कपड़ें बिछा के उको घर बना दयो, सोने को गानों घर गये। खाबे बासन सोने के बन गए। नोने नोने उन्ना पहरबे को सिल गये। कहवे को जो मतलब के सोना बेटी खों वे रानी अपनी बिटिया समझन लगी। हां सोना में एक खासियत हती वा आदमन की बोली बोल सकत हती। ऐंसई- ऐंसई बहुत समय बीत गयो। सोना बिटिया अब बड़ी हो गई।

एक दिना की बात है, बरेठा सोना बिटिया के पहरत के उन्ना तला में धोकें सुखा रओ हतो के उते से परोस के राजा के कुंअर निकरे और नोने-नोने सुंदर-सुंदर कपड़ों कों सूखत देख के बरेठा से पूछन लगे, के जे कीकें उन्ना आयें। बरेठा ने कई जे हमारे राजा की बिटिया के कपड़ा आयें। कुंअर सोचन लगों के जाके पहरतके कपड़ा इतने सुंदर है, वा बिटिया कितनी सुंदर न हुईयें। कुंअर ने प्रण कर लओ। राजा की बिटिया से हमई व्याव कर हैं, नई तो क्वारें रैं हैं। और घरे जाकें खटिया की पाटी पकड़ लयी। न खायें न पीयें।

कुंअर की मतारी ने पूछों के बेटा का बात है, काहे रिसाने परे हो। अपनी बात कहो, जो तुम कहों वो हम करहें। उठो खाओं पियो, कुंअर ने कई के परोस के राजा की बिटिया से हमें व्याव करन चाहत हैं। कुंअर की मतारी ने कुंअर के बाप से बात कही, और परोस के राजा के घरे अपनों हरकारे से ब्याव को संदेश पहुंचा दयों।

जब राजा के दरबार में दूत ने अपने कुंअर के ब्याव को संदेशो कहो तो राजा सनाका खा के रह गयो। वे दरबार सें उठ कें महलन के भीतर रानी के पास गयें। और रानी सें बोले ये रानी तेने जो का करों। मैंने रोकी हती के जो बिटिया को साको ने करो जब भगवान नें हमें जो सुख नई दयों। उ बात तुमने नही मानी।

अब मैं का करों परोस के राजा के इते से सोना बेटी के ब्याव के संदेशो आओं है, जो नई करत हो तो वे नाराज हो के चढ़ाई करके राज मटिया भेट कर देहें और जो हामी भरत हैं, तो बिटिया कहां से ला हों। अब का करों सो मोरी समझ ने नइ आउत है, रानी बोली तुम ब्याव की हामी भर दों। हम संभार लें हैं, बिटिया के ब्याव को साकों और पूरों कर लेवे फिर जैसी हुइये सो होय। मरने तो कबउं है, राजा ने दरबार में जा कें ब्याव की हामी भर दई। धूमधाम से बरात आई। बस नेग जोग भये। जब भांवरो खों समय बिटिया को मड़वा तरें आवें की बात आई तो राजा बोले रानी अब का करें। रानी बोली हमारें इते कटार के संगे भांवरे परत हैं, सो लओ कटार से भांवरें पर गई। अब बिदा की बारी आई, रानी नें कुंअर को महलन में बुला लओं और के पांव तरें गिर के खूब रोवन लगी। सुरू से लेकें अब तक की सब किसा बताई और कहन लगी। अब हमारी लाज तुमई रें हाथों में है, कुंअर ने रानी को उठाओं और कहन लगे। अब तुमाई लाज हमाई हैं तुम, निस फिकर रहो। इत्ती कहकें कुंअर ने डोला मंगाओ और डोला में परदा बांध के सामना बेटी को पिजंरा डोला में रख कर विदा कराई। जब कुंअर अपने घरे पहुँचे। तो सोना को

डोला अपने महलन में ले जाकें, पिंजरा उतारो और महलन के किबरा बंद कर लयें। नें कोउ खों बहु दिखाई ऐंसई होत- होत भौत दिना हो गये। हलके कुंअर को ब्याव आ गओं सब जनें कहें अब जे दार को करहें। अब जे चावंर को बीन है।

एक दिना की बात है, बड़े कुंअर अपने महलन में उदास बैठें ते। सोना बिटिया ने पूछो कुंअर उदास काय बैठे हो। का बात है कुंअर कहन लगे के सबई जने कहत है, के तुमाई बहु कछू नई करत है, अब हम उनसें का कहें। सोना बेटी बोली तुम धान और चना अपने महलन में धरा लो हम धान के चांवर और चना की दार कर दें है। कुंअर ने ऐसई करों।

रात के समय सोना बिटिया ने कुंअर से ही के तुम हमें पिंजरा में से बाहर निकारों और जा झरोखा खोल दो। हम उड़के भाग ने जेहें। कुंअर ने ऐसई करों। सोना ने खिड़की में से आवाज लगाई तो बहुत सारी चिरईयां आ गई और सब धान के चांबर और चना की दार बना के चली गई। अब कुअर को बारत में जाने हतो। सोना को छोड़ के कैसे जाय। कुंअर फिर उदास हो के अपने महलन में आये। सोना ने पूंछो के काय उदास हो कुअर ने बारात में जावे की बात बताई। सोना ने कई तुम बारात में जाओ। हमाये लाने चुन पानी धरेंजाओं। कुंअर बारात में चले गए।

और इते सोना बिटिया बड़ी खुश हो के नचन लगी। मोरे देवर को ब्याव है। नाची सो पानी के बासन में पाँव पर गयो। पानी सबरो गिर गयो अब सोना खों प्यास लगी अब का करें को से पानी मांगे। सोना ने अपनी चोंच में पानी को बासन दवाओं और खिड़की में से उड़ चली। पास में एक तला हतों सो पानी पियों और बासन भर के उठान लगी तो सबरो पानी गिर- गिर जावें अब सोना बड़ी मुसकल में आ गई, अब का करें, फिर कोसिस करी पानी भरवें की पे पानी फिर गिर गओ।

जब सोना पानी भर रई ती ओई बखत पें शंकर पार्वती निकरे हते सो पारवती की नजर उ चिरईया पे पर गई। उनने शंकर जी से कही, के देखो मराज जा चिरईया का कर रई हैं उनकी बात पे शंकर जी ने कई के चिरईया आय कछू कर रई हुईये, अब चलो। पारवती जी ने मानी, वे कहन लगी के मराज पूछो तो वा चिरईया का कर रई है, शंकर जी कहन लगे ऐई सें हम तुमें संगे नई लाउत हैं, अब तुमई पूछो पारवती सोना के लिगा आके पूछनं लगी जो तुम का खेल कर रई हो। सोना रोन लगी और बताउन लगी अपनी बीती। कैसे रानी ने पालो। कैसें कुँअर के संग ब्याव भओं, देवर की ब्याह की खुशी में नचन लगी सो पानी गिर गओ।

अब पानी तो पी लयो है, पे बासन में पानी भर के चोंच में पकरत है, तो गिर जात है, अब मोरी समझ में नई आउत है, के का करों। पारवती जी खों बड़ी दया आ गई और कहन लगी जों मै तोखों मनस्य बना दओं तो सोना बोली जा बड़ी किरपा हुईये। पारवती ने अपनी पेंती चीरी और उमें से इमरत निकार पें छिरक दयो, सोना सोलह साल की बिटिया बन गई। अब सोना लुकत छिपत महलन में पोची। जहाँ सोना रहत ती, उतें को तारो लगो तो सो वा उतई लुक गई। रातें जब कुंअर बरात से लौटें फुरती से महलन को तारो खोल के सोना के कोठा में पाँचे। उतै सोना खो न देंख के कटार निकार के गरे में मारन लगे।

सोना कुंअर के पांछू-पांछू आ रई ती, सो ऊने कुंअर को हाथ पकर लओ। कुंअर ने नोनी सी बिटिया देख के पूंछी तुम को आव, हमें पकरबें बारी! सोना के बिना हम जी नई सकत है। सोना ने सब बातें बताई। कुंअर खो सोना की बातें सुनखें भौतई खुशी भई। तुरतई अपनी मतारी से जाके बोले के अपनी बड़ी बहू खों देख आओं। कुंअर की मतारी ने जब सोना खों देखो तो कहन लगीं के ऐसी नोनी बहू हती तबई कुंअर ने बहू को कोउखों नई दिखाई। सोना को अपने महलन में लाकें सब नेग -जोग करवाये।

कछू दिनन बाद राजा ने अपने राज को राजा कुंअर खों बना दयो। सोना बिटिया बड़ी खुशी-खुशी अपनी मतारी से मिलवे गई। वे राजा रानी भी भौतउ खुश हो गए। और जब सोना बेटी ने अपनी सब बातें बताई तो राजा रानी ने हांथ जोर के शंकर पार्वती को भौतउ जस गाअें और कहों के भगवान ऐसी खुशी सबाई खों दईयो जैसी हमें दई है।

चण्डी जी वार्ड
हटा दमोह म.प्र.
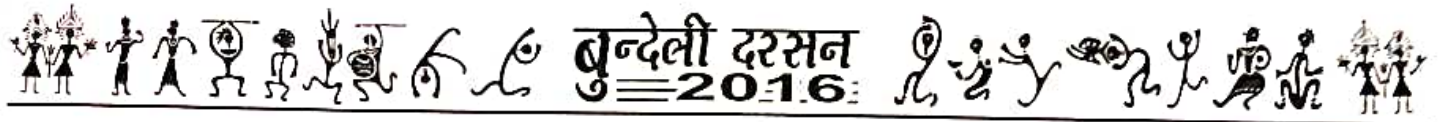
सुमन की चंदो

– डॉ. दया दीक्षित

'फुआ आ रईं परसों'

....

सुन रए हौ, फुआ आ रईं इंद्राटा बारीं, अबकी बेर सुमन नें तनक कस कें कई।

ऐं, का कई, को आ रओ? अखबार में आँखें गड़ाएं पूंछी पवन नें अपनी जनीं सुमन सें।

सुमन- इतनों टैम नईंयाँ कै दस दस बार कइये, एप्लीकेशन लै कें ऑफिस जाने हैं जल्दी। तैयार हो जाऔ अब तुम भी, हमें छोड़त निकर जइयो दुकान!

पवन- जौ तौ ठीक है! हम भूलई गएते सबयार! इतनीं कह कें सांसऊ पवन अखबार छोड़ कें उठे और आँगन में आ कें अरगनीं सें कपड़ा उठाउन लगे।

सुमन- बाल्टी लै आऔ गुसलखाने सें, पानी गरम हो गओ। पवन नें अरगनी से तौलिया लई, कपड़ा उन्ना निकार के कंदा पै डारे और फिर गुसलखाने में घुस गए। उतै खूँटी पै कपड़ा टांग कें खाली बाल्टी उठाई और रसोई में ल्याकें धर दई चूले लौ। सुमन नें कपड़ा लओ औ दोई हाथन से पकड़ कें पीतल की ऐनबड़ी डेचकी चूले सें उठाई। औ खाली बाल्टी में उड़ेल दई। छिन भर में खौलत पानी सें भर गई बाल्टी! पवन नें बाल्टी उठाई औ चल दए नहावे धोवे खों।

सुमन के जी में जी आओ। पवन खों सपरबे खोरबे में जितनी बेरा लगतती, उतनी बेरा में तौ तीन जनें आराम सें नहा लें। अब सुमन खों बनावे खैवे की सुध आई। पवन खों चांउरनन सें जादा जुंडी कौ महेरौ रुचत है। सो सुमन नें तुर्त फुर्त चूले पै तौ चढ़ाऔ महेरौ औ गैस बार कें एक पै चढ़ाई दार दूसरे पै धरे आलू, तीसरे पै धरी दूध की बोंगनियां और चौथे बर्नर पै झट्ट सें तवा चढ़ा कें नोंने रोटी सेंकन लगीं आटा पैलऊँ से मड़ो धरोतो। जा चार चूले बाली गैस सुमनें नें एई के लानें लईती कै झटपट रोटी पानीं सें निपट कें टैम सें ड्यूटी के लानें निकर जाय। सो देख लो, जौ लों चूले पै जुंडी कौ महेरौ बनो, तौलों तौ सुमन रोटी पानी सें फुर्सत पा गई। बड़ी फुर्तीली है सुमन, रोटी सेंकतई सेंकत उसनें कुकर में के आलू छील डारे, करैया चढ़ा कें एक चूले पै सब्जी औ दूसरे पै दार बघार गई। पवन के लानें थारी लगाकें खुद तैयार होवे कमरा खों कड़ गई। पवन नहा धो कें आए, सूरज नारायन खों जल ढारो छोटी सी पूजा की अल्मारी में धरे भगवान के ऐंगर अगरबत्ती जराई, एक पन्ना रामायन कौ बांचो और रसोई सें थारी उठा कें कमरा में आ गए। टी.वी. खोल कें खबरिया चैनल लगा दओ। सुमन भी अपनी थारी लै कें मई आ गई। दोऊ आदमी जेंउन लगे। जौ लों सुमन तैयार हो कें आई, तौ लों पवन नें बासन भांड़े मांज लए। मातिन बऊ छुट्टी लै के नतैन लों गईंतीं। बैसें, जबसें डॉक्टरनी नें सुमन कौ चैकप करकें खुशखबरी बताईती, तबई सें पवन ई बात कौ खास ख्याल राखत हैं कै सुमन खों कम सें कम काम करनै परै. डॉक्टरनी नें तौ कम्पलीट बैडरैस्ट बताओई हतो। सो अपनी सुमन खों आराम देबे में पवन नें बिल्कुल कोताही नई करी। सबेरें शाम दोई जोर पवन रसोई में लगे रत सुमन के संगै। दार या सब्जी या भाजी तौ पवनई बनाउन लगे जिद करकें। चटनी, सलाद और रायतौ भी बेई बनाउत हैं। हर तरां सें उनकी जई कोशस है कै सुमन साजी नोंनी बनी राय बच्चा होबे तक। उनको बस चलै तौ बे तौ उसके पेट कौ

पानी तक न डुलन दें। अबै भी ई बात पै सुमन सें खूब नर्रयानेते कै अकेलें काए रोटी पानी के टंटा में परी। हम मर नोईं गएते, नहाबेई आ गयेते, बाट नईं हेर सकतींतीं छिन भर.......

जितनी तेजी से सरपट भग रईती स्विफ्ट डिजार! उतनई तेजी सें भग रओतो सुमन कौ मन। परसों सें का हुइये राम! फुआ दिन भर अपनी चाकरी में नचाउती रेंहें फिरकऊँ जैसें पैले नचाउत रईती! फिर तौ छुट्टी लैवो न लैवो बराबर हो जैंहे! का करें हम? कैसें पार परहैं अब! पिछाऊँ की बातें सोच सोच कें उए कंपकंपी सी उठ परी, रैन की पिंडी जैसौ मुख बिल्कुल सफेद हो कें उन्ना सौ सूखयाओ!

इन बातों से अंजान पवन मगनमस्त हों कें सीडी प्लेयर में गाना सुन रएते 'मदर इंडिया' के पुराने गानों के सौकीन हैं जनम सें! सौकीन तौ सुमन भी कम नई थी, मगर जा समय मारे चिंता फिकर के उए कुछ सूझ न रईती। अनमनी हों के उसनें चलत प्लेयर बंद कर दओ।

पवन- "काए, काए बंद कर दओ। सुन लैन दो यार फिर दुकान में तौ ग्राहकन सें खुपड़पंच याव करतई करत पूरौ दिन कड़ जानें!" बतकाव करतई करत पवन सुमन की तरपीं हेरे, सुमन की मुरझाई रंगत देख कें, जैसें पवन खों कुछ खबर सी हो आई! हो न हो सबेरे वाली बात है कछू! का है जा तौ सुनई नईं पाएते! सो उननें बड़ी कोमलताई सें पूंछी।

पवन- रीनी रीनी सी, अनमनी सी काए हौ। रात भी ठीक सें सोईं नईं तुम! कुनमुनाती सी रईती। आधी रात तक तौ हमई देखत रए, तुमाऔ कुनमुनाबो! बिदुर पै इतनों अच्छौ उपन्यास हतो कै छोड़ोई नईं जा रऔतो। वा तौ घड़ी की टनमन न होती तौ पताई न चलतौ कै कितने बज गए.....। बात का है, काए परेसान हौ।

सुमन- इंद्राटा वारी फुआ जू आ रईं हैं।

पवन- कबै?

सुमन- परसों!

पवन- हम मना कर दैहें। दुकान जा कें सबसें फुआ खों फौन लगावी।

सुमन- तुम अपने ढाई चांवरन की खिचड़ी न बना... एसौ होत क्याऊँ? वे का सोचेंगी!

एकदमं सें रिसा परे पवन, बोले- काए उनें क... सोची हमाए लानें। जौन हम उनकी सोचें। और फिर ... कौ मन राखबे के कारण आज हम निपूते निस्संतान बैठे ... तुमें का पता? मैंतर लौं हमाई दुकान के नेंगर नई बुल... पैलां। जबकें गैल ग्योंडें हमाइयइ दुकान है! एकाद ... हमनें कहियउ, मगर टारौ दै कें चलो गओ। पाछें उ... जनीं जो कछू कै रईती बा न तुम सुन सकतीं, औ न हम... सकत!

सुमन- फिरऊँ तुम अबै उनें फौन औन न करि... कन लगत कै धीरज धरौ सियाने, उकतानें काम नसाने।... रात कें इ बारे में बतकाव करेंगे। कछु एसौ उपाय नि... कें सांप भी मर जाय और लठिया भी न टूटै।

पवन कुछ न बोले। सिविल अस्पताल आ गओ... सो उननें गाड़ी मईं ठाड़ी कर दई सड़क के किनारें। सु... पल्ला खोल कें उतरत भंए बोली- सुनलई कै नईं सुनी!

कछू सोचत से पवन के मों से कड़ी- 'एं' ... अदबदा कें बोले- हओ, ठीक है। तुम परेसान न हो, ज... छुट्टी मंजूर करालो पैलां। औ हमें फौन कर दइयो, ... दुकान सें आ जैहें। अकेलीं न जइयो घरै!

अस्पताल में भारी भीड़ हती। बड़े डॉक्टर साब रा... पै थे। उनई की इंतजारी में भीड़ बढ़तियई जा रईती। सु... समझ गई कै कम सें कम दो ढ़ाई घंटा लग जैहें आराम से...

अब? इतनी देर में तो बुरऔ हाल हो जैहै हमाऔ! कैसें बैठ पाहें, और फिर बड़ी डाक्टरनी नें तौ ऊसई मना करीती, इतै लों कईती कै अलावा नहाबे धोबे के, सुमन पल्का पै सें न उतरै कछू करबे धरबे की तौ बातई अलग है। आज अगर छुट्टी न लिखाउनें होती तौ हाट बाजार अस्पताल तौ भौत दूर हैं, घर की देहरी लों न लांघती सुमन। कन लगत कै दूद कौ जरो, मठा लों फूंक-फूंक के पियत है। सो बई हालत सुमन की थी। कछु सोच कें सुमन अस्पताल की बेंच सें उठी, औ हरां हरां अस्पताल सें बायरें कड़याई। ममयाउरी बैन रततीं अस्पताल के पिछाऊँ बारी गली में, सो सुमन नें मईं की गैल धरी। ममयाउरी बैन चंदो सें ऐन पटतती सुमन की। एक सी उम्मर और एक संगैं पढ़ी लिखीतीं दोऊ जनें। और विधना की बात देखौ, कै एकई जांगा ब्याईंबरी! चंदो नौगाँव में औ सुमन गरौंली में। हैई कितेक दूरी। औ फिर सुमन नौगाँव के बापू डिगरी कॉलेज में पढ़ाउतीं हैं, पवन की दुकान भी नौगाँव के सदर बाजार में है, सो उनके लानें तौ जैसौ गरौंली ऊसई नौगाँव।

हरां हरां चलतीं सुमन चंदो के इतै पोंचीं। चंदो मारे होंस फूल के सुमन से लिपड़ गई। भौत दिनन बाद मिलीतीं दोऊ जनीं। घर गिरस्ती और ड्यूटी के सौ टंटा होत! सो टैमई नईं मिल पाउत। चंदो सोऊ दुनियां भर के कामन में बिदी रतीं। फिरऊँ मईना पंद्रा रोज में मिलई लेतीं।

''चंदो गरौ सूक रओ, हमाऔ'', रसोई तरपीं जातीं सुमन नें कई। रसोई सें गिलास लै कें पीतर की बड़ी कसेंड़िया सें पानी ओंजो, और गटागट पी गई सुमन! इतनियई देर में चंदो ने चाय चढ़ा दईती। सुमन आंगन में साईकिल पै धरे बूँट देख कें रै न पाई, साइकिल पै से बूँट उठाई रइती कै हैंडिल सें लटके थैला में बेर देख कें, मईं थम गई। जीभर कें बढ़िया ताजे मीठे बेर खाए, फिर बूँटन की डरैया हाथ में लै कें रसोई तरपीं जाई रईतीं, कै 'मौसी' 'मौसी' करत चंदो कौ लरका बस्ता पटक कें सुमन की कोद दौरो आओ। सुमन नें बड़ी हेज सें लरका के मूंड़ पै हाथ फेरो। फिर पर्स में सें चाकलेट निकार कें लरका के हाथ में धर दई। चंदो, सुमन कों चाय पकरा कें मोंड़ा खों लैकें भीतर कमरा में चली गई। थके हारे लरका की ड्रेस बदलबे, रोटी परसबे खबाबे में भौत देर न लगी। लरका कों खवा प्या कें चंदो सुमन के ठिगां बैठ गई। अब उसने गौर सें देखो सुमन कों। सुमन पैले जैसी हंसी खुशी में नई थी, अनमनी सी और जी सौ डारें बैठीती। जरूर कछू कारन है। कारन तौ हतो भी, सो सुमन ने चंदो के पूछतई सब बता दओ।

चंदो- सुमन तुम इतेक सूदरीं हौ कै कुत्ता लौ मों चाट जाय तुमाऔ। फुआ तौ ठीकई ठीक हैं। अगर तुम भी अपनी जिठानी जैसीं करीं और दुनियादार होतीं, तौ जेई फुआ तुमसें बिलइया सी दबी रातीं, जैसी तुमारी जिठानी सें दबतीं डरती हैं।

- तुमें गऊ सौ सूदरौ पाकें, बे अत्त करती हैं। पवन तौ बिचारे बिना सींगन के बैला हैं। सो उनकी दबसट में कोउअई नईयां!

सुमन- उनकी भली चलाई, बे तौ कै रए थे फुआ खों मना कर देंगे कै इतै न आएं।

चंदो- बिल्कुल ठीक कै रएते। पिछली बार ऐई एबन फुआ नें तुमसें का का नई कराओ। औ जैसीं तुम? डाक्टर के रोकत रोकत पै तुमनें कपड़ा उन्ना फींचे, रोटी पानी करो, औ तिखंडा पै पसरी फुआ की जी हजूरी में धरती आंगन एक कर दओ, उनईं खों चाय दैबे गईंती न तिखंडा पै, जब उतरत उतरत फुकना सौ फूट परोतो...... धुतिया नसा गईती, हम मौका बखत पै पोंच न जाते, तौ तुम तौ गईंती बेटा ओई दिना!

सुमन- याद न दिबाऔ चंदो, तुम न होतीं तौ आज न हम जिंदा होते न जा अच्छी घरी देख पाउते। मगर अब

करें तौ का करें। हम उनें ऐसें एकदम सीदे सटाक नईं रोकबो चाउत! औ अगर बे आउती हैं तौ इ बार भी..... हे ईसुरनाथ!" एक लंबी सांस खेंच कें चुप रै गई सुमन।

चंदो- तुम हौ कैसीं? काए बिन्नू? तुमाई जांगा हम होते न तौ ईंट कौ जवाब पत्थर सें देते। जेई फुआ आँय कै तुमें मों दिखाई दईती निचुरी सी धुतिया। और जिठानी की बऊ खों दओतो पाँच तोला कौ हार। और तुमसें कईती कै दो धुतियां ल्याए एक तुम्हारी मों दिखाई के लानें, और एक जिठौतन बहू के लाने।

सो का हम जानत नइयां कै एसौ काए करोतो। ईसें कै तुम न ड्यूटी में लगीती औ न पवन इतनों कमाउत हैं, कै फुआ खों अपनी बिटिया के लानें तुमोंरन सें तगड़ौ व्योहार मिल पाउतो। जबकें तुमाए जेठ बड़े एहलकार हैं, जिठौत भी ड्यूटी बारौ है, सो उतै तौ जित्तौ व्योहार करहें, उतनई वापसी में मिल जैहै! तुमाए लौ का धरो?

सुमन- कन लगत कै बीती ताहि बिसार दे, आंगे की सुध लेय! रान दो, पुरानी बातन खों काए कुरेद रई! उनकी उनके संगै औ हमाई हमाए संगै! हम तौ जा सोच रएते कै जा बिदी कैसे निबरेगी।

चंदो- हओ जा तौ तुमाई सज्जनता और सुभाव है तुमारौ। तुम अपनी अच्छाई सें और फुआ अपनी बुराई सें नईं फिर सकतीं। तुमाओ उनकौ संग तौ केर बेर कौ संग है। जई के लानें तौ कै गए रहीम- 'कहु रहीम कैसें निबै, केर बेर कौ संग, बे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग'।

सुमन- रान तौ दो अपनी जे बातें, जा टैम तौ जई सोच कें हमाई जान निकरी जात कै चिंता कौ जौ बुजवा कैसें उतरहै!

चंदो- एक तरीका है, अगर तुम मान जाऔ?

सुमन ने उतावली सें पूछी- का?

चंदो- एसौ करौ, बे आ रईं, सो आउन दो। तु अपनों सामान पैलऊँ सें लगा लेओ। जैसई बे आंए, तैस सामान गाड़ी में घर कें उनसें बता दइयो कै मायके जा रए डाक्टर ने फिरकऊँ बैडरैस्ट बताओ है। खाना पीना के लानें आप आ गई हों, सो फुआ भतीजे मिल कें बनाऔ खाओ।

- हम जानत हैं कै तुमें जे बातें अटपटी लग सकतीं मगर जब सूदरी उंगरियन सें घी न निकरै, सों उंगरियां टेढ़ी करनेंईं परतीं।

- औ फिर, इसके सिवा तुमाए पास दूसरौ चारौ नइंया! सो नीति और बुद्धि सें काम लेओ।

- नीतियां एई के लानें बनीं हैं। तुम चतुर सुगर हौ सो जौ जानें राऔ कै जो हमनें कई है, बई करबे में तत्त है।

- हम तौ बताई सकत हैं, बाकी तुम जानौ तुमाओ काम जानें।

- अपनों हित तौ चिरई चिरवा लौ जान समझ लेत अपन औरें तौ फिरऊँ जनीं मान्स हैं। सो बिन्नू हम तो जई कैहें कै तुमें इस बखत सब छोड़ कें जैसो हमनें कई, बई करनें।

- देख लइयो सुमन, अगर सुनतईं साथ तुमाई फुआ सास मिनटों में न चलीं गई, तौ हमाओ नाम बदल दइयो।

सुमन सूदरी थी, मगर मूरख न हती। उसकी समझ में तुरतई चंदो की बातें आ गईं। टैम हो रओतो, सो चंदो सें बिदा लै कें अस्पताल आ गई। भीड़ छट चुकीती। सुमन नें छुट्टी कौ परचा बनवाओ। पवन खों फौन कर दओतो सो पवन भी आ गएते। सुमन नें गैल में पवन खों चंदो की कही बातें बता दईतीं, पवन ने हंस कें कई- बड़ी चंट है साली।

सुमन- गारीं न देओ, एक तों बिचारी काम बनाए औ ऊपर सें तुमाई गारी सुनें।

पवन- यार, साली कों साली न कांए तो का घरवाली........

आगे की बात उनकी हंसी में फंसी रै गई........।

सुमन भी झेंपत सी चुप हो गई। बात तौ सई है। चंदो है तौ इनकी सारीयई......।

दोइयई दिना बाद फुआजू अपने साज सामान के संगै सुमन के इतै हाजिर! सबेरे कौ टैम हतो। सुमन बिस्तर सें उठी न हती। पवन रसोई में ठाड़े चाय बना रएते। बरेदी गैया के दूध की बाल्टी लंय भीतरै आओतो, सो बई के पीछें आउती दिखा परीं फुआ!

फुआ- सुमन, ओ सुमनियां बक्सा लै जाऔ हमारौ! भौत गरऔ है, हाथ पिरान लगे! कां है? 'सुमन'......उननें फिरकऊँ टेर लगाई। ज्वाब दओ पवन नें। फुआ के पांव परत बोले- फुआ, खुशखबरी है मगर सुमन खों अबकीं फिर कऊँ आराम बताओ डाक्टर नें, कमरा में है, ल्याऔ हम बक्सा धरयाएँ, फुआ के हांतन सें बक्सा लै कें एक तरफ धर दओ पवन नें। फिर रसोई तरपीं चले गए! फुआ सुमन के ढिंगा गईं।

फुआ- आगी लगै जमाने में, दस दस बच्चा होतते, मगर क्या मजाल कै पलका छुओ लौ होय, औ इतै तौ पल्का सें पांव लों नई धर रईं नीचे! काए? घंटा भर सें टेर रए तुमें ललगुंवा बारी! सो सुना नईं परी? काए? पठरा सीं परीं परीं हेर रईं डोंकिया की नाईं!

सुमन नें कुछ न कई, चुपचाप उठ परी। फुआ की पालागन करकें नीचें बैठ गईं। फुआ पल्का पै पसर गईं। बोली- बक्सा और थैला मई धरयाऔ तिखंडा बारे हमाये कमरा में। अब इतनी सुकमार न बनौ टट्टी पिसाब खों तौ उठतियई हुइयौ, समुज लौ कै निबित्त होवे गुसलखाने में जा रईं हौ। उठौ! पवन नें आंगनई में धरदओ बक्सा। एक दो दिना की नई, चार पांच मईना की बात है तब लों का हम आंगन में डरे रहेंगे। सो ऊपरई कौ कमरा ठीक है हमाए लँय। पवन की बैल बुद्धि का जानें जौ सब। उससें तौ बस बतकाव करा लो चाय जितेक। बातनई के भन्ना भर हैं बे तौ।

फुआ की बात सुनके सुमन उठई रईती कै टिरे में चाय के कप धरें पवन मई आ गए। फुआ कों चाय दई, फिर सुमन खों। खुद भी चाय कौ कप उठा कें बोले- सुमन, जितनी देर हौ, सो चुपचाप बैठी राऔ पलका पै। सामान हमने रातई में लगा दओतो तुमारौ। चाय-माय पी कें तैयार हो जाऔ जौ लों हम औ फुआ मिलकें सब्जी परांठे बनाएँ लै रए। सो जितनों मन होय खा लइयो, खाली पेट दवाई कैसें खै हो! सो चाय हीक आए चाय पल्टीं, दो चार कौर तौ गरे सें उतारनेई परहें। अब इतै की चिंता नईं करनें तुमें।

तुम उतै सुख सें अम्मा लों राऔ, औ इतै हम अपनी फुआ के संगै रहेंगे आराम सें।

सुमन नें न हां कई न, न कई। चुपचाप चाय पियन लगी पल्का पै बैठ कें। और फुआ तौ जौ बतकाव सुनके ऐसें हो गईं जैसे सांप सूंग गओ होय।

रसोई में परांठे सेंकत मोबाइल पै बात कर रईंती फुआ अपनी बिटिया सें।

- "आंहा इतै न आइयो, बड़े मामा के ऐंगर जा रए हम। सो उतईं आइयो। सुमन जा रईं मायके। सो इतै काम करनें परहै, जई काम वहाँ करेंगे, तौ बिदाई में एकाध सोने की अंगूठी मंगूठी तौ झटकई लैबी मांई मम्मा सें तुमारे लानें। फलद्या भी उतै अच्छी हुइयै। इतै का धरो। भुंजी भांग लौ नईं मिलनें काम दंद अलग सें। सो मईं पोंचियों तुम संजा बेरा लौ! हम भी बस निकरई रए इतै सें।

रसोई के बाहर ठाड़े पवन और सुमन ने सबरी बातें सुनीं। मीठी मुस्कान खिल परी दोउ जनन के मुख पै।

सुमन जई सोच रईती, धन्न हौ चंदो! तुमाई जै जाए बिन्नू, तुमनें बचा लओ हमें और अपने होबे बारे बैनौता खों!

पवन- बैनौता खों काए, बैनौतिया खों काए नईं!

सुमन सकुची सी हंसी हंस परी, पवन के कंदा सें लग के बोली- जो भगवान दैहें सो हमाए सिरमाथे। हम तौ जौ कै रएते कै चंदो की किरपा सें हमाऔ भौत बड़ौ संकट कट गओ।

एतबार कौ दिना हतो! लरका बच्चा बायरे खेलकूद रएते। चंदो अपने काम में लगीतीं। कै बायरे सें उनकौ लला चिल्लाउत भओ आओ- 'मम्मी बैंड बाजे वारे तुमें और पापा खों बुला रऐ।

बाजन की आवाज तो चंदो भी सुन रईती देरे सें, सोच भी रईती कै ऐसौ को है परौस में, जिसनें अपने औसर काज में हमें नईं न्यौतो!

- मगर गजब! बाजे वारे बुला रए?

- सो काए?

हाथ कौ काम छोड़ कें चंदो बायरें ठाड़ी कै रईती बाजा बारन सें- हां भैया, का बात है? का कै रए हौ!

बाजा बारन कौ बूड़ौ मुखिया हांत जोर कें बोलो- मालकराजा, गरौली बारे पवन महराज कें रात में बरात आई है, महालक्ष्मी आ गई उनकी गोदी में। आप मौसी बन गईं।

सुनतईं साथ चंदो खुशी के मारे फूली न समाई बोली भैया, 'छिन भर ठाड़े राऔ, हम अबईं आ रए!'

तुरतईं भीतरै गई और बाजा बारों के लानें सूपा में गेहूं, गुड़ की पसेरी और एक सौ एक रुपया धर कें बायरें आई, मुखिया नें कंदा सें पिछौरा निकार कें भुंई पै फैला दओ, चंदो ने आखौंती डारी! पिछौरा समेटत मुखिया के मुख सें आसीसें निकर रईती।

'जुग जुग जियौ सरकार, दूधन नहाऔ पूतन फरौ'

एसोसिएट प्रोफेसर
128/387 वाई-वन ब्लॉक,
किदवई नगर, कानपुर, उप्र.
मोबाइल- 9415537644

भइया दोज की कथा

– डॉ. दुर्गेश दीक्षित

भइया बैन कौ प्रेमतौ दुनिया में भौतई बड़ो बनाव। साल मे दो दार भइया दोज परत, एक कातक में दिवाई के दूसरे दिना उर दूसरी चैत में होरी के दूसरे दिना भइया दोज परत। ई दिना बैनें अपनें भईयेंन कौ टीका करवें जाती। कजन कोनंऊ कारन सें बैन भइया के नॉ न पौच पाऊती तौ भईया खुदई बैन के नॉ टीका करावें जात। सॉसी कई भैया दोज की लीलई न्यारी है।

एक गांव में एक मताई बापके पॉच लरका हते। पॉच भईयन की पीठ पै एक बैन हो परी ती। ईसैं बाप मताई ने ऊकौ नाव पॉचो धर दओ तो। पॉच भइया, की बैन कौ नाव पॉचो सॉसौ धरोतो। कछू दिना में बैन कौं ब्याव कर दओ। वा अपनी ससुरार में रैकें घर गिरस्ती को काम समारन लगी। ऐसई ऐसई कैऊ सालें कड़ गयीं तीं। अकेलें पॉचो बेन हती भौतई भोली भाली। कछू जादों जानतई समझत नई हती। एक दिनां दिवाई के मौका पै हल्के भइया, पॉचों बैन खौ लुआ ल्यॉऊ। उतें सै चार कोस की मंजिल पै बैन कौ घर हतो। ऊनें बड़ें भुन्सारे कलेवा करो उर मूँढ़ सै स्वापी बॉध कैं, हात में लठिया लैकै बैन खौं लुआवे चल दओ। उर दिन बूढ़े पूछत पूछत बैन के घरै पौच गओं। भइया खौं देखतनई बैन की हाल फूल कौ ठिकानौ नई रओ। अपनें भइया भौजाइयॅन खौं देखवे की लालसा हो आई। रात कै तौ जो कछू बनो धरो तो सो वौ खा पीकें सो गओ। और अब भुन्सरा बैन अईया खौ खीर पूड़ी ख्वावन चाऊतती। ऊनें परोस की लुगाइयॅन सै पूछीं कै काय वाई खीर पूड़ी कैसे बनाउनें आउत। औरतन ने कई देखो घी में चॉवर चुरै लिइयौ उर दूध में पूड़ी से लिइयों। वा विचारी दुपर नौ घी में चॉवर चुरेउत रइ उर दूध में लुचई। अकेले वे चुरई नई पाई। भइया भूखन के मारें भीतर वायरै हो रओ तो। वा फिर वायरैं गयी और कछू जनईयॅन सें पूछी के काये जिज्जी घी में चॉवर उर दूध में पूड़ी और चुरई नई रई। ऊकी बातें सुनकै औरतें हॅसकै कन लगी कै तै कैसी सिर्रन है काऊ दूध में पूड़ी और घी में चॉवर चुरत है ? तै दूध में चावर और घी में लुचई सेंक ले। औरतन कै बताये सें खीर लुचई बन गयीं। भइया ने डट कै भोजन करें उर ब्याई नौ खौं सुसते हो गये। भइया नें बैन के ससुर उर सास के लिंगा जाकें कई कै हम दोज कौ टीका करावे खौं लुआवे आये। भुन्सरा सौकाऊ बिदा कर दिइयौ। ससुर बोले कै लाला साव अबै कतकई के काम कौ मौका है अबै बहू भौं पौचाबे में दिक्कत है। अपुन ग्यारस हो गयें आइयौ उर अपनी बैन खौं लुआ लै जइयौ। अब ससुर की बात कैसे टार सकत ती।

अपनौ सौ मौं लै कै रै गई।

हल्कौ भइया निराश होंकै रै गओ उर अपनी बैन सै कन लगों कै बैन हम बड़े भुका भुकें सें कड़ जैय। तुमाये ससुर नें पैचावे सें नाई कर दई। अब हम इतै रैकै का करें घरें कछू काम कर लैय।

बैन की आशा टूट गई ऊने सोसी कै भइया उतै भूकें कितै फिरै बड़े भुन्सारै कलेवा बना देंय। आदी रातें उठी उर देखों कै कंसला में तो चूनई नइया। वा उत्तई रातें चंकिया के लिंगा पीसवे खौ बैठ गयी। घर में इँदयारो सो डरो तो आज काल जैसी बिजली उर ना चक्की। पथरा की चकिया के पीसनें आऊततों। वा टटकोरा गुटटा में पिसी भरल्याई इँदयारे में कछू दिखातौ नई रओ हतो। चकिया के मौ में सॉ सॉप घुस गओ तो वा इँदयारे में पीसन लगी उर पिसी के संगै सॉप पिस गओतो। ऊने चून गुट्टा में धर लओं उर इँदआरे में कछू दिखातौ नई रओ हतो। चकिया के मौ में सॉप घुप गओ तो वा इँदयारे में पीसन लगी उर पिसी के संगै सॉप पिस गओतो। ऊने चून गुट्टा में धर लओ उर इँदआरे में कुपरा में हुन चून मांडकै धर लओ। उर चार बजें सै लुचई बनावे बैठ गई। उर करइया में हुन सात ठऊवा लुचई काड़ दई। छ: ठौआ लुचई बाध कैं भइया के लाने धर दई उर एक लुचई काड़ दई। भुन्सरा होतनई भइया

जल्दी चिटपिटा कै उठौ उर जल्दी सैं मौ हात धोकें बेन के पाँव पर कै लटिया लैकें जान लगो। बैन नें ऊके हात में कलेवा गुआ दओ। वौ सूदौ घर कुदाऊँ चल दओ। बैंन वायरैं टाँढ़ी देखत रई। उनको एक पलेर कुत्ता हतो वो क्याऊँ सें पूछ हलाऊत आ गओ। कुपरा में एक लुचई बची धरीअई हती। ऊनें उठा कै बालुचई ऊ कुत्ता खौ डार दई। लुचई के खातनई कुत्ता घुमन लगो उर ओई के सामें घुम-घुम कैं उतै कुत्ता मर गओं। देखतनई बैन के सटननारे छूट गये। जी लुचई के खाये सें कुत्ता मर गओ जेऊ हाल भइया कौ हो जैय। उत्तई देर में भइया मीलक दूर कड़ गओ हुइयै। वा प्रान छोड़कें भइया के पाँछें भगी। भगत पौंच गई। भइया तौ तनक दूर एक डार पै कलेवा टाँगकै टट्टी खौं चलो गओ। बैंन आऊतनई कलेवा खौं देखन लगी। पैड़पैं टंगी पुटरिया उतार कैं ना आव देखो ना ताव सूदी बावरी में फैंक कें मोंगी चाली लौट गई। भइया टट्टी होत में कछू कै नई पाव अकेलै मनई मनई सोसन लगो। अबई पागल खौं कभँऊ लुआवे नई आउनें। उर वौ मोगौ चालों अपने घरै लौट गओं। भइया का जाने बैंन की आत्मा खौं। बैन खौं लुआवे नई जैय। अकेलैं बेन अपने प्यारे भइया खौं कैसे छोड़ सकतती। कछू दिना में भइया के व्याव कौ मौका आव। सो ऊनें ना बैंन के लुआवे नई आउनें। उर वौ मोगौ मनई सोसन लगो। सबई पागल का जाने बैंन की आत्मा खौं। बैन खौं कभऊ भइया बैन खौं कभऊ भइया समज नई पाव सो बुरऔ मान कैं मुर्रा गओ। ऊनें सोस लई कै अब कभँऊ बैन खौं अकेलै बैन खौं सब पतो चल गओं उर वा उपत कैं पैच गई वौ गुर्रा कैं रै गओं। जब भइया के हॉत पै नारियल धरो जान लगो। सो वा बोली कै पैला हमाय। हॉत पै नारियल धरो फिर भइया के हॉत पै नारियल धरो जैय। सबरन नें मोगों कै जानी पागल हो गई है।

चलो माय घरवारे ओई के हॉत पै नारियल धरवा दो। ऐसई ऊनें लगुन की दारे करो। लोगन ने पैलाँ सै ओई के हॉत पै लगुन धरा दई। जब बरात जान लगी सो पाँचो बैन कन लगी कै हम सोऊ बरातें चलें। कछू जनें कन लगे कै माय चली जान दो पगलू खौं। वा उतै जाकें टीका की बेरा कनलगी कै भइया कौ टीका दरबाजे पै हुन नई हुइयै खिरकी पै हुन टीका हुइयै भइया कौ। अंत में ऊकी जिद सै भइया को खिरकिअई में हुन टीका भओ। उर तनकई देर में दरवाजौ अर्रा कै नैचे गिर परो। तब लोगन की समज में आई कै पॉचो बैन भौतई जानकार है उर ऊकी जिद सै भइया मरवे सैं बच गओ। हरॉ हरॉ व्याव हो गओ भौजाई की विदा होकैं घरैं आ गई। देई देवता पुजत में वा भइआई के संगई ओई कोठा में सोंय जीमें भइया भौजी के सँगै सोंय। सुनतनई सबई औरतें कन लगी के तुमैं जा भइया के सँगै सोउनें कै भौजी खौं। पॉचों बैन कन लगी कै तुमें ईसै का करनें जो हुइयै सो सब देखी जैय। अकेलैं हमसोय तौ ओई धर में। कछू जनीं बोली कै परी रन दो माय एक बगल में डरी रैय। उर वा ओई धर में परी रई। आदी रातें तौ दूला उर दुलइया तौ सो गये अकेलै बैन तौ जगत रई। जौन सॉप चकिया में पिस गओ तो वौ भइया खौं डसवे के काजैं ओई कमरा में घुस आव। भइया उर भौजी तौ सो रये ते। बैन तौ जागई रई ती। जईसै वौ सॉप लफरयात भइया पै झपटो सोऊ बैंन ने तलवार सै काट कै कूढे तरै ढॉक तरै ढॉक धर दओ। फिर वा सुक की नींद सो गई। ई भेद कौ काऊवें पतो नई चलो। भुन्सॅरा उठकै ऊनें घरवारन खौं कूढ़ौ उठा कैं मरो सांप दिखा दयो। सब जनें ता करकै रै गये। उर सोसन लगे कै कजन पाँचों बैन नई होती भइया बचई नई सकत तो। भली भइया बैन सै कटो कटो सौ बनो दओ उयै का पतऊनें घरवारन खौं कूढ़ौ उठा कैं मरो सांप दिखा दयो। सब जनें ता करकै रै गये। उर सोसन लगे कै कजन पॉचो बैन नई होती भइया बचई नई सकत तो। भली भइया बैन सै कटो कटो सौ बनो उओ उयै का पतो कै ऊके सिर पै काल मड़रा रओ है। बैन होय तौ पॉचो कैसी। जीनें भइया के प्रान बचावे के लानें ऊकौ संग नई छोड़ो। भली ऊकी बेईज्जती होत कै गोड़न पै गिरो। उदनई सै वे बैन भई उर वे साँसे भइया। हे भगवान ऐसे बैन भइया सबई के होंवे। कजन ऐसी बैनें उर भइया हो जाय तौ समाज कौ बेड़ा अपने आप पार हो जाय। बाढ़ई ने बनाई टिटकी उर हमाई किसा निपटी।

मो. 9630792227

खोड़िया

निबंध साहित्य खों, धरोहर के रुप में गाड़ के रखबे के लाने ई खोड़िया खों आप सबको समर्पित करो जा रओ है’। ईमें इतिहास, साहित्य, समाज संस्कृति की सबई जिन्सें गाड़ी गई हैं। समय-समय पे ईखों उखारो जा सकत है, और इन जिन्सों को उपयोग, अपने वर्तमान खों पुष्ट करबे करो जा सकत है। तो आप पेई निर्भर है कि चाय ई खोड्यिाँ खों आप उखारें चाय गड़ो रैन दे, हम तो चाउत हैं, कि आप ईखों बेर-बेर उखारें और अपने समय-समैया खों समझें।

"खोड़िया"

मैं हूँ नदी बेतवा

– पं. ओम प्रकाश तिवारी

सरिता, तटिनी सरित शैल सुता भी जान
नदी निम्नगा, आपगा हैं पर्याय महान।।

वैसे मेरा नाम बेतवा हैं मुझे लोग बेंतर, बेतावत्री तथा पद्य चन्द्र कोश के अनुसार 'शराबती' एवं जैन आगम सूत्र में 'वत्थगा' तथा पुराणों में मुझे बेत्रवती नाम से पुकारते हैं। इसके साथ ही परियात्र पर्वत से उदगम होने के कारण मुझे परियात्र सुता भी कहते है। मैं अपने जन्म से लेकर कन्हैया के रंग में डूबी सूर्य तनया महाराज शनिदेव और काल भगवान यमुराज की बहिन कालिन्दी यमुना से मिलने तक की जीवन यात्रा आज आपको सुनाती हूँ। मैं एक प्राचीन नदी हूँ, प्राचीन दशार्ण क्षेत्र में बहते हुए मुझे बेत्रवती कहाँ गया, जिसे वेत्र (त्रा) स्त्री (वती) बेत्र बाहुल्य अस्ति, अस्या, मतुपमस्य व : वा दीर्घा : मालवा देश की एक नदी- शरावती, वेत्रवती।

मैं अपने उद्गम स्थल मध्यप्रदेश की वर्तमान राजधानी भोपाल से पच्चीस किलोमीटर दूर तम्बड़ा खेड़ा से 4-5 किलोमीटर दूर मेरा जन्म स्थल जो विन्ध्याचल की परियात्रा श्रृंखला के बीच निर्जन में हैं, यहाँ मुझे 'झिरी' कहते हैं। मेरी जन्मभूमि का शान्त, एकान्त, वातावरण हैं, यहाँ चारों ओर पहाड़ियाँ ही पहाड़ियाँ है, यहाँ आज भी सघन वृक्षों की छाया में कलरव की मधुर ध्वनि सुनाई देती हैं। मेरे उद्गम का यह जल स्रोत कभी भी नही सूखता। इसीलिए पद्मपुराण में मेरे महात्म में लिखा है-

वेत्रावत्या : समं तीर्थ, पृथिव्यां न सनातनि।
अहं विष्णु स्तथा ब्रहा देवाध्च : परमर्पय :
तिष्ठन्ति देवता : सर्वा वेत्रवत्यां महेश्वरी। ''

अर्थात :- हे महेश्वरि! सनातन पृथ्वी पर वेत्रवती के तुल्य तीर्थ नही हैं। मैं (महादेव) भगवान विष्णु ब्रहा तथा सभी देवता एवं ऋषि वेत्रवती में निवास करते हैं।

मैं अपने जन्म स्थल से जैसे ही बेत के सघन वन को चीरती हुई एक छोटी सी धारा के रूप में आगे चली तो मुझे भोजपुर जैसे वैभवशाली नगर में देवों के देव महादेव शिव का रूद्राभिषेक करने का अवसर मिला मैं तो इस विशाल शिवलिंग के दर्शन कर अभिभूति हो गई। मैंने देखा कि ग्यारहवीं शती में राजा भोज ने इस मंदिर को एक ही रात में बनवाने का संकल्प लिया था, जो पूरा भी हुआ। आज भी उसके शिखर पर विशाल शिलाखण्ड बिना सीमेन्ट चूने के रखे हुए हैं, यहीं महाराज भोज ने एक विशाल तालाब बनवाया था, जिसमें मेरा संपूर्ण परिवार जिसमें 365 छोटे बड़े नदी नाले सम्मिलित थे, आकर मिले महाराज ने अपने इंजीनियर कालांजर को इसके निर्माण का दायित्व सौंपा था। इसका भराव क्षेत्र 250 वर्ग मील था। आज जो जन-जन में यह उक्ति कहीं सुनी जाती है, कि ताल है, भोपाल ताल और सब तलैयां। वर्तमान भोपाल ताल उसी राजा भोज द्वारा निर्मित विशाल तालाब का ही खण्डावशेष हैं। परंतु यह उक्ति उसी पुराने तालाब के संदर्भ में युगों से प्रचलित हैं। इसे चौदहवीं शताब्दी में मालवा के नबाव होशगशाह ने सामरिक कारणों से जब तुड़वाया तो उसकी पूरी सेना को तीन माह लगे तथा इसका पानी तीन वर्ष तक बहता रहा साथ ही इसके आगार का दल दल तो तीस वर्ष तक बना रहा। यहाँ ठहरकर फिर यहाँ से अठखेलियाँ करती, कहीं उछलती कूँदती तो कही छलागें भरती, बौद्ध कालीन ऐतिहासिक, स्थल साँची पहुँची, यहाँ भगवान गौतम बुद्ध के दो प्रिय शिष्य सारिपत्त और मौदगलायन के पार्थिव अवशेषों को जो बौद्धस्तूप के नाम से प्रसिद्ध है, पर पुष्पाजंली अर्पित की यहाँ मेरी कई विदेशी, बौद्ध अनुयायिओं से भी

भेट हुई यही मुझे बौद्ध भिक्षुओं के प्रवचनों से शान्ति, और स्थिरता की शिक्षा मिली। आगे चली तो उदयगिरी की गुफाओं में गंगा- यमुना और पृथ्वी की मूर्तियाँ देख मैं हतप्रभ रह गई साथ ही यहाँ यूनानी राजदूत हेलियों दस द्वारा बनवाया हुआ गरूड़ ध्वज को नमन किया। यहाँ मैं कालिदास के मेघदूत को सुनकर उदयगिरि के इधर उधर मानों नाच ही उठी। सामने ही एक सुदंर नगर दिख रहा था, जिसके बारे में महाकवि कालिदास ने मेघदूत में लिखा-

''तेषां दिक्षु प्रथित विदिशा लक्षणां राजधानीं।
गत्वा सद्य : फलम विकलं कामुकत्वस्य लब्ध्वा।
तीरोपान्त स्तनित सुभगं पास्यसि स्वादुयस्मात्।
सभ्रग्ड़ं मुखमिव पयो वेत्रवत्याष्चचलोर्मि।।

अर्थात - हे मेघ! उस दषार्ण देश की दिग् विख्यात विदिशा नाम की राजधानी में पहुँचकर तुम अपनी कामकुता का समग्र फल प्राप्त कर लोगे। क्योंकि चंचल तरड्गों वाली वेत्रवती नदी के जल को भृकुटी युक्त अंधर की तरह पान करोगें जो उसके तट पर अपनी गर्जना से तुम्हें अधिक सुखद प्रतीत होगा।

जी हां यही वह नगर विदिशा हैं। जहाँ सम्राट अशोक ने अपनी जीवन संगनी चुनकर रहना सुनिश्चित किया था, इनके पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा ने दूर देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया यहाँ मैंने अशोक की सात्विकता की शक्ति दी, तभी ये तो देवी भगवत ने कहाँ -

''गंगाद्वारं कुरूक्षेत्रं नर्मदाअमरकण्टकम्।
यमुना संगम पुण्यं विदिशा वेत्रवत्यपि।।
एता : पुण्यतमा नद्य : गृहणाधिपु कीर्तिता।। ।

यहाँ से मैं जैसे ही आगे बढ़ी विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियाँ रास्ता रोकें खड़ी थी, मैंने उनसे निवेदन किया-

''मुझें न कोई रोको- टोंको, बधाएँ अटकाओं न।
मैं परियात्र सुता हूँ, मुझसे कोई टकराओ न।।

इतना सुनकर विन्ध्याचल ने कहा कि यह अपनी ही बेटी है, और श्रीकृष्ण की बाल लीलाएँ देखकर आ रही यमुना- गंगा से मिलकर समुद्र से शादी रचाने जा रही है, इसलिए इसे रास्ता दे दो। अब तो मैं उछलती कूदती, छलांगे भरती ऊँचाई से धड़ाम से नीचे कूदी और तेलिया और उर्दिया पत्थर की विशाल ठोस काया में बड़े- बड़े छेद करते हुए आगे चल रही थी, तथा मुझे लोक स्वर सुनाई दिया-

''काहे में बाढ़ी बेतवा, काहे से बाढ़ी धसान
पथरन बाढ़ी नदी बेतवा, भरकन बाढ़ी धसान।।

यह मधुर स्वर सुनते हुए मैं आगे चली तो मुझे मुचकुन्द गुफा एवं रणछोर जी के दर्शन हुए आगे चलो तो देवगढ़ जिसका प्राचीन नाम 'लौच्छगिरि' है, के विश्व प्रसिद्ध दशावतार मंदिर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, यहाँ भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी सहित कुन्ती सहित पाण्डवों एवं गज की पुकार सुनकर बिना पादुका और मुकुट के उसकी रक्षा हेतु श्री विष्णु जी का गरूड़ पर सवार होकर आने का अद्वितीय शिल्प देखकर मैं नतमस्तक हो गई उस मंदिर के मुख्य द्वार के दोनों और मेरी बड़ी बहिनों का चित्रांकन है, इस मंदिर को देख अनायास ही निकाला-

ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नम :

साथ ही यहाँ काले पत्थर की भगवान बारह की मूर्ति के दर्शन किए यही मैंने अपने परिसर में एक पहाड़ी टीले पर बारह फीट ऊँची भगवान शन्तिनाथ की मूर्ति का अभिषेक कर द्रव्य चढ़ाएँ और हजारों मूर्तियों के दर्शन किए तो मन-

''णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं
णमों आइरियाणम णमो उज्झवयाणं,
णमो लोए सव्व साहूणम्।।

अर्थात- मेरा अहिन्तो को नमस्कार सिद्धों को नमस्कार उपाध्यायों को नमस्कार मेरा जगत के सर्व साधुओं को नमस्कार।

गा उठा। हाँ यहाँ मुझे जैन मुनियों के प्रवचनों से शान्ति का अनुभव हुआ। यहीं मैंने देवराज इन्द्र के सेना नायक स्वामी कार्तिकेय जी की जन्म भूमि के दर्शन किए,

मैंने यहाँ पाण्डवों, गौंड़ राजाओं, गुप्त वंश और चन्देल राजाओं के साथ- साथ चेदि, प्रभार, पठान, मराठे, शाल वाहन तथा मुसलमानों के साथ-साथ बुन्देलों एवं अंग्रेजों का राज्य भी देखा हैं।

इसके साथ- साथ जब जिनका शासन आया, उसने अपना नया नाम इस क्षेत्र के नाम पर मढ़ दिया- यथा वत्स, वेंदिं जुझौती, जेजाहूति, जुझौतिया, या यजुर्होति, तथा वैदिक काल में 'चेदि' रामायण काल में अर्थात राम संवत के अनुसार 969117 वर्ष पूर्व ''कौशल'' एवं महाभारत काल में अर्थात युधिष्ठिर संवत् अनुसार 5117 वर्ष पूर्व रूप और विराट व बौद्ध काल जो बौद्ध संवत के अनुसार विक्रम संवत 2072 तथा शालीवाहन शोक 1937 वर्ष पूर्व 'गुरमी' तथा तेरहवी शती में दषार्ण और चौदहवीं शती में बुन्देलों का राज्य स्थापित होने से यह क्षेत्र बुन्देलखण्ड' कहलाया। आज मेरा प्रवाह वाला यह क्षेत्र मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के जिलों के रूप में विभाजित हैं। यहाँ तक आते- आते मेरा- सिंचित कोष अधिक हो गया था, क्योंकि मेरी छोटी वहनों ने अपना सिंचित कोष मुझे देकर मेरा उत्साह वर्धन किया था, जिनमें बीना, परासरी, नाँन पहुज आदि प्रमुख है, यहाँ से मैं जैसे ही आगे चली बंजर और उबड़ खाबड़ जमीन देखकर मन दुखी हुआ यही पर बंदर गुड़ा नामक स्थान पर वड़े बड़े विद्युत पंप लगा कर पानी को ऊपर पहाड़ी पर (लिफ्ट) करके भेजा जाता है, जिससें जखौरा विर्धा विकास खण्ड की लगभग 23903 हेक्टेयर भूमि सिचिंत होती है, इसकी विशेषता है, कि इसकी नहरें पहाड़ियों को काटकर वनाई गई है, इससे 135.5 किलोमीटर नहरें निकाली गई है, जिसमें मुख्य नहर 34.3 किलोमीटर है, इस परियोजना पर लगभग 3357 लाख रूपये लागत आई थी। इस पिछड़े क्षेत्र के किसान अतिप्रसन्न है, यहाँ से थोड़ी सी ही आगे चल पाई थी कि राजघाट नामक स्थान पर एक विशाल बाँध बनाया गया इस का रानी लक्ष्मीबाई बाँध परियोजना नाम रखा गया हैं, इस परियोजना से 45 मेगावाट विद्युत उत्पादन के साथ ही उत्तरप्रदेश के 1.40 लाख मध्यप्रदेश के 1.30 लाख हेक्टेयर भूमि सिंचित हो रही है, इसे देखकर मेरे मन से अनायास ही निकल पड़ा-

बंजर धरती कब से प्यासी, सूख रही थी ऐसें
बिन प्रियतम के प्रिया तडफती निज जीवन में जैसे।
वर्षा का पानी भी मेरा सहयात्री बन भागा।
जिसे रोककर इस धरती का भाग्य आज है जागा।।
प्यास बुझाती अलख जगाती बिपदा हरने वाली
मैंने ही आकर धरती पर फैलाई हरयाली।।

यहाँ से मैं कल-कल की ध्वनि करते हुए आगे चली तो मुझे टीला माता के प्रसिद्ध तीर्थ पर रोककर माता टीला के नाम से विशाल बाँध बना दिया गया है, यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य और नीचे पार्क में लगी लाईट व उसमें लगे बड़े-बड़े फुब्बारे देखकर मैं अभिभूत हो गई। मेरे इस बाँध में तो मानों एक छोटा समुद्र ही उतर आया है, यह सोचकर मन प्रसन्न हुआ तथा मेरे इस बाँध में सूर्य अस्त का दृश्य देखने के लिए सैकड़ों की संख्या में लोग एकत्र हो जाते है, सूर्य अस्त के समय एक अनौखी लालिमा फैल जाती है, लगता है, भगवान भास्कर लाल डोरियों से बाँधकर दर्शकों का मन अपनी ओर खींच रहे हों, प्रकृति के इस अनुपम सौंदर्य को देखकर मन मुग्ध हो जाता है, और धन्य हो जाते दर्शक माता टीला में अपने आपको पाकर। क्योंकि यहाँ पता ही नही चलता हैं, सूर्य देव धरती माँ के आँचल में जाकर छुपेगें अथवा आकाश के हृदय में जाकर छुप जाते है, या मेरी अपार अथाह जलराशि में छुप जाते है, ऐसा मनोरम और मनमोहक दृश्य देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। यहाँ मैं पहाड़ी पर सिंह वाहिनी टीला माता का पूजन अर्चन कर धीरे- धीरे चल दी। हाँ एक बात जरूर है, यहाँ ललितपुर जिले में मेरे बेटे बहुत दुखी है, क्योंकि मेरी अपार जलराशि का भराव तो ललितपुर जिले में है, और इससे लाखों हेक्टयर खेती भी सिंचित होती है, साथ ही 30 मेगावाट विद्युत का भी उत्पादन होता है, किन्तु ललितपुर जिले के

बेटों को तो सिंचाई के नाम पर एक बूँद पानी भी नही मिलता था, तथा विद्युत भी औद्योगिक नगर कानपुर को जाती है, खैर ईश्वर की इच्छा। यहाँ से थोड़ा आगे चली तो छोटे से सुकवां ढुंकवाँ बाँध में मुझे कुछ समय के लिए रोक लिया किन्तु मैं तो कल- कल, छल- छल कर गाती हुई चलती रहती हूँ, कोई विराम नहीं कोई आराम नहीं बस चलती ही रहती हूँ, और अपने किनारों और परिसर में-

''अर्जुन, अशोक अस्वस्थ खैर- बैरी, बरगद ऊमर विशाल।
तेदूं अचार कीकर, पाकर - महुआ दीनों के कुटुम- पाल।।
करघई, करौंदी काँकरों, कचनार कदम्बों कंठ मिलो।
सेमर, सहिजन, सागौन, सिरिस जामुन रसाल आमलो फलो।।
ओ हरसिंगार। शीशम बबूल, दुर्गा के पावन धाम नीम।
काँटे कडुआहट जगती के जों सब अपने में करें लीन।
अन गिनते वृक्ष वनस्पति से जो हरि भरी शोभायमान।
इस धर्म धारणी परिसर को शत-शत् वन्दन शत् शत् प्रणाम।।''

करते हुए आगे चलती हूँ इनके साथ ऑवला हर्र बहेरा, अर्जुन चन्दन, शंख पुष्पी, शतावर, दशमूल, चित्रक, भृंगराज, सफेदमूसली, नागर मुस्तक आदि को भी अभिसिंचित कर पुष्पित-पल्लिवित करते हुए आगे चली तो ओरछा पहुँची, जिसका भी प्राचीन नाम ' गंगापुरी' था, जिसे देखकर अनायास ही मेरे बेटे के मुख से निकल पड़ा जिसे उसने सिद्धराज काव्य में लिखा हैं-

''कहाँ आज वह अतुल ओरछा हाय! धूलि में धाम मिलें
चुने चिनाय चिन्ह मिले कुछ, सुने- सुनायें नाम मिलें।।
फिर भी आना व्यर्थ हुआ क्या तुँगारण्य? यहाँ तुझमें।
नेत्र रजनी वेत्रवती पर हमें, हमारे राम मिलें।। ''

यही आते आते मैं सात धाराओं में विभाजित हो गई किन्तु थोड़ी ही दूरी पर फिर एक हो गई किन्तु इसी बीच में तुगारण्य नाम का एक मनोहरी दृश्य इस वन क्षेत्र का बनता गया। यही मेरी भेट अपनी छोटी बहिन जामनी जिसका भी पुरातन नाम जम्बुला हैं, से हुई यहाँ मैं राम राजा सरकार के चरण पखारते हुए तथा लाला हरदौल को दुलारती हुई गुरूद्रोणाचार्य की जन्मभूमि बाघाट को नमन कर यहाँ के राजाओं के शौर्य और न्याय की प्रशंसा करते हुए यहाँ के मंदिरों और महलों के स्थापत्य के बेजोड़ नमूनों को निहारती हुई यहाँ की गौरवशाली परम्पराओं की सरहाना करते हुए गढ़कुढ़ार के निकट शेर तेदुओं को जल पिलाती हुई आगे बढ़ी तो मैं पारीछा बाँध एवं थर्मल पावर ने मेरा मन मोह लिया क्योंकि यहाँ का मनोहरी दृश्य मेरे आनंद को बहुगुणित कर रहा था। यहाँ से आगे चली तो चँदवारी के पास दुधारा नामक स्थान पर झांसी हमीरपुर और जालौन जिले की राजनैतिक सीमा पर मेरी छोटी बहिन धसान आ मिली। यही आगे मेरे ही तट पर त्रेतायुग में मेरी मझली बहिन रवि नंदनी यमुना और मेरे मध्य स्थित सप्तकोषी के नाम से अभिहित सप्तकोषी के नाम से अभिहित सप्तकोष का भू-भाग पुण्य कीर्ति आश्रम के नाम से विभूपित एवं विख्यात था, परम्परागत मान्यता एवं जनश्रुति तथा वाल्मीकि, रामायण, भागवत पुराण तथा आध्यात्म रामायण के अनुसार जालौन जिले के ग्राम पराशन का आश्रम मेरे तट पर था, यही से थोड़ी आगे दक्षिणी तट पर स्थित पुण्यकीर्ति ऋषियों के आश्रम में श्रेष्ठ एवं पुराण प्रसिद्ध महर्षि च्यवन का आश्रम चण्डौत ग्राम जिला हमीरपुर में था। इन्हीं ऋषि ने लवणासुर राक्षस से क्षेत्र में भय मुक्त कराया था, इसी आश्रम के सम्मुख मेरे तट पर महर्षि च्यवन के नाम पर एक मन्दिर आज भी विद्यमान हैं तथा इसी मंदिर में महर्षि पाराशर, की मूर्ति भी हैं। मेरे ही तट पर स्थित ग्राम कहटा जिला जालौन में कर्दम ऋषि का आश्रम तथा यही उन्ही के नाम पर एक नव निर्मित मंदिर में उनकी मूर्ति की स्थापना की गई है। इसी जिले का ग्राम सुनहटा में शौनक ऋषि का आश्रम था। इसी जिले के ग्राम कुरौना में मेरे ही तट पर महर्षि कश्यप तथा ग्राम रिस्वा में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव मुनि की तपस्थली तथा यहीं स्वामी अखण्डानंद जी की जन्म स्थली एवं इसी जिले में महर्षि याज्ञवल्क्य के आश्रम थे। साथ ही आगे, जालौन जिले में मेरे ही तट पर स्थित
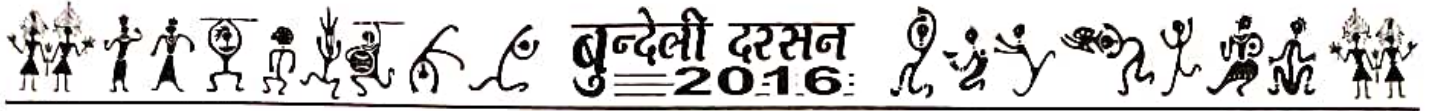
ग्राम मरगांय में महर्षि मृकण्ड के पुत्र प्रख्यात कथाकार महर्षि मारकण्डेय का आश्रम स्थल था।

इस संबंध में मेरे पुत्र कीर्तिकेश पं. मनबोधन की काव्यकृति (संत प्रवर स्वामी ब्रहानंद जन्मशती स्मृति विशेषांक 1995 राठ हमीरपुर से) इसकी पुष्टि के दृष्टव्य हैं-

''तपो भूमि यह तपियों की, ऋषि मुनियों ने कीन्हों विश्राम।
ऋषभ देव रिस्वा में आश्रम, पराशरी पराशन ग्राम।।
किया भजन जमदग्नि जमोड़ी याज्ञवल्क्य जिटकिरी मुकाम।।
विश्वामित्र था घाट नागरा, श्रंगी मुनि खरेला ठाम्।
वाल्मीकि बवीना केख, चन्नौंट निवासी ऋषि च्यवन।
कपिल देव जी रमें कालपी, रवि नंदिनी किनारे जान।।
कर्दम ऋषि ग्राम कहटा में, करते रहे हरि गुण-गान।
वशिष्ट जी ग्राम बसरिया में कश्यप कियास करौना ध्यान।।
आज देख लो नदी वेतवा, बने हुए सबके स्थान।।

वेदपुराण शास्त्रों में वर्णित, इन ऋषि मुनियों का युगयुगान्तर में दुर्धर्ष तपोबल, ज्ञान, विज्ञान प्रवर्तन तथा कुछ युग प्रवर्तन की क्रांतिकारी घटनाओं से संबंधित होने के कारण आध्यात्म को वरीयता प्रदान करते हुए ख्याति प्राप्त हुए इसीलिए यह तप स्थली, पाव, पयस्विनी मेरे कान्यकूल तथा प्रवाह की कल कल छल- छल ध्वनि, जल स्रोत, निर्झर, तापर, भोज्य पदार्थ, कंद मूल फल, बेलफल, तेंदूफल, बैरफल, सीताफल, पत्रादि, मनोहारणी प्रकृति, अन्तजर्गत का दिव्य तथा आर्ष वातावरण अनन्त शान्ति, संसार के कोलाहल एवं त्रापत्य से त्रस्त मानव को तत्रस्थ विराम, विश्राम, विरक्ति चेतनता के उच्चतम विकास एवं दिव्यत्व तथा जीवात्मा के परमात्म तत्व में विलीन होकर परमानंद प्राप्ति हेतु आज भी अपनी ओर आकृष्ट करती हैं। आगे चलते हुए में 360 मील अर्थात लगभग 575 किलोमीटर की लम्वी यात्रा पूरी कर हमीरपुर नगर के आगे पत्योरा नामक ग्राम में अपनी सवारी मछली पर बैठी-बैठी ही कछवें पर सवार कृष्ण के रंग में डूबी अपनी मझली बहिन यमुना से मिलकर उनके साथ सागर से व्याह रचाने चल दी।

इस यात्रा में मुझे एक दुख भी है, कि एक ओर तो मेरे बेटे मुझे पवित्र मानकर पूजा करते है, लेकिन ओर दूसरी कचरा, गंदा पानी, मल मूत्र एवं मृत प्राणियों को बहाकर मुझे अपवित्र (प्रदूषित) भी करते है, यहाँ तक कि सेहतगंज (मध्यप्रदेश) की शराब फैक्ट्री का प्रदूषित अपशिष्ट व जल मेरे में मिलाये जा रहे है। जिस कारण अपना पुण्य प्रदेश भारत देश ब्रहावर्त, आर्यावत, अजनाम वर्ष, ऋषभ देव के पुत्र भारत के नाम पर भरतखण्ड, दुष्यन्त पुत्र भरत के नाम पर भारतवर्ष मुगलों का दिया हुआ नाम हिन्दुस्तान, अंग्रेजो का दिया हुआ नाम इंडिया, न रहकर आज प्रदूषित नदियों का देश बनता जा रहा है, प्रदूषण फैलाने वाले तो आप लोग हैं, मगर बदनाम हम पवित्र सलिलाओं को किया जाता है, यदि आप सभी मेरे जल को प्रदूषित होने से बचाएँ तो मुझे अत्याधिक प्रसन्नता होगा।

इस प्रकार मेरा लोक जीवन के साथ साथ पौराणिक महत्व भी है, इसीलिए पद्मपुराण के अष्टोत्तर खण्ड में आशुतोष भगवान शिव ने देवी पार्वती जी से कहा है, कि पूर्व काल में चम्पक नगर का राजा विदारूण जो स्वभावत : दुष्ट प्रकृति वाला क्रूर कर्मी और प्रजा पीड़क था, जिस कारण अपने कर्मो के फलस्वरूप गलित कुष्ठ से पीड़ित हो गया था। एक बार वह वन में शिकार खेलने जाने पर प्यास से व्यथित हो, भटकता हुआ वेत्रवती नदी के किनारे पहुँचा तो चुल्लुओं से पानी भर-भर कर अपने हाथ-पैर धोकर उसी जल से अपनी प्यास बुझा कर घर आया।

दूसरे दिन जब उसने अपने हाथ पैर के घावों में सुधार देखा तो उसके मन पर प्रभाव पड़ा कि यह उसी नदी के पानी का ही प्रभाव है। उस दिन से वह नियमानुसार वेत्रवती का पानी मंगाकर प्रयोग करने लगा जिससे कुछ ही दिनों में उसका कुष्ट भी जाता रहा और उसके मन में भी निर्मलता और परोपकार की भावना जाग्रत हुई। इसके बाद

तो वह जितने दिन तक जीवित रहा प्रजापालक बनकर रहा और अन्त में विष्णु लोक का वासी हुआ इसलिए रोग निवारण की मेरी शक्ति के बारे में और भी कहा है-

'' तन्द्रा- निंद्रा अजीर्ण वमन निबंध मिटा,

हल्का शरीर कर नित्य हितकारी है।

तभी तो गंगा- यमुना के साथ'- साथ, मेरा भी नाम स्मरण किया जाता है, जैसा श्रीगोपाल सहस्त्रनाम में कहा है-

''प्रपंची पंच रूपाश्च लता गुल्मैश्च गोपिता।

गंगा च यमुना रूपाश्च गोदा, वेत्रवती तथा।।

इसी प्रकार से देवी भागवत में कहा है-

''जय शुतुद्रि, कावेरी, जय- जय वेत्रवती नर्मदा जयति- जय''

इसी के साथ- साथ मेरे जीवन की एक घटना को पुराणों में इस प्रकार से लिखा है, सिंघदीप नाम राजा ने देवराज इन्द्र से शत्रुता का बदला लेने के लिए मेरी कठिन तपस्या की तो मैं मानुषी रूप धारण कर उसके पास गई और उससे मिलकर उसकी समस्या के समाधान के लिए बारह सूर्यों के समान तेजस्वीपुत्र, दिया जिसका नाम वेत्रासुर रखा। मेरे इसी पुत्र ने देवराज इन्द्र को पराजित कर सिंधु द्वीपराजा का मनोरथ पूर्ण किया।

इसीलिए तो मेरे लिए पद्मपुराण में कहा गया है, कि कलियुग में वेतवा ही गंगा के समान पुण्यदायी होगी क्योंकि मैं ही प्रदूषण मुक्त रहूँगी। तभी तो कहते है

कली - वेत्रवती गंगा।'' इसीलिए मैं अपने तट की रज में मंत्रदृष्टा ऋषियों मनीषियों चिन्तकों विचारकों विजेताओं और समृद्धशाली लक्ष्मीपुत्रों को पोषित करते हुए चल रही हूँ, क्योंकि -

मैं नदिया की धारा मेरी मति निर्मल।

मैं स्वछन्द विचार मेरी गति चंचल

शुभमस्तु नित्यम्।

बाल साहित्य प्रेरक
तिवारी सदन पर्यटक ग्राम कुण्डेश्वर
जिला टीकमगढ़ म.प्र.
मो.- 09630078557
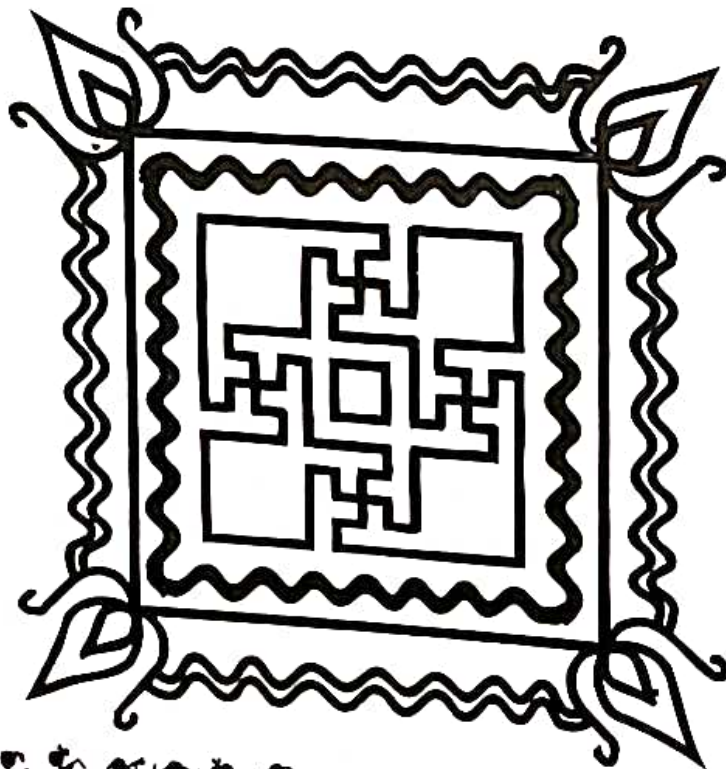
अद्भुत किला कलींजर कौ

– डॉ. सुधा श्रीवास्तव

कलिंजर कौ किला भारत के प्राचीनतम् किलन मा याद करौ जात है या बांदा सें 57 किमी. दूरी दक्षिण पूर्व दिशा मा दुर्गम पहाड़ी मा 1200 फुट की ऊँचाई मा बनौ है। यही कै नाचें कालिंजर नाम सें एक गाँव बसौ हवै। या किला का उल्लेख वेदन मा, पुराणन मा और महाकाव्यन मा करौजात है। या किला जितनौ राजनीतिन मा जानौ जात रहौ है ओसें कहूँ जादा धार्मिक महत्वन मा सामने आऔ हवै। कालिंजर किला कै ऊपर मृगधारा कोटतीर्थ सरोवर, वृहद् क्षेत्र और नीलकण्ठ मन्दिर हवै। नीलकण्ठ मन्दिर के अन्दर का भाग और ओ के अन्दर की मूर्ति किला कै दूसर शैलियन सें मेल नहीं खातीं आय। कहौ जात आय कै या दुर्लभ किला का निर्माण मड़इन द्वारा नहीं करौ गा, यक्षन द्वारा करौगा हवै।

भारत के बुन्देलखण्ड राज्य कै उत्तर पूरव भाग मा चंदेलन कै पहले कल्चुरी वंश कौ अधिपत्य रहौ है। चंदेलन के पूर्वज चंद्रब्रह्मण प्रतापी राजा रहे हवै। वइन कै नाम मा चंदेल क्षत्रिय वंश कौ उदय भा रऔ है।

चंद्रब्रह्म नैं महोत्सव स्थल का महोबा नगर के रूप मा बसाऔ तइन। और राजधानी स्थापिन करौ तइन।

चंद्रब्रह्म नैं कलिंजर मा भी अधिकार कर लीन तौ। चंदेलवंश में सन् 1800 ईस्वी. से सन् 1308 ईस्वी. के मध्य नन्नुक, वाक्पति, जय शक्ति, विजय शक्ति, राहिल देव याशोवर्मन, धंगदेव, गंडदेव, विद्याधर, विजयपाल, कीर्तिवर्मा, संलक्षण, जयवर्मा, मदन वर्मा, परमालदेव, त्रिलोक वर्मा, वीर वर्मा, भोजवर्मा, हमीर वर्मा, आदि प्रमुख राजा रहे हवैं।

चंदेलराजन नैं आपन राज्य कौ विस्तार महोबा, कलिंजर, दमोह, देवगढ़, दुराही, सिरसागढ़, गढ़ कुण्ढार के इलाका तक करलीन तइन। या वंश के राजन नैं किला, गढ़ियाँ, मन्दिर और बड़े-बड़े तालावन का निर्माण करवाऔ तइन।

चंदेलन कौ राज्य इतिहास मा स्वर्ण युग कहौ गा रहौ है। कलिंजर के राजा नैं मंदिर, बावड़ियाँ और तालावन का निर्माण मड़इन के आराम के खातिर करवाऊ तइन।

दिल्ली कै राजा प्रथ्वीराज चौहान के भयंकर आक्रमण नैं चंदेलन के राज्य का खतम कर दीन तइन। किन्तु चंदेलन के द्वारा बनवाये गे भवन मड़ई आज भी याद करत हवैं। वहिकै महान कहानिन मा कलिंजर का किला आज भी जानौं जात हवै।

कलिंजर के किला मा पुरापाषाण काल से लैंकै बुन्देलन कै शासन काल तक के पुरावशेष आज भी हवैं। ह्यन कै वास्तु परम्परा वराह मिहिर की वृहत संहिता, विश्वकर्मा की विश्वकर्मा प्रकाश तथा विश्वकर्मीय शिल्प शास्त्र मयदानव कृत यम शिल्प तथा मयतम काश्यप और भारद्वाज कृत वास्तु तत्व और वैरवानस एवं सनत् कुमार कृत वास्तु शास्त्र पर करौ गा हवै।

कलिंजर के किला मा भवन, निवास स्थल, देवालय, राजप्रसाद, जलाशय और मूर्ति हवै। ह्यन कै रहैं का इलाका जातीय आधार लै कैं बनाऔ गा रहौ है। जातिन और ओहदा के अनुसार बड़े लोगन का बड़ी जगह और छोट मड़इन का छोट जगह दीन जात रई हवै। अलग अलग देवी देवतन कौ चित्रण अलग अलग दिशाउन के अनुसार कीन गा रहौ है। पूर्व दिशा मा ईशान कोंण मा शिखा, पर्जन्य, जयन्त, इन्द्र, सूर्य, सत्य, भृभा और अंतरिक्ष आदि देवतन का रहैं का स्थान है। अग्निकोंण मा पूजा, नितर, बृहक्षत, यम, गंधर्व, मृगराज, मृग हवैं। नैत्रृत्य कोंण में पितृ, दैवारिक, कुसुमदत्त,

वरूण, भल्लार, सोम, भुजंग, अदिति और दिति देवता विराजमान हवैं। बीच मा बृह्मादिक देवता हवैं।

या क्षेत्र मा अनेक मूर्ति उपलब्ध हवैं। जादा सें जादा शिवउपासना सें जुड़ी मूर्ति मिलतीं हवैं। शिवलिंग, पंचमुखी शिवलिंग, सहस्त्र शिवलिंग की मूर्ति और शिवलिंग की संयुक्त मूर्ति। नंदीश्वर के ऊपर शिवलिंग, कालभैरव, मिड़की भैरव की मूर्ति पाई जातीं हवै। एहि के अलावा पावर्ती, गणेश, स्वामी कार्तिकेय की मूर्ति भी हवै। शैवमत के अलावा यहां शेषशाई विष्णु की मूर्ति भी किला कै ऊपर सुरसरि गंगा के पास हवै। जैन और बौद्ध धर्म से सम्बंधित कुछ और मूर्ति भी हवै।

कलींजर के किला मा पानी कौ उचित प्रबंध हवै। ह्यन द्वै तना के तालाब मिलत हवैं एक तौ वा जेहि का निर्माण अपने आप भा, इन तालाबन मा सुरसरि गंगा (किला के नैचें) सुरगवाह गंगा (किला कै ऊपर) पाण्डु कुण्ड,पाताल गंगा, मृगधारा, मझार ताल यइन तना कै तालाब हवैं। किला कै ऊपर और खंभौर ताल भी यही तना कौ है।

दूसर तना के तालाब किला कै ऊपर वाले हिस्सा मा कोटितीर्थ, बुड्ढ़ा बुढ़िया ताल रामकटोरा ताल, शनिश्चरी तलैया, और बहुत तना कै बीहड़ और कुंआ ह्यन कै राजन कै द्वारा बनवाये गे हवैं। किला के नीचे वाले हिस्सा मा बेलाताल, गोपालताल और बहुत कै तालाब बीहड़ मा हवैं। जौन कोऊ जुग मा पानी पूर्ति के साधन रहे हवैं। कहत हवै कै मगरा बांध जेहि का निर्माण चंदेल राजाओं नै करवाऔ तौ। वा समय जलपूर्ती का सबसे बड़ो साधन आय रहौ है। या बांध का गजनी नरेश महमूद गजनवी नै तोड़दीन तौ।

कलींजर का किला महत्वपूर्ण हौय के कारण आक्रमण कारियन से घिरो रहत रहौ है। या किला जीतें के खातिर हर बलवान राजा बहुतै प्रयास करत रहे हवैं या किला का जीतब नामुमकिन रहौ है। शेरशाह सूरी कलींजर के किला कै खिलाफ मोर्चा निकालिस और वहि जीत लीन तईस। जीत के तुरते बाद मा शेरशाह सूरी (शेरखान) 25 मई 1545 मा मरगे हवैं। राजस्थान जीतें के तुरतैं बाद मा शेरशाह ने कलींजर के किला मा चढ़ाई करदीन तइन। शेरशाह सूरी सब कोसिसन के बाद भी किले की मजबूत बनावट को न समझ पाव कि यहि कैसें तोड़ो जाय। ओके दिमाग मा यहि बात नहीं आउत रहि आय। वा छः महीना तक किला कै घेराबंदी करै रहौ है। बहुत दिनन तक शेरशाह को किला की दीवार पार करैंका कोऊ रास्ता तक ना दिखाई पड़ो। ओ के बाद वा खानें खोदें का आदेश कर दीनिस ताकी बड़ा विस्फोट करें के खातिर टावर बनाऊ जा सकै। वही समै आक्रमण कारियन सें बचें कै खातिर सीधे ढालवाले रास्ता बनावे के खातिर योजना बनावत रऔ है। कई टावर बहुत ऊँचे रहै हैं जइसें किले के भीतर कै भाग का आसानी सें देखत जात रऔ है।

22 मई 1545 को शेरशाह सूरी किला के पास में जाके बहुत भयंकर हमला करौ तइस। अत्याधुनिक तरीका सें वा अपने टावरन के ऊपर से सिपाही स्थापित करौ तइस जेहि का तोड़ सकैं। एक राकेट जब किला का दरवाजा खोलें का चलाओ तइस तब वा राकेट शेरशाह सूरी कै छावनी में जा गिरौ तौ जइसें भयंकर विस्फोट भा रहौ है। तऊ वा अपने सैनिकन का हमला करैं खातिर आदेश दीन तइस। हमला सफल रहौ है और शाम कै समय कलींजर कब्जा मै करलीन गा। ओ के तुरतै बाद 22 मई 1545 के दिना शेरशाह सूरी की मृत्यु हुई गै।

3/709, हेड पोस्ट ऑफिस के सामने,
बंगालीपुरा, बाँदा
मो. 9454250617

"शंकर स्वयं केशरी नंदन"

– शिवभूषण सिंह गौतम

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी की समस्त रचनाओं में से रामचरित मानस की लोकप्रियता के पश्चात यदि कोई दूसरी रचना सर्वाधिक लोकप्रिय है, तो वह है हनुमान चालीसा। यह छोटी सी पुस्तिका जन- मानस में इतना रची- बसी है, कि प्रायः पूजन के समय इसका पाठ अवश्य करते है, वैसे तो यह भी कहा जाता है, कि भगवान श्री राम तुलसीदास जी के आराध्य थे, तो हनुमान जी उनके इष्ट थे।

गोस्वमी जी की तीन ऐसी रचनाएँ है, जो हनुमान जी को ही संबोधित कर लिखी गई है, वे है, हनुमान चालीसा, हनुमान बाहुक तथ हनुमानाष्टक। इनमें से हनुमान चालीसा की छठवी चौपाई में प्रयुक्त 'संकर- सुवन' शब्द ही मेरे इस आलेख का प्रतिपाद्य विषय है। चौपाई है- "संकर- सुवन केशरी नंदन। तेज- प्रताप महा जगवंदन।। "

विनय पत्रिका के प्रारंभ में ही गनेश जी की वंदना करते हुए तुलसीदास जी ने इसी शब्द का प्रयोग गनेश जी के लिए भी किया है, यथा "गाइए गणपति जगवंदन। संकर - सुवन भवानी नंदन।।

इन्ही दोनों शब्दों को आधार बनाकर किसी विद्वान लेखक ने हनुमानजी व गनेश जी को एक दूसरे का सौतेला भाई बताया है। जिसे पढ़ते समय मुझे लगा कहीं कुछ गड़बड़ अवश्य है। तुलसीदास जी तो हनुमान जी को रूद्रावतार मानते हैं। लोक विश्वास भी उन्हें ग्यारहवें रूद्र के रूप में पूजता है, फिर भला तुलसीदास जी उन्हें भी संकर- सुँवन कैसे लिख सकते है-

मन में स्वाभविक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि रामचरित मानस सिहत उनके अन्य ग्रन्थों में भी क्या कही हनुमान जी के लिए संकर- सुवन अथवा इसके समानार्थक शब्द का प्रयोग हुआ है? परन्तु तुलसीदास जी ने अन्य किसी भी रचना में इस शब्द का कही प्रयोग नहीं किया है। जबकि ऐसे शब्दों का बाहुल्य मिला जिससे लोकविश्वास की इस मान्यता की प्रबल पुष्टि होती है, कि हनुमान जी रूद्रावतार है।

श्री हनुमान जी के जन्म के हेतु के संबंध में ऐसी मान्यता है, कि अपने इष्टदेव प्रभु श्रीराम जी की सेवा करने के लिए स्वयं भगवान शंकर ही रूद्र रूप छोड़कर वानर रूप में अवतरित हुए थे। गोस्वमी तुलसीदास जी ने इस तथ्य की पुष्टि दोहावली में दोहा क्र. 142-143 में की है- देखें :-

जेहि सरीर रति राम सों, सोइ आदरहिं सुजान।
रूद्र देह तजि नेह वस, वानर भें हनुमान।। 142।।

अर्थात- सज्जन उसी शरीर का आदर करते है, जिससे श्री राम से प्रेम हो। इसी स्नेह बस रूद्र देह का त्याग कर शंकर जी ने, हनुमान (वानर) का शरीर धारण किया।

और देखे-

जानि राम सेवा सरस, समुझि करब अनुमान।
पुरखा ते सेवक भये, हर ते भे हनुमान।। 143।।

अर्थात श्रीराम जी की सेवा का आनंद अपने मन में जान कर ही ब्रम्हा जी जामवन्त और शंकर जी हनुमान जी के रूप में अवतरित हुए। यद्यपि उक्त दोनों दोहें तुलसीदास जी के भाव को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है, तथापि और स्पष्टीकरण के उद्देश्य से कुछ और प्रसंग भी विचारणीय है।

तुलसीदास जी की एक और महत्वपूर्ण रचना विनय पात्रिका है। गोस्वामी जी की यह रचना विद्वत्समाज में सर्वाधिक समादर्णीय है। प्राय: रामचरित मानस के प्रवचनकर्ता इसे मानस की कुंजी के रूप में उपयोग करते है। इस रचना को रचनाकार की बौद्धिक पराकाष्ठा का प्रतीक माना जाता है।

विनय पात्रिका में कुल 279 पद संग्रहीत है। प्रारंभ में एक पद गनेश जी तथा एक पद सूर्य की विनय में है। जबकि भगवान शंकर तथा हनुमान जी की स्तुति में बारह - बारह पद लिखे है। यह संख्या साम्य भी सभिप्राय है। यह साम्य शंकर जी तथा हनुमान जी के एकात्म भाव का ही प्रतीक है। हनुमान जी की स्तुति में जो बारह पद संग्रहीत है, उनमें कम से कम पांच पद ऐसे है, जिनमें स्पष्ट रूप से भगवान शंकर के विविध नामों का प्रयोग हुआ है। देखे और विचार करें।

जयति रणधीर, रघुवीर हित, देव मणि , रूद्र अवतार संसार- पाता।

विप्र सुर सिद्ध मुनि आषिपाकारवपुष, विमल गुण, वुद्धि-वारिधि विधाता।। (वि.प.पद 25)

जयति मर्कटाधीश, मृगराज विक्रम, महादेव मृद मंगलालय कपाली। (वि.प.पद 26)

जयति मंगलागार, संसार भारापहर, वानराकार विग्रह पुरारी।

....

जयति रूद्रागणी, विश्व वंद्याग्रणी विश्वविख्यात भट चक्रवर्ती।

सामगाताग्रणी, कामजेताग्रणी, रामहित राम भक्तानुवर्ती।। (वि.प.पद 27)

सामगायक भक्त कामदायक वामदेव श्रीराम प्रिय प्रेमबंधो। (वि.प.पद. 28)

जयति विंहगेश- बल-बुद्धि वेगाति, मद् मंथन मनमथ- मथन ऊर्ध्वरेता।।

....

रामपदपदम्- मकरंद- मधुकर, पाहि दास तुलसीपरण शूलपाणी।। (वि.प.पद.29)

उपरोक्त पदों में रूद्रअवतार, महादेव, कपाली, रूद्रागणी, कामजेताग्रणी, वामदेव, मनमथ- मंथन एवं शूलपाणी जैसे शब्दों से हनुमान जी की स्तुति की गई है, जो भगवान शंकर जी के ही नाम है। यह इस वात का स्पष्ट संकेत है, कि गोस्वमी तुलसीदास जी हनुमान जी को संकर- सुवन नही वरन् संकर स्वयम् ही मानते है।

रामचरित मानस अद्भुत ग्रंथ है। जिसका अवगाहन परमानंद प्रदान करने वाला है। माता पार्वती जी को रामकथा सुनाते हुए भगवान शंकर ने भी कुछ ऐसे संकेत दिए है, जिनसें हरि (वानर रूप हनुमान) हर (भगवान शंकर) के अद्वैत भाव का दर्शन होता है। ऐसेदो सुन्दर प्रसंगों को देखें-

किष्किधां काण्ड में जब भगवान राम और हनुमान जी का प्रथम मिलन होता है, और प्रभु राम छद्म भेषधारी हनुमान जी को अपना परिचय देते है, तब हनुमान जी अपने स्वरूप में आकर प्रभु के चरण कमलों पर गिरकर प्रणाम करते है, इस प्रसंग का वर्णन करते हुए शंकर जी उस आनंद की अनुभूति से मगन हो जाते है, और पार्वती जी से कहते है, कि हे उमा उस समय जो सुखानुभूति हुई वह वर्णन नहीं की जा सकती। वह अनुभवगम्य क्षण शब्दातीत है। यथा-

प्रभु पहिचान परेउ गहि चरना।
सो सुख उमा जाय नहि बरना।

इसी प्रकार का एक प्रसंग सुंदर काण्ड में भी आता है। हनुमान जी अशोक वाटिका में भगवती सीता जी से मिलकर तथा लंका दहन कर वापस आकर सीता का पता और उनका संदेश लाकर भगवान को देते है, तब भगवान श्रीराम उनके इस कार्य की प्रशंसा करते हुए कृतज्ञता ज्ञापन करते है। इस पर हनुमान जी प्रभु जी राम के चरण कमलों में त्राहिमाम्- त्राहिमाम् कह कर लोट जाते है। भगवान राम उन्हें उठा कर हृदय से लगाने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु वे प्रेम में इतना मगन है, कि उन्हें चरणों से उठना अच्छा नहीं लगता। इस गूढ़ रहस्य को शंकर जी छिपा नही पातें- उस स्थिति का स्मरण करते हुए वे स्वयं प्रेममग्न हो जाते है। प्रसंग देखे-

प्रभु- कर- पंकज कपि के सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा।

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर।।

जब- जब हनुमान जी को प्रभु श्रीराम का सानिध्य विशिष्ठानुगृह रूप में प्राप्त होता है, तब- तब उस आनंद की अनुभूतिस्वयं भूतभावन भगवान शिव को होती है, और ऐसा तभी संभव है, जब अंशी और अंश में कोई द्वेत भाव नही रहता। फिर हनुमान जी तो वानराकार विग्रह पुरारी ही है।

उक्त प्रमाणों से स्पष्ट है, कि गोस्वामी जी हनुमान जी को संकर- सुवन नही संकर स्वयं मानते है, अत: हनुमान चालीसा में प्रयुक्त संकर- सुवन शब्द उनकी भावना के अनुरूप नही हो सकता। यह विकृत पाठ है, जो हस्तलिपि पाठ की असाावधानी के कारण प्रचलित हो गया है। परिणामस्वरूप आज कतिपय विद्वान हनुमान जी को गनेश जी का सौतेला भाई प्रमाणित करने का उपक्रम करने लगे है, जो कि उचित नहीं है, ऐसा मेरा मानना है। मानस प्रेमी भक्त गण एवं आस्तिक विद्वानों से मेरा विनम् आग्रह है, कि वे स्वयं विचार कर सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि हनुमान चालीसा की यह अर्द्धाली ''संकर- सुवन केशरीनंदन'' है या फिर संकर स्वयं केशरी- नंदन है?

अन्तर्वेद कमला कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.)- 471001
मोबा.- 9826756929
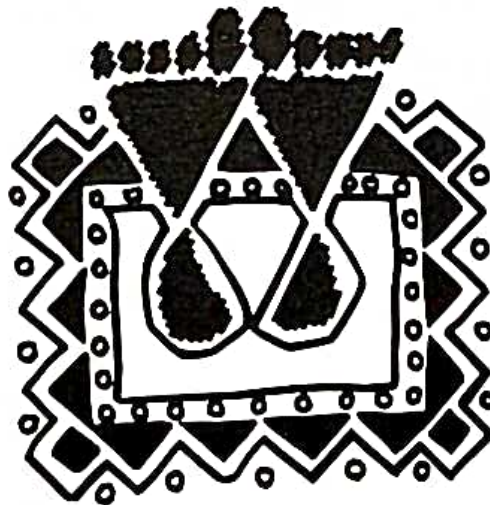
बुंदेलखण्ड के गौरव -

अम्बिका प्रसाद दिव्य : पहले मेरे पिता, फिर साहित्यकार

– जगदीश किंजल्क

दैनिक जीवन जीने की कला और दिन प्रतिदिन के आचरण के माध्यम से एक संवेदनशील और जिम्मेवार पिता बनने की शिक्षा मुझे अपने पिता स्व. अम्बिका प्रसाद दिव्य से मिली है। मनुष्य प्राय : अपनी सफलता का आकंलन भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति से करता है। एक मकान, बच्चे को नौकरी, लड़की की शादी, चंद पैसे, ये चार चीजें ही आम आदमी की जिन्दगी के लक्ष्य है, और इनकी प्राप्ति उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। इन सबसे परे हटकर दिव्य जी ने मुझे और मेरी पाँचों बड़ी बहनों मेरी माँ श्रीमति कमल दिव्य, मेरी पत्नी राजो किंजल्क, बेटी अनन्या और दोनों बेटों अंशुल और अद्वैत को जो कुछ दिया वह कोई भी धनवान व्यक्ति नहीं दे सकता। उन्होंने हमारे अन्दर सौंदर्य बोध, मानवीय संवेदना, अनुशासन, शिक्षा का संस्कार, अपनी जरूरतों को अपनी सीमा के अन्दर समेटने का हुनर और परिवार के अन्दर भरपूर प्रेम और अपनत्व से रहने की घुट्टी पिलाई, वह हमसब के लिए वरदान स्वरूप है। पिताजी द्वारा प्रस्तुत इन उदाहरणों के अनुपालन में, मैं अपने परिवार में एक जिम्मेदार पिता होने का दावा कर सकता हूँ। दिव्य जी जितने महान पिता रहें है, उस ऊँचाई तक पहुँचने का तो मैं सोच भी नहीं सकता, फिर भी उनकी राह पर चलने वाले एक राहगीर होने का सुख प्राप्त करने का दावा तो कर ही सकता हूँ। दिव्य जी कहा करते थे कि यदि मनुष्य अपने घर को ठीक से संचालित और संस्कारित न कर सके तो वह सफल साहित्यकार भी नही बन सकता। एकांगी, सफलता, नहीं है। सफलता सर्वांगीण होना चाहिए, अर्थात गृह क्षेत्र और कर्मक्षेत्र दोनों में। दिव्य जी ने इस सर्वांगीणता को अपने जीवन में अर्जित किया था और अंतिम समय तक वे इसका निर्वाह करते रहे।

दिव्य जी के सहित्यकार वाले व्यक्तित्व और उनके कृतित्व पर तो बहुत कुछ लिखा और कहा जा चुका है, परन्तु उनका यह पक्ष अभी तक अछूता ही रहा है। पिताजी के जीवन में जितने अभाव आये, जितनी विपरीत परिस्थितियाँ आई, जितनी विकराल समस्यायें आईं, उनसे उनका आत्मबल बढ़ता रहा, संघर्ष करने की शक्ति बढ़ती रही, स्वाभिमान बढ़ता रहा, उनके व्यक्तित्व में निखार आता रहा। पिता जी एक एन्साइक्लोपीडिया (विश्वकोष) थे। आश्चर्य होता था हम सभी को उनका व्यापक ज्ञान देख कर। दिव्य जी को हिन्दी के अलावा, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, रूसी भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। उनकी स्मरण शक्ति अद्‌भुत थी। सेंस ऑफ ह्यूमर भरपूर था। उनकी एक कमजोरी भी थी। वे असत्य को कभी स्वीकार नही कर पाते थें। असत्य पर उन्हें बहुत जल्दी क्रोध आता था। इस कमजोरी के कारण उन्हें जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ा और गंभीरतम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। उनके जीवन में अभावों और संघर्ष का समयकाल, सुख के समयकाल से कहीं अधिक रहा। असत्य को स्वीकार न कर पाने और समझौता न कर पाने के कारण एक ओर तो उनकी नौकरी में बड़े व्यवधान आते रहें, दूसरी ओर उनकी कलम और तूलिका निरन्तर गतिशील बनी रही। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने साठ महत्वपूर्ण ग्रंथो का सृजन किया, सैकड़ों लेख लिखें सैकड़ों चित्र बनाये और अंतिम श्वास तक सृजनशील बने रहें। 05 सितम्बर 1986 को संध्या 04 बजे उन्होंने

अजयगढ़ जिला पन्ना (म.प्र.) के हायर सेकेण्डरी स्कूल में जहाँ वे स्वयं प्राचार्य रहे थे, शिक्षक दिवस समारोह में अंतिम श्वास ली थी, उसी दिन उन्होंने खजुराहो पर अंग्रेजी में एक महत्वपूर्ण लेख पूरा किया था, उनकी कर्मठता, उनकी लगन, समय का सदुपयोग और दृढ संकल्प में उनके व्यक्तित्व को इतना निखारा कि वे एक संत पुरूष बन गये थे। दुरयोग यह रहा कि वे शासकीय उपेक्षा के सदैव शिकार रहें। उनकी लेखकीय श्रेष्ठता का आज तक मूल्यांकन नही हो सका। बहरहाल, अपने देश का चलन देखकर दुख नही होता। अपने देश में प्रतिभाओं का मूल्याकंन मृत्यु के बाद ही होता है, या फिर वह भी नहीं हो पाता। दिव्य जी का मूल्यांकन न होना, कोई नई बात नही हैं। आज भी सैकड़ों नई कलम के धनी ऐसे रचनाकार है, जिनको कोई जानता तक नहीं।

दिव्य जी का जीवन एक कर्मयोगी का जीवन रहा है। आज जब उनके संस्मरण लिखने बैठा हूं तो चलचित्र की भांति स्मृतियाँ सामने आ रही है। यूं तो संस्मरणों की संख्या भी सैकड़ों में है, परन्तु मैं यहाँ चंद रोचक एवं महत्वपूर्ण संस्मरण ही लिख रहा है।

बात अजयगढ़ जिला पन्ना म.प्र. की है। 17 फरवरी 1979 का दिन था। मेरे पिताजी अम्बिका प्रसाद दिव्य ने महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र पर आधारित एक महाकाव्य ''गाँधी पारायण'' का सृजन किया था। इस महाकाव्य में इक्कीस हजार दोहा चौपाईयां थीं। यह सात काण्डों में विभक्त था। पिता जी ने उस दिन भी अपनी दिनचर्या रोज की तरह प्रात: 06 बजे से 12 बजे तक और 01 बजे से 05 बजे तक नियमित लेखन और पठन पाठन का कार्य किया। प्रात: नौ बजे साहित्य सदन के द्वार पर एक भव्य और प्रभावशील व्यक्तित्व का अनायास आगमन हो गया। सफेद दाढी, बलिष्ठ शरीर, तेजस्वी चेहरा, उम्र लगभग अस्सी वर्ष। पिता जी सहित हम सभी ने आगन्तुक सज्जन का स्वागत किया और सोफे पर बैठलाया। वे सोफे पर बैठते ही बोले, ''मैं पंडित परमानंद हूँ। '' इतना सुनते ही हम सब हर्ष से गद्‌गद्‌ हो गए। महान क्रांतिकारी पंडित जी अनायास हमारे घर। एक गौरवपूर्ण सच...... एक सुखद आश्चर्य। महान विभूति के घर आगमन से पिताजी भी अभिभूत .... हम सभी ने पंडित जी का यथोचित स्वागत सत्कार किया। हमारे परिवार, हमारे घर में पंडित जी ऐसे रमें कि जहाँ उन्हें शाम को पन्ना चले जाना था, वहाँ वे दो दिनों तक हमारे मेहमान रहे। उस समय पिता जी द्वारा सृजित महाकाव्य 'गाँधी पारायण' की ही चर्चा घर में चलती रहती थी। मेरी बड़ी बहिनें विजय लक्ष्मी विभा और जयन्ती खरे ने पंडित जी को 'गाँधी पारायण' रामचरित मानस की धुन पर गाकर सुनाया। इसे सुनकर परमानंद जी इतने भाव विभोर हुए कि लगभग चार घंटे तक 'गाँधी परायण' ही सुनते रहें। पंडित जी से आग्रह किया कि आप गाँधी जी के अत्यन्त निकट रहे है, इस पर अपनी सम्मति लिख दीजिए। पंडित जी से कुछ क्षण तक सोचते रहें फिर बोले, ''दिव्य' जी! भारत के इतिहास से सबसे अधिक अध्यनशील गोपाल कृष्ण गोखले जी रहें, गोखले जी के बाद संभवत: मेरा ही स्थान हो .... मैंने गाँधीजी पर तमाम ग्रंथ पढ़े हैं। पहले आप बताईये कि आपके कितने ग्रंथ पढ़े हैं। ''पिता जी ने कहा ''लगभग पचास ग्रंथ तो पढ़े ही हैं।''

पंडित परमानंद जी तत्काल बोले, दिव्य जी यदि आप इन पचास ग्रंथों का नाम बता दें तो मैं अभी सम्मति लिख दूँगा।

पिता जी के समक्ष यह सर्वथा अप्रत्याशित शर्त थी, उनकी परीक्षा भी, महान क्रांतिकारी पंडित परमानंद से कुछ कह भी नहीं सकते थे। धर्म संकट बहरहाल दिव्यजी ने अपनी स्मरणशक्ति पर जोर डाला। कागज पेन उठाया और गाँधी जी पर पचास पुस्तकों के नाम लिख कर कागज पंडित जी को दे दिया। पंडित जी ने पूरी तन्मयता से वे नाम पढ़े और मुस्करा दिये फिर बोले, ''दिव्यजी! आपने जिन पुस्तकों के नाम लिखे है, इनमें से कम से कम पन्द्रह ग्रंथ

ऐसे है, जो मैंने नही पढ़े हैं। आप गाँधी जी को मुझसे कही अधिक अच्छी तरह समझ सकें है। मैं आपके महाकाव्य पर अब सम्मति नहीं लिख सकता। हाँ यदि आप पचास ग्रंथो के नाम न लिख पाते तो जरूर सम्मति लिख देता। ''

इस उत्तर से हम सभी निराश हो गए। पंडित जी के रौबदार व्यक्तित्व के समक्ष किसकी हिम्मत पड़ सकती थी, कि कुछ कहें। पंडित जी ने दिव्य जी के अन्य उपन्यासों, काव्य ग्रंथे जैसे निमियाँ, मनोवेदना, पावस, स्त्रोतस्विनी, दिव्य दोहावली आदि को उस रात करीब बारह बजे तक देखते रहें। तीसरे दिन पंडित जी जब पन्ना जाने लगे तो बिना किसी के कुछ कहें, उन्होंने गाँधी पारायण महाकाव्य पर अपनी सम्मति लिख दी और यहाँ तक लिख गये, ''आपने बहुत से कवियों के ग्रंथ पढ़े होगे किन्तु आपको दिव्य जी की भाषा आसविल के जीवन चरित्र से अधिक प्रभावशाली मिलेगी और एडवर्ड गिवन के डिकलाइन एण्ड फाल आँ रोमन इम्पायर की शैली से अधिक सारगर्भित और सुन्दर मिलेगी। पढ़िए इस ग्रंथ को आप इस को पढ़ कर विचारों के प्रशान्त महासागर में अपने आपको मग्न पायेगें '' पंडित परमानंद जी गाँधी पारायण महाकाव्य पर सम्मति लिख कर, हम सबको आशीष देकर पन्ना चले गए। जुलाई माह में गाँधी पारायण महाकाव्य का प्रकाशन भी हो गया।

पिताजी जिन्हें हम लोग घर में दाऊ जी कहते थे, एक सिद्ध हस्त चित्रकार भी थे। टीकमगढ़ नरेश महाराजा वीरसिंह देव (द्वितीय) ने उन्हें अपने राज्य में कला शिक्षक के रूप में नियुक्त किया था। वे काम पर एक ग्रंथ लिखना चाहते थे। उन्होंने सन 1948 में दिव्य जी को खजुराहो, जगन्नाथपुरी, कोणार्क, आदि स्थानो पर भेजा था, और उनकें काम से संबंधित मूर्तियां के रेखाचित्र बनवाये थे। पिताजी ने लगभग तीन सौ रेखा चित्रों का एक एलबल तैयार कर उन्हें दिया था। दुरयोग से महाराज साहब अपना ग्रंथ पूरा न कर सके और स्वर्ग सिधार गए। हाँ, दिव्य जी का एक महत्वपूर्ण एलबम खजुराहो चित्रावली अवश्य तैयार हो गया। खजुराहो में उन दिनों दो माह तक वही रह कर स्केच बनाते रहने से जो भाव दिव्य जी के मन में उभरें, उसकी परिणति सर्वाधिक चर्चित उपन्यास खजुराहों की अतिरूपा के रूप में हुई। दिव्य जी के इस उपन्यास के हिन्दी में तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, अंग्रेजी में दो। इसका अनुवाद रूसी और जर्मन भाषाओं में भी हो रहा है।

दिव्य जी टीकमगढ़ में सतरह वर्ष रहें। मेरा जन्म भी टीकमगढ़ में हुआ। मेरी बहन कवयित्री विजयलक्ष्मी विभा का जन्म भी वही हुआ। टीकमगढ़ में पिता जी को पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी, यशपाल जैन, काका कृष्णानंद गौरी शंकर द्विवेदी 'शंकर' जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी जैसे बड़े लेखकों का सानिध्य मिला। वह पिता जी के व्यक्तित्व का निर्माणकाल था। उन दिनों पिता जी ने एक उपन्यास लिखा था, जिसके नाम को लेकर कई दिन तक बहस चली थी। पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने जब इस उपन्यास को पढ़ा तो वे पिता जी के लेखक के रूप में हृदय से सम्मान करने लगे। उस समय तक उपन्यास का नामकरण नहीं हो पाया था। बनारसीदास जी ने उपन्यास का नाम कुछ और सुझाया। पिता जी को उनका सुझाया नाम पसन्द नहीं आ रहा था, परन्तु पंडित जी के सामने उनके सुझाये नाम को अस्वीकार करने में भी संकोच हो रहा था। वह बड़े पशोपेश में पड़ गए। एक कारण यह भी था कि चतुर्वेदी जी को यह उपन्यास इतना भा गया था, कि उन्होंने इसकी भूमिका भी लिख दी थी। अंतत : एक दिन पं. गौरीशंकर द्विवेदी ने चतुर्वेदी जी से सारी स्थिति स्पष्ट कर दी और बता दिया कि दिव्य जी को आपका सुझाया नाम पसन्द नहीं आया है। संकोच वश वे आपसे कुछ कह नही पा रहें हैं। यह सुनकर चतुर्वेदी जी बहुत हंसे। वे टीकमगढ़ के समीप कुण्डेश्वर में रहा करते थें, वहीं प्रतिदिन शाम को सहित्यकारों का जमघट हुआ करता था। टीमकगढ़ के सभी सहित्यकार टहलते हुए वही जाया करते थे। एक दिन पिता जी (दिव्य जी) उनके पास

पहुँचे तो चतुर्वेदी जी आक्रोश दिखाते हुए बोले, ''दिव्य जी! या तो आपको अपने उपन्यास का नाम यही रखना होगा, जो मैंने बताया हैं, या फिर आप मेरी लिखी भूमिका मुझे लौटा दें जो मैंने आपको लिख कर दी हैं।

यह पिताजी की परीक्षा की घड़ी थी, हाँ उनकी सूझबूझ और उनका आई क्यू बहुत तेज था। उन्होंने तत्काल उत्तर दिया, ''दादा जी! भूमिका लिखि कर आप मुझे दे चुके है, अब वह मेरी हो गई, इसे मैं नहीं लौटा सकता। हाँ शीर्षक आपने लिख कर मुझे नही दिया हैं, इसे मैं सहर्ष लौटा रहा हूँ। इस उत्तर पर चतुर्वेदी जी ठहाका मार कर हँस पड़ें। अंतत: पिता जी ने अपने उपन्यास का नाम निमियाँ रखा, जिसका अर्थ है, नीम सी कड़वी, यह उनका पहला उपन्यास था, जो बहुत लोकप्रिय हुआ था।

दिव्य जी का सारा जीवन साहित्य, काल और राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। दिव्य जी के देहान्त के पश्चात् पन्ना के क्रांतिकारी श्री दरयाव सिंह ने एक बार इस तथ्य का भी उद्घाटन किया था, कि क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद ने उनसे एक ऐसी लिपि तैयार कराई थी, जिसे केवल क्रांतिकारियों के उपयोग में लाया गया था। उनका सारा पत्राचार उसी लिपि में होता था। दिव्य जी एक बार पन्ना के पाँडव फाल की गुफा में आजाद जी के आमंत्रण पर छुपते छुपाते मिलने भी गए थे। उसी समय उन्होंने उस लिपि और उसकी व्याख्या को चंद्रशेखर आजाद जी को सौंपा था। दिव्यजी चूंकि शासकीय सेवा में रहे यह बात उन्होंने परिवार को भी कभी नही बताई। छतरपुर के क्रांतिकारी पं. राम सहाय तिवारी जी ने एक भेंटवार्ता के दौरान मुझे यह बात बताई थी।

जैसी कि दिव्य जी कहा करते थे, उन्होंने समय का पूरा पूरा मूल्यांकन किया है, समय उनका मूल्यांकन करे या न करें। '' यह सच है दिव्य जी ने समय का भरपूर सदुपयोग करते हुए साठ महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का सृजन किया, लगभग चार सौ चित्र बनाये अनेक सामाजिक कार्य किए। नौकरी ने क्षेत्र में भी प्राचार्य के रूप में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किया परन्तु साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान का अभी तक मूल्यांकन नहीं हुआ है। हाँ मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग, भोपाल ने 10 से 12 सितम्बर 2015 तक भोपाल में आयोजित दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में मध्यप्रदेश के ऐसे चैहत्तर रचनाकारों की एक प्रदर्शनी लगाई, जिन्होंने समूचे साहित्य जगत में अपनी अमिट उपस्थिति दर्ज कराई है। इनमें 60 ग्रंथों के सर्जक और लगभग चार सौ चित्रों के चित्रकार स्व. श्री अम्बिका प्रसाद दिव्य का भी नाम हैं, देखना है, समय कब और किस रूप में दिव्य जी की अप्रतिम साहित्य एवं कला साधना का मूल्यांकन करता है?

संपादक : दिव्यालोक सहित्य सदन
145-ए-साईनाथ नगर सी. सेक्टर
कोलार रोड- भोपाल म.प्र.
मो. नं. 997770277

आलेख -

आधुनिक काल में बुंदेली भाषा और सहित्य की स्थिति

- डॉ. शरद नारायण खरे

वि.संवत 1950 से 2000 वि.संवत तक का काल आधुनिक काल माना जाता है, आधुनिक काल के प्रारंभिक दशकों तक श्रृंगार काव्य की प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहीं, पर विक्रम की 20 वीं शती का श्री गनेश अंग्रेजों के साथ संघर्ष की भूमिका से हुआ था। सन् 1857 के गदर के बाद स्वतंत्रता संग्राम की लहर समस्त उत्तर भारत में फैल गई। बुन्देलखंड में भी इसका कुछ प्रभाव पड़ा। झाँसी की रानी, नाना साहब, तात्या टोपे, बाँदा नवाव, आदि अनेक सेनानियों ने एक झंडे तले न आकर भी राष्ट्रीय उद्बोधन का काम किया। सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना भारतीय स्वाधीनता के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। अनेक राष्ट्रीय नेता मंच पर आये और सब प्रकार के नव जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। बुद्धिवाद का विकास इसी समय हुआ, जिससे नये समाज मानववाद, राष्ट्रवाद परोपकार तथा समन्वयशीलता को प्रोत्साहन दिया गया।

आधुनिक काल में प्रारंभ में सामंतवाद का प्रभाव समस्त साहित्य पर दिखता है। इसका कारण यह है, कि शताब्दियों से चली आती हुई व्यवस्था अब इतनी रूढ़ हो गई, कि लोगों का निर्वाह खेती के माध्यम से संभव प्रतीत नहीं होता था, इसलिए अधिकांश लोग नौकरी या व्यवसाय करना पसंद, करने लगे थे। गांवो की आर्थिक स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती गई। देशी भाषाओं के नाम पर अनेक संगठन बने और सहित्य संकलन की योजनाएँ अपनाई गई। बुन्देलखण्ड, छत्तीसगढ़ अवध आदि अनेक प्रदेशों की भाषाओं और बोलियों के विविध संगठन बनें। वस्तुत : बुंदेलखंड का आधुनिक साहित्य केवल काव्य विद्या की विद्या तक ही सीमित न रह गया। व्यापक काव्य भाषा में लिखने वाले कवियों, उपन्यासकारों, निबंधकारों और कहानीकारों ने बुंदेली का भरपूर प्रयोग किया।

काव्य रूप की दृष्टि से इस काल में स्फुट छंद और खंड काव्य बहुतायत से लिखे गए है, राष्ट्रीयता के साथ-साथ सामाजिक उत्थान के स्वर ही इन कवियों में मिलते है। कुल मिलाकर काव्य और कवियों का एक स्पष्ट विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है-

1. अतीत के चरित्रों को आधार बनाकर।
2. आधुनिक चेतना तथा स्वातंत्रयोन्मुख विचार धारा के बुन्देली कवि।
3. स्फुट विषयों पर लिखने वाले कवि।
4. लोक काव्य की परंपरा में लिखने वाले कवि।

आधुनिक काल में मदनमोहन द्विवेदी, मदनेश, हरनाथ, डॉ. भवानी प्रसाद, ऐनानंद, सुखराम चौबे, गुणाकर, पं. गौरीशंकर शर्मा, गौरीशंकर सुधा, मीर अमीर अली, पं. जानकी प्रसाद शिवसहाय चतुर्वेदी, रामचन्द्र भार्गव, हरिप्रसाद हरि, गौरीशंकर द्विवेदी शंकर, लोकनाथ द्विवेदी शिलाकरी, द्वारका प्रसाद मिश्र, द्वारिकेश, पं. ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी, शम्भूदयाल श्रीवास्तव, बृजेश भैयालाल व्यास, श्री लक्ष्मीनारायण पाथिक, माधव शुक्ला मनोज, डॉ. बलभद्र तिवारी, श्याम मनोहर मिश्र, अवध किशोर श्रीवास्तव का नाम उल्लेखनीय है।

बुन्देली आधुनिक काव्य का एक मूल्यांकन-

आधुनिक काल में हिन्दी में प्रगतिशील साहित्यकारों ने लोक सहित्य को आधार बनाकर अनेक रचनाएँ प्रस्तुत

कीं। फलतः भाषा और बोलियों के काव्य का उन्होंने संकलन किया। बुन्देली में कृष्णानंद गुप्त, गौरीशंकर द्विवेदी, और राजेन्द्र सिंह लोकनाथ सिलाकारी आदि लोगों के प्रयास स्तुत्य है। कथा सहित्य के संकलन में श्री शिवसहाय चतुर्वेदी का नाम अग्रगण्य है।

बुन्देली भाषा की विविध प्रवृत्तियां नीति, मर्यादा, भक्ति, आदर्शवाद का ज्ञान तो कराती ही हैं, साथ ही मध्ययुगीन संस्कारों से सम्पृक्त जीवन दर्शन को भी अभिव्यक्त करती हैं। जीवन मूल्यों तथा नीति प्रतिमानों आदि का संक्रमण, व्यावहारिक दकियानूसी, सामंती प्रवृत्ति का उन्मूलन, रीति रिवाजों के प्रति उदासीनता और देश के जीवन- दर्शन का विकास, यथार्थ प्रियता तथा देश की जीवनधारा के साथ कदम मिलाकर चलने की प्रवृत्ति ये आधुनिक काल के प्रमुख लक्षण है।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दशकों में महाकाव्य कम, खण्डकाव्य अल्प मात्रा में तथा स्फुट काव्य विपुलांश में लिखे गए। कुल मिलाकर समस्या पूर्तियां और फरमाइशी काव्य संरचना धीरे-धीरे समाप्त हो गई। गीत ही इस समय को प्रमुख काव्य विधा बना। लोक कवियों ने प्रसिद्ध लोकगीत फाग को विशेष महत्व दिया, और ईसुरी, गंगाधर और ख्यालीराम के अनुकरण पर अनके फागें लिखी। करूण रस के माध्यम से यथार्थ का भयावह चित्र खींचा गया, तथा राष्ट्रभक्ति की चेतना भी प्रसारित की गई। यही कारण है, जो कि आधुनिक काल का कवि विविधताओं का परिचालक होता है। ये प्रवृत्तियाँ स्वतंत्रता के बाद उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह गई और नये भारत का नवयुवक स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों चेतनाओं से सम्पृक्त होकर सामने आया। बुन्देली का अत्याधुनिक काव्य इसी का परिचायक है।

अत्याधुनिक काल में बुन्देली सहित्य का महत्व वढ़ा है। सागर तथा झांसी विश्वविद्यालयों से शोध प्रबंध लिखे गए। विभिन्न विद्याओं पर भी कार्य किए गए। श्रृंगार रसपरकता, आध्यात्मिक- काव्यात्मकता, हास्य रसता, व्यंग्य प्रधानता, ग्रामीण जीवन चारित्रिकता आदि के संदर्भ हमें बुन्देली के साहित्य में अत्याधुनिक काल में दृष्टिगोचर होते हैं। नाक और कथाओं को भी समेटा गया है। आलोचना साहित्य को भी सृजन का विषय बनाया गया है।

निष्कर्षत : हम कह सकतें है, कि बुन्देली का अत्याधुनिक काल अनेक दृष्टियों से नयी सहित्यिक विद्याओं का संस्पर्श करता है। बुन्देली सहित्यकारों ने समाज की जीवन समस्याओं को व्यावहारिक दृष्टिकोण से सुलझाने का उपक्रम किया है, इसी प्रक्रिया में वे यथार्थवादी स्तर पर आयें है, नये जीवन मूल्यों के चित्रण में कवियों की निर्भीकता एवं तर्कशीलता का आभास मिलता है, परंतु इसके साथ ही साथ एक प्रचारवादी तबका भी सामने आया है, जो बुन्देली लोक सहित्य और संस्कृति के नाम पर अनापेक्षित तथ्यों को भी प्रस्तुत करने में नहीं झिझकता हैं इसे उचित नहीं माना जा सकता।

हम अपेक्षा करतें है, कि नयी पीढ़ी के माध्यम से बुन्देली साहित्य की स्वस्थ दिशा में भी श्रीवृद्धि होगी। साथ बुन्देली का अत्याधुनिक साहित्य समकालीनता बोध से अनुप्राणित होकर समाज को दैदीप्यमान बनानें में व संस्कृति का संरक्षण करने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह करगा।

विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय मंडला
म.प्र.- 481661
मो. 9425484382

आल्हा खंड के रचयिता महाकवि जगनिक

– विद्यासागर पां

आल्हा खंड और परमाल रासो के रचयिता जगनिक महोवा के चदेंल राजा परिमाल के राज दरवारी कवि थे। सागर के साहित्यकार डॉ. केशवचंद्र मिश्र ने जगनिक को आल्हा का समकालीन सेनापति और राजा परमार्दिदेव का भांजा कहा है। वहीं अनेक लेखकों ने उन्हें भाट जाति का कहा है। लेकिन वह क्षत्रिय ही थे। उन्होंने इनका रचनाकाल 1965 ई सें. 1203 ईस्वी माना है। जागनिक असाधारण योद्धा निर्भीक स्वामिभक्त सेनापति व कुशल राजनीतिज्ञ थे। संधि व विग्रह दोनों स्थितियों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रहती थी। आल्हाखंड में परिमाल रासों के राजापरिमर्दिदेव व उनके वीर सामंतो आल्हा ऊदल की शौर्यगाथाओं का रोचक वर्णन है आल्हखंड व परमाल रासो विश्व साहित्य में अद्‌भुत वीर रस का काव्य है। जिसके श्रवण मात्र से कायर व्यक्ति में भी वीरता जागृत हो जाती है व रोम, रोम रोमांचित हो जाता है। आल्हा खंड मौखिक लोक संस्कृति की धरोहर है वह ऐतिहासिक दृष्टि से असाधारण महत्व का है। परमर्दिदेव (परमाल) के दरवार में जाने के पूर्व जगनिक कन्नौज के राजा वियजपाल राठौर के राजदरवार में रहे इनका राजत्व काल सन् 1155 ई. से 1161 ई. था राजा विजयपाल व पृथ्वीराज द्वितीय (राजस्व काल 1164 ई. से 1169 ई.) के बीच हुय युद्ध में जगनिक ने राजा विजय पाल राठौर की प्रशस्ति में विजय पाल रासो की रचना की थी विजयपाल रासो के अनुसार राजा विजयपाल के सैनिक वन में आखेट को गये थे उसी समय पृथ्वीराज चौहान द्वितीय के सैनिकों से अचानक मुटभेड़ हो गई वे पृथ्वीराज द्वितीय के कुछ सैनिक युद्ध में मारे गये इस घटना से क्रोधित होकर पृथ्वीराज चौहान ने कन्नौज पर आक्रमण करने की योजना बनाई पृथ्वीराज की सेना के एक नायक धूसर ने उसे समझाया महाराज इतनी छोटी बात से लिये युद्ध व रक्तपात करना उचित नहीं है।

को जानति किहि खोट भयव मन मांह विरुधह
न कछु वाति परि आप करहु जिन मन चित क्रुधह।

धूसर की इस समयोचित नीति पूर्ण सलाह का धोकल तोमर ने विरोध किया और पृथ्वीराज द्वितीय ने सेना सजाकर कन्नौज पर आक्रमण करने हेतु प्रस्थान किया राजा विजयपाल राठौर ने भी युद्ध की तैयारी कर ली थी पुन : युद्ध व रक्त पात न हो इस हेतु राजा विजयपाल द्वारा पृथ्वीराज द्वितीय को समझाने के लिए महाकवि जगनिक को अपने राजदूत की तरह भेजा उसके सैनिक शिविर पहुँचकर युद्ध रुकवाने का भरपूर प्रयास जगनिक ने किया लेकिन पृथ्वीराज चौहान(द्वितीय) के पक्षवालों ने जगनिक की कोई बात नहीं मानी परिणामत : दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध हुआ और पृथ्वीराज चौहान (द्वितीय) की पराजय हुई इसी बीच अजमेर के दो सरदारों अरवैसिंह और अचलेश ने भी पृथ्वीराज द्वितीय के पास पहुँचकर समझा बुझाकर उनका क्रोध शांत किया।

ऐतिक में ते, अखैसिंह अचलेस
आये दोनों शीघ्र सों, जहाँ दिलीप नरेस
ते दोनों मिल बुल्लीयौं, सुनौं भूप प्रथिपाल
न कछु बात पर आपने, करों कहा ततकाल
ताको फूल पायो जितौ, तितो भयो जग पेस
भट्ट–कुट्ट नगर, छुट्टे चाहत देस

उक्त उदाहरणों से सिद्ध है कि युद्ध में पृथ्वीराज चौहान द्वितीय की मान हानि व पराजय हुई। राजा विजयपाल राठौर ने विजयोत्सव मनाया इस विजयोत्सव मे जगनिक को पुरस्कृत करने का वर्णन है। जगनिक रचित विजय

पाल रासों की दुर्लभ पांडु लिपि गॉधी पुस्तकालय से बड़ा जिला टीकमगढ़ में स्थित है। जगनिक बुन्देली के सशक्तरचनाकार थे हिन्दी भाषी प्रदेशों में उनके आल्हा खड का गायन मेघ गर्जन के साथ अल्हेतों की वीर गर्जना को भावुक होकर सुना जाता है।

आल्हाखंड का लगभग सन् 1860 के आसपास फरुखाबार के तत्कालीन कलेक्टर चार्ल्स इलियट के प्रयत्नों से अल्हैतों के गायन का लेखाकन कराया गया। आल्हाखंड छपकर जब बाजार में आया तो बहुत लोकप्रिय हुआ और अनेक लोगों ने विभिन्न आल्हाखंड की 52 लड़ाइयों की रचना की। अनेक पूर्व रियासतों, टीकमगढ़ के राजाओं ने अल्हैतो को जमीने दान दी। गोविन्द्र प्रसाद शर्मा ने अपने लेख "आल्हा की सखिया" में लिखा भूतपूर्व बिजावर राज्य के स्व. नरेश महाराज सावन्त सिंह जू देब एकवीर स्वाभिमानी क्षत्रिय थे वे अपने शासन काल में प्रति वर्ष 1 पखवारे तक नियमित रुप से आल्हा सुना करते थे।

आल्हाखंड की 52 लड़ाईयों में जागनिक की जीवंत उपस्थिति रही है और उन्होंने सभी युद्धों को प्रत्यक्ष देखा है व भाग लिया चंदेल राज परिमाल व पृथ्वीराज चौहान तृतीय के बीच दिल्ली व महोबा में हुयें युद्धों में जगनिक ने वीरता का परिचय दिया परमाल के पुत्र ब्रम्हा की पृथ्वीराज चौहान तृतीय की पुत्री बेला के विवाह में आल्हा ऊदल सहित कलम और तलवार के धनी कवि जागनिक भी बराती बन कर गये थे व विवाह के तत्कालीन (वीर गाथा कालीन) रीति रिवाजों के बढ़चढ़ कर भाग लिया था। जहाँ दिल्ली में चौहान के महल के सामने उनकी वीरता का वर्णन इन पंक्तियों में मिलता है।

दांत प्रकरि धरती पर पटको,
देखें-खड़े पिथौरा राय
देखि तमाशा बादशाह (पृथ्वीराज चौहान) तब, मन में गये सनाका खाय

लगभग पूरे उत्तरभारत में द्वारचार मे वर पक्ष का मान्य जैसे फूफा, बहनाई या भान्जा ही कलश उतारता है

जगनिक चंदेलराज परिमाल के भांजे थे व जगनेरी के सामत भी थे।

राजा जगनिक जगनेरी के भेने जौन चंदेले क्यार
बोलें कलश उतारौ पहिलें, तब हम द्वारो देई कराय
यह सुनि जगनिक आगे बढ़िगै, औ लग्गी तिर पहुंचे जाय

मरि महावत कमलापति को धरती ऊपर दओ गिराय

उक्त लड़ाईयों में आल्हा ऊदल के शौर्य को देख उरई के सांमत कुटिल माहिल जो राजा परमिर्ददेव का साला था। उसने आल्हा ऊदल के विरोध में राजा परिमाल के मन में इन वीरों के प्रति संशय भर दिया जिससे लगभग 1175 ईस्वी में आल्हा के महोबा छोड़ने बाध्य होना पड़ा इनकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर माहिल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय को महोबा पर आक्रमण हेतु उकसाया व पृथ्वीराज चौहान तृतीय सन् 1182 ई. ने महोबा को चारों तरफ से घेर लिया इस संकट की घड़ी में राजा परमिर्द की रानी मल्हना ने कवि जगनिक को कन्नौज जाकर आल्हा ऊदल को मनाकर लाने पत्र लिखकर भेजा, जिसे आल्हा का मनौआ कहतें हैं। जगनिक राजा परमाल का राजकवि या चाकर होता तो रानी मल्हना उसे हुकम देकर बुलाती लेकिन वे स्वयं जगनिक के निवास जगनेरी गई।

चढ़ी पालकी मल्हना रानी जगनेरी में पहुँची जाय
जगनिक आये दौर द्वार पै मल्हना छाती लियो लगाय।
मल्हना बोली कातर होके, जगनिक संकट होहु सहाय
धन्य जनम है वा क्षत्री को, परहित सीस देय (कटवाय)

इस वीर गांथा काल के युग में किसी चाकर को रानी द्वार गले लगाना यह सिद्ध करता है जगनिक परमाल का भांजा था। पृथ्वीराज चौहान तृतीय (राजत्व काल 1176 से 1192 ई) की फौजो ने महोबा ने महोबा की ऐसे घेरा था कि महोबा के बाहर परिदा भी पर नहीं मार सकता था।

जगनिक के महोबा पत्र लेकर जाने का चंद्रवरदाई ने भी पृथ्वीराज रासौ में वर्णन किया है।

गयब जगन कनबज, अल्हन कह पत्तिय

ऊदल ईदल जोग देव्य देवल के मत्तिय

आल्हा पत्र देखकर हंसा, सब कुछ जाना और गंभीरता से समझा बड़ी चर्चा के बाद जगनिक ने आल्हा से विनय की।

अब तुम आल्ह विसरु कर चल्ली, मल्हन दे अति दूष रुष घल्लि

बैठी महलें बाट सुजोवे, कनबज दिसा दोशि कर रोवि।

(160- परमाल रासो श्याम सुन्दर दास पृष्ठ 229 संपादित)

''भोलानाथ कृत आल्ह खं डमें'' आल्हा का मनौआ'' कथानक जगनिक की वीरता धीरता और निर्भीकता से भस है। रानी मल्हना की मार्मिक शब्दों को सुनकर जगनिक रानी मल्हना से महोबा जाने हरिरागर घोड़ा मागते है मल्हना रानी ने अपना घोड़ा देकर जगनिक की आरति की। अपने पुत्र, भाई, भान्जे की ही आरति की जाती है। महोबा के राजकुमार वीर ब्रम्हा को घोड़े का हरनागर था।

पाती देके जगनायक कों हरनागर कौ रही सजाय

जगनिक साजे, घोड़ा साजौ, आरति करी मल्हनदे नार

पृथ्वीराज की सेना सतर्क थी कोई महोबा से बाहर न जा पायें जगनिक को निकलतें देख पृथ्वीराज ने अपने दो इतिहास प्रसिद्ध सामंतों को जगनिक को पकड़ने को कहा।

घोड़ा छीनी जगनिक बांधौ, हमरी नजर गुजारो आय

यह सुनि चौड़ा धांधू चलिगे, सिगरे घाट लेऊ घिरवाय

जगनिक नदी घाट पर पहुँचे, तब चौड़ा ने कही पुकार

चुपके-उतिर परौ घोड़ा से जगनिक मानो कही हमार

कोड़ा के संग हरनागर को सोंपों हमें जगम्मनराव

अनी बड़ी उमड़ी घेरा लख, जगनिक मन में कियो विचार।

प्रान बचाकै, महुबे लौटे तो का जी हें बरस हजार

स्वामी के कारज तन दैहें साका करै तरै संसार

अपने धर्म की रक्षा के लिये साका क्षत्रिय ही करते है। ऐसा सोचकर जगनिक ने पृथ्वीराज चौहान के सामतो को ललकारा।

प्रान हथेरी पै धर जगनिक बोलें वीर वचन ललकार

कौन सूरमा जो तुमरे दल, घोड़ा हमसो लेय छुड़ाव

इस तरह जगनिक ने चामुंडराय जैसे वीरों से युद्ध किया।

कोड़ा चटको घोड़ा ददको, उठिकै, ऊंची भरी उड़ान

पिछली टापै धरि गज माथै, अगली हौदा धरीं जमाय

ढाल की ओझड़ जगनिक मारी सोने कलसा दियें गिराय

लैंके कलगी फिर चौड़ा की जगनिक बढ़ चले वार पार

इस तरह पृथ्वीराज चौहान के सेनापतियो धांधू व चामुंडराय को कड़ी टक्टर देकर कवि जगनिक कन्नौज पहुंचे और आल्हा ऊदल को समझा बुझाकर महोबा राज्य की संकट की घड़ी मे रक्षा हेतु महोबा ले आये पृथ्वीराज चौहान और चंदेल राजा परिमर्द के बीच हुये युद्ध में दमोह जिलें के भी हजारो वीरों ने हिंडोर (हिण्डोरिया) के सांमत ईश्वर सिंह लोधी के नेतृत्व में भाग लिया था।

पिले रन लोधिय ईसुरदास, सदासुर रम्य हिडोल निवास (परमाल रासो पृ. 420)

सदियों के बीत जाने के बाद भी बुन्देलखंड में आल्हखंड के युद्धों की तलवार की झंकार खनखनाहट और तीरों की सरससहट आज भी बुन्देलखण्ड में प्रति ध्वनित होती है बुन्देलखण्ड के गांव-गांव में अन्हैत आल्हा का गान वर्षा ऋतु मे करते है जगनिक महोबा के लिये जिये व महोबा के लिये ही प्राणोत्सर्ग किया। उन्होंने क्षत्रियों की

वीरता को पराकाष्ठा पर पहुँचाते हुए लिखा है।

सौंपत नाही कोऊ क्षत्री खों, निसि दिन रहत काल को साथ

बारह बरसि लै कूकर जीएं, औ तेरह लो जिए सियार

बारिस अठारह छत्री जियें, आगे जीवन को धिक्कार

वीरगाथा कि परम्परा को समृद्ध करने में जगनिक का ऐतिहासिक महत्व है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे वीर गीतों का समुच्च मानते है आल्हा खंड या परमाल रासो मूल ग्रंथ की लोक भाषा है ओर सहजता और सरलता से भावों को लोकोक्तियों में संजोया है।

नौकर चाकर तुम नाही हो

तुम सब भईया लगो हमार

भांगि न जैयो कोई मोहरा से

रखियो धर्म महोबे क्यार

इस तरह उन्होंने युद्धरत् सैनिकों को उत्साहित किया उन्होंने युद्धों में प्रत्यक्ष होकर युद्धों का वर्णन किया है।

गोला ओला सम बरसत है, गोली मघा बूद झर लाय

खट खट खट खट तेगा बाजे, बाजे छपक छपक तलवार

नदी बहन खून की लागी, सरिता रुधिर धार दिखलाय

सन सन सन सन गोली बरसै, छूटत तीर रहे मन्नाय

इस युद्ध में चन्देले हारे थे व पृथ्वीराज चौहान जीता था। युद्ध के बाद बुन्देलखण्ड का इतिहास भाग-1 के पृष्ठ 51 में लेखक दीवान प्रतिपाल सिंह ने चन्देलों और पृथ्वीराज चौहान से युद्ध के बाद आल्हा जो अमर जीवित है उनके रहने का स्थान दमोह जिले के सकौर ग्राम बताया है और यह भी लिखा है कि आल्हा मैहर की शारदा माता के मंदिर में प्रतिदिन दिया जलाते है। जगनिक बुन्देली के सशक्तरचनाकार थे। उन्होंने ठीक ही कहा गया है कि जगनिक हिन्दी के किंग आर्थर है।

संदर्भ :

दमोह जिले के साहित्यकार - डॉ. छविनाथ तिवारी सन् 1183

बुन्देली भाषा और साहित्य - संपादक डॉ. अशोक शर्मा (संयोजक)

- अध्यक्ष हिन्दी विभाग

चंदेल कालीन महोबा और हमीरपुर के पुरावशेष - लेखक, वासुदेव चैरसिया महोबा

आल्हखंड की परम्परा - डॉ. लक्ष्मी गनेश तिवारी

सोनामा स्टेट युनिवर्सिटी यू.एस.ए.

सागर जिले के साहित्यकार (शोध ग्रंथ) - श्रीमति मालती अग्रवाल

निर्देशक- डॉ.एन.आर.राठौर दमोह

पत्रिका बुन्देली बसंत 2005 बसारी उत्सव - डॉ. बहादुर सिंह परिहार, छतरपुर

शिखर शिखा हिंडोरिया, दमोह - प्रधान संपादक डॉ. देवीदत अवस्थी

(1182-1183) श्री कोसलाधीश

मंदिर परिसर पुराना

बाजार नं. 02 दमोह
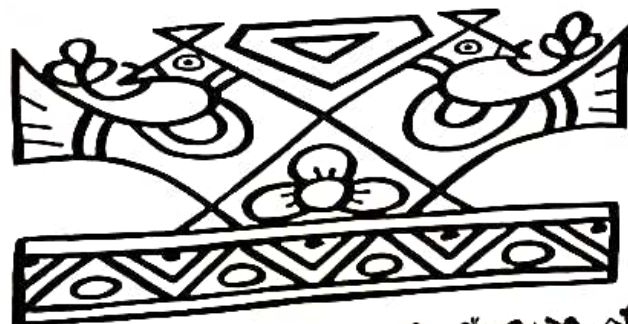
परम्परायें व कहावतें लोक ज्योतिष की

– डॉ. डी. आर. वर्मा 'बेचैन'

बुंदेलखण्ड की संस्कृति की अपनी अलग विशेषतायें हैं। यह एक विस्तृत भू-भाग है जिसमें उ.प्र. तथा म.प्र. के लगभग 21 जिले माने गये हैं। प्रत्येक देश की, प्रत्येक प्रांत की भी संस्कृति अलग-अलग होतीहै। संस्कृति जीवन जीने की अनिवार्य पद्धति है। संस्कृति से ही निवासी जुड़े हैं। संस्कृति से परम्परायें, रीतिरिवाज, मर्यादायें, देवी देवता, खान-पान, पहनावा, वेषभूषा, नेंग दस्तूर, धार्मिक, सामाजिक क्रियाकलाप आदि समग्र बातों का योग होता है। लोक जीवन में अनेक बातों पर विचार करके जीना पड़ता है। लोक ज्योतिष का संवंध पग-पग में देखने को मिलता है। यह लोक ज्योतिष पूर्वजों के अनुभव तथा हिन्दू धर्म ग्रंथों पर आधारित है। समाज में सर्वत्र प्रचलन में व्यवहृत होता है। पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ सभी लोक ज्योतिष में विश्वास रखते हैं। वृहत रूप से इसे लोक विश्वास भी कह सकते हैं। बुन्देलखण्ड में पग-पग पर लोक ज्योतिष किसी न किसी रूप में दिखाई दे जाता है। उदाहरण के लिये कुछ लोक ज्योतिष की बानगी प्रस्तुत है।

छींक विचार – यदि कहीं प्रस्थान कर रहे हैं और अगल-बगल में सामने या पीछे किसी ने छींक दिया तो इसे प्रायः अशुभ मानते हैं और तुरन्त रूक जाते हैं। छींक मनाने के उपरान्त चलते हैं।

गाय की छींक – कहीं जाते समय यदि आपके समीप गाय छींक दे तो फिर प्रस्थान नहीं करना चाहिये क्योंकि गाय की छींक मरण प्रद कही गई है।

कुत्ते के द्वारा कान फड़फड़ान – किसी जगह प्रस्थान करते समय कुत्ता कान फड़फड़ाये तो यह अशुभ माना गया है। लोग कान फड़फड़ाने पर प्रायः थूकते हैं और फिर अपना कार्य जारी रखते हैं।

शव का मिलना – प्रस्थान करते समय या मार्ग में कोई शव मिले तो उसे शुभ सूचक माना गया है कि कार्य पूर्ण होगा।

काना व्यक्ति मिलना – विचार कर देखा जाये तो काने व्यक्ति भी परम पिता परमात्मा की संतान हैं और दोनों नेत्रों वाले भी हैं। परन्तु समाज में काने व्यक्ति का यात्रा में मिलना बुरा माना गया है। शास्त्रों में उल्लेख है कि यदि प्रस्थान के समय एक काना मिले तो उसी स्थान पर रुककर दो प्राणायाम करने से अशुभ की संभावना नहीं रहती। पुनः यदि दूसरा काना मिले तो उसी स्थान पर रुककर चार प्राणायाम कर लेने से संभावित अनिष्ट का परिहार माना गया है। उल्लेख है कि यदि तीसरा काना भी पुनः मिलता है तो यात्रा स्थगित ही कर देना चाहिये तथा फिर गन्तव्य स्थान पर जाना ही नहीं चाहिये।

घड़ों पर विचार – खाली घड़े घर पर रखे हो तो अपनी संस्कृति में बहुत अशुभ माने गये हैं और यदि घड़े भरने जा रहे हैं तो शुभ माने जाते हैं और यदि भरे खड़े आ रहे हों तो शुभ का ही अनुमान लगाया जाता है। प्रायः भरे घड़े देखकर लोग प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। भरे घड़े में रुपये पैसा भी रुकवाकर डाल देते हैं।

काला सर्प मिलना – यात्रा के समय या यात्रा के दौरान मार्ग में यदि काला सर्प मिले तो अशुभ सूचक माना गया है।

गाय का दूध पिलाना – प्रस्थान के समय यदि गाय बछड़े को दूध पिलाती दिखे तो अनुभूत है कि कार्य बनता है और शुभ मानी गई है।

स्यार आदि का मिलना - यात्रा के समय मार्ग पर स्यार रास्ता काट दे तो महान अशुभ सूचक माना गया है।

बिल्ली के द्वारा रास्ता काटना - किसी कार्यवश प्रस्थान के समय या यात्रा के दौरान बिल्ली रास्ता काटे तो महान अशुभ सूचक होती है।

किन्नर मिलना - प्रस्थान के समय किन्नर का मिल जाना एक संयोग है। यदि किन्नर मिले तो यह बड़ा अशुभ माना गया है।

कौआ का सि पर बैठ जाना - लोक जीवन में कौआ का सिर पर बैठना अत्यन्त खराब मालते हैं। यहां तक देखा गया है कि जिसके सिर पर कौआ बैठ जाता है उसे मृतकवत् मानते हैं और सगे संबंधियों को उसके मरने की खबर तक पहुँचा देते हैं। रिश्तेदार आने लगते हैं तो अपशकुन का निराकरण मानकर खबर दे देते हैं कि कौआ वैठ गया था सिर पर।

काक मैथुन देखना - वैसे लोक जीवन यत्र तत्र कौये सभी जगह रहते हैं व देखे जाते हैं परन्तु शायद ही कभी कौये को मैथुन करते किसी ने देखा हो। यदि संयोगवश कभी काक मैथुन कोई देख ले तो इसे अत्यधिक अनिष्ट सूचक वताया गया है।

बिल्ली व कुत्ते का रोना - यह जानवर वैसे कम रोते हैं और रात्रि घर में बिल्ली रोवे तो यह विचार करते हैं कोई अनिष्ट होगा और प्राय: समाज में होता भी है। कुछ लोग इन वातों को अंध विश्वास भी कहते हैं परन्तु इनमें सत्यता भी है।

इसी प्रकार कुत्ता रोये तो घर पड़ोस में अनिष्ट की आशंका का विचार लगाते हैं और कुत्ते के रोने के दुष्परिणाम देखे भी गये हैं।

स्याउ (पागल स्यार) का बोलना - सामान्य रूप से ग्रामीण अंचलों में गांवों के आस-पास सामान्य स्यारों का वोलना ठीक मानते हैं और पागल स्यार जिसे (स्याउ) कहतें है, यदि गांवों में बोलता चिल्लाता सुन पड़े और उसकी बोली के बाद प्राय: कुत्ते भौकतें हैं, वे न भौकें तो यह भी बहुत अनिष्टकारी मानते हैं। वैसे ''होता तो वही है जो मंजूरे खुदा होता है'' परन्तु शकुन अप शकुन या लोक ज्योतिश के रूप में बुन्देलखण्ड की संस्कृति में इनका अस्तित्व कायम हैं।

परमा को व मंगल को प्रस्थान न करें- प्रत्येक माह में शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष की तिथि परमा अवष्य आती है और यदि कहीं जाना हो तो इस तिथि न जाने की बात मना की गई है। इसी प्रकार मंगल के दिन को भी मानते हैं।

नौवे दिन घर वापस न आवें- यदि कहीं वाहर यात्रा करना हो और वहां कुछ दिन रूकना पड़े तो हिसाव लोकजीवन में अब भी लगाते हैं कि नौवें दिन घर पर लौटना न हो या तो नौ दिन के पूर्व या पष्चात् घर लौटना चाहिए। आज की विज्ञान व शिक्षा की दुनिया में ये बातें अस्तित्व खो रहीं हैं।

पौष माह में फेरे न करें- यदि किसी सम्वंधी की गमी हो जाती है तो पूस के महीने में उसके यहां जाने की परम्परा लोक सस्कृति में आज भी प्रचलित है। परन्तु यदि त्रयोदशी इस माह में हो तो मना नहीं हैं।

जेठ मास में जेष्ठ संतान को विवाह न करें- जेष्ठ माह में प्रथम पुत्र या पुत्री की शादी करना वर्जित बताते है। प्राय: देखने सुनने में यह लोक जीवन में चर्चा प्रसिद्ध है और लोग किसी हद तक मानते भी हैं।

सूखे डीलों पर ओले गिरना शुभ सूचक - जब खेतों की फसल कट जाय और खेत खाली पड जाते हैं तब अधिकांश ग्रीष्म का अवकाश का समय होता है। उस समय यदि कहीं ओले पड जाते हैं तो वह अगली आने वाली साल व फसल के लिये शुभ माना जाता है।

नकुल दर्शन व नीलकंठ आदि के दर्शन- यात्रा के अवसर पर सहज भले में नकुल (नेवला) जिसे लोक जीवन की भाशा में नौरा कहते हैं। इसके दर्शन शुभ सूचक

होते हैं। इसी प्रकार दशहरा के दिन मछली व नीलकंठ तथा नागपंचमी को सांप के दर्शन शुभ माने गये हैं। बुन्देली संस्कृति इस प्रकार की पर्याप्त विचार धाराओं से भरी पड़ी है।

घर के आगे पीछे कांटेदार पेड़ न लगायें- घर के सामने या घर के पीछे बेरी, बबूल या कांटेदार पेड़ लगाना अशुभ मानते हैं। परन्तु वर्तमान समय में मनुष्यों ने इन नियमों का मानना छोड़ दिया है। बबूल की लकड़ी घरों में लगाने लगे हैं तथा पीपल की लकड़ी भी हिन्दू लोग जलाने लगे हैं. इसी प्रकार बांस का जलाना भी हिन्दू धर्म में मना है। बांस जलाने का भी सम्बंध अपने बंश की क्षति करने से जोड़ा गया है।

धूम केतु का उदय हानिकारक- जब कभी आकाश मण्डल में धूम केतु का उदय होता है तो जिन-जिन देशों में यह दिखाई देता हैं वहां के लोगों को ज्योतिषीय विचार से वहुत अशुभ सूचक माना गया है। इसे लोक भाषा में बारिया कहते हैं आकाश में तारा गणों का समूह झाड़ू के ढ़ग का वनावट में होता है।

डेरे हिरन दायने जावें, लंका जीत राम घर आवें - यदि मृग वायीं तरफ से मार्ग में दाहिनी ओर जाते दिखाई देते हैं इनको महान शुभ सूचक मानते हैं।

पूस तुआ वैशाख टिया- यदि पूस के माह में वर्षा हो तो प्राय: प्रतिमाह पानी वरसता ही रहता है और फसल काटने के माह तक वैशाख तक वर्षा जव चाहें होती रहती हैं।

कहावतों में-कृषि सम्बन्धी लोक ज्योतिष

सावन चलै पुरवाई, तालन तिली बुआई- साबन का महीना वर्षा का माह होता है। पूर्वी हवा चलने से आसमान में मेघ छा जाते हैं। परन्तु सावन के माह में यदि पुरवाई हवा चलती है तो वादल तो निश्चित होते हैं परन्तु वह वर्षा नहीं करती। यह लोक जीवन में देखा भी गया है और किसानों ने अनुभव किया है।

शुक्रवार खां बदरई होय, रहे शनीचर छाय।
घाघ कहे सुन घाघनी, बिन बरशें ना जाय।।

यह कहावत दोहे के रूप में प्रचलित हैं अक्षरश: फलित ज्योतिष मय हैं। यदि शुक्रवार को बदली बनें व शनिवार तक भी छाई रहे तो अधिकांश में वह बरस कर ही जाती हैं। कृषि तथा पशुओं से संबंधित बहुत सी कहावतें ज्योतिषीय भाव लिये हुये हैं।

तीतुर पंखी बदरई होय, विधवा काजर देंय।
बे बरसें, वे घर करें, इनमें तनक न फेर।।

यदि आसमान में तीतुर के पंखों के सामान बदली छाई हो और यदि कोई विधवा काजल लगाावें तो कवि का कथन है कि तीतुर पंख बदली अवश्य बरसती हैं। तथा काजर लगाने वाली विधवा दूसरे पति का वरण करती है ऐसा लोक ज्योतिष का मत हैं।

शैल कटाकट बाजैं, जब चना चकाचक गाजै- हल चलाते समय खेत मे जब डीला (ढ़ेला) उखड़ रहें हों तो बैलों के चलने में कुछ असुविधा होती है वे शैलों से टकराते हैं। भाव है कि ढ़ेला भले ही खेत उखड़ रहे हों और उस खेत में चना बो दिये जायें तो वह चने की फसल बड़ी अनहोनी बनती हैं।

माघ पूष जो दक्षिना चले, तो सावन के लक्षन भले- यदि पूष माह व माघ के महीने में दक्षिणी हवा चलती है तो सावन का महीना में अच्छी वर्षा होना ज्योतिषीय हिसाब में बताया गया है।

अगनियां पूत मावरिया कूकर- यदि अगहन के महीने में कोई पुत्र होता है तो उसे सब प्रकार से उत्तम माना गया है तथा माघ के महीने में पैदा हुआ कुत्ता अच्छा निकलता हैं।

बरसे न मघा भरे नरबेह, परसै न मात भरे न पेट- मघा नक्षत्र में यदि वर्षा न हो अनाज अत्याधिक कम पैदा होता है।

पशु पक्षियों सम्बन्धी लोक ज्योतिष-

बैल लैन जात कंत-वंदरा के ना देखौ दंत- पत्नी पति से कह रही है कि हे कंत! आप बैल लेने जा रहे हो । बंदरा बैल (भूरे सुनहरे रोम वाला) के दांत भी न देखना। अर्थात् इसे न खरीदना।

बैल लेव कजरा-दाम देव अगरा- काजल लगी आंखों वाला बैल बहुत अच्छा चलने वाला माना गया हैं।

बैल देखौ चैरिया उड़ेल देव थैलिया- चैरिया अर्थात् जिस बैल की पूंछ सफेद हो उसे मनमाने पैसे देकर ले लेना श्रेयस्कर है क्योंकि वह चोखा माना गया हैं।

बंदरा बैल और जेठौ पूत- जोइबाजौ कडै सपूत- बंदरा के रंग वाला/ भूरे चमकीले वाला बैल तथा जेष्ठ पुत्र शायद ही कोई सर्वगुण वाला निकलता है। अधिकांश में उक्त खराब देखे जाते हैं।

नीला कंधा बेंगन खुरा-कभी न निकले कंता बुरा।
छेटे सींग उर छोटी पूंछ-ऐसा बरघा लो वे पूंछ।
छेटा मुंह उर ऐंठा कान, यहीं बैल की है पहचान।।

यह लोक ज्योतिषीय अधिकांश कहावतें काब्यात्मक रूप लिये हैं। नीला कंधा वाला बैगनी रंग के खुरों वाला छोटे सींग व छोटी पूंछ वाला, छोटे मुंह और इठे से कानों वाला वैल वहुत श्रेष्ठ बताया गया है।

सावन घोड़ों भादों गाय भाव मास में भेंस वियाय।
घाघ कहें जा सांसी बात-आपुन मरै कै धनी खां खात।।

गाय भादों के माह में बच्चा दें, घोड़ी सावन में बच्चा दें, भैंस माघ के महीने में बच्चा दे तो या तो वह स्वयं मर जाती है या उसका पालनहार मृत्यु को प्राप्त करना बताया गया है।

सेत पूंछ जों कारौ- हंड़िया बचै न पारौ- कुत्ता पालने वालों के लिये इस ज्योतिषीय उक्ति में कहा गया है कि सेत रंग की पूंछ तथा कारे मुंह वाला कुत्ता अत्यन्त खराब लक्षणों वाला माना गया हैं।

हिरन पेटिया लगे मुतान- जे काटें घोड़न के कान- बैल की बनावट यदि हिरन कैसे पेट की हो तथा उसकी मुतान पेट से चिपकी हो तो वह बैल बड़ा शुभ और तेज दौड़ने वाला माना गया है।

बैल न मिलै कैसूं तो बैल ल्याइयो ऐसू- इस कहावत में ऐसू शब्द का अर्थ स्त्री पति को अपने हाथ की दो उंगलियाँ बताकर कहती हैं कि जिसके सींग आगे को हों अर्थात् बुन्देली भाषा में उसे खौड़ा कहते हैं अर्थात् खौड़ा बैल ल्याना यह कभी खराब नहीं निकलता।

पंचकों में व गुरूवार, मंगलवार को शुद्धता न करें- हिन्दू परिवारों में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो नौ बार आदि बनवाने की परंपरा है। उसका विचार भी है कि पंचक जब हो तब तक तथा मंगल व गुरूवार को यह कर्म नहीं किये जाते हैं।

इस प्रकार बहुत सी बातें परम्परागत रूप से चली आ रही हैं. जो अच्छी या बुरी मानी जाती हैं व समाज में उनका प्रचलन आज भी हैं।

एक पाख दो गाना, राजा मरै किसाना- यदि एक पक्ष में चन्द्रग्रहण व अमावस्या को सूर्य ग्रहण भी पड़ जाये तो राजा और किसान दोनों की भारी क्षति होती है।

बरस लगें होती, तो गोंव टिकें छाती- यदि हस्त नक्षत्र बरस कर लगता है तो गेंहू की पैदावार बहुत अच्छी होती हैं ऐसा लोक ज्योतिष का मत है।

बरसें न मघा भरें न खेत, परसै न माता भरै न पेट- यदि मघा नक्षत्र में वर्षा न हो, और खेत न भरे तो गेंहू खाद्यान नहीं होता और भूखों मरने की आशंका मानी गई है।

पी. एच. डी.
पूर्व- प्राचार्य अखंडानन्द जनता इ. कॉ. गरौठा
जिला - झांसी
निवास-ग्राम व पोस्ट स्यावरी,
मऊरानीपुर (झांसी)
मो. नं. 9794419115

अप्रकाशित एवं अज्ञात कृति -

नारायन जन कृत सैर सगुनावती

- उदयशंकर दुबे

भक्त कवि नारायन जन के विषय में विशेष जानकारी नहीं मिलती। इनकी एकमात्र रचना ''सैर-सगुनावती'' की संवत् 1928 वि. (सन् 1871 ई.) की पूर्ण हस्तलिखित प्राप्त है। नारायण जन ने इस ग्रंथ में संपूर्ण रामकथा को संक्षेप में दोहा और सैर छंद में लिखा है। ग्रंथ में सैर छंद का आधिक्य है, संभवत: इसी कारण से कवि ने ग्रंथ का नाम ''सैर-सगुनावती'' रखा है। इस ग्रंथ की प्रतिलिपि, गुढ़ा ग्राम के अच्छे लाल जू नाम के किसी सज्जन ने की थी। ग्रंथ की पुष्पिका दृष्टवय है- ''इति श्री सैर सगुनावती रहस लीला नारायन जन क्रत संपूरन स्याम जेठ वदी 10 सुमवार के रोज संमद 1928 जैसी प्रति देखी सुनी तैसी लई उतार भूल चूक सो पै परै सुरजन लेव सम्हार मुकांम मौजे गुढ़ा लिखतम अंछेलाल जू जो वांचै ताको सीताराम पहुंचै राम राम।।'' (पत्र संख्या-13)। गुढा ग्राम, ललितपुर (उ.प्र.) जिले के महरौनी तहसील में पड़ता है। ललितपुर जिला भी बुन्देल खण्ड़ के अंतर्गत आता है। ग्रंथ की पुण्यिका से स्पष्ट है कि कवि नारायन जन ने संवत 1928 वि. के पूर्व, किसी समय सगुनावती ग्रंथ की रचना की होगी।

सैर-सगुनावती पाँच प्रकरण (लीला) में विभक्त है- 1-बाल लीला, 2-व्याह लीला, 3-वन लीला, 4- रन (रण) लीला, और 5- रहस लीला,।

बाल लीला के शुभारंभ के पूर्व कवि ने पाँच दोहे में राम का यश वर्णन के साथ अपने गुरू का स्मरण करता है-

दोहा- राम सिया जस अगम अत पार न पावै कोइ।
प्रभु चरित्र पावन परम कहत सुनत सुख होई।।1।।

तातै मन इच्छा भई करिये हरि गुन गान।
करह जुक्ति संक्षेप सो सुनहै साहिर जान।।2।।

रामायन मै राम रस आद मध्य भर पूर।
महावीर श्रोता सदा निस दिन रहत हजूर।।3।।

आगम रीत विचार जुत रूप रास कत रज्ज।
गुर प्रताप वरनन करौ सैर सार वर भज्ज।।4।।

छूट जाइ संसै सकल टूट जाइ भ्रम वैर।
उर प्रमोद उमगै सुनत रामायन कौ सैर।।5।।

सैर- पढ़िये जु सैर मस्तक गुर कौ नवाइ कै।
धरिये जु ध्यान प्रभु कौ चित्त में लगाइ कै।
करिये जु ग्यान पुस्तक जग कौ सुनाइ कै।
हरिये कलेस जी कौ आनद अघाइ कै।।6।।

राम और रामायण की प्रशंसा के उपरांत कवि ने विघ्नेश्वर गणेश सरस्वती और भगवान शिव का स्मरण कर अयोध्यापुरी की महत्ता के साथ रामकथा को प्रारंभ करता है। कवि ने प्रत्येक प्रकरण में एक दोहा के साथ एक सैर रखने का विधान अपनाया है,। प्रथम प्रकरण में कवि ने राम जन्म, सरयू के तट पर बालकों के साथ खेलना, राम का सौन्दर्य वर्णन के साथ बाल लीला का समापन हुआ है-

मोहन मार अपार छटा अद्भुत करत चरित्र।
वीथिन मै बिहरैं सदा लीला अतिति पवित्र।।7।।

द्वितीय प्रकरण (व्याह लीला) के अंतर्गत विश्वामित्र का अयोध्या आगमन, यज्ञ रक्षा के लिये राम-लक्ष्मण को साथ लेकर सिद्धाश्रम जाना, विश्वामित्र द्वारा यज्ञ प्रारंभ करना-

दोहा- चंदन अछित फूलफल विध सब समद समेत।

लिये सहस दस शिष्य संग बैठे मख के हेत।।8।।

सैर- मष के हेत बैठे वन मध्य मुनि सबै।

ठाढ़े समीप तिनके जुग बंधहु तबै।

जारा सुवाहु पावक सर साध के अबै।

मारीच बैठे सागर तर चाहिनै जबै ।।9।।

मिथिलापुर प्रस्थान, अहल्या उद्धर, जनकपुर प्रवेश, जनक के बाग का अवलोकन, राम द्वारा धनुष भंग, परशुराम आगमन, परशुराम-लक्ष्मण संवाद, अयोध्या से बारात आगमन, चारों भाइयों का विवाह, अवध आगमन-

दोहा- कर कुल रीत प्रवान विधि भांत अनेक उछाह।

पुरवासी परजन प्रजा लेत नैन के लाहु।।

तृतीय प्रकरण (वन लीला)- कैकयी का दशरथ से वर मांगना, नारायण जन ने इस प्रसंग को अति संक्षेप में लिखा है- अयोध्या में आनंद मना रहे बधावने बज रहे हैं। इसी समय कैकयी ने आनंद में विघ्न डाल दिया-

सैर- नित नव जु चैन उमगै सबकौ अनंद है।

बाजै घनै बधावनै लागै जु मैद है।

कैकय सुता कठोर रचै मन मैं फंद है।

दासी सहाइ आई पाई जु संद है।।

दोहा- पाई पूरव संद जब वर मागौ नृप पास।

राज भरथपुर वन वसै रघुवर पूजै आस।।

सैर- पूजी जु आस मनकी मुन भेस कौ कियौ।

सिय अनुज संग सोहै, धन वान कर लियौ।

सिर नाइ मात पित कौ परदच्छिना दयौ।

गुर कौं प्रनाम करकै गनपत कौ सुमिरयौ।।-314-6

राम वन गमन, रथ का श्रृंगवेरपुर पहुँचना, रात्रि में विश्राम, सुमंत को रथ सहित वापस भेजना, केवट प्रसंग, तीरथपति दर्शन, भारद्वाज से मिलन, चित्रकूट प्रस्थान, चित्रकूट वास, राम के हेतु दर्शन मुनियों को आना, सुमंत का अयोध्या लौटना, सुमंत से संदेश सुनकर दशरथ द्वारा प्राण त्याग, भरत आगमन, राजा दशरथ का अंतिम संस्कार, भरत का चित्रकूट प्रस्थान हेतु निर्णय, भरत का चित्रकूट पहुंचना तथा राम की पादुका लेकर नंदी ग्राम वास।

चतुर्थ प्रकरण (वन लीला)- राम सीता लक्ष्मण का कामदगिरि से अनुसुइया आश्रम जाना, विराधवध सुतीक्ष्ण मिलन, अगस्त ऋषि से भेंट, पंचवटी वास शूपर्णखा विरूपण, खर-दूषण वध, शूपर्णखा का रावण के दरबार में पहुंचकर अपनी व्यथा कहना, रावण का मारीच को साथ लेकर पंचवटी पहुंचना, मारीच वध, सीता हरण, रावण द्वारा सीता हरण और जटायु रावण युद्ध का प्रसंग कवि के शब्दों में-

दोहा- भेष जती कौ कर लयौ हरी जनक सुता संकेत।

विलयत रथ आतुर लखी कीन्ह समर गृधेस।।

सैर- गृधेस वीर जोर जुध्ध ठाढौ समर मै।

पारी तौ भीर भारी कायास नगर मै।

खिसयाय वीर रायन ते लागे कमर मै।

दोहा- रावत लंका कौ गयौ वन आलोक को सीय।

सुमरत श्री रघुवर चरित छिन-छिन पुलकत सीय।।

राम द्वारा जटायु का अंतिम संस्कार, कबंध निपात, सेवरी आश्रम पर पहुंचना, पंपासर वास, नारद मुनि का आगमन, सुग्रीव मिलन, सीता की खोज हेतु हनुमान का लंका जाना, सीता को मुद्रिका देना, लंका जलाना, राम को चूड़ामणि प्रदान करना, राम का ससैन्य लंका प्रस्थान, सेतु बंध, लंका प्रवेश, अंगद-रावण संवाद, अंगद का लंका वापस आना, युद्ध हेतु सेना द्वारा लंका पर आक्रमण, लक्ष्मण मेघनाद, लक्ष्मण को शक्ति लगना, हनुमान द्वारा संजीवनी लाना और लक्ष्मण का जागृत होना, मेघनाद वध, राम-रावण युद्ध, कुंभकर्ण वध, रावण वध, विभीषण का राज्याभिषेक, राम का अयोध्या आगमन, राज्याभिषेक।

कवि नारायण ने वन लीला और राज एक सी प्रकरण में वर्णन कर दिया है।

रहस लीला- अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में बुन्देलखण्ड संभाग में माधुर्योपासना का व्यापक प्रभाव था। इस अवधि में इस क्षेत्र के कवियों द्वारा लिखे गये ग्रंथों में रहस लीला (रास लीला) का वर्णन मिलता है जिसे हम राम भक्ति में रसिक संप्रदाय का प्रभाव मानते हैं। नारायण जन ने रामकथा की समाप्ति के बाद रहस लीला का वर्णन किया है। इससे ज्ञात होता है कि वे रसिक संप्रदाय मतावलंबी थे। रहस लीला प्रकरण के दो छंद यहाँ प्रस्तुत हैं-

दोहा- कमला विमला आद सब सखी रहै सिय साथ।
महल कुंज सेवा करै सुख पावै रघुनाथ।।

सैर- रघुनाथ सिया सुंदर मंदिर मै विराजै।
गावैं अनेक सखियां बहु बाजने वाजे।
वीना सितार खंजरी सारिन साजे।
उमगै अपार रंग संग मन मथ लाजे।। -5 15-6

भक्त सुकवि नारायन जन की रचना सैर सगुनावती की गाथा अत्यंत सरल बोल चाल की भाषा है। उनके रचित सैरों में उर्दू- फारसी के शब्दों मात्र कहीं-कहीं प्रयोग है। सगुनावती अपने ढंग से अलग रचना है।

साहित्य कुटीर
कठारी बाजार
पो. खमरिया
जिला. मदोही (उ.प्र.)
पि. 221306

समझ दिनन कौ फेर

– श्रीमति ब्रजलता मिश्र, झाँसी

सबइ की जिन्दगानी नें दु :ख सुख धाम-छाँव की नाँई आउत-जाउत हैं। सबई दिना एक -से नइँ रउत, दुख में घबराने नही, धीरज नई खोने चईये, उर सुख में इतरानें नइँ चइयें, घमण्ड नइँ करें चइयें। घमण्डी कौ सिर नीचै होउत है। एक कॉनात है कै-

''माया देख न गदबिये, बिपत देख ना रोय। ''

थोरे दिनन की बिपदा (संकट) में को अपनों है, को पराऔ है, को हमाओ भलौ चाउत, को हमाऔ बुरऔ तकत है- जौ भली-भॉत समझ में आ जाउत है।

रहीम कविजू ने लिखौ है-

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।

हित- अनहित या जगत में, जान परै सब कोय।।

अब दूर की का कएँ घ् उमा, सुधा, विभा तीनउँ पक्की गुइँयाँ हती। एकइ पुरा में रउती।

बारे सें संगै पढ़ी, खेलीं । ब्याऔ भऔ, सो उमाउर सुधा मुम्बई पौंचीं। उनके दूल्हा इंजीनियर हैं। विभा कौ व्याऔ आगरा के एक वकील सें भऔ। सो बे आगरा पौंचीं। तीनउँ गुइंयन की मोबाईल फोन पै बतकाऔ होत रत्तौ।

विधाता की लीला बड़ी विचित्र है। कछू दिनन में विभा के पेट में एक गॉठ भइ। बौ दवा-दारू सें ठीक नइँ भई। डॉक्टर ने जॉचें करीं तौ बौ गॉठ कैंसर की निकरी। सुनकें सब घर सन्न रै गऔ भगवान ऐसी बीमारी दुस्मन खों भी न देवै। डॉक्टर की सय सें विभा खों इलाज के लाने मुम्बई जानें परो। कीमोथेरेपी (इलाज) करवा कें विभा आगरा आ गई। दस- पन्द्रा दिना बाद उमा ने फोन करनें विभा से हालचाल पूछे तौ विभा ने बड़े भारी मन सें बताई कै बाय कैंसर हो गऔ है। उर हर मइँना इलाज के लॉने मुम्बई जावे पर है। उमा ने विभा सें कई कै ''मुम्बई आने के पैसं तुमने हमे फोन काय नइँ करो। तुम परेसान भई हुऔ। अब जब भी आऔ, हमें फोन करियो। हमाएं रइयो। अपनों फलेट भौत बड़ौ है, कछू परेसानी नइँ हुइयै। ''

विभा ने कई कै ''डॉक्टर से फोंन पै समझौले लऔ हतौ सो इतेक टैम तौ नइँ मिलत कै तुमाए घरै आ पाएँ, पै जब हम पूरे नोंनें हो जै है फिर तुमाए इतै अबस कें आहैं।

उमा ने सूधा खों फोन करकें विभा की बीमारी की बात बताई। सुधा ने बइ दिना सें विभा खों फोन करबौ छोड़ दऔ। ना जन्म -दिन की बधाई ना षादी की बर्षगॉठ की बधाई, ना नए वर्ष की बधाई, ना दीवाली की बधाई। बा ने ऐसौ मौ फेर लऔ कै ऐसौ ना हो जाऐ मुम्बई में हर बेरें जे आकें मोरेफ्लैट में ना ठहर जाएँ। बीमारी की छोत-छाव (संक्रमण) कौ विचार करौ होय सो बाने बइ दिना से फोन करबौ छोड़ दऔ।

उमा की हम पीठ पाछें भी तारीफ करहैं कै बाने जो कऔ सो निभाऔ। विभा जब भी मुम्बई जाती है। उमा खों फोन कर देती। विभान्की पसंद कौ खाना - जैसे डोसा, ढोकला, आईसक्रीम सबइ तरा की चीजें लैकें स्टेषन पौंच जात्ती।

विभा टेंषन में ना रये, जाके लाने बाके डॉक्टर मताई-बाप, भैया, मौंसी, फुआ, सखी उमा उर

बाके घरबारे ने बाकौ मनोबल बड़ाओ, बाकौ हौसला बड़ाऔ। काली भैया की असीम किरपा सें बौ धीरें-धीरें ठीक होत गई। अकेलें सुधा के रुखे उर बदले गए बेहार सें जौ समझ में आ गई कै उमा विभा खों मन सें चाउत है उर सुधा ऊपरफट्टी ।

जौ किस्सा तौ विभा की गुइँयन कौ हतौ। विभा की

चार चालियन ने उर उनके मोंड़ी मोंड़न ने विभा के घरैं आबौ छोड़ दऔ। विभा ने चाचियन की हर मुसीबत में बर हमेस साथ दऔ।

उनकी घर-गिरस्ती के सामन में पैसा-टका सें मदद करी। उनके मोंड़ी -मोंड़न खों फ्री में ट्यूशन पड़ाऔ। अकेलें आज के जमाने में नेकी कौ फल बदी मिलत है। सबनें जौ सोच कें आबौ छोड़ दऔ कै कउँ कैसंर उड़कें ना लग जाए।

ऊपर सें पुरा-परौस में जो मन में आई सो कई कै विभा के मताई बाप ने जैसो कमाओं वैसौ निकर रऔ '' एक ने तौ जौ तक कै दई कै जो जितेक पइसा बारौ होत है वाय उतेक बड़ी बीमारी होत है। विभा उर मताई-बाप दिनन कौ फेर समझ कें सब सहतरए। भगवान ना करै कै जौ भयानक बीमारी काउ खों होय। सबके मोंड़ी -मोंड़ा खुसी रऐं। डॉक्टर कउत है कै जौ बीमारी तनाव से बढ़त है। मरीज अकेलौ नइं रए। चार जानि में हँसै, बौलै , खुस रहै। बाके हौसला और मनोबल बढावें की जरुरत रत है। पारीरिक रुप से मरीज कमजोर हो जात है।

बाके खान पान कौ ध्यान राखत भए वाकौ साथ नइं छोड़े चइये। वाकौ हर तरॉ से साथ देने चइयें। मानसिक बल इच्छा शक्ति उर हौसला बढ़ाने चइये। अपनी बीमारी उर परेसानी से बौ परेसान है तौ हमें वाकी मदद करने चइयें, वाकी परेसानी हमें वाकी मदद करने चइये, वाकी परेसानी ना बढ़ाएँ चइयें । बचपन में अपइँ नानी से सुनो मऔ जौ लोकगीत याद आउत है-

'' जिन मारौ गुलेल, जिन मारौ गुलेल आफत की मारी चिरैया। ''

- के. केशव कुल,
352, नानक कुंज
सीपरी बाजार - झाँसी, (उ.प्र.)
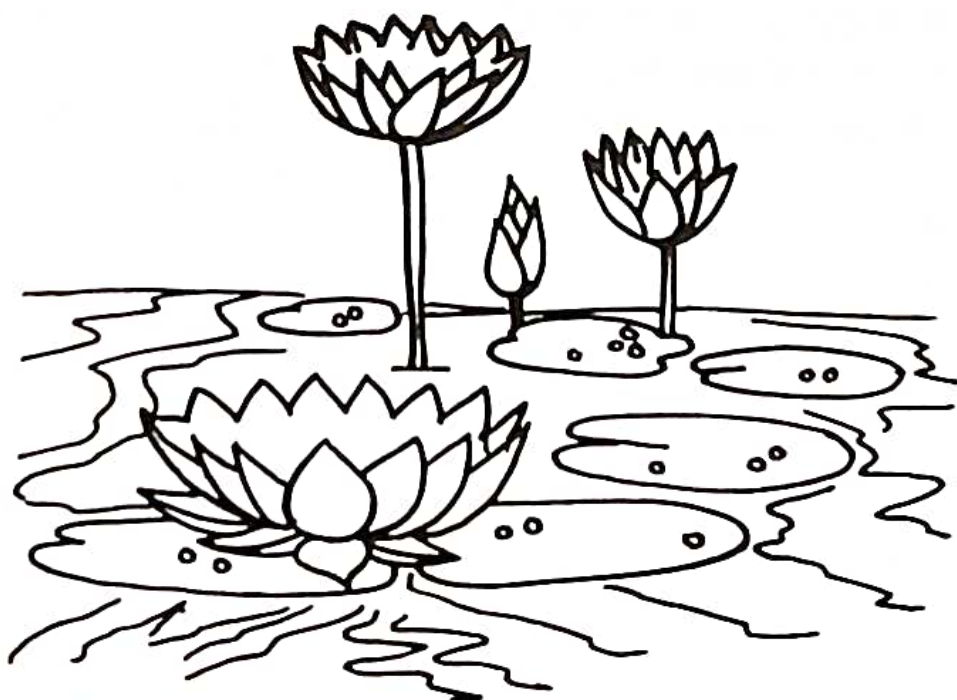
बुन्देली नारी के आभूषण

– सुधा रावत 'क्षमा'

"गानों नारी कौ ज्यू जानों"

नारी और आभूषण एक दूसरे के पूरक है। आभूषण बिना नारी का श्रृंगार अपूर्ण माना गया हैं। तो नारी बिना आभूषण भी महत्वहीन एवं अनुपयोगी हैं। क्या जन्मोत्सव क्या विवाह क्या अन्य औसर काज अथवा मेले-ठेले या हाट बाजार, हर जगह, हर समय नारी के लिये आभूषणो का एक अलग ही महत्व है। आभूषण औंर नारी यह दो शब्द आपस में इतनें निकट से जुड़ गये हैं जैसे आत्मा और शरीर। नारी से अलग आभूषणों की कल्पना ही नहीं की जा सकती। गहनों का मोह हर प्रान्त हर क्षेत्र की नारी को होता है यह बात अलग है कि पसंद के अनुसार कहीं किसी गहने का प्रचलन अधिक है, तो कहीं उसका कम और दूसरा अधिक प्रचलित है। प्रत्येक प्रान्त में भाषा या बोली की भिन्नता के कारण आभूषणों कें नामों और उपयोग में थोड़ा बहुत अंतर अवश्य पाया जाता है परंतु उनका प्रचलन और महत्व सभी जगह है।

जहाँ तक बुन्देलखण्ड की नारी का सवाल है तो उसके पास तो आभूषणों का अपार भण्डार है। एक ही अंग के लिये भिन्न-भिन्न नामों के विभिन्न गहने पाये जाते हैं। सोने और चांदी के गहनों की यहाँ अधिकता है। जड़ाऊ कम और ठोस सोने, चांदी के गहने इस क्षेत्र में प्रचलित हैं। सिर से लेकर पैरों तक इतने सारे गहने इस क्षेत्र में प्रचलित हैं कि पूरे गहने यदि एक साथ पहन लिये जाये तो पहनने वाले को हाथ पैर हिलाना मुश्किल हो जाय, यकीन नहीं आता तो चलिये मैं नाम गिनवाती हूँ। थोड़े-बहुत गहनों के छोटें से माथे के लिये- शीशफूल, बैंदा, लड़ी, सांकर, बूंदा, झूमर, बैंदी, टिकली, बीज फूल आदि अनेक गहनें प्रयोग में लाये जाते है।

नाक की शोभा बढ़ाने के लिये- पुंगरिया, लौंग, नथनी, बेंसर दुर, कली, बुल्लाक, कील आदि।

कान की बात करें तो- कन्न फूल, झुंमकी, ऐंरन, कुण्डल बाला झाले, बारींण् त्रकला बने दौरा उपा कना जैसें अनेक।

और गले में चार चाँद लगाने के लिये -चंद्रहार, सुतिया, लल्लरी, हार तिदानों, जंजीर, हंसली, सतदानों सांकर, कंठा, बिचैली मटरमाला, कठला, गुन्ज, गोप, मोहन माला, गुलूबंद, टकयाकर हमेल, मुहरें, खंगोरिया, बीजासेन, जबइया, गजमोतिन हार, खंजनारी हाय पत्ता, चंदा-सूरज (बच्चों और नव विवाहिता को पहनाये जाते हैं) अब बताइये क्या इतने सारे गहने पहनने के लिये गला छोटा नहीं पड़ जायेगा।

बाजुओं के लिये- बाजूबंद, बरा, बखोरियां, भुजबंद आदि प्रसिद्ध गहनें हैं। तथा, ककना, चूरा, बेलचूड़ी, अमरती, बंगुआ, कटीला, बांके, बोटा, पटैला, गुज्जें, छन्नी, दोहरी, चूड़ा चुरियां, बंगरी, ऐंठां, के चूरा, ढ़र चूरा, मौ खुले चूरा, सादा चूरा आदि (चूरा के अनेक प्रकार पाये जाते हैं) गहने हाथों में पहने जाते हैं। तो वहीं उंगलियों की शोभा बढ़ाने के लिये- पानफूल, मुदरी छजआ, अंगूठी हाथफूल, अंगूठा व हाथ पोस जैंसे गहनों का उपयोग किया जाता है,

वहीं करधौनी, पेटी, गुच्छा, कमरबंद, बिछुआ, कटडोरा कमर पेटी, आदि कमर को सुशोभित करने बाले आभूषण हैं। बात जब पैरों की आती है तब हल्दी और महावर लगे पैरों पर जब पायल, पैजना, लच्छा, छागल, तोड़ा झॉझे, कड़ी, बॉकें, पट्टे छेल चूड़ी, रमझल, अनौखा,
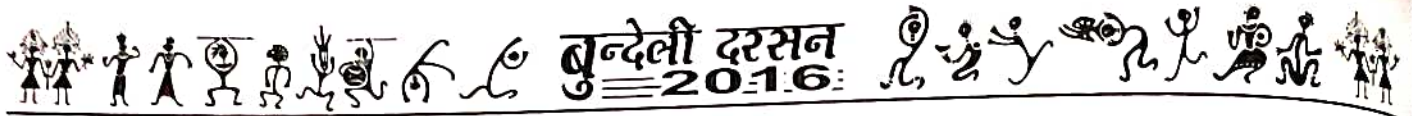
डोड़ल, घुसी, तथा पंजा और अंगुलिओं बिछिया तथा पॉव पोस सजते हैं तब नववधु की पैरों की शोभा देखते ही बनती है। उपर्युक्त आभूषणों में अधिकांशत : सोने और चांदी से बने आभूषण ही होते हैं। बुन्देल खण्ड में सामान्य लोग सोने के आभूषण पैरों में नहीं पहनते क्यों कि सोने को लक्ष्मी जी का रुप माना गया है। अत : रानी महारानी के सिवा कोई अन्य स्त्री पैरों में सोने के आभूषण नहीं पहनती।

सच कहूं तो इतने सारे आभूषणों से लंदी-फंदी बुन्देली धनियां को देख कर किसका मन मोहित नहीं होगा और कौन नारी ऐसी होगी जो इन्हें पहनने का मोह संवरण कर पायेगी आभूषणों का मोह जब लोपामुद्रा जैसी सती-साधवी, संयासनी के मन को भटका सकता है। तब साधारण स्त्री की क्या रियात है। अत : हर स्त्री का मन आभूपणों के लिये ललायित रहता है। और बुन्देली नारी का आभूषणों के प्रति लगाव तो रसिकों, और कवियों के बीच सदैव चर्चा और विनोद का विषय रहा हैं। जिसका प्रभाव लोक जन जीवन में व्याप्त होता है। वह कथा नहीं सुनी आपने -

एक बार एक महिला ने मसाला पीसने कें बाद अपने पति से कहा ''ये जू तनक जा सिल तौ उठा कें धर दो''। पति क्रोधित होकर बोला ''बड़ी सुकमार हो रईं इत्ती सी सिल नई उठा पा रईं'' तो वह बोली ''तुम सोई ऐसीं बातें करत। इतनी गरई सिल हम कैसें उठा लें।'' पति ने फिर कुछ नहीं बोला और चुपचाप सिल उठा कर रख दी और चला गया। कुछ दिनों बाद पति ने उस सिल को सौने से मढ़वाया और घर लाकर पत्नि से कहा- ''देखौ हम तुमाये लानें कित्तौ नौनों लाकिट लें आये अकेले जो भोतई गरओ है। तुमईखों कैसें पहर पाहौ। पत्नि ने लॉकेट देख कर तपाक से कहा- ''लाकेट ? तनक दिखा इयो''। और पति के हाथ से छीन कर तुरन्त गले में पहन लिया और खुशी के मारे नाचने लगी ! - ''आय, कित्तो नौनो है।'' आभूपणों के मोह की यह चरम सीमा है जो पागलपन अथवा दीवानगी की हद पार करती प्रतीत होती है। और यह पागल पन थोड़ी-बहुत महिलाओं में पाया भी जाता है। अन्यथा आभूषण मात्र श्रृंगार या शौक की बस्तु नहीं है बल्कि सम्पूर्ण महिलाओं की महत्वपूर्ण आवश्यकता हैं। ये आभूषण नारी को आर्थिक रुप से सुदृढ़ बनाते हैं साथ ही शारीरिक सुरक्षा के लिये भी उपयोगी है।

कहा जाता है कि कमर में करधनी या कमरचबंद पहनने से पेट खिसकनें की सम्भावना नहीं रहती। इसी तरह नाक में कील य पुंगरिया पहनने से लकवा नहीं लगता।

कहा तो ये भी जाता है कि शरीर पर गहने पहनने से ऐक्यूप्रेशर की क्रियायें होती रहने से शरीर के विभिन्न विन्दुओं पर दवाव पड़ता रहता है और बिना किसी प्रयास के उपचार की प्रकिया चलती रहने से उनकी अनेक बीमारियों से सुरक्षा होती रहती है। साथ ही आर्थिक रुप से समृद्ध होने के कारण वे मानसिक बीमारियों का शिकार भी नहीं हो पाती। गहने पहनकर महिलायें इसीलिये प्रसन्न चित्त रहती है क्योंकि इनसें इन्हें आर्थिक, सामाजिक व श्रृंगारिक-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

कुछ आभूषण सुहाग के प्रतीक माने गये है! जैसे-बैंदी, बिछिया, जवइया, टिकती मंगल सूत्र आदि। इन्हें सुहागने ही उपयोग में लाती हैं। इन आभूषणों का बहुत ही सम्मान किया जाता है। किसी भी परिस्थिति में महिलायें इन्हें तन से अलग नही करतीं।

माना कि शील संकोच और चरित्र ही नारी का असली आभूषण है। किन्तु आभूषण बिना श्रृंगार अधूरा माना गया है। सीता जी जब श्री रामचंद्र जी के साथ वन गमन करने लगी। तब समस्त आभूषण राजमहल में ही त्याग कर गई थी। उस समय माता कौशिल्या ने उन्हें समझाया कि बेटी तुम्हें वनवास नहीं हुआ हैं अत: तुम्हें ये आभूषण उतारने की आवश्यकता नहीं हैं। परंतु सीता जी ने उन्हें यह कह कर निरुत्तर कर दिया कि माँ मेरा असली आभूषण तो मेरे
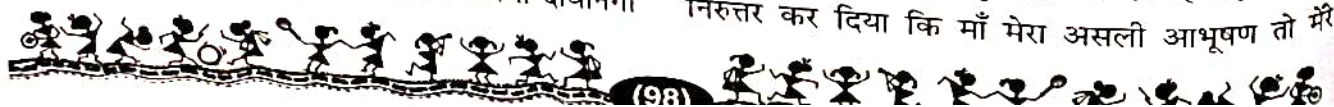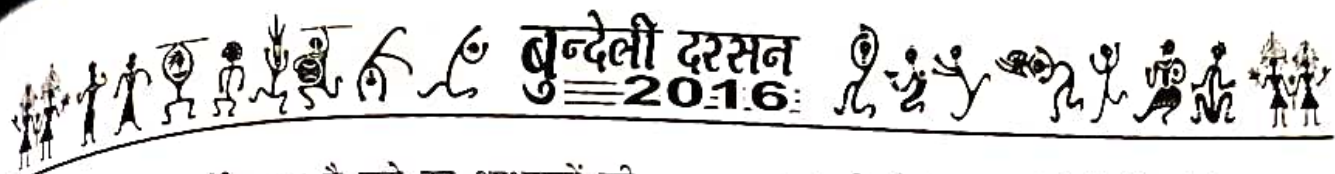
स्वामी है औंर वह मेरे साथ है मुझे इन आभूषणों की आवश्यकता नहीं हैं। परंतु वहीं जब सीता जी माता अनुसुइया के आश्रम पंहुची और उन्होंने सीता जी को दिव्य आभूषण देते हुये समझाया कि "बेटी एक सुहागन स्त्री को आभूषण विहीन नही रहना चाहिये। और अपने हाथों से माता अनुसइया ने उन्हे वह दिव्य आभूषण धारण करवायें तथा स्त्री के लिये आभूषणों का क्या महत्व है यह भी बतलाया तब सीता जी ने सर झुका कर उनके आदेश का पालन किया और बाद में वही आभूषण सीता हरण के समय उनके संदेश वाहक बने। रावण द्वारा जब सीता जी का हरण किया गया उस समय सीता जी ने वही आभूषण पुष्पक विमान से नीचे फेकें जो ऋषिमूक पर्वत पर सुग्रीव व हनुमान जी को मिले और वही दिव्याभूषण अंत में सीता जी की खोज में सहायक हुये।

बुन्देलखण्ड में विवाह के समय माता पिता द्वारा अपनी बेटी को कुछ आभूषण जैसे- पायल, बिछिया, नाक की कील (पुंगरिया) झुमकीं, वाले आदि उपहार स्वरुप देंने के प्रथा है। परंतु ऐसा नहीं है कि आभूषण सिर्फ श्रृंगार य उपहार की ही वस्तु है। वे तो सही मायने में गृह -और गृह लक्ष्मी की पहचान बन चुके हैं। जिस घर में पायल की छम-छम और कंकनों की खन-खन न गूंजे वह घर कैसा?

सिर्फ नारी ही नहीं पुरुष भी आभूषणों की ओर आकर्षित होते है। उसके कल्पना की नारी स्वप्न में भी गहनों से रहित नहीं होती। वह उसकी रुप भी मोहनी के साथ गहनों की आभा पर भी आसक्त होते है! बुन्देली काव्य साहित्य इस बात का साक्षी है उदाहरण देखियें

हम पै डार गई मोहनियाँ, गोरे बदन की मुनियॉ!
चहे
बरा, बाजूबंद सोहै, कर में जड़ी ककनियां।
नख, शिखपै सब गाने पहरें, पांवन में पैजनियां
हम पै डार गई मोहनियाँ

इधर कवि ईसुरी आभूषणों की मोहिनी में इस तरह डूब गये है। गंगा धर व्यास जी किसी के दुर की हलन पर लट्टू है और उसे भुला नहीं पा रहे- विसरें न मोय हलन दुर की, केसर की गूंज तनक मुरकी दस उंगरी दस मुदंरी सो हैं, बजन पैजना के सुर की, कानन भर-भर कन्नफूल है, गोरे गाल सांकर लकरी।

और इसी सांकर की लुड़कन पर ईसुरी का प्रेमी मन अपनी प्रिया के कर्णफूल की शांकल बनने को लालयित हो उठा और वे कह उठे "सांकर कन्नफूल की होते" इतना ही नहीं ईसुरी तो उंगली में पहननें बाले छोटे से छल्ले तक से मोहित हो गये और स्वयं उसकें रुप में ढलने के लिये ब्याकुल हो उठे- "जो कऊँ छेल छला हो जाते परे उंगरियन राते।"

कोई अंगूठी बन कर नायिका के ष्वेत सुडौल हाथों की, सुकोमल उंगलियों के बीच रहना चाहता है। तो कहीं किसी का मन उसके झुमकों में अटककर रह गया हैं। पायल की झंकार किसी का हृदय -भेदन करती है तो किसी का हृदय हुलसाती भी है। गोरी की नथ किसी का चैन छीन कर ले गई, तो कोई उसकें पैजनों की खनन पर अपना धैर्य ही खो बैठा है-

देखिये न "चलत पैजना छनके, पॉवन गोरी धनके
सुनतन रोम-रोम उठ आउत, धीरज रात न तन के

पाठकों ये आभूषण किसे नहीं मोहते? कहूं तो शिख से नख तक आभूषणों से लदी फदी पूर्ण श्रृंगारिक करैयानारी को देख कर किसका मन कविता लिखनें को नहीं कहेगा? फिर कवियों को क्यों दोष देना ईसुरी का मन यदि रजऊ के गहनों की प्रशंसा करने का आदेश देता है तो वे क्यों न करें?

क्योंकि - "जिदना रजऊ पैरती गानो, जियरा जात बिरानो।"

प्रेमी प्रेमिका ही नहीं पति पत्नि के बीच प्रेम सम्बन्धों

को मजबूत बनाने में भी आभूषणों का महत्व पूर्ण योगदान है! रुठी हुई पत्नि को मनाने में आभूषण का प्रलोभन मात्र ही काम कर जाता है! बुन्देली नायिका की तो बस यही मांग होती है- मन लागो झूमका लै दइयो।

और कभी कभी तो ये गहने ही उनकें रुठने का कारण बन जाते हैं सइयाँ लै दै करधनियां मै तो सें बिरजी ---।" ननद - भाभी में भी गहनों को लेकर कम खींचा-तानी नहीं होती, सुना नहीं आपने -छोटी ननदिया हठीली, ककना पै मचल गई। ननद की जिद और भाभी के बहाने बाजी का दृश्य इस लोक गीत में द्रष्टव्य हैं, ककनवा मांगे ननदी लालन की बधाई- " ननद को भाभी के कंगन पंसद आ गये हैं इसी लिये वह नेग के बहाने उन्हें हथयाना चाहती है। और भाभी कंगन देना नहीं चाहती (क्योंकि वह भी नारी ही है और उसे भी गहनों से उतना ही मोह है)

भाभी की विवशता है वह ननद को कंगन कैसे दे सकती है

क्योंकि - बारे ककनबा मोरे मायके सें आये,

रुपइया लै लो ननदी लालन की बधाई........

परंतु ननद रानी जी रार ठान कर बैठी हैं, नेग लेंगी तो वस वही कंगन। ननद की जिद पर भाभी क्रोधित हो जाती है, ककनां उतार भौजी अंगना में फेंक दये, ले जा सौत रानी, अव न बुलाऊँगी

वात जव रिस्तों पर बन आई ननद ने देखा कि बात कुछ ज्यादा की विगड़ने लगी तब उसने आगे बढ़ कर कंगन उठाये और ककनां उठाय ननदी भौजी पहराय दये

जीवै भतीजो मोरो बिन बुलाये आऊंगी।

सिर्फ ननद - भाभी ही नही वरन देवरानी -जेठानी में भी गहनों को लेकर यदा कदा नौक -झौक होती रहती है, इस संदर्भ में बुन्देलखण्ड की नायिका अपने बालम कों भी उलाहना देना नहीं भूलती - पथरीलो बलम तोरो देश,

हमारी अनी तौ मुरक गई बिछियनकी। इस तरह नये बिछिया मंगवाने का यह अंदाज भी निराला है। यह तो हुई कुछ व्यंग विनोद की बातें। जिनका लोक सहित्य और लोक जीवन में बड़ा ही महत्व है। यही सरसता बुन्देली लोक का प्राण तत्व है। व्यंग विनोद और हंसी ठिठोली में बुन्देल खण्ड की नारियां जो आभूषण एकत्रित करती है, वे वास्तव में उनके परिवार की अटका वखत अर्थात आवश्यकता की पूर्ति करते हैं! अपने प्रिय से प्रिय आभूषण को बेच कर अथवा गिरवीं रख कर वह आकस्मिक रुप से आये संकट से यथा समय अपने परिवार को बचाती है! विनोद में जहाँ एक गहनां पाने के लिये वह सब कुछ बेचने के लिये तैयार हो जाती है- कि करबी विकाय मोय लाय दो लटकन इस लोकगीत में खेत, बैल घर परिवार यहाँ तक कि पति को भी बेचने की जिद कर बैठती है। असल जीवन में वही अपने परिजनों की एक खुशी के लिये अपने सारे गहनें एक साथ दांव पर लगाने के लिये तत्पर रहती है। पर अपने परिवार पर कोई आँच नहीं आने देती। हमारी नानी जी आभूषणों के संदर्भ में बड़ी ही सटीक बात कहा करती थी "गाने तौ गाने है, कैसऊ होय आकार!

सिंगार कौ सिंगार जे भण्डार कौ भण्डार।। इसी लिये कहा गया है कि आभूषणों में महिलाओं के प्राण बसते हैं -

गानों नारी कौ ज्यू जानों, ऊ कौ सरबस मानो!

शीशफूल, झुमकी, टिकलीं , नथ, सुतिया, हार तिदानों

सरमाला, लल्लरी, विचैलीं, बाजूबंद, सतदानों का

रानी का चेरी इन पै, सबकौ जिया लुमानो

रुठी मन जावें पल छिन में, गढ़ा देओ एक गानो

बेर-नबेर पैर लो हंस कें, जी कौ जौन उमानों

'क्षमा' अटक पै कभऊं भंझालो. गाने धर के गानो।।

गानों नारी कौ ज्यू जानों, ऊ कौ सरबस मानों-।

एफ-7, बंगले, फेस 2
दुर्गेश बहार जे.के. रोड, भोपाल
मो. 8889114193

ललित निबंध -

बसंत-प्रकृति का महारस

– एन.डी.सोनी

प्रकृति यथार्थ है कल्पना नहीं। उसे, देखने की दृष्टि तो सबमें है किन्तु उसे अनुभव करने, उसका आनन्द उठाने या अभिव्यक्त करने का मद्दा सभी मनुष्यों में नहीं देखा जाता। कारण कि मनुष्य अपनी बुद्धि के गुमान में प्रकृति से दूर होता हुआ, अपनी जीवनचर्या में इतना उलझा हुआ है कि वह प्रकृति के साहचर्य से महरुम होता जा रहा है। इस संदर्भ में शहरी जीवन बदतर है, जबकि ग्रामीण जीतन अब भी प्रकृति से जुड़ाव को कुछ तो महसूस करता ही है। मनुष्य से इतर सभी प्राणी आज भी प्रकति के सानिध्य में रहने और उसी पर निर्भर रहने से प्रकृति के शास्वत, और बदलते रुपों का अनुभव करते हुए आनन्द उठाते हैं।

सूर्य के प्रभाव से सौरमण्डल में होने वाली प्रक्रियाओं के फलस्वरुप पृथ्वी में निंरतर मौसम भी बदलते रहते हैं। इन मौसमों में जल, थल और वायु में होने वाले परिवर्तन प्राणियों को प्रवाहित करते हैं। भारतीय उप महाद्वीप में छह ऋतुओं और बारह संक्रान्तियों का सृजन पृथ्वी और सूर्य की गतिओं से होता आया है। हर ऋतु में मौसम बदलता रहता है। मौसम का परिवर्तन शनैः शनैः होता हुआ हर ऋतु में विशेष तापमान से हवाओं को प्रमाणित करता है। तापमान और हवायें सम्पूर्ण प्रकति में बदलाव की बयार लाती हैं, मौसम कभी ठन्डा, कभी गरम तो कभी मिला-जुला या सम रहने से वनस्पतियों व प्राणियों के लिये अनुकूल या प्रतिकूल मौसम होता है। हर ऋतु की अपनी विशेषता परिलक्षित होती है। बसंत ऋतु की विशेषता परिलक्षित होती है। बसंत ऋतु की विशेपतायें ही उसे ऋतुओं को राजा बनाती हैं। हर ऋतु राशियों के दो संक्रान्ति पर्वो से ऊर्जा गृहण कर सूक्ष्म शक्तियों से सम्पन्न होती है।

भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड हैं। उमंगो को महसूस करने के लिए हृदय सर्वाधिक उपयुक्त स्थल होने के कारण ही बुन्देलखण्ड में बसंत की छटा सर्वांग सुन्दर होती है इसीलिए बुन्देली बसंत का ठाट-बाट भी कुहर अनौखा होता है। पूस माह की विदाई करती मकर की संक्रान्ति सूर्य के उत्तरायण होने का पर्व है, जो शुभ का प्रतीक है। ठन्ड से ठिठुरे जीवन में उत्तरायण सूर्य की रश्मियाँ उमंग और आशा की किरणों से जीवनी शक्ति का संचार करतीं हैं। यह नई फसल के आगमन की अगवानी का भी पर्व है, जो आने वाले, बसंत को ध्यानमग्न भोले शंकर के गीत गाते हुए आवाज देता है। माघ मास का पहला पखवाड़ा ठन्ड को नरमाता और मौसम को गरमाता हुआ बसंत का अभिनंदन करता है। माघसुदी पंचमी बसंत पंचमी के रुप में ऋतुराज की सवारी के स्वागत का खुशनुमा पर्व हैं। विद्या और संगीत की देवी माँ सरस्वती की पूजा से ऋतु की शुरुआत उनकी वीणा के मधुर स्वरों से झंकत होकर आनंद का उद्‌घोष करती है। बसंत के आनन्द और उल्लास का महत्व आदि देव महादेव और आदि शक्ति माता गौरा की सगाई से कई गुना बढ़ जाता है। देवालयों से उठती शंखों, झालरों, घंटों और नगाड़ों की ध्वनियाँ न केवल मनुष्यों और देवों को उल्लसित करती है बल्कि फाल्गुन को आने का नेवता भी देतीं हैं।

फाल्गुन आता है अपने साथ ढ़ेर सारी सौगातें लिए हुए। उसके आते ही दिन बसंती और रातों की ठन्ड नरम हो कर मखमली सी मुलायम हो जाती है। बातावरण हल्की शीतल बयार से सुरभित हो कर वनस्याति ओर प्राणियों में एक ऐसी सिहरन पैदा करता है जो उनमें उभंग का संचार करती है। यही उभंग विस्तारित होकर हरियाली में बसंती रंग घोलती है। स्वर्णिम धूप अंलकारों सी चमकती हुई प्राणियों को सुख का अनुभव कराती है। रात में शर्मीली सी ठन्ड मन में मीठी सी चुभन पैदा कर सोये अनंग को जगाती है, मौसम को मादक बनाती है।

हरी-हरी दूब के पाँवड़ों पर चलते हुए बसंत के चरणों को अब सुबह ओसकण पखारतें हैं, तो सुनहरी धूप के फाहे उन्हें पोंछते (सोखते) हैं। चारों ओर हरी फसलों

की बालियाँ मन्द बयार से झुक-झुक कर अलसी के नीले और सरसों के पीले फूलों को आभा के साथ जब अगवानी करती हैं तो बसंत मुस्करा देता है। उसकी यहीं मुस्कराहट बाग - बगीचों, वनों- उपवनों में कलियों के रुप में प्रस्फुटित होती है। क्षितिज से ऊपर उठते सूरज की गुन-गुनी धूप और सुर सुराती हवा की गरमाहट कलियों को फूलों में विकसित करती है और बसंत की मुस्कराहट हँसी में बदल जाती है। बसंत की दीवानी रंग बिरंगी तितलियाँ उड़-उड़ कर फूलों के साथ सह नृत्य करतीं हैं तो भौंरे गुन-गुना कर संगीत की स्वर बहरियों से आनन्द का इजहार करते हैं। नदियों की अलहड़ चाल की कल-कल ध्वनि के रुप में बसंत मानों खिल-खिला उठता है। बेला, जुही, चमेली की लड़ियों में गुंथे गुलाब के गजरे बसंत के गले को हारो' से भर देते हैं। गेंदों का स्वर्णिम मुकुट धारण कर सरसों के बसंती फूलों से बने सिंहासन पर बसंत आरुढ़ हो जाता है। राजा बन जाता है वह और पूरी ऋतु उसी का राज चलना है। प्रकृति समर्पित भाव से अनुकूलन करती है।

माघ में वामन के रुप में जन्मा बसंत क्रमश : बढ़ता हुआ चैत्र में अपने परिपूर्ण विराट रुप में होता है। इस बीच बसंत का जादू प्राणियों के सिर चढ़ कर बोलता है। वनस्पतियाँ और फसलें इसका अनुगमन करते हुये उसकी परिचर्या करतीं हैं। हवायें बसंत का संदेश जियो जी भरकें सब तक पहुँचाती हैं। उल्लास बसंत की सांसों में बसता है। उसके रोम-रोम से श्रृंगार रस की फुहार खुशबुओं में बस कर धरती के बासिंदों को रस सिक्त कर देती है। देवता भी इस आनन्द से अछूते नहीं रहते। औघड़दानी शंकर भोले भी महाशिवरात्रि को विवाह सूत्र में बँध ही जाते है। कामदेव पुष्प धनुष से तीर चला कर प्राणीमात्र को उद्वेलित करने लगते हैं। ढोल-नगड़ियों पर थापें पड़ती हैं तो घमुरियाँ राई नाचने पर मजबूर हो जाती हैं। गायकों के गले की मिठास बढ़ जाती है तो संगीत सभाओं के दौरों में स्वर लहरियाँ गुंजाने हरमोनियम पर अंगुलियाँ और सारंगी पर राज घुमने के साथ तबले और ढोलक ठनकने लगते हैं।

फाल्गुनी धूप की रंगत जैसे-जैसें निखरती है फरींदी की महक वातावरण में घुलने से आमकुंज भी बौराने लगते हैं। स्वर्णाम आम्रमंजरियों पर उभरती हुई हरी-हरी आमों की गोलियाँ मानों प्रकृति की अनगिनत अंगुलियों की अंगूठियों में पन्ने जड़ देती हैं / उधर चम्पा की मदमाती गंध यौवनाओं को उद्‌लित करती है। उनके मन में उठने वाली हूकी कोयल की कूक के रुप में पिऊ-पिऊ पुकारने लगती है। भौरें छैलों का रुप धारण कर मड़राते लगती है। आँखों के इसारे बिन बोले वातावरण में रस घोलते हैं। फाल्गुन के शुक्लपक्ष की सुहानी रातों की चाँदनी जस बसंत का आलिंगन करती है तो आनन्द रस महुओं के रुप में टपकने लगता है।

फाल्गुन पूर्णिमा जा पहुँती है बैर-भावों की होली जलाने। होली जलते ही दबे पॉव चैत आ पहुँचता है। वह पहले दिन से ही वातावरण में रंगो की फुहारें छोड़ने लगता है। बसंत अपने चरम पर आ जाता है। अबीर, गुलाल और रंगों से सरबोर मन फागें या उठते हैं। बसंत उत्सव का रुप धारण कर लेता है। बसंत की कहरें पलाश और गुलमोहर को रुप में खिला उठती हैं।

बसंत के सलोने रुप को किसी की नजर न लगे इसलिए पलाश अपने पुष्पों के ऊपर काले मखमली डिठौंने लगाते है।

होली उत्सव रंग पंचमी तक पूरे उत्साह के साथ जन मन को सराबोर करता रहता है। रंग-गुलाल और स्नेह मिलन के आनन्द को ठुमरी, दादरें और फागें जहाँ डुबान बख्सतीं हैं, वहीं राई जैसे नृत्य आनन्द को साक्षात रुप प्रदान करते हैं। लगता है जैसे लोग जीवन का सारा सुख इसी होली में समेट लेना चाहते हैं। होली के रंगों की छाया प्रकृति पर भी पड़ती है। फसलों की हरियाली पीलाछट में बदलने लगती है। फसलें पक कर किसानों की छातियों को चौड़ाने लगती हैं! चेत्र प्राणियों के जीवन रक्षार्थ अन्न प्रदान कर उनके उत्साह को द्विगुणित करता है। फसलों के आते ही ब्याह के बंधनों की शहनाइयाँ गूँजने लगती हैं। जीवनक्रम और आगे बढ़ता है। मन कहता है तालओर लय तथा लय और ताल इसी क्रम में प्रकति का महारास चलता आया है और चल रहा है। बसंत जा रहा हैं बसंत फिर आयेगा।

राजमहल के पास, टीकमगढ़
मो.9993750271

बुन्देली साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर - गंगाधर व्यास

– श्रीमति नीलम खरे

बुन्देली साहित्य में ईसुरी की फागों की लोकप्रियता के साथ उनके समकालीन सखा श्री गंगाधर व्यास का नाम बहुचर्चित है।

मध्यप्रदेश के छतरपुर नगर के एक साधारण ब्राहम्ण परिवार में उनका जन्म विक्रम संवत् 1899 में हुआ। वे प्रतिभाशाली और भारतीय ढ़ंग से गॅबई-विवके सम्पन्न विलक्षण कवि थे।

उनकी शिक्षा-दीक्षा गॉव में ही प्राथमिक स्तर की पाठशाला में सम्पन्न हुई। वे बुन्देली कवि ईसुरी के घनिष्ठ मित्र थे। गंगाधर कवि की काव्य शैली पर ईसुरी की चोकड़िया फागों का गहरा प्रभाव था।

गंगाधर शुद्ध देशी मिजाज के देशी लिबास के कवि थे। वे शुद्ध भारतीय ढंग का साफ-गिरजाई और गुलाबी धोती के शौकीन थे। पैरों में बुन्देलीखंडी शौकीन थे। पैरों में बुन्देलीखंडी जूते स्वयं अपने ढंग से बनवाकर पहनते थे। सोलह वर्ष की उम्र में ही वे मंच पर कविता पढने लगे थे। छतरपुर के पास मउरानीपुर के बालमुकुंद दर्जी इनके कविता-गुरु थे। उनके ही सानिध्य में के कविता रचते, उन्हें सुनाते, फिर बुन्देली फागों की प्रतिद्वंदिता में अव्वल आते। यह उनकी प्रगतिशील दृष्टि का ही परिणाम था जो कि उन्होंने किसी पंडित को अपना गुरु नहीं बनाया, जबकि उनके मित्रों ने पं. हेमराज हो गुरु बनाने की कई बार सलाह दी। परंतु गंगाधर व्यास अपने दर्जी- गुरु को ही मानते रहे।

बुंदेली काव्य जगत में उस समय कविता में फड़बाजी चला करती थी। यानि आंचलिक स्तर के, साहित्यिक अभिरुचि के साथ मंच पर रात-रात भर कवियों के बीच प्रतिस्पर्धा चला करती थी। इसमें दो-दो, तीन-तीन रात तक दो प्रमुख दलों के बीच प्रतिद्वंदिता चलती थी। जिसमें कविता, सवैया, छन्दों के साथ शेर-शायरी, ख्याल आदि भी शामिल थे। दोनों प्रमुख दलों के बीच जब तक जय-पराजय का निर्णय नहीं हो जाता, तब तक फड़बाजी चलती थी। इसी विलक्षणता के कारण गंगाधर जी की ख्याति छतरपुर, चरखारी, मउरानीपुर, महोबा, राठ, बिजावर आदि स्थानों में बहुत तेजी है फैली। इस प्रतिद्वंदिता के कारण पूरे बुंदेलखण्ड में फागों के प्रति जनमानस आकृष्ट हुआ। फलत : जन-जन में वाचिक परंपरा के रुप में फाग साहित्य कंठस्थ हो गया। ईसुरी की चोकड़िया (चौघड़िया भी कहते हैं) फागों के साथ गंगाधर की खड़ी-फाग भी जनता में अपना रंग जमाने लगी थी। छतरपुर में परमानं पांडे तथा मउरानीपुर में श्री दुर्गाप्रसाद पुरोहित के दल इनसे मोर्चा लेने में प्रसिद्ध रहे।

छतरपुर के नरेश महाराज विश्वनाथ जू देव इनका बहुत सम्मान करते थे। गंगाधर ईसुरी कवि से उम्र में छोटे थे। वे हँसमुख और विनोद प्रिय कवि थे। उनकी फागों में व्यावहारिक जीवन के गत्थात्मक बिम्ब और प्रकृति एवं भक्ति के मनोहर दृश्य देखे जा सकते हैं-

जिन खॉ खाने और कमाने, कैसे जुरत खजानें मायाजोर धरी धर भीतर, कहो काये के लानें चलती बिरिया संग न जावे, देख-देख पछतानें जीनें देह दई मानुस की, लिये फिकर में रानें गंगाधर ईसर लये ठाढे, जी खॉ जितने जानें।

विषय चयन, उक्ति वैचित्रय और पारंपरिक बिम्बो

में गंगाधर सिद्धहस्त थे। उन्होंने नई पीढ़ी को ग्रामीण चेतना के साथ प्रस्तुत वाचिक परंपरा में ज्ञान-धारा प्रवाहित की। यथा हरि जे अर्जुन रथ हॉ के बने सारथी बॉ के। दाहिनी चैकी हनुमान की ध्यान शारदा मॉ के।।

छकछकात रथ जात गगन मॉ धनि लगे जा चाकें।

कहत गंगाधर बाजू के उपर महाभारत रंग भॉकें।।

इस तरह गंगाधर ने ईसुरी की काव्य परंपरा को पुष्ट किया। अपनी मौलिक रचनाओं से बुंदेली साहित्य को नई संपदा दी। खड़ी फाग के जन्मदाता के रुप में गंगाधर ने अपनी मौलिक भाषा शैली विकसित की है। प्रसाद और माधुर्य गुण से परिपूर्ण इनकी भाषा में अलंकृति और काव्योपमा का प्राचूर्य है। ईसुरी का भाषा का प्रभाव भी है।

भाषा-शैली में गंगाधर व्यास को ईसुरी कवि का अनुयायी माना गया है। इस संदर्भ में श्यामसुंदर बादल लिखते हैं कि- ''प्रसाद तथा माधुर्य गुणों से भाषा को अंलकृत करने में ये ईसुरी के ही अनुयायी हैं।'' वास्तव में, बुंदली लोकजीवन के विविध रुप उनकी काव्य धारा में समाहित हैं।

गंगाधर व्यास जी की लिखित रुप में दो सौ फागें ही संग्रहित मिलती हैं। शेष काव्य - भंडार तो लोकमानस की स्मृति में ही समाहित हैं। हिन्दी के गौरव को बढ़ाने वाले लोकांचल की बोलियों के कवियों के साहित्य का संकलन होना चाहिए, जिससे बुंदेली साहित्य के संस्कार जनमानस में रचबस सके।

आजाद वार्ड
मण्डला (म.प्र.)
पिन- 481661

लोकोक्तियों और लोकाचार

– डॉ. प्रेमलता नीलम

बुन्देलखण्ड प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध, विकासशील है। ऐतिहासिक, पौराणिक, भौगालिक, औद्योगिक, वीर गाथाओं तथा हीरा रत्न की खान, आन, बान, शान हैं अनुपम बुन्देलखण्ड न्यारा, प्यारा बुन्देलखण्ड जिसके अंचल में लोक संस्कृति, लोक व्यवहार, लोक रंजन, लोक देवता, लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोकगीत, लोकराग, लोक आभूषण, लोक नीति-रीति, लोक पर्व, लोकाचार एवं लोक साहित्य यहां की पावन धरती के कण-कण में समाहित है। हिन्दी साहित्य की भांति बुन्देली साहित्य में भी रस, छंद, अलंकार, मुहावरे एवं लोकोक्तियों कहावतोंक ा भण्डार हैं। जन-जन के लोकाचार में बुन्देली लोकोक्तियों दृष्टिगोचर होती है।

लोकोक्ति शब्द लोक उक्ति के मेल से बना है जिसका अर्थ है लोक या जनता में प्रचलित उक्तियों या कहावतें। लोकोक्तियों, अभिव्यक्ति को सहज सम्प्रेष्णीयता प्रदान करने में सहायक होती है। काव्य यहाँ गद्य लेखन में प्रसंगानुसर लोकोक्तियाँ का प्रयोग रचना को प्रभावशाली बनाते हुए उसे रोचकता प्रदान करनी है। अर्थात लोकोक्ति का अर्थ है ऐसी प्रचलित उक्तियों जो अपने विशेष अर्थों से उसकी सच्चाई को प्रकट करती हो उन्हें लोकोक्तियों कहते है। सामजिक जीवन में ये लोक्तियों सहत सरल, मानवीय लोकाचार अर्थात लोक व्यवहार में दृष्टिगोचर होती है। जैसे............व्यक्ति कभी-कभी अपनी बात लोकोक्ति के सहारे कह उठता है ''चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात' इसका अर्थ है कि थोड़े दिन का सुख। आंतरिक पीड़ा अपने आप अर्थ स्पष्ट कर देती है। लोकजीवन में एक ही प्रकार से सांत्वना का कार्य करती है लोकोक्तियों। व्यक्ति को व्यवसाय में हानि होने पर अत्यंत पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में अत्यंत सतर्कता से वह नया व्यवसाय आरम्भ करता है, और फायदा होने लगता है तब कर्मशील व्यक्ति कह उठता है, कि ''दूद को जरो छाछ भी फूँक के पियत है'' अत: लोकोक्तियों गाँव और शहर के जनमानस पर अच्छा प्रभाव छोड़ती है। विद्वानों ने कहा है कि ''दान की बछिया के कान नई देंखे जाते'' अत: उपहार की वस्तु से गुणदोष नहीं देखे जाते, लोकाचार की दृष्टि से प्रत्येक मानव प्राणी को उक्त लोकोक्ति से शिक्षा प्राप्त करना चाहिए। किसी के द्वारा भेंट गई वस्तु की नोंक-झोक बुराइयाँ न करे। ऐसी परिस्थिति में यह लोकोक्ति सार्थक है।

जैसे ....''दोईदीन के पांडे, हलुआ मिले न माड़े अर्थात दुहरा लाभ देखने में एक भी लाभ नही मिलता। लोकोक्तियाँ समाज के लिए संदेश वाचक भी है। जैसे...........''पटियाँ चिलकें, जुऑ किलके '' अर्थात दिखावटी कार्य करना इसका अर्थ स्पष्ट करता है कि कार्य व्यवहार और समाज में स्थान पाने के लिए दिखावटी कार्य से जुआ जैसे लोग किलकते हैं। इसीलिए पारखी लोगों ने कहा है ''आदमी जानिए बसै, घोड़ा जानिए कसै'' इसका मूलत: अर्थ है प्रयोग से ही सच्चाई पता चलती है।

हँसी, मजाक, व्यंग एवं शिक्षाप्रद, समाज सुधार के संदेश तथा संस्कृति का ज्ञान कराती है थे लोकोक्तियां। जैसे-.........''बाप तक खर्चा की बाट, बेटा आ गओ मॉगत खात'' जो पुत्र नही कमाते उनके लिए कहा गया है। कम ज्ञान होने पर अधिक प्रदर्शन करने पर कहा जाता है जैसे............'' बिच्छु को मंत्र जानत नईयॉ, सांप के बिल में डारें हाथ''।

बुन्देलखण्ड का प्रत्येक व्यक्ति अपनी अकड़ व पकड़ के लिए अपने-अपने स्तर पर प्रसिद्ध है इनके भाव विचारों

को लोकोक्ति में इस प्रकार व्यक्त किया है जैसे - ''सौ डंडी, एक बुन्देलखण्डी'' कहीं -कहीं पर लोक्तियों, लोक व्यवहार के रुप में मनोभावों कों इस प्रकार व्यक्त करती है जिनमें संकेतात्मक दृष्टि गोचर होता है। जैसे............''सास की सारी बहु तुम्हारी, देखत का हो करो व्यारी। ''

अर्थात सास स्वयं अपने पति से कहती है........... सास की साड़ी पहिने बहु को देखकर शंका न करो भोजन करो।''

बुन्देलखण्ड में मान मर्यादा अपार रही है और गाँव स्तर पर परिवारों में आज भी है। निम्न लोकोक्ति में कहा गया हैं................. 'ससुर वैध कुसांगरे खता'' इसका अर्थ है ससुर के वैध होने पर मर्यादा के कारण सच्चाई न बतला पाना। सामाजिक प्रथायें कभी-कभी मर्यादा की दहलीज के अंदर ही अंदर पीड़ाओं को जन्म देती हैं, अब युग बदलता जा रहा हैं कुछ मान्यताएं समाप्त भी होती जा रही है। देश के प्रत्येक प्रोत में मेला प्रदर्शनी के आयोजन होते है। आज का समृद्ध सम्पन्न परिवार एवं मध्यम तथा निम्न परिवाार जरुर ऐसी जगह पहुँचता है मनोंरजन के साथ-साथ खाना- पीना, मनपंसद की खरीद भी की जाती है। किन्तु साधनों की कमी होने से हम कह उठते है कि...........पैसा ने ढेला, गड़पेरा को मेला''।

सच मायने में लोकोक्तियों प्रत्येक वर्ग के मानव प्राणी के लिए सचेत करती है। बेरोजगारी को बढ़ावा देती है, इसका भी संकेत शिक्षा, उमंग और उत्साह, मिल-जुल के कार्य करना है। सावधानी बरतना जैसे- ....''बासी वचे न कुते खाये''। व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार कार्य दिया जाये....... ताकि लोक व्यवहारिकता लोकहितार्थ की सुख समृद्धि हो।

हिन्दी साहित्य, बुन्देली लोक साहित्य में शिक्षा के क्षेत्र पाठ्य क्रम में बराबर सर्वमान्य है- लोकोक्तियाँ। लोकोक्ति से लोक साहित्य में काव्यात्मकता से लोगों की पठन- पाठन में अभिरुचि बड़ी से है। कार्य व्यवहार, लोक आचरण में श्रेष्ठ परिणाम देखने मिलते है। विद्यार्थियों के लिए परीक्षक 1 अंक यदि लोकोक्ति में सही देता है तो यह एक अंक मेरिट की सूची में अब्बल पर लाकर खड़ा कर देता है।

अत: हम कह सकते है कि लोकोक्तियाँ प्रत्येक पहलू के भविष्य को उज्जवल बनाने में लिए कुशल मार्गदर्शक है, ज्ञानवर्धक है।

बस........

एक बार लोकोक्ति को समझ कर देखिये ।

एक बार लोकोक्ति पर मनन चिंतन तो कीजिए।

अब

'' मूड़ जेरिया बांधना है''।

'' दृढ निश्चय करना है''।

जय लोकोक्ति........

जय बुन्देलखण्ड............

काव्य कुंज
बी 29 ऐलारो कालोनी
दमोह
मो.9425406017
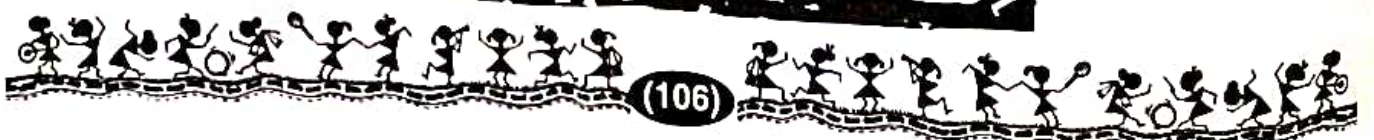
बुन्देली गद्य साहित्य की बुलंद यात्रा

– डॉ. रमेश चंद्र खरे

बहुदा भावानुभूति पद्यात्मक, पर विचारानुकृति गद्यात्मक होती है, जो द्विपक्षीय कार्य व्यापार में व्यावहारिक संप्रेषणीय है। कोई भी आंचलिक संस्कृति, उसकी बोली से विकसित होती हुई उसके शब्दांकित लोक साहित्य में मुखित होती है। बुन्देलखण्ड में यह प्रस्फुटन 10 वी शताब्दी से लेकर आज तक विकसित है। डॉ. राम नारायण शर्मा ने अपने बुंन्देली भाषा साहित्य का इतिहास 'ग्रंथ में बुंदेली गद्य के विकास को हिंदी कविता के काल विभाजन के समानांतर परखा है। प्रांरभ में कुछ चंपू काव्य (गद्य-पद्य मिश्रित) चला। उपासना काल में 'चैरासी वैष्णवन की वार्ता की तरह, महारानी कमलारानी की 'बुन्देली वार्ता' रचित है। तंदतर आधुनिक काल में नासिकेतोपाख्यान ' (सदल मिश्र) और 'रानी केतकी की कहानी' (इंशाअल्ला खां) की भांति बुंदेली गद्य विकसित हुआ। सं 1900 से राजनैतिक स्थिति बदली। इसका आदि रुप तत्कालीन रियासतीपत्र, पाण्डुलिपियों में मिलता है। इनमें, अर्जी, कौलनामा, किरायानामा, कुर्सीनामा, करारनामा, शोक पत्र, परवाना, कबूलनामा, रुक्का, इश्तहार, जागीरनामा, टीप, ताम्रपत्र, दुर्गलेख, पट्टा, सनद, पावती, पुत्रनामा पुरजी, बीजक, रसीद, शिलालेख, हुक्मनामा, हिदायतनामा, विरुद्ध, जमानतनामा, रपट, बख्शीसनामा, मसौदा, किश्त, आदि दस्तावेज हैं। महाराज छत्रशाल और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के विवाह निमत्रंण पत्र, और अन्य राजाओं से अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र व्यवहार चिट्ठियां ऐतिहासिक धरोहर है। डॉ. आरती दुबे ने अपने ग्रंथ बुंदेली साहित्य का इतिहास में इसकें विस्तृत उदाहरण दिए है। छुट पुट गद्य 17 वीं सदी में अनन्य अक्षर कें 'अष्टांग योग' और 18 वी सदी में अमर सिंह कायस्थ की 'अमर चंद्रिका' और 'शालिहोत्र' में मिलता है।

बुन्देली भाषाविद पं. कन्हैया लाल 'कलश' ने बुंदेली गद्य विकास को पांच कालों में बाटा है- वार्ता रुप, चंदेल काल, मधुकरशाह काल, छत्रसाल काल और वीरसिंह जू देव से आधुनिक काल। उन्होंने डेली कालेज इंन्दौर के अपने गुरु बनारसी दास चतुर्वेदी को कुंडेश्वर (टीकमगढ़) बुलाकर 'मधुकर' पाक्षिक पत्रिका (सन 1945) से नवजागरण काल प्रंरभ कर, बुंदेली को संस्कारित और परिवर्धित किया। चतुर्वेदीजी 'विशाल भारत' छोड़कर आए थे। उनके साथ जुड़ा नया लेखक परिवार-सर्वश्री वियोगी हरि, अंबिका प्रसाद दिव्य' गौरीशंकर द्विवेदी, रामचरण हयारण, वासुदेव गोस्वामी, जगदीश चतुर्वेदी, मुंशी अजमेरी जी, यशपाल जैन, जैनेंन्द्र कुमार आदि। बुन्देली गद्य ? साहित्य की श्रीवृद्धि करने वालों में इनके अतिरिक्त, डॉ. परशुराम 'विरही' दुर्गेश दीक्षित (प्रेम कौ प्रभाव) प्रमुख हैं। कृष्णानंद गुप्त ने टीकमगढ़ से 'बुन्देली वार्ता' निकालकर बुन्देली संस्कृति पर निवंध आदि प्रकाशित किए। कालपी के बालकृष्ण वर्मा ने और डॉ. श्याम सुंदरदास ने भी इस विधा को समृद्ध किया। 'कलश' जी ने बुंदेली बोली कौ उग्रौ और उन्सार' (आगम और विकास) और लोकनाथ सिलाकारी 'काव्यांग विवेचन लिखकर व्याकरण क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया समसामियिक समस्याओं पर हरिमोहन श्रीवास्तव, गनेशी लाल बुधेलिया एवं डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने 'मामुलिया' पत्रिका का छतरपुर से संपादन कर उल्लेखनीय कार्य किया। इस बीच बुंदेली कहानियां लोक जीवन से जुड़कर आगे बढ़ीं -ऐसे एक हतें....या 'भौत दिनन की बात है'...से होकर, वे बंधी थीं। सन 1940 से शिव सहाय चतुर्वेदी (गौने की बिदा'और 'पाषाण नगरी') हरगोविन्द गुप्त से भगवान सिंह गौड़ (अथाई की बातें 1955) तक तृतीय उत्थान में 1970 से उन्मेषित होता

हुआ गोविन्द मिश्र, राजाराम साहू, डॉ. गुप्ता मैत्रैय और डॉ. रामनारायण शर्मा तक जाता है जिनका '152 बुन्देली कहानिया' संग्रह और जयराष्ट्र-राम कथा का बुन्देली उपन्यास, स्तृत्य प्रयास है। सुश्री शरद सिंह का (आग तरे अंगरा) इस दिशा में नया प्रयास है। आज बुन्देली कथा साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव परिलक्षित है (बाजारवाद, उपयोगितावाद, और उपभोगितावाद पनप रहा है।

'काव्यांग विवेचन' लिखकर व्याकरण क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समसामयिक समस्याओं पर हरिमोहन बुन्देली गद्य का नाट्य रुप भी बहुतायत से उपलब्ध है। 15-16 वीं सदी में केशव दास कृत 'विज्ञान गीता' और रीवां नरेश विश्वनाथ सिंह का 'आनंद रघुनंदन' नाटक उल्लेखनीय है 19 वीं सदी में चरखारी नरेश अरिमर्दन सिंह जू देव ने स्टेट में प्रथम 'द रायल ड्रामेटिक सोसाइटी' की स्थापना कर प्रसिद्ध कशमीरी नाटककार आगा हश्र को बुलाकर वहाँ विशाल नाट्य शाला भवन बनवाया था। तृतीय उत्थान के महत्वपूर्ण नाट्य शिल्पी हैं-वृंदावन लाल वर्मा, अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', सेठ गोंविद दास और डॉ. राम कुमार वर्मा। आधुनिक बुंदेली नाट्य साहित्य ने अपनी ऐतिहासिक गौरव गाथाओं को एकांकियों में ढाला और आल्हा, हरदौल, लक्ष्मी बाई इनमें प्रतिष्ठित हुए। पद्म नाभ तैलंग (जन्म 1911) का नाम इनमें सर्वोपरी है जिनके सात कहानी संग्रह और सात नाट्य एकांकी संग्रह है। तदंतर हैं- डॉ. महेन्द्र वर्मा, भगवत नारायण शर्मा, माधव शुक्ल 'मनोज', डॉ. बलभद्र तिवारी, श्याम मनोहर मिश्र, अवधकुमार श्रीवास्तव। लोक नाट्य परंपरा में प्रहसन, स्वांग, लीलानाट्य और नौटंकी भी आते है। डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैया ('परिवर्तित बुढ़ापा') और डॉ. रामनारायण शर्मा ने भी (कोख में कोप, पैचान, सोबरन, महुआ, अपनी अपनो सोच) लोक नाट्य लिखे। सुरेन्द्र तिवारी (बैरु भौजी) सुधा रावत (पैली बेटी, धन की पेटी), हरिमोहन श्रीवास्तव (अच्छे दिन, जीवन की राहें, नशे से बचो) ने नाट्य संवर्धन किये।

बुन्देली के आलोचना साहित्य में पं. गौरी शंकर द्विवेदी शंकर (इतिहास), पं. परिहर प्रसाद द्विवेदी (वियोगी हरि- भाषा का स्वरुप) कृष्णानंद गुप्त (बुन्देली कहावतें) अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' (संपादन) डॉ. भगवान दास माहौर और डॉ. छवि नाथ तिवारी- दमोह के संदर्भ में ''बुन्देली शब्द सामर्थ्य'' - शोध प्रबंध) कैलाश बिहारी द्विवेदी (शब्दकोश, मुहावरे, भाषा वैज्ञानिक अध्ययन), डॉ. कामिनी, डॉ. सीता किशोर खरे, डॉ. राधेश्याम दुबे, डॉ. लता दुबे, डॉ. श्याम सुंदर दुबे, कैलाश मड़बैया (बाके बोल बुंदेली के' और मीठे बोल बुंदेली के) उल्लेखनीय है। सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के बुंदेली पीठ की 'ईसुरी' डॉ. बहादुर सिंह परमार के संपादन में 'बुन्देली बसंत (बुंदेली विकास 'संस्थान, बसारी-छतरपुर और डॉ. मनमोहन पांडे के संपादन में 'बुन्देली दरसन- हटा व बुन्देली अर्चन (दमोह) ने बुन्देली पत्रकारिता में श्रीवृद्धि की है।

कई संस्थाएं इस बुन्देली वैभव के लिए सक्रिय है- वीरेन्द्र केशव देव परिषद्, टीकमगढ़ म.प्र. साहित्य परिषद् ओरछा, बुंदेलखंड परिषद् इलाहाबाद, बुन्देलखण्ड इतिहास परिषद् भोपाल, बुंदेलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद्, लखनउ, बुन्देलखण्ड शोध संस्थान झांसी. बुन्देल अकादमी छतरपुर आदिवासी कला परिषद् भोपाल। इनमें से कुछ संस्थाएं निष्क्रिय भी है। हाल ही में ओरछा में अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद भोपाल द्वारा, एक बुंदेली सम्मेलन आयोजित कर, उसमें बुन्देली भाषा के मानकीकरण का मुद्दा उठा कर-कोस कोस पै पानी बदलै, गांव गांव में बानी, के बोली- भेदांतर की समस्या को हल कर, लेखन में एकरुपता लाने का प्रयास किया गया है जो मतभेदों के बावजूद स्तुत्य है।

एम.आई.जी.बी.73
विवेकानंद नगर, दमोह (म.प्र.)
मो. 9893340604

खोड़िया

– अमितक्रम् दुबे

कृषि युग के प्रारंभ होते ही मनुष्य ने अन्न उत्पन्न करने की तरकीबे जान ली थी। चावल और गेहूँ के अलावा वह अनेक तरह के अन्न उत्पन्न करने लगा था।

अन्न उत्पादन के साथ ही अन्न के संग्रहण के लिये उसने विभिन्न प्रकार के उपाय किये थे। सर्वप्रथम मिट्टी के बर्तनों में ही अन्न का संग्रहण किया जाता था। मोहनजोदड़ों की खुदाई में ऐसे मृद भांड उपलब्ध हुए हैं जिनमें अनाज के दानें हजारों वर्ष तक सुरक्षित रहे हैं। बाद में विभिन्न धातुओं के पात्रों में भी और धातुपात्रों में सीमित अनाज ही रखा जा सकता था। सभ्यता के विकास क्रम में कृषि का विकास हुआ। जनसंख्या बढ़ी और कृषि जमीन का रकबा भी बढ़ा इस आधार पर अनाज संग्रहण के नये तरीके भी खोजे गये।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में गेहूँ, चना आदि का क्षेत्रफल अधिक मात्रा में बोयी जाती रही है। इन फसलों का उत्पादन भी खूब होता रहा है। इन अनाजों के संग्रहण के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में डहरिया, बंड़ा और खोड़िया जैसे दो- तीन महीने के लिये अनाज सुरक्षित कर लिया जाता था। यह मिट्टी से बना वृहदकार पात्र होता है। घर में मिट्टी से ही चार पतली दीवार बनाकर एक कोठी नुमा पात्र बना लिया जाता था जिसे 'कुठिया' कहा जाता था कुठिया के नीचले हिस्सें में एक बड़ा सा छेद कर दिया जाता था जिसे ओंगा कहा जाता था।

इस कुठिया के ऊपर बाले मुँह से अनाज भर दिया जाता था। अनाज भरते समय ओंगा को बंद कर दिया जाता था। जब जरुरत पड़ती थी तब ओंगा को खोलकर नीचे से अनाज निकाल लिया जाता था।

डहरिया और कुठिया में दैनिक व्यवहार के लिए ही अनाज रखा जाता था। कुछ महीनों तक अनाज को सुरक्षित करने के लिए बंडा लगाया जाता था। बंडा घर के किसी कोने में बनता था। ज्वार के सूखे पेड़ों से दो टटियाँ बनाकर घर की कोणवर्ती दीवारों से सटा दी जाती थी। इस तरह दो दीवालें और दो टटियों से चौकौर बंड़ा बन जाता था। इसमें नीम के पत्तों का पुर लगाकर अनाज भर दिया जाता था। इस तरह दो-तीन महीने के लिये अनाज सुरक्षित कर लिया जाता था।

फसल चक्र के अनुसार गेंहू चना आदि की बोहनी शरद ऋतु में होती थी।

जबकि इनकी फसल बसंत समाप्त होते-होते आ जाती आ जाती। बोहनी के लिये बीज आदि सुरक्षित रखना एक कठिन कार्य रहा होगा क्योंकि ग्रीष्म और वर्षांत में अनाज को बिना पुख्ता इंतजाम किये सुरक्षित नहीं रखा जा सकता था। इस हेतु खोड़िया का अविष्कार किया गया। खोड़िया धरती में खोदा गया एक गड्डा होता है छोटे कुएँ के आकार का यह गड्डा घर के आंगन में बाड़ें में अहाते में अनाज रखने की आवश्यकता के प्रमाण की गहराई वाला होता है गड्डे में अनाज रखने की आवश्यकता के प्रमाण की गहराई वाला होता है गड्डे की तलहटी में सूखा भूसा डाला जाता था। इन भूसा की मोटी परत के ऊपर तेदूं पत्ते से बनाई गई लम्बी पतलों को बिछाया जाता था। गड्डे के घेरे में भी लगभग एकफुट की पर्त वाली भूसे की दीवार बनाई जाती थी इस दिवाल के सहारे ऊपर तक आते क्रम में
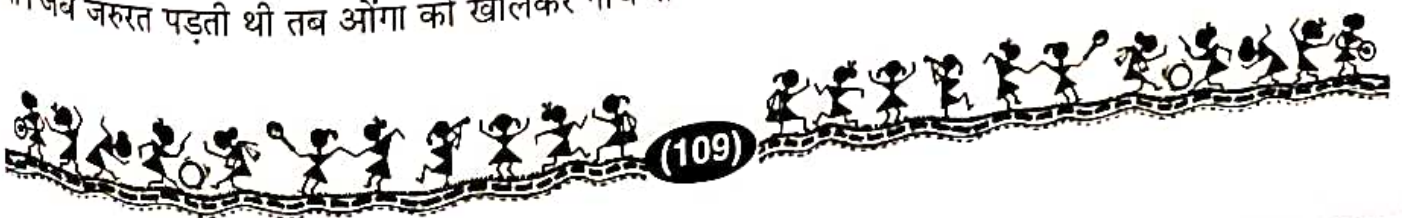
गोलाई बनाते हुए तेंदू की लम्बी पतलों को लनाया जाता था इन पत्तलों के अंतराल में ही अनाज को भरा जाता था। अनाज इतनी मात्रा में भरा जाता था कि ऊपर की सतह पर वह स्तूपाकार उठ जाता था इस स्तूप को भी तेंदू की परतों से ढंक दिया जाता था। और इस पर भी भूसे की एक मोटी पर्त चढ़ा दी जाती थी। भूसे की इस पर्त पर मिट्टी का मोटा आलेपन कर दिया जाता था। इस तरह खोड़िया तैयार हो जाती थी। खोड़िया के अंदर रखा अनाज सड़ता गलता नहीं था उसमें कीड़े नहीं लगते थे। खोड़िया का ऊपरी हिस्सा- चूकिं स्तूपाकार होता था इसलिए वर्षा का पानी भी इस पर नहीं टिकता था इस लिए खोड़िया का अनाज सुरक्षित रह जाता था।

खोड़िया में अनाज रखते समय अनाज के हिसाब किताब को रखने के लिए एक बीजक भी खोड़िया के भीतर रखा जाता था। यह बीजक मिट्टी के घड़े की पैंदी तोड़कर ऊपर के हिस्से पर लिखा जाता था। श्री गनेशाय नमः के बाद एक दोहा लिखने का रिवाज था दोहा इस प्रकार था।

सड़े घुने बीघे नही चोर मूस न खायें।
जो भंडार कुबेर को श्री राधाकृष्ण सहाय।।

फिर आगे लिखा जाता था- खोड़िया गड़ी फलाने जू के आगन में फिर रखे हुए अनाज का विवरण दिया जाता था, फिर खोड़िया गढ़ने की मिति का उल्लेख किया जाता था, खोड़िया के अंदर बड़ी पापड़ दो पोटली में बॉध कर रख दिया जाता था जो चार-पॉच महीने बाद भी सुरक्षित निकलते थे। खोड़िया एक तरह से उस जमाने के वेयर हाउस थे।

- चंडी जी वार्ड हटा
जिला दमोह म.प्र.
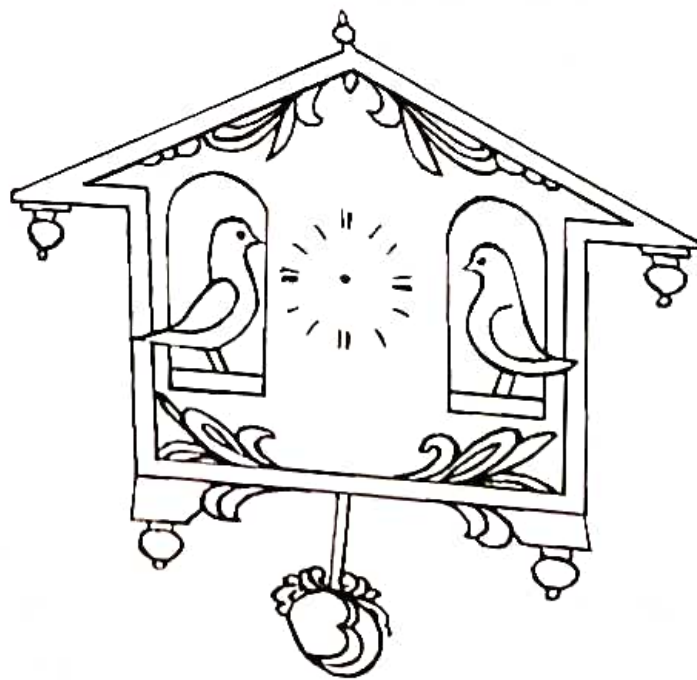
ईसुरी के "सुर व्यंजन उनतालिस अक्षर"

– डॉ. वीरेन्द्र निर्झर

काव्य स्पर्धाओं में प्रतिपक्षियों की काव्य प्रतिभा को चुनौती देने, ज्ञान गुरूता को परखने और उन्हें पराजित करने की भावना से लतापक्ष, अधर रंगत और दृष्टकूट आदि की रचनाएँ फड़, सहित्य की विशेषता रही है। इस साहित्य में साँस्कृतिक महत्व, सामाजिक चेतना, धार्मिक प्रवृत्तियों, परिवारिक मनोभावों, लोकविश्वास और मान्यताओं की सुन्दर भाव राशि तो दृष्टिगोचर होती ही है, प्रभूत प्रतिभा, विद्वत्ता तथा बौद्धिक तत्परता की अद्‌भुत झलक थी चमत्कृत करती हैं। फड़ों के प्रतियोगी सरोकरों से जुड़ी लोककवि ईसुरी की ऐसी ही एक फाग स्वर और व्यंजनों की गणना के रूप में मुझे एक संकलन में प्राप्त हुई है। फाग इस प्रकार है-

कौनऊ कहौ फाग नई गाकें
आज सामने आकें
सुर व्यंजन उनतालिस अक्षर, सबरे बेद बचाकें।
तीन लोक की मानी का है, और ईकों समझाकें।
ईसुर कात जात ना रइयों, जइयों जोड़ मिलाकें।

उक्त फाग में कवि ने दो प्रश्न उठाए है- एक तीन लोक की मानी क्या है? और दूसरा- सुर व्यंजन उनतालिस अक्षर 'कौन-कौन हैं। इस फाग के प्रतिउत्तर की मुझे कोई फाग नही मिली, पर इन पंक्तियों ने मुझे सोचने के लिए विवश अवश्य किया। मैं कह नही सकता कि इस प्रहेलिका का हल खोजने में मैं कहाँ तक सफल हुआ हूँ, पर एक प्रयास है।

'तीन लोक की मानी' में मानी शब्द से आष्य चक्की के ऊपरी पाट में लगने वाली उस पटली से है, जिसके बीच के छेद में एक कील रहती है, और जो पाट के मध्य उस बड़े छेद में लगाई जाती है, जिससे अनाज ऊरतें या डालते हैं। यह मानी पाट को एक स्थिति में बनाए रखती है और पाट के चलने में सहायक होती है। तीनों लोकों की भी कुछ ऐसी ही एतदावलम्बनम् (क्रं. 1/2/17) - आलम्बन रूप मानी अक्षर ब्रह्म है, ओंकार है, यह ओम् ही ब्रहा है, यह अक्षर ही सब कुछ है यह ही ब्रहा की शब्दमयी अभिव्यक्ति है।

छन्दोग्यउपनिषद में वाणी और प्राण के दाम्पत्य की एक कल्पना है वाणी और प्राण का मिलन ओंकार में होता है। और दोनों के विशिष्ट संयोग से ही ओंकार का उच्चार (जन्म) होता है- अ उ म् - ऊँ.। इसमें पहली मात्रा अकार है, दूसरी उकार और तीसरी मकार। एतेरय ब्राहमण स्पष्ट करता है- "अकारो वै सर्वा वाक्य"- अकार निश्चय ही सम्पूर्ण वाणी है, अर्थात संपूर्ण वाणी अकार से व्याप्त है। श्री मद्‌भगवद्‌गीता में भगवान कहते है- 3. अक्षराणामकारोऽस्मि- अक्षरों मे अकार मैं ही हूँ। सृष्टि की व्यापकता के विचार से अकार की पहली मात्रा में पृथ्वी व्याप्त है, उकार में अंतरिक्ष और मकार में द्युलोक। यह उत्पत्ति स्थिति और लय का भी सूचक है और जीवात्मा की तीन स्थितियों में विश्व, तैजस और प्राज्ञ का भी। 4. समग्र विश्व इसी ओम् में समाया हुआ है। सर्वत्र व्याप्त होकर रहना उसका धात्वर्थ है। 5. वह सब में पिरोया हुआ है- तीनों लोकों में भी। इसीलिए उपनिषदों का उद्घोष है-

ओंकारप्रभवा देवा, ओंकारप्रभवा : स्वरा:।
ओंकारप्रभवं सर्वं, त्रैलोक्यं सचराचरं।

इसलिए तीनों लोक और समस्त सृष्टि जिससे उद्भुत और प्रभावित है, वह अक्षरब्रह्म तीनों लोकों की मानी है, कहतें है- शब्दब्रह्मणि निष्णात: परं ब्रह्माधिगच्छति"- शब्द ब्रह्म को जानने वाला ही परमब्रह्म को जान पाता है। ऋषियों और विद्वानों ने शब्द ब्रह्म की उपासनामें ही सारा जीवन लगा दिया। वाणी की इस महत्ता को प्रकट करता हुआ

शतपथ ब्राहाण का वचन है- वाचो वा इदं सर्व प्रभवति। 6. अर्थात वाणी से ही सब कुछ होता है। भगवान शंकर कहते है- ''उस ब्रह्म का यह संपूर्ण जगत् वाणी रूप सूत्र द्वारा नाममयी डोरी से व्याप्त है। 7. यह नाममयी डोरी ही मानी है। ईसुरी इसी नाममयी डोरी की व्याप्ति तीनों लोकों में देखते है।

महाकवि ईसुरी का दूसरा प्रश्न अक्षरों के संबंध में। देवनगरी में बावन अक्षर है। ये अक्षर वैदिक और संस्कृत के लिए बने है। महात्मा कबीर ने भी ''बावन आखर सोधि कै, रैंरै ममै चितलाई'' पंक्ति में बावन अक्षरों की चर्चा की है। महामुनि पंतजलि ने एक विवरण में इन्द्र द्वारा शब्द ब्रह्म का साक्षात्कार करने की बात कही है। स्कन्दपुराण में भी इन्द्र को उनचास मारूतों (वर्णो) का अनुसंधाता कहा गया है। इन्द ने मनुष्य द्वारा उच्चारित ध्वनियों को गर्भ ध्वनि के उच्चारण स्थान के अेधार पर पहले सात खण्डों मे विभाजित किया- कंठ, तालु मुर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका और काकल। बाद में यत्न औ प्रयत्नों के आधार पर- स्पृष्ट, विवृत्त, ईषत्, विवृत, विवार, संवार और महाप्राण के रूप में प्रत्येक के सात- सात खण्ड किये। इस प्रकार 7*7 = 49 वर्णो का अनुसंधान इंद्र ने किया, जिनमें 16 विवृत स्वर (अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ- ॠ, लृ, ए-ऐ, ओ- औ, तथा अनुनासिक (अँ) अनुस्वर (अं) व विसर्ग (अ :) और 33 व्यंजन क से म तक 25 वर्गाक्षर स्पर्श वर्ण, अंतस्थ य, र, ल, व ईषत् स्पर्श तथा ऊष्म श, ब, स, ह, ईषद् विवृत है।

परवर्ती कालों में कुछ ध्वनियों के लुप्त होने और कुछ के जुड़ने से यद्यापि वर्ण संख्या में परिवर्तन आते रहे है, पर आज भी हिन्दी वर्णमाला में कम से कम उनचास अक्षर तो मानना ही पड़ेंगे।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने हिन्दी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण पुस्तक में 55 ध्वनियाँ की तालिका दी हैं, किंतु उनमें ऑं, क, ख, ग, ज, फ, ह, म्ह आदि ध्वनियाँ सम्मिलित की गई हैं, इन विदेशी शब्दों में प्रयुक्त अतिरिक्त ध्वनियों की हिन्दी को आवश्यकता नही है, अत : इन्हें यदि छोड़ दें और तिवारी जी द्वारा छोड़ी हुई ॠ, अं, अ : आदि ध्वनियों को पुन : जोड़ लें तो हिन्दी वर्णमाला में उसकी आवश्यकतानुसार उनचास वर्ण तो आवश्यक है।

ईसुरी ने अपनी फाग में स्वर और व्यंजन मिलाकर उनतालिस अक्षर पूछे हैं। यह उनतालिस का आँकड़ा हिन्दी वर्णमाला से दस अक्षर कम हैं। निश्चित ही ईसुरी की यह गणना हिन्दी (नागरी) वर्णमाला के अतिरिक्त किसी अन्य बोली भाषा के विषय में है, जिसकी कई ध्वनियाँ अंतर्हित हो गई है, अथवा किसी एक ध्वनि में समाहित हो गई है।

बुन्देली भाषा में भी अक्षरों की संख्या कम है। श्री लक्ष्मी चंन्द्र नुना ने अपनी पुस्तक बुन्देलखण्डी भाषा में बुन्देली की 10 स्वर ध्वनियों और 27 व्यंजनों को मान्यता दी है। इनमें ङ, ', भ, ण, ड़, ढ़ तथा य, व, आदि ध्वनियाँ सम्मिलित नहीं है। डॉ. कृष्णलाल हंस ने 10 स्वर और 28 व्यंजन माने है। डॉ, हंस ने अक्षर तालिका में उक्त नासिक्य व्यंजन श, ष, तथा अनुस्वर को स्थान नहीं दिया परन्तु ड़, ढ़ के स्थान पर र, रह् की ध्वनि मानी है।

डॉ, बलभद्र तिवारी ने स्वर और व्यंजनों की संख्या 10 तथा 31 बताई है, तथा डॉ. महेश प्रसाद जायसवाल ने 10 और 29। डॉ. आरती दुबे ने बुन्देली में 30 व्यंजन माने है, पर वर्णमाला में 31 व्यंजन दिए है। उनका मानना है, कि अनुस्वर बुन्देली में नहीं है। डॉ. लता दुबे ने स्वर तो दस मानें हैं, किन्तु व्यंजनों की संख्या 38 तक पहुँचा दी हैं। ऐसे ही डॉ. रामेश्वर दयाल अग्रवाल ने भी व्यंजनों की संख्या 37 तक पहुँचाई है, जिनमें न, म, र, ल के महाप्राण रूप भी सम्मिलित है।

बुन्देली अक्षरों में स्वर तो सभी विद्वानों ने 10 ही मानें हैं, किन्तु व्यंजनों के निर्धारण में यह मत वैभिन्य चिन्तनीय है। फिर भी यदि डॉ. रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल और लता दुबे जी की अक्षर गणना को छोड़ दें तो शेष सभी का मत कवि ईसुरी द्वारा पूछी गई अक्षर माला की संख्या के निकट है। अत: निश्चित रूप से कहा जा सकता है, कि ईसुरी जी का प्रश्न बुन्देली वर्णमाला के संदर्भ में ही रहा है।

उन्होंने अपने समय के बुन्देली उच्चारण और वर्णमात्राओं को भली प्रकार परखकर अक्षरमाला का एक मानक रूप स्थिर कर रखा था, अथवा उस पर उनकी एक पैनी दृष्टि थी। अन्यथा वे इनकी दृढ़ता से भी ज्ञानराशियों को खंगालते हुए उनतालिस अक्षरों का प्रश्न नहीं उछालते। वास्तव में बुन्देली में अक्षरों की संख्या उनतालिस ही है, जो इस प्रकार है-

स्वर- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

अनुस्वर- अं

व्यंजन-क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ,

ट, ठ, ड (ड़), ढ (ढ़), त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, स, ह।

अन्य विद्वानों के साथ डॉ. आरती दुबे ने भी अनुस्वर (अं) को बुन्देली अक्षरों में नही माना है, परन्तु अनुस्वर और अनुनासिक के तालिका में चिह्न अवश्य दिए है।

अनुनासिक चिह्न चन्द्रबिन्दु का उपयोग स्वरों की अनुनासिकता को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है, इनके उच्चारण में नासिका विवर का रास्ता भी खुला रहता है। बुन्देली में अनुनासिकता से अर्थ भेद भी होता है, जैसे- सास-साँस। परन्तु यह अलग से कोई वर्ण नहीं है।

अनुस्वर व्यंजन है। इसका प्रयोग समस्थानीय व्यंजन (संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य) के रूप में होता है। यह वर्गाक्षर के साथ यद्यापि सभी नासिक्य व्यंजनों (ङ, त्र, ण, न, म) का प्रतिनिधित्व करता है। परन्तु वर्गाक्षर के प्रथम सदस्य के रूप में ङ, त्र, और ण के संयोग को तो केवल अनुस्वर से ही लिखा जा सकता है। न और म के संयोग को अनुस्वर अथवा नासिक्य व्यंजन किसी भी एक रूप में अंकित किया जा सकता है। इसलिए बुन्देली वर्णमाला से इसे अलग किया जा सकता है। इसलिए बुन्देली वर्णमाला से इसे अलग नहीं किया जा सकता है। इसलिए बुन्देली वर्णमाला से इसे अलग नहीं किया जा सकता है। परन्तु नासिक्य व्यंजन ङ, त्र, और ण के अलग किया गया है।

स और ह के प्रथम सदस्य के रूप ङ और न व्यंजनों का संयोग भी अनुस्वर द्वारा ही व्यक्त होता है- संसार, संहार। संहार का अनुस्वर ङ प्रतिनिधि है, इसीलिए उच्चारण में ङ की अंतिम ध्वनि 'ग' 'ह' से जुड़कर घ का उच्चारण देती है। कुछ इसे संघार भी इसलिए लिखते है।

ऋ बुन्देली में रि के रूप में उच्चारित होता है, यह ध्वनि नही है।

ड़ और ढ़ ध्वनियाँ ड और ढ के संस्वन हैं, तथा परिपूरक वितरण में है। ड ढ का प्रयोग शब्द के आदि में, द्वित्व की स्थिति में तथा संयुक्त व्यंजन के रूप में होता है।

श, ष, स में से बुन्देली में दन्त्य स ही प्राप्त होता है।

शत तो स में विलीन हो ही गया है, मूर्धन्य ष कहीं स तो कहीं ख रूप में परिवर्तित हुआ है, जैसे- वर्षा- बरसा, बरखा, पाषंड- पाखंड। पुरानी बुन्देली में ष का प्रयोग ख वर्ण लिखने के लिए हुआ है।

संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ में क्ष विशेषतया छ तथा ख में त्र तर में तथा ज्ञ ग्याँ में बदल गए है।

इस प्रकार बुन्देली की अभिव्यक्ति को पूरी तरह अभिव्यक्त करने के लिए वर्णमाला के उक्त उनतालिस अक्षर न केवल समर्थ है, एकरूपता और मानक वर्तनी की दृष्टि से भी उपयोगी है।।

संदर्भ ग्रंथ-

1. ओमिति ब्रह्म (तैतरीयोपनिषद् 1/8/1) आर्य जीवन दर्शन- श्री मोहन लाल महतों वियोगी
2. ओमित्येतदक्षरमिंद सर्व (माण्डुक्य-1 गौउपादीय कारिका)
3. संस्कृति पूजन, हिन्दी सद्विचार दर्शन ट्रस्ट मुबई
4. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ कृष्णलाल हंस
5. बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. रामेश्वर दयाल अग्रवाल
6. लोकभाषा का व्याकरण, आचार्य वात्स्यायन धर्मनाथ शर्मा शास्त्री
7. बुन्देली का व्याकरणिक अनुशीलन : डॉ आरती दुबे।

राई नृत्य का प्राणतत्व बुन्देली कहरवा

-डॉ. कुंजी लाल पटैल 'मनोहर'

राईनृत्य बुन्देलखण्ड का विश्वविख्यात लोकनृत्य है, लेकिन इसमें हृदय के उद्‌गारों को जिस लोकछंद के माध्यम से उद्घघटित किया जाता है, उस छंद पर रचनात्मक लेखन के नाम पर आज तक बुन्देली अन्वेषकों द्वारा कुछ भी नहीं किया गया है। वास्तव में यह भी शोध संकलन की दृष्टि से उदासीनता का एक विषय बना हुआ है, जबकि राईनृत्य इस विधा का छनकीला शरीर है, तो कहरवा उसका प्राणतत्व है, यह कहनें में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ग्रामीण बुंदेली वादियों में गाये जाने वाले अधिकांश श्रृंगारी कहरवों के मूड-मिजाज और चित्रित चरित्र भले ही चंदेलकालीन खजुराहो के कलाविधि की सुडौल मांसल प्रस्तर-प्रतिमाओं के कामकेतु सी अँगड़ाई प्रणय-पुकार, उम्रदराज नजरिये से इजहारी तौर पर भौंडें-भदेस उद्‌गार किसी को बाहर से खटकते होंगे, लेकिन भीतर की चुभन तो उनका भीतर वाला दिल ही जानता होगा।

बुन्देलखण्ड प्राचीनकाल से अनेक मौलिक लोकविधाओं तथा लोकलाओं का समन्वयवादी जनपद रहा है। बुन्देली साहित्य और लोकसाहित्य की समस्त विधायें, चाहे वे कथ्यात्मक रुप में हों अथवा अपने पद्यात्मक स्वरुप में, लोकमानस में सनातनकाल से वाचनीक परंपरा की प्रकीर्ण धरोहर के रुप में देशकाल की परिस्थितियों के अनुरुप अनवरत प्रचलित रहीं है। लोक परंपराओं का अलिखित इतिहास ही इन तथ्यों का साक्षी हैं। मानवीय समाज में इन लोकविधाओं ने कभी अवकाप ग्रहण नहीं किया। अशिक्षा का वतावरण होनें के बावजूद भी ये सारी लोकविधायें पीढ़ी दर पीढ़ी सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधयों के माध्यम से गतिशील होकर प्रगतिशील परंपरा का निर्वहन करतीं आ रही हैं। समाज का अपिक्षित वर्ग भी इन लोकविधाओं को आगे बढ़ाने में कभी बाधक सिद्ध नहीं हुआ।

रजवाड़ों के अंतिम दौर में अनेक लोकविधाओं को लोकविद अन्वेषकों ने यथा समय संकलित एवं समीक्षित कर संरक्षित करने का अग्रणीय कार्य किया है। अभी तक इस दृष्टि से लोकगायकी की फागविधा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। इसीलिये बुन्देली लोकसाहित्य की इस विधा के रचनाकारों के अनेक रचना संकलन तथा षोध-प्रबंध बुन्देली शोधसम्पदा में अपनी नांक और धांक दोनों में सर्वोतकृष्टता के शिखर पर स्थापित है, और संभवत : यही कारण है कि ईसुरी, गंगाधर, ख्यालीराम तथा उनके उत्तराधिकारी अपनी-अपनी रचनाधर्मिता का निर्वहन यत्र-तत्र कर रहे हैं और आगे भी करते रहेगे। बुन्देली लोकगायकी की फाग विधा का एक सहोदर तथा अभिन्न अंग अथवा लोकगायकी की एक छोटी सी विधा 'कहरवा' को प्रस्तुत आलेख में ले रहे है, जिसके संकलन एवं विष्लेषण के लिये अभी तक अन्वेषकों द्वारा कुछ विशेषकार्य किया ही नहीं गया है अथवा किसी लोकविद ने इस विधा की ओर विचार करना भी उचित नहीं समझा, जबकि लोकगायकी की इस विधा पर बहुत कुछ हो जाना चाहियें था।

ग्रामीण क्षेत्रों के खेतों-खलियानों तथा हारों-पहारों में कामकाज करते समय अशिक्षित युवाजनों द्वारा बुन्देली कहरवों को बड़ी दिलेरी से आज भी कहीं-कहीं प्रेमपूर्वक गाया और सुना जाता है। ग्रामीण अंचलों के कहरवा प्रेमियों के अनुसार -'राईनृत्य के अवसर पर सम्वादशैली में गाये जाने वाले ये लघु 'छंदयागीत' लोकमानस में हजारों की संख्या में प्रचलित है। 'लोकमान्यताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि बुन्देली भाषी ग्रामीण क्षेत्रों में कहरवा

लोकसाहित्य की समृद्ध ही नही बल्कि एक स्वतंत्र, स्वछंद, लोकप्रिय विधा के रुप में जानी, मानी और पहचानी जाती है।

बुन्देलखण्ड में कहरवा का नामकरण 'कहरवा' कब, क्यों और हुआ? यह वास्तव में आज अन्वेषण के लिये एक ज्वलंत विषय हो सकता है। क्योंकि इस छंद को बुन्देली के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। छतरपुर जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में इसे 'कहरवा' कहा जाता है । टीकमगढ़ जिला के लोग इसी छंद को फाग का एक रुप अथवा 'फागन्तिका' कहते है। पन्ना जिला के ग्राम्यांचलो में राईप्रेमी इसी छंद को 'वनगीत' अथवा वनगीता के नाम से गाते हैं। दमोह जिला के फगवारे कहरवा के इसी रुप को 'फुदरिया', बेड़नीगीत तथा 'प्रेमगीत' के नाम से बसंत के अवसर पर गाते हैं। सागर जिला में इसी फुँदरियागीत को राईगीत, बेडियागीत, राहगीरी, नर्तकीगीत, अथवा पतुरियागीत आदि अनेक नामों से गाते है।

ग्रामीण क्षेत्रों में फुँदरिया अथवा कहरवा को कोलगीत, कुँदरगीत, कहरगीत, गैलारी, आदि और भी अनेक नाम इसी लोकछंद के बताये जाते हैं। इतना ही नहीं, इनतै नामों के अलावा, ग्रामीण अंचलों में इसी प्रकार के और भी अनेक संज्ञावाची, क्रियावाची, नामकरण भी हो सकते हैं। लेकिन आधुनिकता के इस मोबाईली दौर में 'बुन्देली कहरवा' की ख्याति, प्रचलन और विख्याति वर्तमान संदर्भों में विलुप्ति के महागर्त में हमेशा के लिये जमींदोज हो रही है। कालान्तर में संभवत: कहरवा शब्द तो प्रचलन में रहेगा, लेकिन वाचिक परंपरा की हमारी पुरानी और अंतिम पीढ़ियों के चले जाने के साथ ही बुन्देली में कथ्य और शिल्प की बेजोड़ अभिव्यक्ति के 'कहरवा' अपनी संवादशैली में कही सुननें और पढ़ने को भी नही मिलेंगी।

लोकमानस में संवादसौंदर्य के इन लोकगीतों को संभवत: प्रारंभिक अवस्था में कहारों द्वारा गाये जाने के कारण ही इनका नाम 'कहरवा' पड़ गया हो और बाद में लोकछंद के इसी रुप में निहित कथ्य और शिल्प की असाधारण भावभंगिमाओं की 'कहरवरपाई' अभिव्यक्ति के कारण इस लोकविधा का नाम कालान्तर में 'कहरवा' पड़ जाना काफी सार्थक, सटीक, सारगभित, सही एवं समीचीन जान पड़ता है। कहरवा के नामकरण के और भी अनेक औचित्यपूर्ण आधार अन्वेपको की दृष्टि से हो सकते है, इसमें भी कोई संदेह नहीं है।

बुन्देलीभाषी क्षेत्रों में सभी वर्गो के लोग निवास करते है। उनकें जीवनयापन के कार्यव्यापार जाति आधारित है। एक वर्ग विशेष तो आदिकाल से ही जंगलों तथा वनोपज पर आश्रित है। इन्ही आदिवासियों अथवा वनवासियों द्वारा गाये जाने के कारण कहरवा को आदिवासीगीत, वनवासीगीत, कोलगीत, वनगीत आदि नामों का आधार बताया जाता है। रजवाड़ों में जमींदारों द्वारा आयोजित पर्वविशेष पर नाचगान की प्रथा के कारण 'राईनृत्य' की ऐतिहासिक ख्याति रही है। इसी राईनृत्य में लघु लोकछंद कहरवा को नर्तकी द्वार गाये जाने के कारण इसको राईगीत, बेड़नीगीत, नर्तकीगीत अथवा पतुरियागीत कहा जाने लगा होगा।

फाग के अंत में कहरवा गाने की सुदीर्ध परम्परा बुन्देलखण्ड में रही है। इसीलियें कुछ फगवारे कहरवा को फागांतिका अथवा फाग का एक रुप मानते हैं। फाग के अंत में तथा राईनृत्य के समय कहरवा में उतार-चढ़ाव की लयात्मक टोरमरोर की बजह से टोरा अथवा मरोरागीत, हरवाहे और चरवाहे कहीं-कहीं इसी परमप्रिय छंद को हरवाहा और 'चरवाहागीत' भी कहते हैं तथा कोलजाति के लोग इसी छंद को 'कोलगीत' के नाम से गाते हैं। हो सकता है, कहीं-कहीं जातीयता अथवा अन्य किसी आधार पर कहरवा को और भी अनेक दूसरे नामों से संबोधित किया जाता हो।

ग्रामीण लोकगायकों द्वारा बुन्देली लोकमाधुरी की इस छोटी सी लोकविधा के इतने सारे नामों से इसकी

लोकप्रियता लोकमानस में स्वयंसिद्ध हो रही है, लेकिन इसके बावजूद भी दिल और दिलेरी का इजहार करने वाला यह हृदय सा 'करहवा' आज तक किसी के शोध और संकल्न की विषयवस्तु नहीं बन सका, क्योंकि अभी तक बुन्देली तथ उसकें साहित्य के संकलित, प्रकाषित तथा अन्वेषित अधिकांष पोथी-पत्रिकाओं का आलोडन-विलोड़न करने पर पता चलता है कि चैमासा के मात्र एक अंक को छोड़कर अन्यत्र इस विधा को कहीं स्थान देने का प्रयास ही नहीं किया गया है।

बुन्देलखण्ड में ऐसे अनेक लोकविद अन्वेषक है, जो बुन्देली लोकसंस्कृति तथा लोकसाहित्य में मील के पत्थर की भांति एक संस्थान की तरह स्थापित है, लेकिन वे भी इस लोकविधा के प्रति न जाने किस उदासीनता की बजह से कहरवा के साथ न्याय नहीं कर सकें। हो सकता है, छंदीय लघुता के कारण इसे छंद हैं, ही न माना गया है। जबकि पहरवा के छंद हैं। तोड़ है, लय है, तुक है, तान है, वैविध्य है और लोक में इसकी जानदार पहचान भी है, लेकिन षोध की विषय वस्तु की दृष्टि से अभी तक अनजान है।

शोधयात्रा के दौरान अनेक बुजुर्ग कहरवाप्रेमियों से हजारों की संख्या में 'राई' के ये टोरागीत सुनने को मिले हैं। लोकविधा के इन्ही उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि बुन्देली कहरवा छंदरचना की दृष्टि से अपभ्रंष कालीन किसी दुमदार छंद से उत्पन्न जान पड़ता है। आकार तथा मात्राओं की दृष्टि से केवल छब्बीस से अट्ठाईस मात्राओं वाला बुन्देली 'कहरवा' लोकगायकी की सारी विधाओं में सर्वाधित लघुतर छंद होने पर भी यह छंद कथ्य और शिल्प की सफलतम अभिव्यक्ति की असाधारण क्षमता रखता है। लोकगायकों से सुने कहरवो मे विपयवस्तु की व्यापकता, कथ्य की संक्षिप्तता तथा संश्लिप्टता के साथ ही अनुभूति की गहराई, शिल्प की सुघरता तथा मनोभावों की सम्प्रेषणीयता लोकसाहित्य की किसी अन्य विधा से कमजोर दिखाई नहीं देती है।

बुन्देली करहवों के ऐसे अनेक उदाहरण गिनायें जा सकते हैं, जिनमें ग्रामीण प्रेमसाहित्य, धार्मिक लोकसंस्कृति तथा निर्विध्नी मंगलाचरण की प्रवृत्तियां भी रुपायित होती है। गनेश जी कहरवा साहित्य में भी प्रथमपूज्य हैं, विध्नहर्ता हैं, मंगलकर्ता हैं। वैदिक साहित्य से लोकसाहित्य तक उनका स्मरण एक लौकिक अनिवार्यता बन गई हैं, साथ ही ज्ञान की देवी शारदा तथा अन्य देवी-देवताओं का वंदन-अर्चन बुन्देली की इस विधा में भी पूरे आदर और श्रद्धा के साथ सुनने को मिलता है। कुछ उदाहरण यहां मंगलाचरण के रुप में गिनाये जा सकते हैं -

गोबर के गनेस, गोबर के गनेस।
चलो चलैं जुरमिल के पूजिये।।
गौरी के लला, गौरी के लला।
करियौ भला अपनों जानकें।।
नगड़ा पै गनेस, नगड़ा पै गनेस।
ढोलक पै ब्राजौ माई शारदा।।
रखियौ मोरी लाज, रखियौ गोरी लाज।
मइहर की शारदा भुमानी।।
शंकर भोले नाथ, शंकर भोले नाथ।
परवत पै घूनीनी रमाइयौ।।
लाला हरदौल, लाला हरदौल।
तुमारौ बुलौआ दुरगा लौ।।
पिंजरा के सुआ, पिंजरा के सुआ।
सीताराम सीताराम बोलियौ।।
पूछें लछमन राम, पूछें लछमन राम।
लंका को कौन गली जायें हम।।
हंसा करले किलोर, हंसा करले किलोर।
जानें कबै रे मर जानें।।
मारे गये मलखान, मारे गये मलखान।
सिरसा नगर सूनें हों गये।।

संभवत: भक्तिकालीन दौर में इसप्रकार के कहरवों

का गायन बुन्देली लोकमनस में प्रचलित रहा हो तथा रीतिकाल आते-आतें कहरवों की विषयवस्तु में बदलाव आ गया हो। बुन्देली कहरवों में उम्रदराज लोगों की प्रणयप्रवृत्तियों का प्रभाव भी लोकगायकी की इस विधा में प्रचुरमात्रा में पाया जाता है। गरीबी-अमीरी सामंतशाही, ज्ञानविज्ञान, प्रणयमनुहार, मेलमिलाप, संयोगवियोग, आदि सभी प्रकार के उद्गार इन बुन्देली कहरवों में कुछ इस प्रकार से सुनने को मिलते हैं-

घर-घर लम्बरदार, घर -घर लम्बरदार।
किन-किन के सइये दबारे।।
घर के घरई न समांय, घर के घरई न समांय।
आ गये खबया भइया पॉवने।।
बड़-बड़ न बताव, बड़-बड़ न बताव।
उलटौ टँगा दैहौ नीम सें ।।
तुमसे देख लये हजार, तुमसे देख लये हजार।
मऊ की बजरिया में बेंच दये।।
गैरी है गुनधार, गैरी है गुनधार।
कइयक गुनी गुटका खा गये।।
फिर से मिलियौ यार, फिर से मिलियौ यार।
आई ना मजा पैलऊँ पैल में।।
दुविधा ना करौ, दुविधा ना करौ।
दो है कठारा जीरा एक है।।
जोगी होनें परो, जोगी होनें परो।
प्यारी पुतरिया के लानें।।
ऐसें मिल गये यार, मिल गये यार।
जैसे मिलै पानी दूध में।।
डारें रइयौ डोर, डारें रइयौ डोर।
आसा हरन की करियौ ना।।

कहरवा की संरचना, प्रसंग तथा भावजन्य होती है। आश्रय तथा आलम्बन के मनोभावों के उद्गार प्रस्फुटित होने में देर नहीं लगती। इनका लयात्मक राग सुनते ही विचारों की निरझरनीं अनवरत कहरवों में प्रवाहित होने लगती है। आश्रय-आलंबन तथा स्रोताओं पर त्वरित प्रभाव पड़ने में देर नहीं लगती है। कहरवा सुनते ही मन चोरवोर तथा सराबोर होने लगता है। राधाकृष्ण विषयक कुछ कहरवा बानगी स्वरुप इस प्रकार देखे जा सकते हैं -

दरसन दो भगवान, दरसन दो भगवान।
धरकें मुकुट सोने के ।।
सखीं सोरा हजार, सखीं सोरा हजार।
ब्रज में कन्हैया अकेले।।
प्यारे नंद के किशोर, प्यारे नंद के किशोर।
घरै चलौ माखन खवा हों।।
बाजै आधी रात, बाजै आधी रात।
बैरन मुरलिया जा सौत भई।।
मधुवन मे बजै, मधुवन में बजै।
मोहॉ लगै मोरे ऑगना।।
मोहन छैकें गैल, मोहन छैकें गैल।
ग्वालिन अबै लौ आई ना।।
गोरस लैलो स्याम, गोरस लैलो स्याम।
बौ रस सो सपनें मिले ना।।
छलिया नँद के लाल, छलिया नँद के लाल।
मधुवन में छलवल करौ ना।।
ब्रजबासन के हेत, ब्रजबासन के हेत।
गोवरधन परवत उठा लये।।
कैंड़ा कैसौ छोर, कैंड़ा कैसौ छोर।
हंसा सुरझाकें जाने ना।।

बुन्देली कहरवों के उद्गारों की व्यंजनायें बहुत ही मधुर, मोहक, तीखीं और कटु होती है। मनोभावों को उत्तेजित करने वाली ऐसीं व्यंजनायें अन्य लोकविधाओं में कम ही मिलती हैं। यारी दोस्ती के संवाद नायक-नायिकाओं के चाहत और आहत मन कें भाव उद्घाटित करने वाले अनगिनत कहरवा ग्रामीण लोकमानस में सुनने को मिलते हैं। इन्हीं में से कुछ मुक्तक कहरवा विविध भावों तथा प्रसंगों पर आधारित यहाँ प्रस्तुत हैं -

गोरी ककरा ना मार, गोरी ककरा ना मार।
हम हैं गली के गैलारे।।
गैंदा कैसौ फूल, गैदा कैसौ फूल।
नेउर कें उठा लो चाय बैठकें।।
ऐंसौ कोऊ ना भओ, ऐंसौ कोऊ ना भओ।
करदई विदा लौटा लाऔ तौ।।
मै तो जात न हती, मै तो जात न हती।
जबरई पठै दऔ माई बाप नें।।
मत हो रई कलोर, मत हो रई कलोर।
सैयां की दाबी दबै ना।।
रसिया रस लै जॉय, रसिया रस लै जॉय।
मरुवा डरे रये अदवान में।।
कोयल कैंसे बोल कोयल कैंसे बोल।
प्यारे लगे फिर से बोलियौ।।
फट जैहैं दोई गाल, फट जैहै दोई गाल।
पन्ना कौ चूना बड़ौ तेज हैं।।
गोरी होरी में जाय, गोरी होरी में जाय।
कद्दू करेजे में ऑस गई।।

संवादी कहरवों में बयानबाजी की बड़ी नौंकझौंक होती है। इसका मूलकारण कहरवा की सवाली-जवाबी संरचना है। राईनृत्य के दौरान इनका गायन इनका संवाद, इनका संकेत सौन्दर्य एक दूसरे पर कटाक्ष करने में बड़े आसान, सरल और सक्षम होते हैं। बुन्देली के जितने भी कहरवा सुनने को मिलते हैं, इनमें फड़बाजी की होड़ मूलत: स्वाभाविक होती है। इन कहरवों में व्यक्तिगत अभिव्यक्तियां, अनमेल संबंधों जैसी अनेक प्रवृत्तियां भी देखने को मिलती हैं –

सपनन में दिखॉय, सपनन में दिखॉय।
पतरी कमर बूंदा वारी।।
सारी सोरा हॉत, सारी सोरा हॉत।
हमतौ चुनरिया सें चीन गये।।
बालापन के यार, बालापन के यार।
सुख दैकें दुख ना दिखाईयौ।।
करवा लइयौ ब्याव, करवा लइयौ ब्याव।
मोरे भरोसें रइयौ ना।।
ब्यावता चाय मरजाय, ब्यावता चाय मरजाय।
यार ना मरै गुइयॉं काऊ के।।
हॅसना मोरौ सुभाव, हॅसना मोरौ स्वभाव।
कये कौ बुरऔ तुम मानों ना।।
छैला जइयौ बाजार, छैला जइयौ बाजार।
पइसा बचें बूँदा लाइयौ।।
दुबदा में फसे, दुबदा में फसे।
कौन तरफ लइये करौटा।।
बलमा बेईमान, बलमा बेईमान।
कर गये अबध आये ना।।
जागी सारी रैन, जागी सारी रैन।
मोहन भुनसारे लौ आये ना।।

करहवा जिसे कुछ लोग राई का 'टोरागीत' कहते है। यह आकार की दृष्टि से सबसे छोटा छंद है। एक चरण के इस छंद में अनुभूति की अभिव्यक्ति सहज रुप में सफलता पूर्वक पूरी हो जाती है। यह अपने आप में एक मुक्तक छंद है। इसकी विचार धारा या प्रसंग एक ही छंद में पूरा हो जाता है, न पूर्वा पर आधारित और न आगे के लिये कुछ शेष, यही कहरवा की सबसे बड़ी बिलक्षणता है। नमूना के तौर पर कुछ और कहरवों को यॉ प्रस्तुत किया जाता जा सकता है –

चलौ चलिये बाजार, चलौ चलिये बाजार।
मन मन के छैला तलासिये।।
घुँघटा को ललायें, घुँघटा को ललायें।
ससरे बदे नइयॉं भाग में।।
ऐंसी यारी बर जाय, ऐंसी यारी बर जाय।
ओढ़त की फरिया बिछाई रे।।
दोई ऑगन के बीच, दोई ऑगन के बीच।
चल रये मड़ी कैसे कॉटे।।

छलिया बेईमान, छलिया बेईमान।
दौरे हो कड़ गओ बोलो ना।।
मंदिर के महाराज, मंदिर के महाराज।
देवतन की आन बनी रान दो।।
भौतऊँ खोदी खदान, भौतऊँ खोदी खदान।
धन लुट गये हीरा मिले ना।।
सइयां हो गये कंगाल, सइयां हो गये कंगाल।
पन्ना के लबरन की सीख में।।
काटे करिया नॉग, काटे करिया नॉग।
ऐंगर हो कड़ गओ चिमाकें।।
मीठी बेरी के बेर, मीठी बेरी के बेर।
गदरन ना पाये कच्चे झोड़ लये।।

ग्रामीण लोकमानस में कहरवों का कोई और छोर नहीं है। बड़ा लम्बा चौड़ा व्यौहार है इनका। एक ओर बेर खानें हते, कैकई को दोष क्यों लगाये तो दूसरी ओर 'परदेशी अँगरेज, देसी लुँदरियन पै रीझ गये' और तीसरे 'गोरी भेड़ सी धरी, सइयां धरे हँथनी टोर से' जैसे कहरवों में इनके प्रचलन के देशकाल की परख भी की जा सकती है। इतना ही नही बल्कि 'ठठरी के बरे, जीवन भर सकलना दिखाइये, जैसे कहरवो में अनमेल संबंधों की अनकही प्रवृत्तियाँ लोकरचनाओं के माध्यम से उजागर होती हैं।

अंतत: हम कह सकते है कि बुन्देली में वाचिक परंपरा की अन्य लोकविधाओं की भाँति कहरवों को गाने और सुनने वाले लोकमन और लोकजन न होने के कारण लोक की यह विधा भी अब प्रचलन से विलुप्त हो रही है, जबकि संस्कृति और संवाद की संवाहक इस लोकविधा का संकलन और संरक्षण होना चाहिये। ऐसा करने से निश्चित ही हमारे लोकसाहित्य का संरक्षण और संबर्धन हो सकेगा।

33/208, रेडियो कालोनी के सामने,
तिरछी गली, छतरपुर (म.प्र.)
मों 9425879773

कर्म प्रधान विश्व कर राखा

– डॉ. हरिमोहन गुप्ता

किस्सातो किस्सा होत, पर जो तो साँचो है। जिला जालौन के पास कोच के पास एक गॉव है घाट की सलैया जो उतईं की बात है कि ऊ गॉव में ठाकुरन की बखरी ब्योत है, पहज नदी के किनारे को गॉव ऊतरफन धनी, डॉग सां लूट पाट, डकेटी आय दिन होत रतती। उतई एक घर हतो ठाकुरन को बडे हते रामपाल सिंह और उनके छोटे भइया कृष्णपाल सिंह। बड़े के नाव का भौत दबदबा हतों, पॉच सो बीधा जमीन हती तमाम नामन से, ब्याज को धंधा हतो सबाई पे नाज बटोतो, डकेतन से अच्छे सम्बन्ध हते सा उते को माल इते होत रत तो। उनके छोटे भइया कों जो सबनापंसद हतो तोऊ बड़े भउया के संगे ही बने रहत ते, वे जोन काम बता दें, ऊ काम को कर देत थे और जब टेम राखतती मिले तो हरिभजन में गुजारत रत ते। कृष्णपाल के एक मोड़ा हते आठ साल को वड़े भइया के कोनउ संतान न हती गृहस्थी अच्छी चल रई ती कुल में एक तो है पर कृष्णपाल की भौजाई मनइमन दाह पखत तो डाह राखतती ऊपर फद्दी सबके सामने मोड़ा खों खूव प्यार करतती ऐसेइ घर चल रअतो।

एक दिनो छोटे के घर से जी को सुशीला नाव हतो बाके पेट में भोतइ जबरजस्त दर्द भओ उते कोंच में दिखाव पर बाय कोनऊ आराम नई मिलो तो बाय झाँसी ले जाने परो उते जॉचें भइ तो डाक्टरन ने पाओ कि ऊ के ऑत पे ऑत चंढ गई सो आपरेशन करने पर है तुरतई आपरेषन की की तैयारी होन लगी पर प्रभु की इच्छा भौत उपाय करे पर सफलता नई मिली और आपरेशन के दौरान सुशीला चल बसी, काऊ से कछू नइ के पाइ आठ साल को मोड़ा छोड़गई। दिन तेरई के वाद कृष्णपाल को शांति न मिल पाई सो बड़े भइया से बोले भइया तुमई जा मोड़ा को सबॉरो, हम वो साधु मण्डली में के संगे कितऊ रम हैं, तीर्थाटन कर हैं तो स्याद शांति मिले, अबे तक की हमाई कही सुनी माफ करियों और कृष्णपाल उतें से मोड़ा को छोड़ के चलो गओ मथरा, वृन्दावन, अयोध्या कापी घूमत घामत संगम पै पोचें जिते घर वाली की अस्थिया चढ़ाई थी। उते और बाकि और दशा विगर गई बाय तो जो लगो जो संसार नश्वर है इते तो जब तक आदमी जी रओ जब तक है उते तो साधु अन बाय भौत समझाव कि अब अगर शांति पावने तो हमाये संगे हरिद्वार चलों उते नंदी, पहाड़, साधुअन को संग उनकें प्रबचन सुनने को मिल है उनई की सेवा , पूजा में टेम कर है तो शांति मिल है। वा उनके संगे हरिद्वार गओ, दस, पन्दरा दिना रओ पर वा को मन उचट गओ दिल घबड़ान लगो, संसार जाने कैसो लगन लगो। एक साधु बासों बोलो घबड़ाओ नई तुम हिमालय के ऊपर चढ़ो उते तुमे एक संत के दरसन होइयें, तुमे भोतइ अच्छा लग है और शांति मिल है। बाकी बात मान के बो हिमालय की चढ़ाई चढ़न लगो तो उते के झरना पेड़ पहाड़ नदी देखके बाये कछू अच्छो लगो पर बो तो ऊपर चढ़तई गओ जिते बा साधू ने बताव तो उतई पोंच गओ।

संत सांधना में हते सो वो इंतजार करत रओ। जब संत साधना पूजा से उठे तो उनने कृष्णपाल सें पूँछी, तुम वो लौकिक संसार छोड़ के इते काय के लाने आये तबई कृष्णपाल ने अपनी पूरी राम कहानी सुना दई और कई अब तो महाराज हम इतई रें हैं मोय तो शांति चायने अब कोन के लाने जीने घरवारी चली गई, मोड़ा को भइया पाल हैं हमतो पेप जीवन आपई की सेवा में गुजार है।

संत ने कृष्णपाल को समझाव कि जो मनुष्य ई धरती

पे आव है, बाय करम करे चइये, बिना करन करें बाय न तो शांति मिल है और न सुख मिलि है। गीता में भी जोई लिखो है कि मनुष को करम करने चहिये दर दर भटके से या तीर्थाटन से कछू नई मिल है।

जीने करम करबो छोड़ दओं बाय शांति नई मिल सकत। अगर तुम हमाई बात मानो तो तुम घरे लोट जाओ और अपनो काम करो तुमें शांति मिल है। अगर शांति न मिले तो एक साल बाद जई दिना इते आ जाइयो, कर्मयोंग भक्ति योग से बड़ो है और गृहस्थ तो दूनो दाइत्व निभाउत जो घर को दाइत्व छोड़ के सुख शांति चाउत, तो, नई मिल सकत हमाई मानो तो घरे लौट जा।

संत की बात मान कें कृष्णपाल घरे लोट आव इतं आके बाने का देखो कि बा को मोड़ा फटे पुराने कपड़ा पहिने जूठे बासन मॉज रओ।

कृष्णपाल को, तो माथो सन्न गओ, हाय हम विरथा इते उते भटकत रय। मोड़ा की गत हो गई।

कृष्णपाल दूसरे दिना भइया से बोलो भइया अब तो हम इतई रै हैं सो बटवारो कर देव हम खुदई मेहनत करके सब काम कर हैं और मोड़ा को पढ़ा हैं और संगे संगे भगवान को भजन कर हैं।

अब हो बाकी दिन चर्याई बदल गई सबेरे भुंसारे उठ जाय जानबरन की गोबर तानी करके नहा धोके के मोड़ा को सपराने प्रभु को भजन करे कलेउ करकें मोड़ा को खुदई पढावे, खेतन पे मजदूरन के संगे लगके काम करवे। जब फुरसत मिले और कोऊ संत साधू गॉव में आवें तो उनके संगे सत्संग करन लगे

रात में मोड़ा को संगे लिटावें बाय पुरारन की कथा कहानी सुनावें ऐसेई समय कटन लगो कबे एक साल बीतन को आई बाय पतोउ नइ लगो तोउ बाय वा दिना का ख्याल रओं जोन दिना संत ने कुलाओतो सो बो मोड़ा संगे लेके संत से मिलबे हिमालय वे पहुँच गओ।

उते पहुँच कें संत के चरण हुये और एक तरफ बैठ गओ संत ने कुशल छैम पूछीं और बासे कईं, काय कृष्णपाल तुमें शांति मिली कि नई मिली।

कृष्णपाल बोले आपके बतायें रस्तापे चले तो मोये तो शांति, सुख सबई कछू मिलो ऐसो लगत कठिन परिसरम में ईसच्चो सुख शांति है हम तो आप के दास हैं जो आपने उपदेश दे के घरे वापिस भेज दओ नईतो, जो मोड़ा का न जाने का होतो जा में गलती हमाई है। जो हमाओ कर्तव्य हतों वो हम नई करतें तो शांति का से पाऊतें। सच्चो सुख शांति करम करबे में है जो शिक्षा आपसे मिली है।

-हिन्दी साहित्य सम्बर्धन संस्थान
कोंच (जालौन) उ प्र.
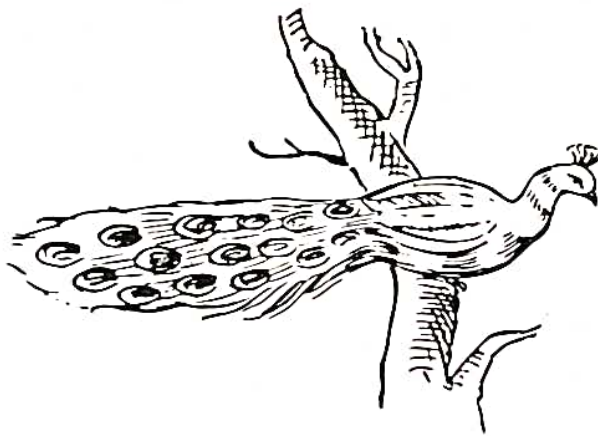
झोंकन झुलाबे

– आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल

बूंदा बांदी के बीच में भारई के तांसे बज रये, झींगंरा की झंकारे हो रई सो भादौं की रात के जा पेले पहार कों सासउं में समासी रात बना रये है। बादर धीरें धीरें गर्ज रये है सो बगल के बगेंचा की मोरे बीच बीच में कैकों कैंकों कर के अपनी होंस फूल सबखों सुना रई है। पहूज नदिया के ढीं पे बसे जा गांव के पुराने मंदर में अबे अबे ठाकुर जू की आरती भई है। उते से लरकन को झू ठाकुर जू को प्रसाद लैके लौटो है। एक लरका जोर जोर से अपनी सेखी मार रओ है के आज हमने पुहारी महाराज से तीन बेंरा परसाद लओ। मजा आ गओ है।

हम बैठे तो हते संजा करबे खों पे जब भजन तो हो नई पा रओ है। कैसे होत है भजन? मन दादुर मोर पपीहा के सँगै भगो भगो फिर रओ है। माला के मनका चल रये है पै मन के मनका उंगरइयन के पौरन से सटक रये है। आंखे बंद है। कान खुले है। मंदर से धुन आ रई है। बारह मासे की धुन है, बंदेली ठसक है। मानुस की भारी कंठ की धसक है और उनके बीच में मीठे बोल है–

''कैसे कटे दिन रैन, को हरै पीर, दरद मोरे भारी।
भादौ डर लागे मोए, देख निस कारी............. । ''

अरे, जो तो बाला परसाद को कंठ बोल रओ है। मन में हट उठी पास सें सुनवे की।

''ए, इते तो आओ। जां अपने लीला खों थामों। आज जो जांदां झमरया रओ है।'' घर मालकिन किसोरी अपने घरवारे कन्हैया खों बुला रई है। अब तो माला के मनका छटकवो सोउ रूक गओ। जप, भजन को नाटक पूरी तरह से थम गओ। मन किसोरी-कन्हैया को संबाद सुनन लगो। किसोरी कन्हैया से कह रई है– ''हमने कई के तुम इनन खों कछु दे दो। आज भगवान जू के जनम को दिन है।'' कन्हैया ने जबाब दओ– ''देखो तो जे पूरे तने ठोंडे है। राम की दया से खूब चारों है और तउ पे तुमने कूंड़ा भरकें इने लालच धर दओ है। फिरउं तुमाओ मन नई मानत तो तुमई देदो कछु। हम ठांडे है। अब जे झमरया नई सकत जा हम जानत है।'' किसोरी ने ठिठोली करी और बोली– ''अब जे लीली धौरा कैसे झमरया सकत जब मोरी बगल में इनके बीरन ठांडे है।'' और दांतन में धोती दाब के किसोरी हंसन लगी। कनई ने जोर ठहका लगाओ और बोलो– ''बाह बाह मो कन्हैया खों बैला बना रई है ? सबरी पढाई और अकल जई में लगा दई है। सांची है तो फिर सुनलो सांची। ऐ किसोरी, आज है कन्हैया आंठे, मोरो मन आ गओ तो अबेई जय कन्हैया लाल की बोल देहों। तोये उठोके दुआरे लौं नचैं। जय कन्हैयालाल की हाथी घोडा पालकी।'' किसोरी ने कन्हैया खों धीरे से ठूंसा मारो ''धीरे बोलो धीरे तनक सरम करो। जई बाखर में बे भागबत बारे मराज भजन कर रये है। ''

कनई सांत और चुप हो गओ। हमें लगो जैसे बेला के फूल गमक रये होंय। भागबत की सांची भक्ति ने कनई किसोरी के मन खों कितउं जरूर छू दओ है। गोविंद जू की सांचउं इनपे किरपा हो गई है। सो बिचार करो और खांसो। फिर उंची आवाज दई ''कनई ! हम मंदर जा रये है। उते हमें देर लगे। जनम तो बारह बजे हुये, सो तुम दुआरे बंद कर लियो। पुजारी उपाध्याय जू मराज हमाये मीत है। रात कें हम उतेई मंदर में रकें।'' ''नईं मराज। तनक रूक जाओ। दूध उट रओ है। सो अपन दूध पी कें फिर मंदर पधारो। आपकी बहू नें परसाद को सब इंतजाम करो है। सो मोरी बिनती है पे मर्जी अपन की। जनम की बैंरा तो हमउ आंएं। आपके लाने हम दुआरो बंद करकें का जेहें। आपखों

दुआरो हम कभउं बंद नई कर सकत। हम अपन खों लुबावे खों उतई आहें।'' मन अनुभव कर रओ है के मंदर की धूप धर में महक रई है और जगमोहन में बैठे हैं।

गवैया दरसनार्थी और पुजारी सबई जैसे दूसरे लोक में हैं, पुजारी उपाध्याय जू मराज आदी धोती पेरें है और आधी धोती कंधा पे डारे है। बे मंदर की चैखट में बैठे है आधी आंखे खुली है आधी बंद है। जो आनंद की भाव दशा टूटे ना सो हम उतेई बाहरे ठिठक गये। गीत पूरो हो गओ। गवैया बाला प्रसाद ने आवाज दई ''आओ आओ गुरूजी इते पधारो'' हमने उकों अपनी छाती से लगा लओ और कही ''बेटा तेने तो हमें अपने सुरन से जई लोक में उ लोक के दरसन करा दये है। गोविंद जू तूमे खूब आनंद में राखें जो हमाई असीस है।'' उपाध्याय जू ने आंखे खोली। ''प्रसन्न हो के चहक उठे'' आओ, पंडित आओ। हमें पतो हतो तुम आहो हम तुमे काये बुलाये ? उनको जनम दिन है तुम उनकी बिनती करत हो भागबत पढ़त हो उनकी कथा सुनाउत हो बेद पढ़त हो। सो बे बताओ तुमें कैसे छोड़ते ? तुम बताओ ? उनने तुमे बुलाओ सो तुम आगये। अब आ गये तो भीतर आओ भगवान जू खों नीरे से निहारो। पैले देख लो फिर सुनो जी भर कें।

जे उपाध्याय जू मराज साधारण जन नईया। देखवे में बाहर से बे खैंरे महुआ से नीचट है पै भीतर इनके इमरत भरो है। जे ऐसे कोमल है के जुही की कली कछु नईया। ज्ञान के सागर है गुनन के आगर है। हां एक बात जरूर क्रोधी जे भौत है। इने तो बस सुनो, सुनो और गुनो। इनकी आज्ञा पालवे में इनकी प्रसन्नता है सो हमने इनकी आज्ञा पालन करी। चरणामृत लओ प्रणाम करी और बगल के कोने में आसन डार के बैठ गये संगीत फिर शुरू भओ-

''दादुर बोलें पपीहा बोले, मधुबन कूंके मोर।
श्याम श्याम कें टेरियो, चित है तुमरी ओर
खबर नई लई मोरी......................।''

जा बात समझ में नई आरई के भीतर भीतर जो का हो रओ है? को जो भोरे भारे कनई और किसोरी के उटे दूध के प्रसाद को प्रसाद है? को जो उपाध्याय जू के दये आसन को असर है? को जो गवैया बालाप्रसाद के कंठ से निकरे मीठे सुरन को असर है? कछु न कछु तो जरूर है काये से जो मन पहले तो केंई बेंरा उडो है। ऐसो नसा, ऐसी मस्ती, ऐसी बेहोसी सी तो पहली बेरां आई है। जो बेहोसी के संगे होस है और होस के संगे बेहोसी है। इमें सब रंग है। रंगन में मिठास है, रंगन में धुन है और धुन में रंग है। बे रंगन की धुने मीठी है खट्टी है पे भौतई नौनी है। उनमें नौनी महक है। जो अनुभव जो अबे हो रओ है बो अंजानों है पे जाने काय जानो सो लगत है। हम तो एहसान मंद है सबके कनई के किसोरी के बालाराम के और पुजारी उपाध्याय जू के इनई की कृपा है जो सब अलग अलग सुर एक तान में हमें दिखा रये है।

कनई और किसोरी, किशन कन्हैया और उनकी राधा किसोरी जू, दोउ मिलके एक दिखा रये है। बे एक है तो फिर जे अलग अलग का है? एक है हाड मास के मानुस और दूजे है बे जो भगवान जू कहाउत है। बे राजा है बे रानी है और जे बिचारे लट्ठ बारे अहीर और दूध मठा वाले ग्वाले है। दोउ एक कैसे हो सकत। पे हम का करें हमें तो कनई और कन्हैया जू , किसोरी और राधा जू दोई एक दिखा रये। धीरे धीरे बंशी की धुन सोउ सुना पर रई है। ऊ धुन में दादुर मोर पपीहा के सुर मिलके भागवत कैसे गुरीले सुर कानन में घुर रये है। पुरवैया पवन के झक झोरा रे रे के आरये है। ऊपर से रस की बूंदे टपक रई है। अनदेखो देख रये है, अनसुनो सुन रये है। सोच रये है के किसन कन्हैया राधा जू में और कनई किसोरी में भौत फरक है। फिर वे हमें एक काय दिखा रये? मन नई मान रओ है पे आंखे सामने तो देख रई है।

भागवत में तो कही है के बे राधा किसन जू तो सबई के भीतर अंतस में बसत है। सो कनई के भीतर के कन्हैया जू और किसोरी के भीतर की किसोरी जू राधा रानी हमें
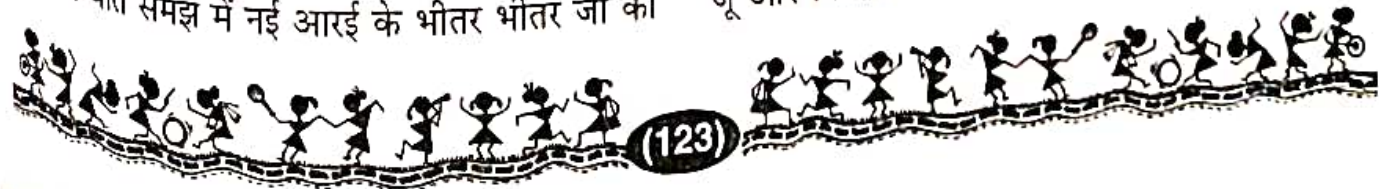
दिखा रये है का? कन्हई किसोरी में और इनमें फरक? जोई नाओ को फरक है, रूपा को फरक। नाओ और रूप हटा देओ तो दाउ एकई है। फिर कौनउ अंतर नईया पे रूप तो दिखा रओ हम का करें?........

और फिर जे सुर? जे सुर देवता है। जे सुर चांय दुनिया से निकरे चांय सितार ने निकरे, सुर तो सुर है। बे तो ईश्वर के रूप है। चांय बे बालाप्रसार से कंठ से अबे निकरे होवे और चांय हजारन साल पेलें हमाये पुरखन के रिसियन के कंठ से जज्ञ में प्रकटे होंय, है तो एकई। जब जे प्रेम से निकरत है तो इनको रंग एकई होत है। प्रेम को रंग एक है। प्रेम को रंग है श्याम रंग। जो श्याम रंग अदभुत है जा श्याम रंग मे जो डूबो वो उजरो हो जात है। ''ज्यों ज्यों डूबे श्याम रंग त्यों त्यों उज्वल होंय।'' सो जो मन श्याम रंग में डूब रओ है, उतरा रओ है, डूब रओ है, उतरा रओ है।

जे दादुर उतरा रये है डूब रये है आनंद मगन हो रये है पे इनकी प्यास एसी है जो बुझत नैया। इनके सुरन में प्यास है। दादुर के सुरन की प्यास तन की प्यास है, प्रानन की प्यास है मन की प्यास है पर सबसें उपर तन की प्यास है। जा प्यास हमाये पुरखन नें समझी ती। एक हते ध्यानी वड़े ग्यानी। राम जू के पुरखन के गुरू रये ते, राम जू के गुरू हते उनको नाओ वसिस्ट (वशिष्ठ) मुनी। देवता नों उनखों जानत ते और मानत ते उन वसिस्ट जू मराज ने जब इन दादुरन की बोली सुनी सुर समझे तो उनकी समझ में इनकी प्यास आई, सो वे मन मगन होके झूमन लगे। वे गाउन लगे–

''संवत्सरं शष्याना ब्राहम्णा : व्रतचारिण :।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अविदिपु :।
.... (ऋ 7/103/1-)

''अरे अरे! सालभर विसराम करकें जे धरती के ब्राहम्ण देवता जू जोन बानी से पानी देवे वारे मेघा आनंद मगन होत है वोई मीठी बानी बोल रए है..........

पानी की चाहत है प्यास इनको चलगी है......

सोम जज्ञ जे ब्राहम्ण देवता जू मंत्र बोले जा रए है...

उपर की आग्या मान कें जे ब्राहम्ण देवता भूम से बाहरे निकरे है...........

इनकी बानी हमें धन वन धरती देत रई है, देत रत है'' (ऋ 7/103/1-10)

केवे की बात जो है के दादुरन के बोलन को उनके सुर खों हजारन साल पेले से हमाये ग्यानी पुरखा जानत रए है सो जे सुर हमाये जाने समझे है जिन्हे हम सब जानत है और थोड़ो भौत समझत है, पूरो पूरो हम समझ नई पाये है के इन सबके सुर हमाये हित के सुर है हमाये हितु है जा बात पक्की है। वसिस्ट जू ने जानी ती के दादुरन के सुर इनकी तन की प्यास के सुर है इनके संगे संगे प्रानन की और मन की प्यास सोउ जुड़ी है। और जे पपीहा जो पीहू पीहू बीच बीच में बोल रए है। पीरे पर गये है इनकी प्यास? बाहरें तो कौनउ कमी है नैया चारउ तरफ पानी पानी है। खूब पानी है, पे जा प्यास पानी की प्यास नैया जा प्यास प्रानन की हूक है, प्रानन की पीरा है। पीहू पीहू की दर्दीली बानी जब कानन जात है तो बिचारी बिरहन के मन में अंतस में प्रानन की आग चेता देत है। ऊ आग की जा हूक है सो जा प्रानन की प्यास हैं। भीतर भीतर जो आग की हूंके उठ रई है बे पपीहा की बानी के सुर हैं जे हूकें जे लूकें जो पपीहा की बानी से निकरती है बे मानुसा को सदा भलोई भलो करती है जा बात जानी ती साउ जानी ती अपने पुरखन ने।

भौत पेलें एक रिसी भये है गित्समद (गृत्समद) बड़े जानकार हते जो उनने कई है के पपीहा (कपिंजल) पंछी ''भद्रवाची'' जो हमेशा भली बानी बोलत है उन मुनी सुर महाराज ने बात बुनी और सबके भले के लाने भगवान से बिनती करी ती के ''हे भगवान! ई पंछी को सदा सुखी राखियो ई पपीहा खों कौनउ छिकरा-बाज अपने झपेटा में ना लेवे। प्रभु ईखों निरदई सिकारी के बान से बचायें रईयो। मानुस के लाने जो पंछी सदा सरवदां ऐसेई हितकारी बानी
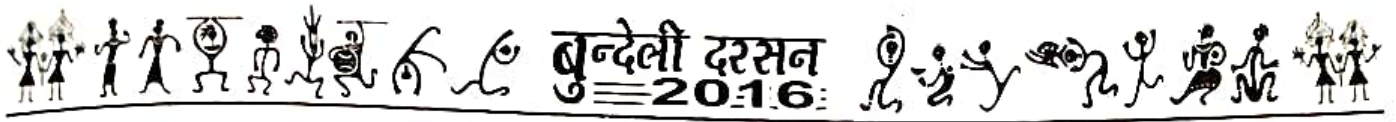
बोलत रये ऐसी कृपा करियो।'' ऐसो भलो पंछी है पपीहा।

और जा मोर के सुर जा मोर जो कुहक रई है जो कूके जा रई है वा जो सबके मन खों मधुवन बना रई है का केने जा मोर प्यारन के प्यारे की प्यारी है। जा बिन्द्रवन में नित्त कूकत रत है काय से कहत है के उते बिन्द्रावन में ईखों प्यारे घनश्याम को इमरत सुर नित्त गूजत रत है सो जा बा सुर को सुनकें नित्त नृत्य करत रत है ईके पंखा धरती में गिरत। ''और उड़ पंख गिरत धरनी पे बीनत नंदकिशोर'' सो जीके पंखा प्यारे कन्हैया के माथे पे मुकट बनकें बिराजें उके भाग की बराबरी को कर सकत। बेद में ई पंछी को नाओ मयूर (मोर) कहो है। मयूर सबद को मतलब होत है संगीत को जानकार बानी और बानी को पैदा करवे वारी अगिन सो मोर है संगीत को जानकार और ईके मन में बसत है अगिन सो जो कहो जात है वरून देवता को पंछी जा बात कहत हेगें बेद और परान कहत है के बानी की देवी सरसुती जू को वाहन है कन्हैया जू को प्यारो है सो जगजानी है बेद बखानी है के मोर की बानी में संगीत है बानी में अगिन है और मन की हूक है। नारद जू ने जा बात समझी ती सो उनने जब साम वेद पढ़ावें खों लरकन के लाने शिक्षा लिखी तो उमें उनने बताओ के सुर समझो दादुर को सुर है गांधार (ग) जो पितरन को प्यारो है जा में तन की प्यास है काय से तमोगुनी है। पपीहा को सुर मध्यम (म) है ईमें प्रानन की आग है सो देवतन के गवैयन को गंधर्वन खों प्यारो है जा में प्रानन की हूक है और मोर को सुर सडज (सा) है। जो सुर देवतन को प्रिय है जो सुर सतोगुनी है। जो मन की आग है मन की प्यास है। जो सुर सब सुरन की जरमूर है सो मोर की बानी सरसुती देवी की बानी है देवतन को सुर है। मोर जब कूकत है तो मन खों मधुवन बना देत है।

मधुवन में जब कन्हैया जू और किसोरी जू पधारती है तो फिर मधुवन मधुवन नई रहत है मधुवन बिन्द्रावन हो जात है। बिन्द्रवन में एकई प्यारे है प्रीतम और एकई प्यारी है प्रीतमा। दूजो पुरूष उते कोउ होत नईया उते होत है किसन कन्हैया जू और प्यारी राधा रानी जू और वे झूला झूलत है। झूला नेचे आउत है और उपर जात है। नीचे आके फिर उठत है उपर से नीचे उतरत है झूला चल रओ है। कन्हैया जू और किसोरी जू को जुगल स्वरूप झूल रओ है। झूला चल रओ झूला बाहर है झूला भीतर है। भीतर सांसन को झूला है। अनुभव हो रओ है के कन-कन में झूला है मन-मन में झूला है। तन में झूला प्रानन में झूला है और झूला मन में है। झूलवे वारो एक है झुलावे वारो एक है जो एक एकई है जो किसोरी जू और कन्हैया जू को जुगल सवरूप है निकुज लीला चल रई है हम देख रये है हम सुन रये है।

हम सुन रये है के कोउ के रओ है- ''सुनो सुना! श्री राधा की स्थिति का नाम श्री कृष्ण है। श्री कृष्ण स्थिति रूप है और गतिरूप है श्री राधा। स्थिति से गति और गति से पुन : स्थिति में आना ही प्रेम की भाषा में निकुंज लीला है। यही वेद की भाषा में रोचना है। श्री कृष्ण बिन्दु है। बिन्दु सोभित होता है। सोभित बिन्दु का गतिभाव विसर्ग है। बिन्दु का प्रसारण होता है ''विसर्ग'' बनता है। यही श्री राधा है। श्री कृष्ण का आत्मप्रसारण है श्री राधा। विसर्ग का संकोचन होता है तो बिन्दु हो जाता है अर्थात श्री राधा का आत्मसंकोचन है श्री कृष्ण। बिन्दु मात्र स्थिति है और विसर्ग केवल गति है। बिन्दु से विसर्ग और विसर्ग से बिन्दु होना डोलन है यही झूला है।'' जा बानी सुन रये है। जा बानी जा जुग के अबे अबे भये सिद्ध गोपीनाथ कविराज की है। उनके किसन जू के चिंतन को परसाद है बा वानी हम सुन रये गुन रये है और आंधरे सूरदास जू अपने तानपुरा पे गा रये है।

''सदा एक रस एक अंखडित आदि अनादि अनूप।
कोटि कलप बीतत नहि जानत, बिहरत जुगल-सरूप।''

राधा जू और किसन कन्हैया जे दो नईया वे एक है जो छिन भर में राधा है वेई दूसरे छिन में कन्हैया जू है। जो

अबे कन्हैया है बेई अबे राधा जू है जोई तो झूला है जीमें वे झूलत है और वे झुलाती है। राधा रानी झूलती है और कन्हैया जू झुलाउत है उनमें भेद नईया। कै नई सकत के को झूल रओ और को झुला रओ एक बात सांची है जा कै सकत के जुगल सरूप झूल रओ ओर वोई जुगल सुरूप झुला रओ। जोई है निकुंज लीला। इखों जे आंखे देख रई है पे इनकी पहचान? पहचान तो जेई जाने हम का जाने चिनारी होवे तो कैसे जब वे दो होवे तो चिनारी है।

रस है कन्हैया किसन जू, किसोरी जू रसका है राधा रानी जू किसोरी जू और जा निकुंज लीला है रास। ईको ओर छोर किते है ? कैसो है कोउ नई जानत है थोड़ो भौत स्यात् जानत होवें तो वेई किसोर जू किसोरी जू जानत हुयें। हम कां लगत है नौन की डिगरियां चली समुंदर की थांय लेवे खों सो घुर गई बीचई में अब पतो नईया किते है वा कैसी है सो हमें तो सब पतो है पे हमें जो पतो नईया हम कां है, हम को है हम डूब रये है के उतरा रये है, हम हे के हम हेई नईया ?............

''उठो महाराज अपन को उठवो होवे।'' हम भड़भड़ा के उठ बैठे हाथ जोड़कें आसन पे ठाडें हो गये। सामने कन्हई और किसारी है कन्हैया हाथ जोरके कै रओ है ''महाराज चलवो होवे चैथो पारो हो रओ है। अपन की सपरवे की वेरा हो गई है। मोय पसर चरावन जाने है। आपकी जा बहू खों धैरी गैया लगावने है मठा-पानी करने है। आपके ईसे जे पुजारी उपाध्याय जू महाराज मंदिर खोले बैठे है सब जने तो दो घरी पैलेई चले चलाये गये है। अब अपन को चलवो होवे।'' हम डंडवत परनाम करी पतो नईया जा डंडवत परनाम हमने कौन खों करी है? दादुर पपीहा मोर एकई संगे बोल परे जैसे पूंछ रये होय ''ओ पंडित! बाताओ जा परनाम कौन खों है? पुजारी खों है? मंदिर के भीतर बैठी राधा किसन जू की मूरत को है? जा परना का जा कन्हैया और किसोरी जो ठांडे है उनके लाने है? महाराज के परनाम काउखों नईया जा परनाम सबमें बिराजे कन्हैया किसोरी जू खों है बोलो कछु तो बोलो''

हम का कहें कहे तो वो जो कछु जानत होवे हम तो कन्हैया के सहारे चल दये है एक पांव धरती पे है दूसरो उपरे है फिर दूसरो धरती पे और पेलो उपर। तन में अबेउ झूला चल रओ है और मन में ओरछा की वृषभान कुंवर जू को सुर गूंज रओ है उते झूला चल रओ है। उनके सैंया झुला रये है-

''झौंकन झुलावे देखों सैयाँ.................
झौंक बढ़ावत प्रिया जिया डरपत
प्यारो करे लरकँइयाँ।
प्रिय ! प्रिय !! बरजो नईं मानत
विनय करों परौं पईयां
झौंकन झुलावे देखा सैयाँ ''

बुन्देली फाग साहित्य में शिव विवाह महाशिवरात्रि

– हरिविष्णु अवस्थी

विश्व में जितने भी धर्म प्रचलित है, सभी धर्मों में व्रत उपवास को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। व्रत उपवास से मनुष्य की अंतरात्मा की शुद्धि होती है। इससे ज्ञान, बुद्धि मेघा, भक्ति तथा पवित्रता की बुद्धि होती है। सामान्य जन भी उपवास के महत्व को जानता समझता है, कि व्रत से मानव शरीर में उत्पन्न होने वाले अनेक रोगों का शमन हो जाता है।

महाशिव रात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण की चतुर्दशी को समपन्न होता है इस समय ऋतु राज बसंत की आभा अपने चरम पर होती है। चार ऋतुओं में सुप्रसिद्ध तथा प्रकृति और पुरुष को तरो ताजा कर देनी वाली बसंत ऋतु के प्रभाव से सब कुछ नया प्रतीत होने लगता है। यह परिवर्तन पुराने वर्ष सम्वत् के समापन और नववर्ष के शुभागमन के पूर्व आता है।

चतुर्दशी तिथि के स्वामी भगवान शिव है या कह सकते है कि शिव जी की तिथि चतुर्दशी है। अत: चतुर्दशी को किये जाने वाले व्रत का नाम ही शिवरात्रि हो गया। प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का व्रत सम्पन्न होता है।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को निशीथ (अर्द्धरात्रि) में–

'शिलिङ्गनयोभ्यूत: कोटिसूर्यसमप्रभ: के अनुसार ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव हुआ था इस कारण इसे महाशिवरात्रि मानी जाती है। इस व्रत को सभी वर्ण, बाल, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग करते है। महाशिवरात्रि को देवाधि देव भगवान शंकर जी का पूजन, जागरण और उपवास करने से जरा-मरण से मुक्ति मिल जाती है और मनुष्य का पुर्नजन्म नहीं होता है।

शिवरात्रि का पर्व शिव विवाह के रुप में प्रतिवर्ष सम्पन्न होता है। भगवान शिव जी के अभिषेक, पूजन के साथ उन्हें दूल्हे के रुप में सजाया जाता है। बारात निकलती है और वैवाहिक क्रिया कलाप सम्पन्न होते है। हमारे बुन्देली लोक साहित्य में विशेष रुप से फाल्गुन में गाये जाने वाले लोकगीत 'फाग' में शिव जी की आराधना, शिव, पार्वती विवाह के प्रसंगों का भाव पूर्ण चित्रण प्राप्त होता है।

बुन्देली के समर्थ लोक कवि 'ईसुरी 'भगवान शिव के स्वरुप का वर्णन करते हुए कहते है–

आसन बाघम्बर पै मारै, गंगजटा सिरधारैं।
साँप, ततईया सोरई उनखौ, मुण्डमाल विस्तारैं।
माथै जिनके तिलक चंद्रमा, मलयागिर खाँ धारै।
'ईसुर' अपने वॉय अंग पै, पारवती बैठारैं।

एक फागकार के अनुसार महादेव जैसा बरदानी दूसरा कोई नहीं है। –

कोऊ ऐसो न जग में होय, महादेव वरदानी।
चंदन, चॉउर, बेल की पाती, अज्मा धतूरे के फूल चढ़ावे जलपानी।
इंतगंगा बहें, उत बह जमुना, गुप्त सरसुती प्रागराज में तिरवेनी।
भागीरथ गंगा तै आये, तरन लगो संसार, जटन में उरझानी।

'ईसुरी' का विश्वास है कि जो भगवान शंकर पर भरोसा करता है इसके सब संकट टल जाते है। कहते है–

मन में करत काय कौ सोचन, चल बताब तिरलोचन।
कोदानी डमरुबारे सें दिवें अलोचन खोचन।
पारबती के पत सुखरासी, वे दुखकरत विमोचन।
विनै करत अपने मालक सें, इसको कौन सकोचन।
रमन राव सागर के ऊपर, 'इर्सर' संकट मोचन।

श्री सूरश्याम ने एक छंदयाऊ फाग में भगवान शिव

के विवाह का सुंदर वर्णन किया है। फाग दृष्टव्य है-

दोहा - बाहन साजे विविधवर, सुरन अनेकन भाँत।
संकर बनरा बन गये, लागी चलन बरात।

टेक -सुरन सुमन बरसाये, आज बन वानरा आयें। लाल।।

दोहा -भसम लगायें अंग में, गल मुण्डन की माल।
भूषण व्यालन के किये, चंद्र विराजत भाल।।

शेर- सोहब है भाल निसपत, है सोभाभारी।
कर बिच्छू के कंकन, दिये अम्बरधारी।।

टेक- ब्रम्हा, विष्णु आदि दै सुर सब है, करत न बनत बखान।।

दोहा - आये शिव के सकल गन कर-कर अपनी सान।
भूत पिसाच अनेक है, करत न बनत बखान।।

शेर- कर रहे बरवान, करत गान, मग के मांही।
मुख हीन, विपलमुख, कौऊ के कर पद नाही।।

टेक- पहुँचे जाय हिमचलपुर में नर-नारिन सुख पाये। लाल

दोहा - विष्णु आदि सुर निरख कैं, मन में आये निहाल।
शिव समाज को देख कें, भाग चले सब बाल।।

शेर- गए बाल सकल धर-धर, कही तात मात को।
ना जैबी हम देखन, ऐसी बारात को।

टेक - निडर होउ तनकउ डर नाहीं मात पितन समझाये। लाल

दोहा - समझाये पित मात ने सुख सें देखन जाव।
हर गिरजा के दरस लै, सकल पदारथ पाव।।

शेर- मिलजाय सकल संपत, लेख संत मान को।
कह 'सूरश्याम' कृपा करो दास जानकें।
सुरन सुमन बरसायें, संकर आज बना बन आये लाल।
ब्रम्हा, विष्णु आदि दै सुर सब है गजरथ चढ़आये।। लाल

पहुँचे जाय हिमचलपुर में, नर-नारिन सुख पाये। लाल

निडर होउ तनकउ डर नाही मात पितन समझायें। लाल

भगवान शिवजी की बारात जब नगर के निकट पहुँच गई तो नगर निवासी बारात को देखरेख राजा हिमांचल से कहते है-

दोहा- नगर निकट जब पहुँच गई, शिव की आन बरात।
पुरवासी वर देखकर, बोले नृप से बात।

टेक -ऐसे पारवती के सैया तीन लोक मे नईयाँ।

छंद - राजन सुनो हमारी बानी, जाने तुम खां कहा दिखानी,
हमनें पैलउ से न जानी, सुनिये स्वामी
जो हम पैलउ सें सुन लेते, शादी हरगिज होन न देते,
राजा तुम आगे नई चेते, भई बदनामी।

अपनो खुद को नाम निकारे, पारबती को जनम बिगारो।

एसौ की कौ मंत्र बिचारो,

वृद्धापन में, बिना विचारै की नो काम जग में भओ बदनाम,

भूपत हंस है लोग तमाम, सांचो मन में

शेर- ऐसे है संग साथ गिरजा के नाथ,
के कोउ बिना पांव डोले
कोउ बिना हाथ के, ऐसे बराती दूला साथ के

उड़ान- पृथ्वी और आकाश, रसातल तीन लोक मइँया ऐसे पति हैं।

पारबती के हमने देखे नईयाँ।

दोहा - काहू के मुख चार हैं, काहू के मुख तीन।
कोऊ है बिन नाम के, कोऊ आखँन हीन।

टेक- भूतप्रेत, बेताल हजारन धरे चैड़ कर छइँया।

छंद- दूला रहे नशा में चंग, निशदिन खाय धतूरो भंग,
इनके कारे पर गय अंग, सुनो नृप राई
घर में और दूसरो कौन, उनखौ देह सिखबन तौन,
बैठे रहत रात-दिन मौन, अति सुख दाई
उनके बहिन न दूजो भइया, इनके भैस न बूढ़ी गैया,
कैसें रै है गौरा मइया।

इनके घर में छीक न बाजी, घर में भुंजी भांग न

भाजी

इनपे बिलकुन श्री न विराजी, हम कत सरमें

शेर- इनके द्वार न बनी हवेली, गिरजा संग जै कौन सहेली

बारै उमा सखियन संग खेली, बन में कैसें रहे अकेली।

उड़ान पर्वत पर, अब रहने पड़ है, वट वृक्षन छईंयाँ।

भूत प्रेत बेताल हजारन धरै चैड़ कोउ छईंयाँ।

दोहा - जटा-जूट सिर पर लसे, चंदा सोहत भाल।

भस्म रमायें अंग में, गल मुंड न की माल।

टेक - हमे कतन में लाज लगत है, जादां हम कत नइँया।

छंद- मरजी होय तुम्हारी भूप, तो हम बरनै इनको रुप,

जैसे सुंदर बने सरुप, टूला आये

सुनलौ अब उनको सिगार सिर पै बैरइजल की धार,

डूड़ा बैल पै असवार, वे हो आये

तन पर शाला नही दुशाला, बैठे ओंढ़े कम्बल काला,

बगलन दबी एक मृगछाला

ऐसे रसिया इत उस लटके, सर्प हजारन बिच्छू लटके

वारन-वारन भैस धरैं धीर न गिरजा के पिया

शेर- हे महाराज तुमने सोची न कछू विचारी

जुगियन के घरै व्याही गिर राजकुमारी

विश्राम भवन न इनके अटा अटारी

सूरत सकल सै देखत में जंचत भिरवारी।

उड़ान-कर कानन में देख लो लिपड़े सर्प ततैया।

हमें कतन में लाज लगत है जादा हम कत नइँया।

दोहा- पुरवासिन के सुन बचन हँस बोले नृप वैन।

जय त्रिलोकी नाथ हैं, त्रिपुरारी त्रय नैन।।

टेक- अपने जन की माजधार सै पकर लेत है बइया।

छंद- है दीनन के दीनदयाल, उनसै थर-थर कांपे काल

शोभा देत चंद्रमा माल, सिर पर गंगा है निरमाल।

देखो गंगा जू की लहरैं, सुंदर जटाजूट में छहरै,

बैठे ब्याल कौंचिया पहरैं, ओठ झगा।

मेंटत लिखे मास के अंक, छिन में करत राव सै रंक

कर दये रंकन खौ निरसंक, ओगढ़दानी

सोहत कर कमलन तिरसूल, डमरु है मगन की मूल

गांजो, मांग धतूरो पूल, है मनमानी।

शेर- भओं सिंधु मंथन जब हीं कई रतन दिखाने।

सब यथा योग्य लूटे निज मन माने।।

एक समय हलाहल को धर उगलौ बाने।

तब तीन लोक कंपे, सब देख डराने।

उड़ान - सुर, नर मुनि घबड़ा गय हैं विधि है कहां करइँयाँ।

शिवशंकर दूजोजग में कोउ जोधा नइँया।

हिमाचल ने जब रानी को इस प्रकार समझाया जब रानी को संतोष हुआ और विधिवत शिव पार्वती जी का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ।

टीकमगढ़ म.प्र.
सम्पर्क 09407873003

(बुन्देली ललित निबंध)

"स की सरसता"

– अजीत श्रीवास्तव एडवोकेट

"सॉसी कयें, मौसी कौ काजर" सबई के संगी सत्यनारायण भगवान सबरे समाज सें, सम्पूरण सृष्टि सें, सॉसऊ रिसासे गए, शरद सरका दई, शिशिर सरक गई, सबरौ समाज सकपकानौ सौ सोसन में सन्नाऔ सौ रै गऔ, सच्चदानंद, सरकार, तुम कार्य खौं रिसा गये, मौसमन सें काय आ सटका-मिचैली सी सूट रय, सबरन नें, फसल में, मवेसिन ने मान्सन नें सपनन में तुमाओ कछू सटका विलोरी सें निकसान तौ करोई नईयां। सबके संगै तुमाऔ सभाव काय आ संगमार 'घांई हो रऔ, समझऊ में नई सुझा रई।

श्री किशन सें सुमन-पुष्प सजाकें सदा ही सब स्तुति करत, श्याम सखा सुनों : किसान के हदे में गड़ो शूल काड़ शांतई समारौ, सबरे सन्न से सकपकायें सें हैं, साहत शक्ति सें समाज खौं सम्हारौ, दशा बिगर जै, शिवशंकर जू सहाय करें, शंका कौ समाधान पने सुतन कौ करकें सांसऊ सुख सिद्ध करें, सुन्ना, संपदा सबई घरी रै जै, जादि समाज कौ सुमरन सुनकें पनी संपत्ति सें सलिल पानी न बरसाओ, सुख समरधी सबरौं पानूँ सें सरस आ होत, सकल धरती में सज्जा-साज, सलौनों औ शांति जलई सें आ सरसरात, विन वरसात सुख, सूख कें सूनों सों करकें सुखा देत, ई सें शीशन पै श्राप करौ, शरनन में समो कें शिव, सहाय औ सहायता औ संतोष सें संकल्प लें कें सदा खों सुख दै दों।

सबई की न सुनकें सबई सकोरत रय, तौ ई सृष्टि सागर में समा जै, काय सें कि सांवरे सबरी सज्जा जलई सें संवरत है, सजत है, सुहात हैं। ई सें सुनौ श्याम सुंदर। सिरी गनेश करकें पानूँ बरसा कें सबई की सुन के किसानन के औ सबरन के रोमन में सुरसरी उठावें सुहानौ समॉ संजा घांई कर दो। वर्षा को सुंदर संगीत साफ-साफ सुनकें सब जनन के शरीरन पै सुरीलौ संगीत बजा दो, भड्डरी की कानात सोई ध्यान करौ शुक्रवार की बदरिया, रई शनीचर छाय। ऐसी बोली भड्डरी, बिन बरसै न जाय। "सब सराबोर होकें खेलें, कूदे औ गॉये" सरस राम साहू की सरक पै सारो सांप सरकों, सारे खों सोंटा मारो, सो सारो सरक गऔ। ' सरक कौ सुन्दर सौ, समॉ बरसा दै ओ। सूके, सकुड़े सिके से सबई जनन कौ समाधान करकें सोसन खों, सन्नाटों खों सफा करके संवार दै ओ। जी सें सबई समान संस्कारन पै, साज पै, समस्यन पै फसलन पै, ईसुर पै सवाल न उठा सकें। सबरे सैंज, सरल सोसत रयँ। ईसें बरसात, बरसा कें शेहद सी सरसा दो। सृष्टि खों संवार दो।

सांसउ तबई सहसा दो। सृष्टि सहसा सें सर पै शबनमी सी सुख की बूंद परी, औ बरौंटी सपनौ सिरा गओ। ऐसो लगो स्वाती बूंद आ सीपी पै समा गई।

'राजीव सदन' नायक मुहल्ला
टीकमगढ़ -472001 म.प्र.
मो. 8827192845

मौरो बन्ना नजरयानो रे

– श्रीमति प्रीति दुबे

नजरलगना, नजरया जाना, नजरउतारना आदि शब्द में वर्षों से सुनती आरही हूँ। लेकिन इसका अर्थ बहुत बाद में, उस समय जाना, जब विवाह में सजी संवरी दुल्हन को देखकर किसी उम्र दराज महिला ने कहा कि इसको तनिक दिठोंना लगा दो नहीं तो दुल्हन को नजर लग जायेगी। प्रसव के बाद चौक के कार्यक्रम में जब एक सद्य प्रसूता अपने बच्चे को गोद में लेकर बैठी तो उसकी सास ने कहा कि बच्चे को दिठोंना नहीं लगाया गया इसे दिठौना लगा दो, नहीं तो किसी की नजर लग जायेगी। ऐसे अनेक प्रसंग आते रहे है जिसमें स्पष्ट होता है कि नजर लगना एक प्रकार की अनिष्ट दृष्टि है। नजर केवल मनुष्यों को ही नहीं लगती मकानों, मंदिरों पशुपक्षिओं तक को नजर लग जाती है। ये माना गया है कि किसी सुंदर वस्तु को देखकर, जब कोई हाय कहते हुए उसकेप्रति ईर्ष्यालु या उसके प्रति नकारात्मक ढ़ंग से देख लेता है। तब देखी गई वस्तु का अहित हो जाता है। अहित करने वाली दृष्टि पत्थर को भी फाड़ सकती है और दीवारों में दरार कर सकती है, मंदिर की मूर्ति को दरका सकती है, फिर जीवित प्राणियों के लिये तो वह अत्यंत अहितकारी बन सकती है।

नजर लगने के कुछ लक्षण भी बतायें जा सकते है अगर शिशु को नजर लगती है, तो वह दूध डालने लगता है जोर जोर से रोने लगता हैं, उसकी आँखे अंधमुर्दी हो जाती हैं कभी-कभी उसे बुखार भी आ जाता है अगर किसी सुंदर स्त्री को नजर लग जाये, तो उसका रंग उतरने लगता हैं और उसे बहुत अधिक थकान घेर लेती है। पेड़-पौधों को नजर लग जायें तो वे झुलस से जाते हैं। यद्यपि नजर लग जाने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। किन्तु लोकाचार में यह प्रचलित है। यदि तर्क सहित विचार किया जाये तो आँख से निकली हुई दृष्टि सूक्ष्म किरनें, किसी केन्द्र पर संगठित होकर मनोभाव के अनुकूल अपना प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। रसलीन ने एक दोहा लिखा है।

अमीय हसाहल मद भरे, खेतश्याम रतनार।
जियत मरत झुक-झुक परत जेहि चितवत एक बार।।

इस दोहे में दृष्टि के प्रभाव को ही अभिव्यक्त किया है। स्पष्ट है कि दृष्टि का प्रभाव दर्शक पर जरुर पड़ता है। कुदृष्टि अहित कारी होती है।

नजर को दूर करने के अनेक उपाय, लोक ने सिरजे हैं, जिनमें काजल का टीका और दिठौना लगाना सभी जगह प्रचलन में है। काला धागा कलाई में पहनना, कमर में कालाडोरा पहनना, गले और बाजू में काला धागा बाधना नजर निवारण के टोटके ही हैं। नजर दूर करने के लिए राई नोन को उतारने का भी प्रयोग किया आता हैं। आग में मिर्च डाल के भी नजर उतारी जाती है। दिये से भी नजर उतारने का प्रयोग किया जाता है। जलता हुआ दिया नजर याने व्यक्ति के सिर पर घुमाकें पानी भरे परात में रख दिया जाता हैं। उसके ऊपर मिट्टी का एक बर्तन ओंधा दिया जाता है। नजर लगने पर उस बर्तन में पूरापानी चला जाता है। और अब ये मानलिया जाता है कि अब नजर उतर गइ। मंत्रों का भी प्रयोग नजर उतारने के लिए किया जाता है। लोक में यह देखा गया है कि इन उपचारों से नजर उतर भी जाती है।

बुन्देलखण्ड में अनेक लोक गीतों नजर लगने का उल्लेख मिलता है, एक बन्ना है जिसमें कहा गया है-

'ऐसी गोला चाँदनी मौरो बनरा नजरयानो रे '।

इस लोकगीत में, बन्ना को नजर लगती है और बड़ी-बड़ी औरते बन्ना को नजर उतारती हैं। ऐसी ही बन्नी हो और शिशुओं को भी नजर लगती हैं

जिनका वर्णन बुन्देली लोक गीतों में प्राप्त होता है। बुन्देली मे नजर उतारने का एक मंत्र इस तरह प्रचलित है।

ठाट की बड़ेरी की, ऐरी की बैरी की
जिया की छेलिया की गैल की घाट की
राड़ो की रड़ुओ की
जे कोऊ जरै भुजै ऊ की आखँन में राई नोन
चनन को चून चिटर पिटर

इस तरह नजर लगना एक लोक की व्याधि है और लोक ने ही उसके अभिचार का निदान का खोज निकाला है।

प्राचार्य
बुन्देलखण्ड पब्लिक [illegible]

बुन्देली गद्य-उद्भव के लिये विख्यात और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वरिष्ठ कवि डॉ. कैलाश मड़बैया की कलम से पढ़िये एक अभिनव बुंदेली ललित निबंध . . .

- सम्पादक

भुँसारे की बेराँ

– कैलाश मड़बैया

भुकॉभुकें जग कें जीने ब्रम्हमुहूर्त में आसमान सें अमृत बरसवे कौ मजा नइँ लव बौ जानइँ नइँ सकत कै भुँसारे खों प्रकृति की अनौखी नैमत/नियामत काय कई जात। भुँसारें जगवौ मानें अमृतत्व पावौ, भुँसारें उठवौ माने रोग दोगन खों बिना दवाई के दूर भगावौ, भुँसारें घूमवौ मानें उमर बढ़ावौ, भुँसारें बायरें कड़वौ मानें आलस सें निजात पावौ, दिन भर तरोताजा रैवौ उर भुँसारें खिलखिलावौ मानें सरसुती, लक्ष्मी उर दुर्गा तीनउँ की आराधना करवौ मानें भगवान खों सबसें नीक समै पै पा लैवौ। का का कवें जित्तौ कवें उत्तई थोरौ है। पै भर दुपरै जगवे वारे राक्षसन खों तौ बस जेई कानात नौंनी लगत कै 'किस किस को याद कीजिये किस किस को रोइये, आराम बड़ी चीज है मुँह ढ़क के सोइये। ' हॉलॉ कै फिर दिन भर उनई के, पछतावे में कटत, हड़टूटन में बीतत पै फिर पछतायें होत कॉ जब चुगो चिरइयन खेत रात भर सोय सें अलसात भय जब मौं इंदआयें, हात मीड़त हरीरे बिरछन के बीचाँ गैल गडवातन में निकर कें तनक गेंवड़े होत भए हार/वन कोद बढ़त जाऔ तौ ऐसें लगत कै पावन पवन की हर्र फर्र मस्त बयारें अपनी गलबँया डारकें अपन खों चूम रई होंय। दोई तरफन लगे बिरछा पूँछत, बतयात से लगत कै काय भैया मिल गई फुरसत, आगये हरीरे आँचर के छाँयरे में, कैसौ लग रऔ है ...अब का कइये..., कैसें कइये, ...का का कइये...बादर कोद देखौ तौ धौरौ चन्दा ठंडाई सी बरसाउत डूजरौ, नौंनौ नीकौ लगत, चाँदी सी बगराउत । बदरौट के घूँघट सें झाँकत गोरी कैसे चंदा विदा होत भए अलसात मुस्कयात से कत जात-अब जा रए, टा टा फिर आमौं सामों करवी. दिन डूबें.., मिलवी रात के घनेरे में, नौंनें रइयौ दिन भरे के घामन में। जादाँ न उरजियौ संसार की आपा धापी में। जा गाँठ बाँदें रइयौं कै भाग सें जादाँ उर समै के पैलाँ कोउ खों कभउँ कछू नइँ मिलत। ई सें पुरषार्थ तौ करियौ, भाग के आसरें नइँ बैठे रइऔ पै जादाँ हाय तोबा में नइँ परियौ। तनक ई प्रकृति के आँचर कोद निहारौ जी सें बनें, जेई में रनै उर जेई में बिला जानें। जेई में निभनें, निभाउनें उर जेई में मिट जानें, सिमट जाने, समा जानें। जौ तौ अपन नें कभउँ भुँसारें हार कोद जाकें निहारउ हुइयै कै कैसें भुँसारें मउआ धौरे रसीले फूल बगरा कें चैक सौ अपनें नैंचे पूर लेत। नीम के झौरा बचवा घॉई फरफरात किलकत कूंदत निमौरी बगरा देत। आम के बौर ललौंय पतवन सें मौर से बनाउत लफलफा देत। करोंदी की बास तौ करेजौ जीत कें हल्कौ हल्कौ नशा सौ हियरै हिलोरई देत। चिरैंयन की चहकन, मंदिर की घण्टियन, शंख की लामी टेर वारी गूँजन-अनुगूँजन, जिनालयन की पूजन, मष्जिदन की अजान, चर्चन की प्रार्थना अलगई भाव हिये में भर देत। जिते बेला चमेली होत उतै तौ जैसें इतर की सिसिअई सी आ बगर जात। कउँ गुलाब गमकत, कउँ पलाश सुरखत कउँ हरीरौ हरकत जैसें भुंसारे हारन हारन में सरग उतार देत। बछवा रंभात किलकत कै गइयन खों चैंखत दिखात, हिरना वनन में कुलाँचें भरत, कभउँ कउँ भ्यॉयदे करिया चितकबरा सॉप तक लहरियाँ

मारत उड़त से दिखात। , ... हालाँकि अब तौ सब बदलत जारऔ। हराँ हराँ किरनन की फूटन उर हवा में घुरे प्रदूसन सें वातावरन दूसरउ होत जारऔ जौन दिन के बढ़तनई हवा की हरकत बढ़न लगत, हराँ हराँ पत्ता तवा से तपन लगत। सेंमर गड़वाँतन की माँगे भर देत। छेवले हार में अंगरा दहकन लगत। सूरज नारान के चढ़तन आगी तौ बरसन लगत पै बड़े बड़े बिरछा अपने छाँयरें सें ओरी कैसौ हरीरौ आँचर फैला देत। भुंसारें बउत नदियाँ मीठे मीठे गीत गाउतीं। चिरैंया चहचहाउँतीं। चकिया तौ अब बची नइँया नइँतर भुँसारें चकिया की ठूँरन की का कनें। टाँक पै मौड़ी मौड़ा पारें नौंनी दुलइयाँ पिसनारीं बनकें नौंने प्यारे गीत गाउत तीं...अहा हॉ..हॉ। पैल तौ ताल तलैंया भौत ते जौन वनन में नैनन से जल झलकाउत रत ते अबै भी जाँ जित्ते जौन बचे हैं ऐना से चमकत उर जीव जन्तुवन की प्यास बुजाउत। साँसी तौ जा है कै अब न तौ चरोखर बचे उर न हारन में पशु पाँखी दिखाउत, बची है बस आग आग उर आग जिनके बीचाँ जीपें, मोटरें उर मोटर साइकिलें भर धुंधआउत दिखात। हॉलॉ कै अबै सोउ जब कउँ कउँ कभउँ उठत भुँसराँ गाँवन में बैलन की घण्टियन की मीठी घनघनाट टन टन सुनाई दै जात सो पैल की खबरें हिलोरें लैन लगतीं। कैसे सुहाने भोर होत ते जब दिवाले की घण्टियन के आँगें हात अपने आप जुर जात ते। लगत तौ कउँ सें ऐरौ आ आ रऔ होए - 'वीरन होगवौ भोर दूद सी डूबन लगीं तरइयाँ। ' दूसरी तरफॉ सें गुरीरी गारीं गाउत कतक्याई चली आ रईं-' भई ना बिरज की मोर......सखी री...। ' कउँ नदियन के अस्नान खों जात मैया के लमटेरा गीत सुनाउत परत-'नरमदा मैया ऐंसें तौ मिलीं हो जैसें मिल गए मताई औ बाप हो। नरबदा हो...। ' मुहल्ला मुहल्ला बिटियाँ चैंतरन पै गौर थापतीं, नौरता गाउतीं, मामुलिया खेलतीं, चैक पूरतीं-मामुलिया के आए लिवउआ झमक चलीं मोरीं मामुलिया..। घर....घर गोसलीं होकें अपनी अपनी गैयाँ भैंसें रावन में हाँकन लै जारए, गुबनारीं गोबर कर रईं। कुअन पै पानी खों बउयें-बिटियाँ खेपे लै लै कें निकर आईं। नन्नें नन्नें मौड़ा मौड़ी रंग विरंगे उन्नन में सजे संवरे गुलदस्तन के फूलन घाँई बस्ता लयें पनें पनें इस्कूलन खों निकर परे। बरेदी रावन लयें, पुजारी पूजन कौ सामान लँय, सब्जी-भाजी बारे हरयारी सजायें, व्यापारी किरानौं जमायें..., सब कोउ अपने अपनें काम धन्धें खों भुँसरा सें निकर आये। सूरज मराझ तला के पानी पै किरनें फैलायें झिलमिलान लगे जैसें पानी पै सौनें की परत चढ़ा दई होए। मेंडन पै कै, जगाँ तगाँ जमीं काँदी पै ओस की बूँदन में सूरज की किरनें मोतियन घाँई चिलग रईं। मन्दरन के पीरे कलसन पै सूरज के रंग औरई बन्नें सोने से चिलग उठे। बूँदन में इन्द्रधनुष बनन लगे आहा कैसे जीवन्त हो उठे भुंसारे।

सब अपनी अपनी तराँ सें भुँसारे भोग रये। रोगियन खों लगत कै रात कट गई सो अब जिंदगी आ मिल गई। किसान खों लगत अब तौ बतर आई गव हुइयै। मजूर खों लगत आज की मजूरी से बिटिया की फीस भरी जै। फूल खिलन लगे सो सब जाँगा आसा पै फिर आसमान टँगन लगे। मान्सन में ई अकेले नइँ पसु-पाखी, जानवर -जनाउरन, चिरई-चिनगुअन, कीरा-मकोरन तक में भुँसारें आसा जगा देत, उमंग भर देत, उजास समा देत, नई नई उमीदन की कलियाँ खिल खिला देत। ..हाँ, उन सहरन के बबुअन की बात हम नइँ कै सकत जौन अद अदरातन क्लबन में अदनंगे नचत, दारु ढ़गोसत उर उल्टे-सीदे कामन में उरजे रत सो रात कें दो बजें सोउत उर भुँसरा नइँ दुपरें नौं दस बजें उठ पाउत। ना सूरज उँगत देखत उर ना डूबत देखत उनकी बात अलग है। काय कै राक्षसन की बातें न्यरिअईं होतीं। उनके भुँसारे भर दुपरै होत। सो उनकी का है कये सें। पै जाँ तक सहरन के भुँसारें हैं सो वे नलन पै पानी के बासन लयें लैनें लगाउत, हॉकरन की अखबारन की हाँकें लगाउत कै घर घर फेंकत, स्कूटरन-ओटों की पौं पौं में बीतत। कछु दूद

के डिब्बन पै लैनें लगाउत उर बूढे अपनें नाती नतन खों स्कूलन की बसन में चढाउत दिखात। रिटायर आदमी सडकन पै पैदल घूमत पेड़न के नैचे कै मुहल्ला के बगीचन में हात पॉव फैलाउत अपने जमाने के गुन गाउत उर नई पैरी खों कोसत, सरकार खों गरयाउत मिलई जात। ऐसें लगत सबरी आक्सीजन जेई पी जें। हालाँ कै अब तौ बुजुरगन के कानीभौत सोउ खुल गये जिनें वृद्धाश्रम कहत सो उतै बूड़े 'दसरथ' खों छेंक आये उर अब के राम-लछमन के काम खतम। जे आँय आज के सिरमन कुमार। अब तौ महलन में रैवे वारे नई बचे काय कै एक लरका-बिटिया पजावें कौ जुग आ गऔ सो लरका विदेस चलो गऔ, बिटिआ सासरें उर डुकरा डुकरिया बचे तिखण्डा में रैवे, जौन पेन्सन पै टिके नौकर के आसरें जियत, जौन कभउँ कभउँ खुदई वूंडन कौ काम तमाम करकें भग देत उर पुलिस, दो चार दिनन बाद खबर लगे पै, सड़ी लासें निकार के पंचनामा वनाकें वार वूर देत। विदेसन सें जब लरका बउ लौटत तब उनें कछु हाड़, कै उन्ना चींथरा पकरा दये जात सो ऐंसें जिदगीं निकरन लगीं अब। का का कयें....। हॉ जौलो जियत सो मँगाई उर भ्रष्टाचार खौ कोसवे कौ फैसनई चल परो। भलई आमदनी बढ़ गई होंय, खुदई भ्रष्टाचार में बोरे रयें होंय पै कोसवें में कुन पइसा आ लगत? ना भुँसारे देखत ना डिन्डूबे। पै कछू भी कव भुन्सरॉ तौ पोपले मौंअन पै भी चमक ल्याई देत।

सो भुंसारे तौ भुंसारेई आँय। कछू न कछू देंई कें जात। नई सोच, नये विचार, नई चेतावनी कै नई उँगावनी, नई ऊर्जा, नवल सर्जना। भुँसारे अगर बछवन खों गैयन कौ मीठौ दूद पियाउत, कलियन खों मुसक्याबौ तौ फूलन खों रस बरसाऔ सोउ देत। भौंरन खों गूँज तौ चिरइयन खों उड़ान। धरती खों हरवारे की जुतान तौ कुअन खों पानी की नई झिरान। चुनगुनन खों चुन तौ मजूरन खों उद्यम। आसा खों आसमान तौ धरा खों नाज अकुरावे की पजान। सूरज खों काम तौ चंदा खों विसराम। सब खों भुँसारे की राम राम, डंडौत, जुहार, जै जिनेन्द्र, परनाम उर सलाम। भगवान सबके डिन्डूबें आराम देय उर भुँसारें नये नये काम देय। 000

- कैलाश मड़वैया
राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा. बुन्देलखण्ड साहित्य
एवं संस्कृति परिषद, 75 चित्रगुप्त नगर,
कोटरा, भोपाल-3 मो 9826015643
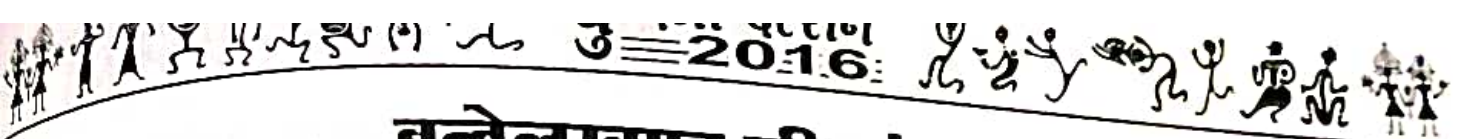
बुन्देलखण्ड की संस्कृति

– अभिनंदन गोइल

कौनऊ देस और जात की, संस्कृति की बातें करवे-सुनवे के पैलें जा बात समझो चइये कै संस्कृति कहाउत का है। बड़े-बड़े पंडतन ने ई बात खौं समझाओ है। महापंडत राहुल सांकृत्यापन ने कइ है कै जैसें कोरे मटका में घी-तेल भरकें कछू दिना धरो रन दो, फिर उये दूसरे वासन में कुड़ेर दो तौ ऊ मटका में, ओई घी तेल की कछू न कछू चिकनई रई जात। ऐसई संस्कृति आए। एक पैरी आउत है तो वा पनें खैवे- खैवे कौ, कमावे-धमावे कौ, घर-मकान बनावे कौ, नाचवे गावे कौ, लिखवे-पढ़वे कौ, जात-विरादरी कौ, धरम-करम कौ असर ऊ मटका की चिकनई जैसो छोड़ जात। सो जा चिकनई केऊ पैरीं गुजरत-गुजरत, तनक रै जात और ऊ में हर पैरी अपने चाल-चलन की नई तरा की चिकनई मिलाउत जात। अबै तक के ऐई घालमेल खों अपन संस्कृति जान लेओ।

बुन्देलखण्ड तौ भारत के हिरदे में बसत है। प्रकृति ने इसे भौतई नीकौ गढ़ो है। ई धरती खों साधु-संत, वीर-जोधा, कवि कलाकार, चित्रकार ओर मूरतें गड़वे वारन ने ऐसो कर दओ कै इये संसार में जो कोऊ समज पाउत ऊको माथौ नव जात। अबै जौ बुन्देलखण्ड के नाव सें मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश में फैलो है। इसे कभऊँ विन्ध्यखण्ड, कभऊँ दशार्ण, जैजाक भुक्ति, जुहौती तों कभऊँ जुझोती नाव से जानो गओ। जैसें-जैसें पने भारत देस के इतिहास ने करौंटा लओ, ऊसई देस को जौ हींसा सोऊ कुल्टइयाँ खात रओ, और इये वैदिक ऋषियन सें लैंकें जैन, बौद्ध, हूण, कुषाण, मौय गुप्त, वाकाटक, कलचुरी, चन्देल, यवन, पिण्डारी, मराठे, बुन्देले जैसन ने सजाओ-समारो, रैवो-खैवौ औश्र चाल-चलन सिकाओ। इते के किले, दिवाले, ताल-बावरीं, शिलालेख ई धरतीं कौ जस आज लौं गाउत हैं।

बुन्देलखण्ड में बड़े-बड़े किले माथौ ऊँचों करें ठांड़े। चंदेल राजन के बनवाय खजराहो के दिवाले, जिनके भीतरें भगवान और बायरें कामकला समजाउतीं ऐसीं नौनीं मूरतियां बनीं कै संसार भर सें मान्स देखवे आउत औंर इने निरख कें रै-रै जात। ई धरती पै पापट सरीके शिल्पी भय जिननें अहार, थूबौन, बजरंगगढ़ औंर न जाने कॉ-कॉ के दिवालन की मूरतें गढ़ीं जिनें देखकें जी जुड़ात है। देवगढ तौ जैसें मूरतन को गढ़ आय। जिते खोदो गओ उते मूरतें कड़ीं। खजराओ, अहार, पपौरा, द्रोणगिरि, एरन, ओड़छा, पन्ना, दतिया, चरखारी, महोबा, मड़खेरा, उन्नाव बालाजी और केऊ जगॉ के दिवाले देख कं माथौ नव जात।

''बुदेली लोक भासा'' बोलत में ''गुर'' जैसी गुरीरी लगत। जब बेन-बिटिया खौं बिन्नू और नई बऊ खों दुलैया जू और भौजी खौं भुज्जी कत तौ लाड़ बगरों-बगरों फिरत।

लोकगीतन के लिखैंयन-गवैंयन ने इतै के सबरे तीज-त्यौहारन पै व्याव-चलाव औंर रागरंग के मौकन पै गावे के गीत लिखे हैं। इते के फाग गीतन में तौ रस टपकत। फाग रचवे गावे बारन मे 'ईसुरी' कौ पैलौ नाव है। धौरे पण्डा, गंगाधर, ख्यालीराम, भरतू कवि सोऊ फागें रचवे गावे बारे हो गय। इते के हजारन कवियन ने जिन्दगानी के ऐसे कवित्त रचे जो इतै सबकी जुबानन पै चढ़े रत।

बुन्देलखण्ड की खदानन में सब्बऊं के हीरा तौ कढ़ाई

हैं, इतै साहित्य, संगीत और कला के अनमोल रतन सोउ खूबई भए। वेद व्यास, भवभूति, बाल्मीकि, मित्रमिश्र, कृष्णदत्त जैसें संस्कृति के महान पंडत भए तौ तुलसीदास, केसव, बिहारी, लाल ठाकुर, भूषण, ईसुरी, मैथलीसरण गुप्त, वृन्दावन लाल वर्मा, मुंसी अजमेरी जैसे कवि और विद्धान इते भये हैं।

ई बुन्देलखण्ड में वैदिक संस्कृति के संगै श्रमण संस्कृति सोउ खूब फैली। हिन्दू तीरथन के संगे-सगें इते जैनियन के तीरथ और दिवाले भौत बनाय गए। मुगलन के जमाने में इते के कछु लोगन खों मुसलमान सोउ बननें परो पै एसौ कमइ हो पाऔ। चारई वरनन की जातें इतै प्रेम से रत रई। छूआछूत सोउ बनो रओ। ई भूम पै राजा, रनबांकुरें भये, इते जोधा खूब भए जो पनी आन पै मर मिटे। गुलामी नइ सइ, चाय लरत-लरत जान दै दई।

बुन्देली संस्कृति कौ कित्तऊ वरनन करौ, पूरौ नइ कै सकत चाय कितेकउ किताबें लिख डारौ। जा नई पैरी ई की गौरव गाथा खों मटियामेट करवे पै तुल गई है। ऊको हमन खों बुरव सोउ लगत। ई खौं अपन का कर सकत। इयै संस्कृतियन कौ संक्रमण कैं-कैं हिये में गतको सौ दै लेत।

अध्यक्ष
अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्
जिला इकाई टीकमगढ़ (म.प्र.)
मोबा. 9424923622

कित्ती ज़रूरी : मानक बुंदेली

डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी

मानक कौ आशय है शुद्धए श्रेष्ठ या नीकी, आदर्श या परिनिष्ठित। मानक भाषा याने श्रेष्ठ भाषा। पै ईकौ मतलब जौ नइयां कै जो भाषाएं मानक नइयां वे अशुद्ध या हेय भाषा हो गइं। वास्तव में तौ कौनउं भाषा हेय होतइ नइयां। भाषा खों समाज अरजित करत है। ईसें बा हेय कैसें हो सकत। इतै मानक भाषा कौ मतलब एकरूपता सें है। कैउ बोली रूपन में सें कौनउं भाषा कौ जब एकरूप बनाकें सर्वस्वीकृत कर लओ जाबैए तौ उऐ मानक या स्टेंटर्ड भाषा मानो जान लगत है। भाषा के मानक रूप सें ऊ भाषा के दूसरे कैउ रूपन के प्रयोग करबे वारन खों आसानी हो जात है।

कौनउं बड़ी बोली या भाषा के भौत से बोली रूप जनसामान्य में प्रचलित होत हैं। अपनी बुंदेली बोली के सोउ ऐसे कैउ रूप प्रचलित हैं। बुंदेलखंड के जालौन जिला जां सें बुंदेली भाषा कौ प्रयोग होबौ सुरू होत, ऊमें कानपुर जिला सें लगे गांवन की बुंदेली भाषा पै कन्नौजी कौ असर है तो राठ छेत्र की भाषा लुधयांत बुंदेली कई जात है। आगें बढ़कें पूरव में झांसी और ललितपुर, टीकमगढ़ उर छतरपुर में खांटी या सुद्ध बुंदेली कौ प्रयोग होत है। खांटी या सुद्ध बुंदेली कैबे कौ आसय है कै ऊ पै कौनउं अन्य भाषा कौ असर भौतइ कम हो पाओ है। जा तरा सें बुंदेलखंड के बीच के जिलन की भाषा खाटी बुंदेली आए। महोबा, हमीरपुर, चित्रकूट, बांदा, दतिया, ग्वालियर, विदिशा, सागर, पन्ना, दमोह आदि जो जिले हैं, इतै की बुंदेली पै उनकी सीमावर्ती बोलियन कौ जादा असर दिखात है। जाहिर है कै जौ सब्द कौ जौन रूप इत्ते बड़े बुंदेलखंड में एक जगां होत, ठीक वैसउ रूप दूसरे छेत्र में प्रयोग नइं होत। बल्कि एसो सोउ होत कै एक जगां कोनउं चीज खों कछु कइ जात, बेइ चीज खों बुंदेलइखंड की दूसरी जागां कछु और कओ जा रओ। जेइ से बुंदेली के कैउ रूपन खों भिन्न भिन्न नामन सें भाषा विज्ञानियन ने पुकारो है, जैसें - पवारी, लोधांती, खटोला, बनाफरी, कुंडी, निभट्टा, भदावरी, कोसी, नागपुरी आदि।

भाषा के कैउ अलग अलग रूपन के प्रयोग सें कोनउं बात खों ठीक तरा सें समजबे में कभउं कभउं परेशानी होत है। पत्राचार, शिक्षा, सरकारी कामकाज उर सामाजिक सांसकिरतिक आदान प्रदान में समान स्तर पै प्रयोग करबे के लाने मानक भाषा की जरूरत निस्संदेह है, पै के पैलें हमें कछु बातन पै विचार कर लओ चइए जीमें कछु ऐसी हैं।

खड़ी बोली हिंदी की मानक भाषा बन गइ। भारतेंदु युग सें हिंदी गद्य कौ प्रारंभ भऔ, ऊ समय की खड़ी बोली में तरा तरा के रूपइ नइ दिखात ते, बा अपने सुरूआती दौरउ में हती। राजा सिवप्रसाद सितारेहिंद ऊ खड़ी बोली के पक्षधर हते, जीमे अरबी फारसी के भी सब्द खूबइ शामिल रैबें, लेकिन राजा लक्ष्मण सिंह उर इंशाअल्ला खां जैसे लोग सुद्ध उर तत्सम हिंदी के पक्षधर हते। बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी नें अपनी पत्रिका श्सरस्वतीश् के संपादन के माध्यम सें खड़ी बोली खों खूबइ मांजो। उनने नए नए विषयन पे लिखबे खों रचनाकारन खों प्रोत्साहित करो। सिथिल भाषा के सिल्प खों कसो। प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर कौ नाम आचार्य द्विवेदी ने बदलो, पैले ईको नांव पंचों में परमेश्वर रखो गओ तो। हमें जा

सोउ नइं भूलने के ई समय तक आउत आउत खड़ी बोली पूरे हिंदी छेत्र, जीमें हिंदी की सब बोलियन के साहित्यकार सामिल हैं, की साहित्यिक भाषा बन गई ती। जो ब्रजभाषा साहित्य के केंद्र मेंहती, बा अब नइं रइ। सोउ अवधी भाषा खों भी जो गौरव मलिक मोहम्मद जायसी उर गोस्वामी तुलसीदास ने पोंचाओ, बौ भी नइं रओ। जे भाषाएं गद्य की माध्यम कभउं वनइ नइं पाइ तीं। खड़ी बोली गद्य के अनुकूल भाषा समजी गई। आचार्य द्विवेदी और उनके मंडल के रचनाकारन ने खूवइ जादा उर बड़ी वड़ी रचनाएं ई भाषा में करीं। इनसें उनें खुद भी भौत प्रसिद्धि मिली। अपनइ छेत्र के चिरगांव निवासी मैथिली शरण गुप्त वारह बरस याने दो वार राज्यसभा के सदस्य बने। बाद में मध्य प्रदेश के सेठ गोविंददास उर बिहार के रामधारीसिंह दिनकर भी जेइ सदन के सदस्य भए। कविता के छेत्र में भारतेंदु मंडल के साहित्यकारन ने, ऊके बाद द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद उर नई कविता की रचना भाषा की रचना के रूप खड़ी बोली खूब फली फूली। जेइ नइं पैली वेर नाटक, एकांकी, उपन्यास, कानी, निबंध, आलोचना, पत्र, संस्मरण रिपोर्ताज रेखाचित्र जैसी गद्य विधान की भाषा खड़ी बोलियइ बनी। हमाओ कैबे कौ मतलब है, जब भी कोनउं भाषा में विपुल साहित्य रचना करी जान लगत उर ऊ भाषा खों शासन अपनाउन लगबै तौ उऐ मानक करे जावे आवस्यकता महसूस होन लगत। अपुन सब जनें सोचो कै अपनी बुंदेली बोली में इत्ती साहित्य रचना का अबै हो रई। ई के संगै संगै बाद में 14 सितंबर 1949 खों खड़ी बोली के रूप में मानकीकिरत हिंदी भाषा देस की राजभाषा सोउ बन गई, जासें जो भी सरकारी कामकाज हिंदी में होवै, बौ सोउ जेई भाषा में निबटाओ जा रओ, बौ चाए अंगरेजी सें अनुवाद के रूप में होए, चाए मौलिक। खड़ी बोली जेइ सें मानक भाषा बन पाई है।

बुंदेली भाषा की जो स्थिति अबै हैए ऊके देखत भए चाइए कै जादां सें जादां गद्य पोथियां ई बोली में रची जावें। जित्तो जादा गद्य साहित्य बुंदेली में लिखो जैए, उत्ती तरा की भावभूमि उर सब्द भंडार की बढ़ोत्तरी होत जैए। कोनउं जागां लड़का खों लरका कई जातए ओइए कउं मोड़ा तौ कउं लला उर कउं टुरका ईसें कौनउं समस्या नइयां। जौ तो और अच्छो आए। बुंदेली की प्रकृति प्रभावित भए बिना कैउ तरा के सब्दन खों अगर साहित्य की भाषा में प्रयोग करो जावे तो अपनी भाषा खों पढ़बे समजबे की उतकंठा पाठक के अंदर जगै। ई के अलावा तरा तरा के सब्द प्रयोगन सें भाव वैविध्य कौ विस्तार होत। कैउ सब्द तौ ऐसे हैं कै ऊके लाने हमें अंगरेजी भाषा पै निर्भर होने पड़तए जैसें बफे सिस्टम में खावे के लाने हिंदियउ में सब्द नइ मिलतए लेकिन कोउ ने ई के लाने बड़ो नौनो सब्द दओ है, 'ठड़भोज'। जौ सब्द 'बंदेली दरसन' के कोनउं अंक में प्रकासित भओ है। ई तरा सें कैउ सब्द हैं, 'भइया अपने गांव में' 'बाबूलाल द्विवेदी' पोथी के संपादन के समय एक सब्द पड़ो (रोटी) पइए जौ सब्द बुंदेली में खूब प्रचलित सब्द है। ई कौ उल्था या बदल सब्द हिंदियऊ में नइं मिलत। कैबे कौ मतलब है के बोलियन सें भाषउ समृद्ध होत है। ईसें मोरी विनती है के बोलियन के प्रवाह खों रोको ना जाबैए जीखों जो सब्द उर सिल्प नीको लगबै, बौ उए प्रयोग करबै। गद्य या पद्य कौ अनुसासन और भाषा की प्रकृति उर लय ना टूटबे बस।

ईसें हमें लगत है कै बुंदेली भाषा कौ मानक रूप करबे की अबे जरूरत नइयांए पै बुंदेली लिखबे के लाने ई की वर्तनी खों मानक बनाबे की जरूरत अवस्य है। कभउं कभउं सब्दन खों कैउ तरा सें लिखबे पे अर्थ भ्रम हो जात है। बुंदेली की वर्तनी खों एकरूप करबे में हमें हिंदी की

वर्तनी के अनुरूप बढ़ो चइए। सबसें बड़ी जरूरत तौ जा बात की है कै हम अपने मौड़ी मौड़न खों बुंदेली के प्रयोग करबे में हीन भाव पैदा न करबें। काए सें के विदेसी भाषा तौ व्यापार के लाने जरूरी है, राजभाषा सरकारी कामकाज के लाने, पै मातृभाषा स्वयं के संस्कारन के लाने जरूरी होत है। ई के प्रयोग करबे में हमें सरम न आव चइए। हम लोग देखत हैं कै पूरबी लोग चाए देस में कोनउं जागां रैवें या चाए विदेस में रैबें, जब वे आपस में मिलत हैं तौ अपनी भोजपुरी में बोलत व्यवहारत हैं। जेइ स्थिति और बोलियन.भाषन की है। हमने सबसें जादां अपनी बोली के लोगन खों ई बोली के प्रयोग करबे में संकोच करत देखो, ईसें अपनी संतानें तौ दुर होतइ चले जैंए। हाल में ओरछा में महाराजा मधुकर शाहजू के सौजन्य सें भओ अखिल भारतीय बुंदेली साहित्य एवं संस्कृति के एक कार्यक्रम में हैदराबाद विश्वविद्यालय में पंजीकृत एक गुजराती दलित शोध छात्र दीपक बरखडे अपने शोध को विषय रखो कै बुंदेली एक पहचान है या भाषा 'बुंदेली एन आइडेंटिटी ऑर लेंग्वेज'। ई शोध में वे तमिलनाडु में रैवे वारे बुंदेली भइया वैनन खों देखकें खोज रए कै कैसें लोग अपनी पहचानइ भुलाउत जा रए। जा स्थिति हम बुंदेलखंड वारन के लाने अच्छी नइयां।

एसोसिएट प्रोफ़ेसर,
शोध एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
गांधी महाविद्यालय, उरई (जालौन) उ.प्र.
गांधी महाविद्यालय
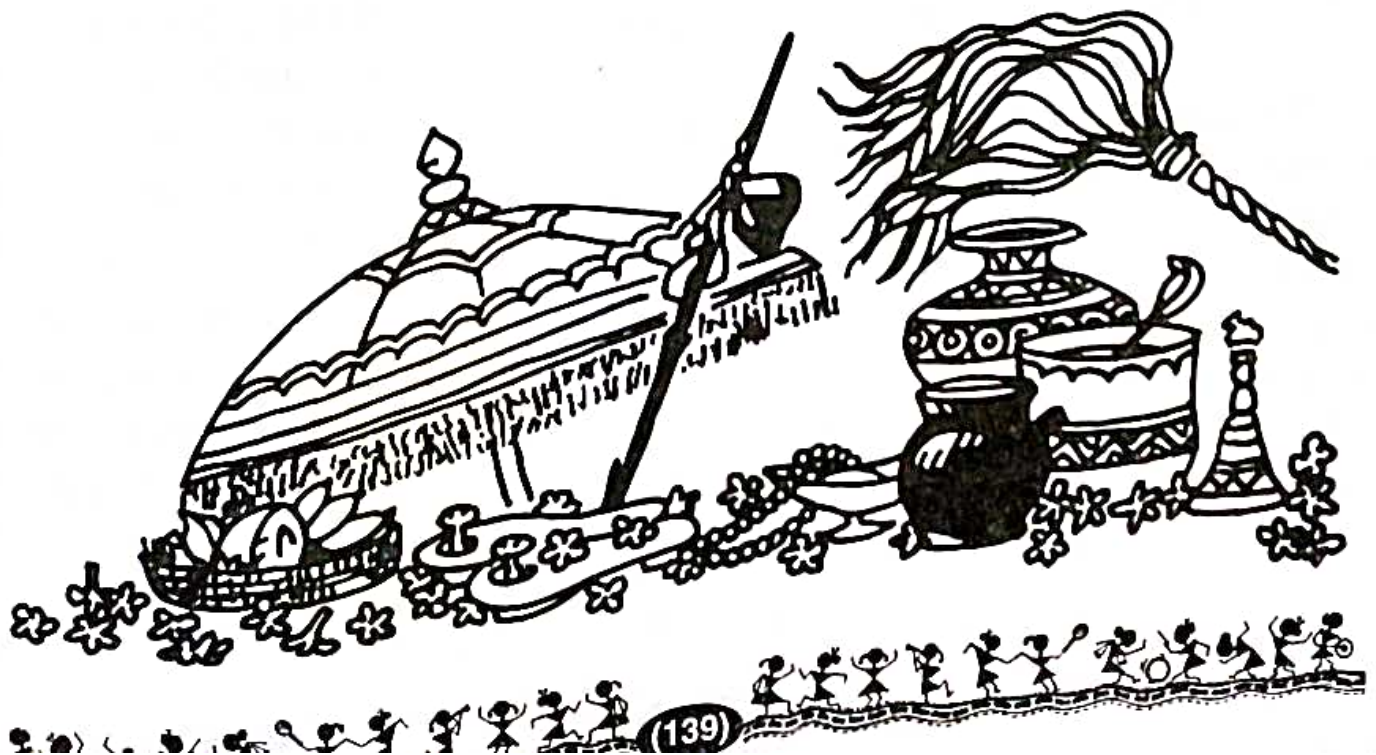
बरुआ सागर : प्राकृतिक सौंदर्य और शौर्य से परिपूर्ण एक नगर

– डॉ. राहुल मिश्र

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झाँसी से मानिकपुर की ओर जाने वाली सवारी गाड़ी के स्टेशन से रवाना होते ही अधिकांश यात्रियों के अंदर एक नए इंतजार को उपजते देखा जा सकता है। यह इंतजार सफ़र खत्म होने का नहीं है। यह इंतजार झाँसी के बाद आने वाले ओरछा स्टेशन से गाड़ी के आगे बढ़ते ही अपने चरम पर पहुँच जाता है। बेतवा नदी के पुल पर दौड़ती गाड़ी से उपजने वाली तेज आवाजें रेलगाड़ी के कोच में बरवस शुरू हो जाने वाली हलचलों को सुर दे देती हैं और बरुआ सागर स्टेशन पर गाड़ी के खड़े होते न होते दौड़ शुरू हो जाती है। झाँसी से भले ही भरपेट खाकर चले हों, मगर बीस-इक्कीस किलोमीटर के सफर में ही इतनी तगड़ी भूख उपज जाना कि दौड़ लगानी पड़ जाए, स्वयं में रोमांचित कर देने वाला है। स्टेशन पर बने चाय-पानी के स्टॉल में अच्छी-खासी भीड़ जमा हो जाती है। कोई पेड़े, तो कोई समोसे और कोई सब्जी-पूड़ी खा रहा होता है, या फिर खरीदकर ले जा रहा होता है। प्लेटफार्म पर सब्जीवालियों की लंबी कतार अलग आकर्षण रखती है। अदरख और कच्ची हल्दी से लगाकर सभी किस्म की सब्जियाँ यहाँ पर उपलब्ध हैं। अमरूद और मूँगफली के देशी स्टॉल भी कम नहीं होते हैं। विक्रेता महिलाओं की सुमधुर मिश्रित आवाजें गूँजती रहती हैं। अदरख ले लो अदराख..... अमरूद ले लो ताजे-मीठे आमरूद.....। लोग समय का सदुपयोग करते नजर आते हैं। जल्दी.जल्दी सौदा पटाने और ढेर सारी सब्जियाँ खरीद लेने की होड़ नजर आती है। रेलगाड़ी के रुकने से लगाकर उसके रवाना होने तक की अवधि में किसने कितनी सब्जी खरीद लीए कितना जलपान कर लियाए जैसे विषय गाड़ी के रवाना होने के साथ ही क्षणिक चर्चा के केंद्र में आ जाते हैं। लोगों के लिए अदरख और कच्ची हल्दी की खरीददारी ज्यादा रोमांचकारी होती है, उसी तरह, जैसे बरुआ सागर के पेड़े खाकर मानो संसार के सर्वोत्कृष्ट मिष्ठान्न को उदरस्थ कर लेने की सफलता से सुख की अनुभूति होती है। पुराने तरीके की बनी स्टेशन की इमारत और सारा स्टेशन परिसर गाड़ी के आगमन के साथ ही भागमभाग और चहल-पहल से भर जाता है। मानिकपुर की ओर से आने वाले रेलयात्रियों के साथ भी यही सब घटता है। रेलगाड़ी जाने के बाद स्टेशन में कैसी उदासियाँ पसरती होंगी और दूसरी गाड़ी के आने के इंतजार की घड़ियाँ कैसे गिनी जाती होंगी, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। दूसरे छोटे स्टेशनों से इतर बरुआ सागर स्टेशन पर कुछ अलग ही परिवेश बन जाता है, इस कारण कल्पनाओं को
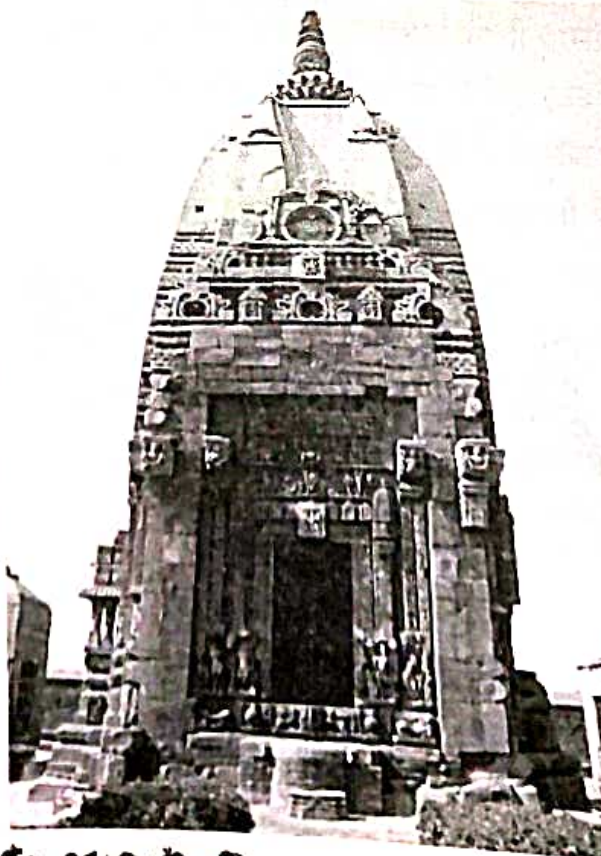
उड़ान भरने के लिए पंख मिल जाते हैं। स्टेशन के बाहर इस कस्बे का जीवन कैसा होगा, कई बार मन में प्रश्न उपजते हैं। आखिर इस छोटे-से कस्बे में सागर कहाँ से आ गया? अगर सागर है भीए तो कैसा है? लगता है कि जिसने बरुआ नदी में बने बाँध को सागर नाम दिया होगा, उसने शायद सागर देखा ही नहीं होगा, इसीलिए उस विशालकाय ताल को सागर मान लिया। ऐसा भी हो सकता है कि बुंदेलखंड की पथरीली जमीन पर, जहाँ जल का संकट अपना विकराल रूप दिखाने में पीछे नहीं रहता, वहाँ जल-प्रबंधन के ऐसे वृहदाकार निर्माण के प्रति आस्था ने सागर नाम दे दिया हो।

बरुआ सागर कस्बे का नाम बेतवा नदी की सहायक बरुआ नदी पर बने बाँध या वृहदाकार तालनुमा सागर के कारण पड़ा है। बरुआ सागर ताल का क्षेत्रफल लगभग एक हजार एकड़ का है। बुंदेला शासकों द्वारा स्थापित धार्मिक-ऐतिहासिक नगरी ओरछा के प्रतापी शासक राजा उदित सिंह ने सन् 1705 से 1735 के मध्य इस ताल का निर्माण कराया था। इस ताल के निर्माण का शिल्प भी अद्भुत है। आम जनता के लिए ताल का उपयोग सहज और सुलभ हो सकेए इस हेतु तालाव में घुमावदार सीढ़ियाँ बनी हैं। ताल पर बना चौड़ा तटबंध पुल का काम भी करता है। ताल में जल-प्रबंधन के साथ ही जल के उच्च स्तर पर पहुँचने पर जल निकास की व्यवस्था भी है। लगभग नब्बे वर्ष पूर्व भीषण बाढ़ ने जल निकासी व्यवस्था को नष्ट कर दिया था, फिर भी यह ताल यहाँ के लोगों के लिए उपयोगी है। खेती के लिए जल संसाधन की उपलब्धता के कारण यहाँ पर खेतों में खूब हरियाली नजर आती है। केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तावित केन-बेतवा गठजोड़ परियोजना में बरुआ सागर ताल भी शामिल है और इस परियोजना के माध्यम से ताल तक जल पहुँचाने की योजना है।

बरुआ सागर के किनारे पर ऊँची समतल पहाड़ी पर किला भी है। इस किले का निर्माण भी ओरछा के राजा उदित सिंह द्वारा 1689 से 1736 के मध्य कराया गया था। किले की प्राचीर से बरुआ सागर का सुंदर नजारा और चारों तरफ पसरी हुई हरियाली बरबस ही मन को मोह लेती है। यहाँ की अनूठी प्राकृतिक सुंदरता और पठारी भूमि में पसरे धरती के सौंदर्य से अभिभूत होकर ही शायद बुंदेला

शासकों ने इस किले को अपना ग्रीष्मकालीन किला बना लिया था। गर्मी के दिनों में वे यहीं पर प्रवास करते थे। संभवत: इसी कारण आज भी बरुआ सागर को बुंदेलखंड की शिमला नगरी भी कहा जाता है। बुंदेला शासकों के यहाँ आने के पहले इस इलाके में आबादी नहीं रही होगी, या बहुत कम संख्या में रही होगी, इस कारण बुंदेला शासकों को किले और ताल के निर्माण कार्य के लिए ओरछा से कामगारों को लाना पड़ा होगा। लगभग 47 वर्षों तक यहाँ पर चले निर्माण कार्य के पूर्ण हो जाने के बाद कामगारों के परिवार यहीं पर बस गए। इसी कारण यहाँ बसे अधिकांश

लोग उन कामगारों के वंशज हैं, जो बरुआ सागर और किले के निर्माण हेतु यहाँ लाए गए थे। इनके पास इसी कारण बरुआ सागर से जुड़ी तमाम लोक-प्रचलित कथाएँ भी हैं।

बरुआ सागर की आबादी से लगभग ढाई किलोमीटर पहले एक ऊँचे टीले पर लगभग पाँच-छह फीट ऊँची चहारदीवारी के अंदर लाल बलुए पत्थरों से निर्मित लगभग पैंसठ फीट ऊँचा मंदिर है। इसे जरा का मठ 'जरकी मठ' के रूप में जाना जाता है। लोक मान्यताएँ इस मंदिर को भाई-बहन का मंदिर मानती हैं। ऐसी कथा प्रचलित है कि बहन के जिद करने पर भाई ने इस मंदिर को एक रात में बनाकर तैयार कर दिया था। इस मंदिर में शिव-पार्वती की मूर्तियाँ हैं। यह मंदिर चंदेलकालीन है और चंदेलों के मंडलिक प्रतिहार शासकों द्वारा इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। अपने स्थापत्य के कारण यह मठ ऐतिहासिक महत्त्व का है। पूर्वाभिमुख मठ में गर्भगृहए फिर अंतराल और फिर मुखमंडप है। मुखमंडल भग्नावस्था में है, जबकि मुख्य मंदिर के उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम दिशाओं में स्थित भग्न छोटे मंदिरों से अनुमान लगाया जा सकता है कि मुख्य मंदिर के चारों ओर चार छोटे-छोटे मंदिर रहे होंगे। मंदिर की ऊँचाई या विमान के साथ ही चार छोटे-छोटे मंदिरों से अनुमान लगाया जा सकता है कि मंदिर पंचायतन शैली का है। मंदिर का गर्भगृह आयताकार है। आयताकार चौक प्राय: शेषशायी विष्णु या सप्तमातृका के मंदिरों में होती हैं। शेषशायी विष्णु की मूर्ति यहाँ नहीं है, मगर मंदिर के नाम से स्पष्ट होता है कि यह मंदिर शक्ति-साधना का केंद्र रहा होगा। श्री महाकाली अष्टोत्तर सहस्रनामावली में श्लोक है.
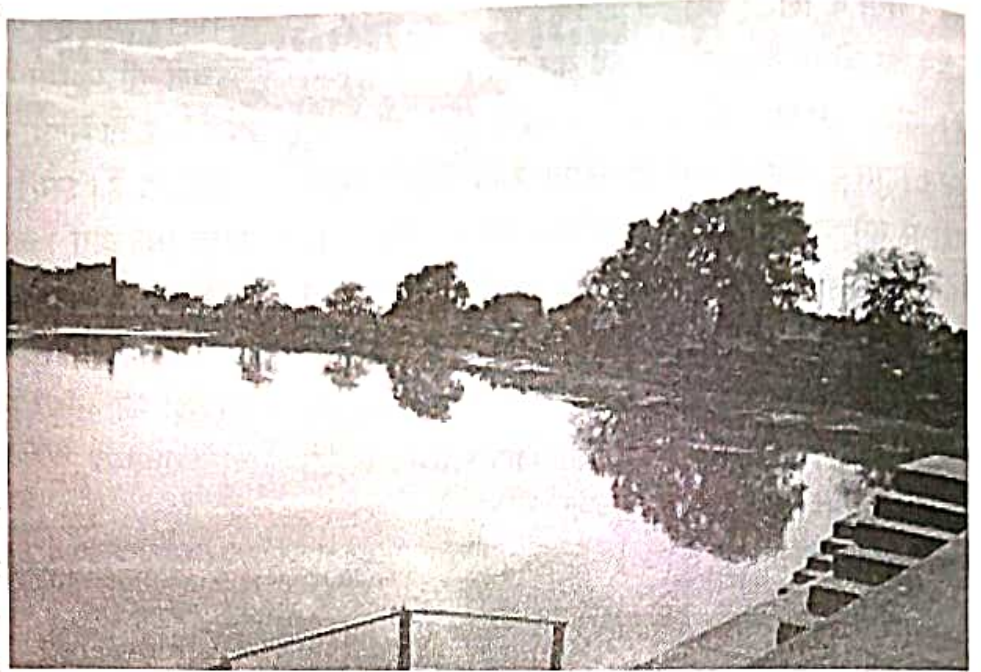
विद्याधरी वसुमती यक्षिणी योगिनी जरा ।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ।।26।।

महाकाली का एक नाम जरा भी है, इस तरह शक्ति-साधना के साथ इस मंदिर के संबंध का प्रमाण मिलता है। मंदिर का प्रवेश द्वार सुसज्जित है। इसमें चार पंक्तियों में नर्तकियों, अष्ट दिग्पालों, वाराहियों और द्वारपालों के साथ ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नरसिम्हा, लक्ष्मी-नारायण, सूर्य की प्रस्तर पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ हैं। द्वार के दोनों और गंगा और यमुना की मूर्तियाँ हैं। मंदिर के शिखर का एक तिहाई हिस्सा टूटा हुआ हैए जिसका जीर्णोद्धार कराया गया प्रतीत होता है। संभवत: बरुआ सागर और किले के निर्माण के दौरान बुंदेला शासकों ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया होगा। बरुआ सागर के समीप ही घुघुआ मठ भी है। यह मठ भी चंदेलकालीन है और पत्थरों पर उकेरी गई सुंदर नक्काशी को यहाँ पर भी देखा जा सकता है। इस मठ में चार दरवाजे हैं। तीन दरवाजों पर गणेश की प्रतिमाएँ हैं और चौथे दरवाजे पर दुर्गा की प्रतिमा है। यह मंदिर शैव-साधना का केंद्र रहा होगा, ऐसा माना जा सकता है।

स्थापत्य की इन बेजोड़ निर्मितियों के अतिरिक्त बरुआ सागर में प्राकृतिक निर्मितियाँ भी हैं। इनमें स्वर्गाश्रम प्रपात

प्रमुख है। 1985 के आसपास इस स्थान पर चण्डी स्वामी शरणानंद जी सरस्वती द्वारा एक आश्रम का निर्माण कराया गया था। तब से यह स्थान पर्यटकों के लिए ही नहीं, वरन् श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया। चारों तरफ फैली हरियाली, विभिन्न प्रकार के वृक्ष और उनकी शीतल छाया में कल-कल निनाद करता प्रपात का औषधियुक्त जल तन और मन, दोनों को सुख देता है। इस प्रपात के निकट तीन कुंड हैं, जिनमें इसका जल संग्रहीत होता है। प्रपात का जल गंधकयुक्त होने के कारण औषधीय गुणों से युक्त है और अनेक व्याधियों के उपचार हेतु लोग इस जल का उपयोग करते हैं। आश्रम के निकट ही हनुमान गुफा नामक एक प्राकृतिक निर्मिति है, जिसमें हनुमान जी की मशक स्वरूप प्रतिमा विराजमान है। यहाँ पर विभिन्न पर्वों में श्रद्धालुओं का आगमन होता रहता है। गर्मी की ऋतु में यहाँ पर पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। दूर्वा का विशाल उद्यान भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

बरुआ सागर, घुघुआ मठ, जरा का मठ और स्वर्गाश्रम प्रपात बुंदेले और मराठों के संघर्ष के गवाह भी हैं। सन् 1744 में यहाँ पर बुंदेले और मराठों के बीच भयंकर युद्ध हुआ था, जिसमें रानोजी सिंधिया के पुत्र और महाराजा माधोजी सिंधिया के अग्रज ज्योति भाऊ शहीद हुए थे। युद्ध के समापन के बाद पेशवा ने आदेश दिया था कि बरवा सागर से वसूली जाने वाली लगान से दस हजार सालान का भुगतान शहीद ज्योति भाऊ की पत्नी को किया जाए। आश्चर्यजनक तरीके से यह भुगतान एक सौ ग्यारह वर्षों तक ग्वालियर दरबार

को होता रहा। ज्योति भाऊ की बेवा के गुजर जाने के बाद यह रकम उनके परिवार के दूसरे लोगों को मिलती रही। सन् 1855 में, जब झाँसी पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया, तब अंग्रेज हुक्मरानों ने इसे रोकने की कार्यवाही की। अंग्रेजों ने आदेश जारी किया कि अधिकार के रूप में इस धनराशि का पाने का हक ग्वालियर घराने को नहीं है, बशर्ते कृपापूर्वक इसका भुगतान किया जा सकता है। लगभग एक सौ ग्यारह वर्षों तक बरुआ सागर की लगान से ग्वालियर दरबार अपनी जेबें भरता रहा।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और उनके पति गंगाधर राव को भी बरुआ सागर से बहुत लगाव रहा है। गंगाधर राव तो अकसर अपना समय यहीं पर गुजारा करते थे। गंगाधर राव के निधन के उपरांत झाँसी का राज्य राजनीतिक अस्थिरता से घिर गया। इसका लाभ उठाकर ओरछा के प्रधानमंत्री नाथे खाँ ने बरुआ सागर पर कब्जा करने की कोशिश की। उसने बरुआ सागर पर कब्जा भी कर लिया और आगे बढ़कर झाँसी के किले को भी घेर लिया। बाद में रानी झाँसी की सूझ-बूझ और पराक्रम के कारण नाथे खाँ को वहाँ से भागना पड़ा। रानी झाँसी ने अपने पिता मोरोपंत तांबे के नेतृत्व में चार सौ सैनिकों की फौज भेजकर बरुआ
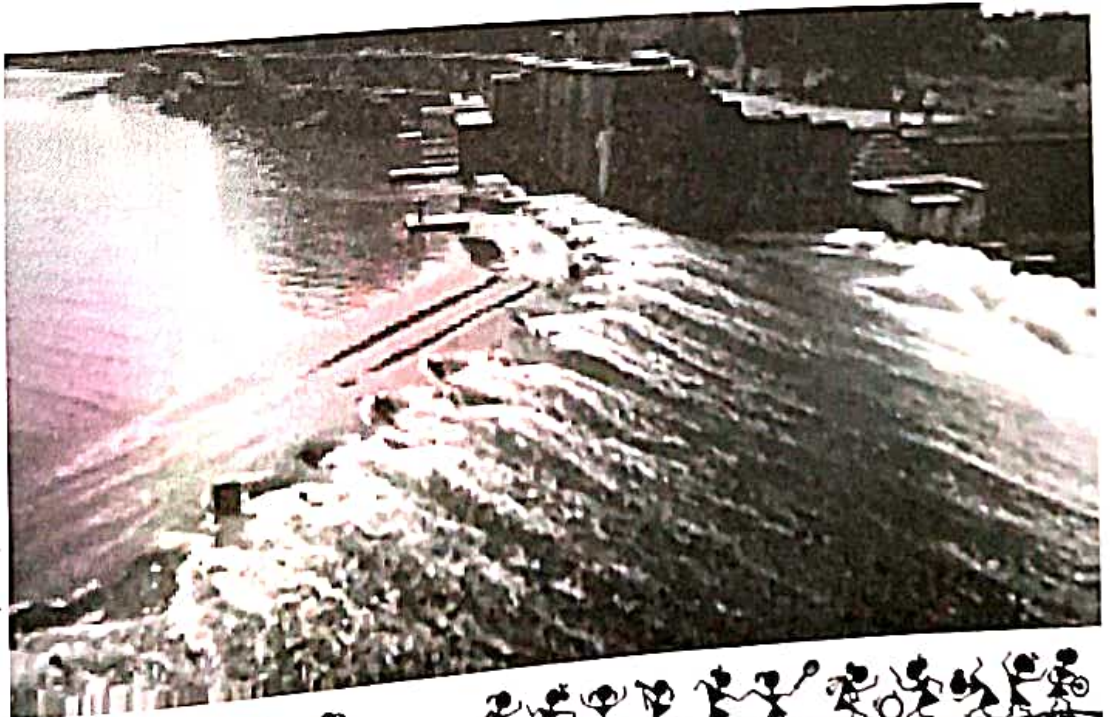
सागर को फिर से अपने कब्जे में ले लिया। जिस समय रानी झाँसी अंग्रेजों से संघर्ष कर रही थीं, उस समय बरुआ सागर के आसपास के इलाके में डाकू कुँवर सागर सिंह का आतंक हुआ करता था। वह रानी झाँसी के पराक्रम से इतना प्रभावित हुआ, कि अपने सारे साथियों के साथ रानी झाँसी की फौज में शामिल हो गया। उन दिनों बरुआ सागर क्रांति की ज्वाला से धधक रहा था। अंग्रेजों को जितना खतरा झाँसी में महसूस होता था, उससे कम खतरा बरुआ सागर में महसूस नहीं होता था। इसी कारण अंग्रेजों की तमाम गुप्तचर एजेंसियाँ यहाँ पर सक्रिय रहती थीं। प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लगाकर देश की आजादी तक बरुआ सागर स्वतंत्रता सेनानियों का गढ़ रहा। जिस समय देश के विभिन्न हिस्सों में छापाखानों में समाचारपत्र छपा करते थे और स्वतंत्रता सेनानियों के पास भेजे जाते थे, उस समय बरुआ सागर में रातों-रात हस्तलिखित समाचार पत्र तैयार किए जाते थे और रातों-रात ही उनका वितरण आसपास के इलाकों में, शहरों में किया जाता था। वितरण करने वाले स्वाधीनता सेनानी रात में पत्र लेकर निकलते थे और सुबह होने के पहले ही पत्र बाँटकर वापस आ जाते थे। बरुआ सागर से चलने वाली इस क्रांतिकारी गतिविधि ने अंग्रेजों की नींद उड़ा रखी थी। इस काम को करने वाले सेनानियों को तलाश पाना अंग्रेजों के लिए बहुत कठिन था। अंग्रेजों के गुप्तचर बरुआ सागर में अपना डेरा डाले ही रहते, और क्रांतिकारी अपना काम बखूबी कर ले जाते। अनेक अंग्रेज अधिकारियों ने अपने संस्मरणों में बरुआ सागर का इसी कारण खूब जिक्र किया है।

जाने-माने रंगकर्मी, नाट्य-समीक्षक, समालोचक, पत्रकार, कवि, अनुवादक और शिक्षक पद्मश्री नेमिचंद्र जैन का बचपन बरुआ सागर में ही गुजरा है। वृंदावनलाल वर्मा की रचनाओं में बरुआ सागर का सौंदर्य निखरता है। और भी तमाम कवि, साहित्यकार, इतिहासकार चाहे वे विदेशी हों, या देशी हों, बरुआ सागर उनके लिए रोमांच से भरा रहा है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और यहाँ के कण-कण में बसी अतीत की गाथाएँ उन्हें अपनी खींचती रही हैं।

बरुआ सागर के स्टेशन में रेलगाड़ी के आते ही अचानक बढ़ जाने वाली चहल-पहल ही केवल इसकी पहचान नहीं है। यहाँ की अनूठी प्राकृतिक सुंदरता, यहाँ की ऐतिहासिक विरासत न केवल शासकों को वरन् जिज्ञासुओं को, श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करती रही है। यह अलग बात है कि शिमला जैसे बहुचर्चित और महँगे शहर के आकर्षण में हम अपने बुंदेलखंड के शिमला से भी खूबसूरत इलाके को विस्मृत कर बैठे हों।

बरुआ सागर के स्टेशन में सब्जियाँ, मूँगफली और अमरूद बेचती महिलाएँ आत्मसम्मान के साथ जीने का यत्न करती नजर आती हैं। रानी झाँसी ने प्रण किया था कि अपने जीते जी अपनी झाँसी नहीं दूँगी। उनका आत्मसम्मान, उनका आत्मगौरव, उनका पराक्रम, उनका शौर्य यहाँ कण-कण में, जल की हर-एक बूँद में आज भी बसता है। इसलिए गरीबी और जीवन जीने की विकट जद्दोजहद ने यहाँ की महिलाओं को लाचार-बेबस नहीं बनाया है। यहाँ से गुजरने वाले यात्रियों को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि महिलाएँ सिर पर वजनी टोकरी उठाए सुबह से देर शाम तक गाड़ियों में भाग-भागकर सब्जियाँ, मूँगफली बेचती क्यों नजर आती हैं? यह इस धरती का गुण-धर्म है, यहाँ की पहचान है। अपने अतीत के गौरव से गर्वोन्नत बरुआ सागर से गुजरते हुए इस पुण्यश्लोका धरा को प्रणाम कर लेने का मन होता है।

हिंदी विभाग, केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान,
लेह-लदाख. 194104 (जे.के.)
छाबी तालाब रोड, कैलासपुरी, बाँदा- 210001
(उत्तरप्रदेश)
rahul.mishra378@gmail.com
मो. 9452031190 / 9419973362